मुंबईमां
(" इंदुप्रकाश स्टीम प्रेस " मां छपाय्युं छे.)

अनुक्रमणिका.

आ ग्रंथावलीमां जणावेला संक्षिप्त अक्षरोनी परिभाषा.

बृ. बृहट्टिप्पनिका
पा. १. पाटणनो भंडार नं. १
पा. २. पाटणनो भंडार नं. २
पा. ३. पाटणनो भंडार नं. ३
पा. ४. पाटणनो भंडार नं. ४
पा. ५. पाटणनो भंडार नं. ५
पा. ६. पाटणनो भंडार नं. ६
जे. जेसल. जेसलमेरनो भंडार.
जेसल. बे. जेसलमेरनी इंडियनजीनी करेली तथा हीरालाले करेली बन्ने टीपनो ए ग्रंथ नोंधेल छे.
ली. लींबडीनो भंडार.
खं. खंभातनो जैनशालानो भंडार.
भा-भाव. भावनगरनो भंडार.
अ. १ अमदावादनो डेलानो भंडार.
अ. २ अमदावादनो पंचभाईनो भंडार.
छो. छोडायनो भंडार
मुं. मुंबईनो तथा ओडाराजनो भंडार.
मुं.मोर्तीचंद-मुंबईनो मोर्तीचाळानो दीपचंदनो भंडार.
डे-डेकन. डेकन कोलेजनो भंडार.
राधन. राधनपुरनो भंडार.
जाम. जामनगरनो भंडार.
सु. सुरतनो भंडार.
प्रो. कवि. प्रोफेसर मणिलाल नभुभाई पाटणना भंडारोनी करेली टीपमां आ ग्रंथ नोंधेल छे.
बरोनरु-S. K. संवत्सना श्री शांतिनाथजीनो भंडार.
R. ६. रॉयल एशियाटीक सोसायटीनो रिपोर्ट छठो.
Dec. डेकन कोलेजनो भंडार.
A. S. रॉयल एशियाटीक सोसायटीना रिपोर्ट
A. S. 4 रॉयल एशियाटीक सोसायटीनो चोथो रिपोर्ट.
A. S. 5 रॉयल एशियाटीक सोसायटीनो पांचमो रिपोर्ट.
A. S. 6 रॉयल एशियाटीक सोसायटीनो छठो रिपोर्ट.
P. 3 पिटर्सनना त्रिजा रिपोर्टमां ए ग्रंथ नोंधेल छे.
P. 4 पिटर्सनना चोथा रिपोर्टमां ए ग्रंथ नोंधेल छे.
P. 5 पिटर्सनना पांचमा रिपोर्टमां ए ग्रंथ नोंधेल छे.
A. H. पिटर्सने अमदावादना करेला कॅटलॉगमां ए ग्रंथ नोंधेल छे.
Gov. गवर्मेन्ट के रॉयल एशियाटिक सोसायटीनो रिपोर्ट.
K. K. पिटर्सननी एफशेल हाम्मन कोटना भंडारनां देश कोशनां करेला ग्रंथोमांनो एतालु ग्रंथ छे.



प्रस्तावना.



विस्तीर्ण आर्यावर्तना सुस्थित प्रदेशोमां ज्यारे पंचम महाज्ञानधारक चरमतीर्थंकर श्री महावीरस्वामी विचरता हता, अने अज्ञानरूपी अंधकारमां मूर्छित पडेला बालजीवोने ज्ञानरूपी जाज्वल्यमान सूर्यना प्रकाशवडे पदार्थनुं सत्य स्वरूप दर्शावी तेनुं महात्म्य प्रत्यक्ष दाखला दलीलोथी सिद्ध करी बतावी तेमना उपर अनंत उपकार करता हता. ते समयना ते उच्चतम ज्ञानना महात्म्यनुं वर्णन करवुं ते केवळ झगझगता अग्नि उपर हाथ मुकवाथी थनार भावी चमत्कारनो अनुभव करी अग्निनी प्रखरतानुं वर्णन करवा सरखुंज कहेवाय. छतां कुदरती नियमे आवी प्रखर वस्तु पण केवी रीते काळना वहेवा साथे ओछापणने अंगीकार करे छे, ते जणाववा खातर अत्रे थोडुंक जणाववानी अगत्यता छे. जेम जेम समय वितवा मांड्यो तेम तेम उपरोक्त महाज्ञाननी प्रखरताए कुदरती रीते समुद्रनी भरती ओट जेवुं स्वरूप धारण कर्युं, अने ज्ञाननी न्युनता थती चाली. महाज्ञानी तीर्थंकर महाराजे पण पोताना आगममां काळनुं स्वरूप वर्णवतां उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी एवा बे प्रकारना काळ दर्शावी तेना छ भाग जणाव्या छे. ए छ भागने कोई काळ कहे छे, कोई युग कहे छे अने कोई आरा (आरक) कहे छे. उत्सर्पिणी काळमां प्रत्येक वस्तुनुं उत्कर्षपणुं होय छे, अने अवसर्पिणीकाळमां अवनतपणुं होय छे. ते कुदरती नियमने अनुसरीने सांप्रत चालता अवसर्पिणी काळे पोताना स्वभावनो प्रभाव देखाडवानी शरुआत करी.

श्री महावीरस्वामी मोक्षगत थया तेमनी साथे ते महाज्ञाने जाणे मोक्ष जेवा शुचिस्थानमां अचळवास करवानुं पसंद कर्युं होयनी! तेम धीमे धीमे ज्ञाननी न्युनता थवी शरु थई. पूर्वे ते वखतना पुण्यवान प्राणीओ स्वात्मशक्तिने क्षणमां तेना कर्तव्य स्थानमां मूकी उपर जणावेलुं महाज्ञान प्राप्त करता हता, अने ते ज्ञानने के जे आत्मानो संपूर्ण प्रगट करेलो गुणज छे ते जाणीने पोताना आत्मरूपी भंडारमां राखी अन्यना आत्मभंडारमां राखवा माटे अत्यंत सहेलाइथी टुंक महेनते सरळ मार्ग बताववाने शक्तिमान थता हता.

भंडारोना नाम तथा चोक्कस ठेकाणानी माहिती.

नीचे जणावेला भंडारोनी टीपो अमारा तरफथी माणसो मोकलीने तैयार करावेली छे. सदरहु भंडारोना जुदा जुदा नामो देखाडवा खातर जैनागमलीस्टना सामेना पेजमां नीचे प्रमाणे सोळ कोलम आपेली छे:—

पेला कोलममां बृहट्टिप्पनिका केजे सं. १५५६ मां कोई आचार्ये संस्कृतमां लखेल छे तेमां ते ग्रंथ नोंधेल छे के केम ते जणाव्युं छे.

बाकीना पंदर कोलममां नंबरवार नीचे मुजबना भंडारो नोंधी तेमां ते छे के केम ते जणाव्युं छे.

१ पाटणनो भंडार नं. १ ते झवेरीवाडामां श्रीपार्श्वनाथजीना भंडारने नामे ओळखाय छे अने ते शेठ वाडीलाल हीराचंदनी देखरेखमां छे.

२ पाटणनो भंडार नं २ ते संघवी पाडामां लोढी पोशालना उपाश्रयनो भंडार छे अने ते पाटवानी देखरेखमां छे.

३ पाटणनो भंडार नं. ३ ते फोफलिया वाडानी आमली शेरीनो भंडार छे अने ते शेठ हालाभाईनी देखरेखमां छे.

४ पाटणनो भंडार नं. ४ ते फोफळियावाडानी वखतजीनी शेरीमां संघनो जूनो भंडार छे अने ते संघनी देखरेखमां छे.

५ पाटणनो भंडार नं. ५ ते फोफलिया वाडानी वखतजीनी शेरीमां संघनो नवो भंडार छे अने ते पण संघनी देखरेखमां छे.

६ पाटणनो भंडार नं. ६ ते झवेरी वाडामां शा. चूनीलाल मूळचंदनो घरभंडार छे अने ते तेमनीज देखरेखमां छे.

७ जेसलमेरनो भंडार ते त्यांना संघनी देखरेख नीचे छे.

८ लींबडीनो भंडार ते त्यांना संघनी देखरेख नीचे छे.

९ खंभातनी जैनशाळानो भंडार ते शेठ पोपट अमरचंदनी देखरेखमां छे.

१० भावनगरनो भंडार ते त्यांना संघनी देखरेखमां छे.

११ अमदावादनो डेलानो भंडार ते शेठ मंगलदास ताराचंदनी देखरेखमां छे.

१२ अमदावादनो चंचळबानो भंडार ते शेठ उमाभाईना परवाळ्या बाई चंचलबाईनी देखरेखमां छे.

१३ कोडायनो भंडार ते त्यांना सद्गृहस्थ प्रकृति वाताना ग्रहस्थीओनी देखरेखमां छे.

१४ मुंबईनो दशा ओसवाळोनो भंडार ते मुंबईमां वसता दशा ओसवाळभाईओनी ज्ञातिनी देखरेखमां छे अने ते मांडवी बंदरपर आवेला श्री अनंतनाथजीना देरासरमां रहेल छे.

१५ डेक्कन कॉलेजनो भंडार ते पुना शहेरमां खडकी उपर डेक्कन कॉलेजनो जे पुस्तकसंग्रह छे ते छे अने ते सरकारनी देखरेखमां छे.

श्री जैन श्वेताम्बर कॉन्फरन्स ऑफीस
पायधुनी, पेट नं. ४ मुंबई.

उमेदचंद दोलतचंद बरोडीया.
आसिस्टन्ट सेक्रेटरि,



प्रस्तावना.

विस्तीर्ण आर्यावर्तना सुस्थित प्रदेशोमां ज्यारे पंचम महाज्ञानधारक चरम-तीर्थंकर श्री महावीरस्वामी विचरता हता, अने अज्ञानरूपी अंधकारमां मूर्छित पडेला बालजीवोने ज्ञानरूपी जाज्वल्यमान सूर्यना प्रकाशवडे पदार्थनुं सत्य स्वरूप दर्शावी तेनुं महात्म्य प्रत्यक्ष दाखला दलीलोथी सिद्ध करी बतावी तेमना उपर अनंत उपकार करता हता. ते समयना ते उच्चतम ज्ञानना महात्म्यनुं वर्णन करवुं ते केवळ झगझगता अग्नि उपर हाथ मुकवाथी थनार भावी चमत्कारनो अनुभव करी अग्निनी प्रसरतानुं वर्णन करवा सरखुंज कहेवाय. छतां कुदरती नियमे आवी प्रसर वस्तु पण केवी रीते काळना वहेवा साथे ओछापणने अंगीकार करे छे, ते जणाववा खातर अत्रे थोडुंक जणाववानी अगत्यता छे. जेम जेम समय वितवा मांड्यो तेम तेम उपरोक्त महाज्ञाननी प्रसरताए कुदरती रीते समुद्रनी भरती ओट जेवुं स्वरूप धारण कर्युं, अने ज्ञाननी न्युनता थती चाली. महाज्ञानी तीर्थंकर महाराजे पण पोताना आगममां काळनुं स्वरूप वर्णवतां उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी एवा बे प्रकारना काळ दर्शावी तेना छ भाग जणाव्या छे. ए छ भागने कोई काळ कहे छे, कोई युग कहे छे अने कोई आरा (आरक) कहे छे. उत्सर्पिणी काळमां प्रत्येक वस्तुनुं उत्कर्षपणुं होय छे, अने अवसर्पिणीकाळमां अवनतपणुं होय छे. ते कुदरती नियमने अनुसरीने सांप्रत चालता अवसर्पिणी काळे पोताना स्वभावनो प्रभाव देखाडवानी शरुआत करी.

श्री महावीरस्वामी मोक्षगत थया तेमनी साथे ते महाज्ञाने जाणे मोक्ष जेवा शुचिस्थानमां अचळवास करवानुं पसंद कर्युं होयनी! तेम धीमे धीमे ज्ञाननी न्युनता थवी शरु थई. पूर्वे ते वखतना पुण्यवान प्राणीओ स्वात्मशक्तिने क्षयमां तेना कर्तव्य स्थानमां मुकी उपर जणावेलुं महाज्ञान प्राप्त करता हता, अने ते ज्ञानने के जे आत्मानो संपूर्ण प्रगट करेलो गुणज छे ते आर्योने पोताना आत्मरूपी भंडारमां राखी अन्यना आत्मभंडारमां राखवा माटे अत्यंत सहेलाइथी टुंक महेनते सरळ मार्ग बताववाने शक्तिमान थता हता.

[illegible] प्रमाण वरसनो अने आधुनिक अवसर्पिणी कालांतर्गत छ काळमांना [illegible] दुःखम काळना समारे ज्ञानरूपी समुद्रमां ओटनी शरुआत थई.

[illegible] श्री महावीरस्वामी निर्वाणगत थया पछी गौतमस्वामी, सुधर्मस्वामी, जंबुस्वामी [illegible] केवल ज्ञानना धारक थया. पण तेमना मोक्षमां जवा साथे ज्ञान [illegible]. [illegible] जेवी आगेथनी स्थिति ते अनुसारे दिनप्रतिदिन आ ज्ञानना [illegible]. [illegible] हरगुणी गुम थयुं के वीरपरमात्माना निर्वाण पछी [illegible] श्री भद्रबाहुस्वामी पछी तो श्रुत केवळीनी पण परिसीमा [illegible] थया. भद्रबाहुस्वामीना वखतमां बार वर्षनो [illegible] तीर्थंकर महाराजथी सांभळेली त्रिपदीना आधारे गणधर भगवाने [illegible] बारमुं अंग नामे दृष्टीवाद जे अनेक विद्याओथी भरपुर हतुं तेनो [illegible].

[illegible] समुद्रनी ओट थतां जोई वीरप्रभुथी ९८० वर्षे एटले विक्रम सं- [illegible] देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण महाराजे भविष्यमां शनैः शनैः सर्वथा [illegible] ज्ञानदृष्टि करी आत्मशक्ति वडे पोताना तेमज बीजा [illegible] ज्ञानने पुस्तकारूढ कर्युं. आवो उद्धार जे जमाए [illegible] वस्तुनीपुरमा के जे मानुषी अने यतनिर्वाचना [illegible] हालमां [illegible] ज्ञाननी [illegible] लखी शकाय तेटला शब्दो [illegible]. आ पूज्य महाशय आपणा उपर अगणित उपकार करी [illegible] आपणा धर्मना ज्ञानरूपी स्तंभोने [illegible] भरनारी बनाव्या छे. [illegible] विचार करीए तो [illegible] जो आ महाशये समयसूचकता वापरीने ज्ञानने पुस्तकारूढ करवानी [illegible] तो हालमां [illegible] प्रमाणमां जे [illegible] साहित्य [illegible] बगु [illegible] छे. [illegible] सूत्रमां केटलीक आगमोनी [illegible] छे तेवी [illegible] थईने ओछी छे. [illegible] आगमनी [illegible] छे. आ [illegible] छे. [illegible] अने [illegible]

[illegible] छे. [illegible]

कहीए छीए के आगमोनां जनाता फेरफारो तथा पृथ्वी आदिकनी बाबतनां केटलाक खुलासाओ हालना समय प्रमाणे थइ शकता नथी ते मात्र आपणा असद् भाग्यने लीधे आगमोनां घणा मोटा घटाडाने तेमज आपणी अल्प समज शक्तिने आभारी छे, अने तेथी तेनापर अविश्वास न करतां आप्तना वचननां फेर होयज नहीं एम मानी कर्तव्य परायण थइ बाकी रहेला ज्ञाननी बने तेटली रक्षा करी तेनाथी सत्यार्थ साधवा तरफ लक्ष राखवुं एज उचित छे.

पूज्यवर्य देवर्धिगणि महाराजना पुस्तकारूढ करावेला आगमना ग्रंथोनी प्रतो पण हाल नजरे पडती नथी. एम कहेवुं पडे छे, कारण के प्राचीनमां प्राचीन पुस्तक लख्यानी साल पण संवत् १००० नी अंदरनी मळती नथी. धारोके कागळ आटलो वखत न रही शके, पण ताडपत्रने रहेवानां वांधो देखातो नथी छतां पण हाल जे ताडपत्रोनी नकलो मळे छे ते पण ते समयनी मळती नथी. जे साहित्यपर अनेक प्रकारनी आफतो पडी होय तेमां जो कांइ पाठांतर देखाय अथवा अमुक बाबतनो समयने अनुसरीने खुलासो न देखाय तो पण पोताना भाग्यनो दोष गणीने वांचनारे शंकाथी लाभ नथी एम विचारी तत्पर नजर करी हवे अवशेष रहेला साहित्यनी रक्षामां कटिबद्ध थवुं एज उचित लागे छे. अत्रे कहेवानी जरूर छे के कोन्फरन्से हजु तमाम साहित्यनो शोध पूरो कर्यो नथी. तो कोइ महाशयने संवत् ९२३ नी अगर ते अरसानी कोइपण प्रत उपलब्ध थाय तो ते जनसमूहनी जाण माटे कोन्फरन्स ओफीसने लखवा कृपा करशे.

आगमो माटे आटली टुंक हकीकत लखी हवे आपणे आगमनी टीकाओ तथा बीजा ग्रंथो तरफ दृष्टी फेरवीए.

भगवानना निर्वाण बाद त्रण पाटसुधी केवल्य ज्ञानी भगवंतो हता. त्यारपछी छ श्रुतकेवली थया छे. त्यारपछी देवर्द्धिगणी महाराज सुधी पूर्वनुं ज्ञान हतुं परंतु आवा धुरंधर पूर्वाचार्योना करेला ग्रंथो पण विशेष दृष्टिगोचर थता नथी. जे* ग्रंथो जणाय छे तेमां श्री भद्रबाहुस्वामीना, सिद्धसेन दीवाकरना, श्रीकालिकाचार्यना अने एवा पांच सात आचार्योना करेला ग्रंथोज हालमां जणाय छे. पण स्थूलभद्रनी अने तेमना पछी थयेला बीजा आचार्योनी कृतीं सम्मुखगी जणाती नथी. आवा महान धुरंधर पंडितो अने जेमनुं शीखं केवळ परमार्थ करवानुंज हतुं तेवा महाशयो पोतानी आखी जींदगीमां छती

---

* महावीर स्वामीना हस्तदीक्षित शिष्य श्री धर्मदासगणिनी करेली उपदेशमाळा सौथी प्राचीन छे.

शक्तिए एकाद ग्रंथ पण न लखे ए बनवुं असंभवित छे पण वखतो वखत देशमां पडता दुष्काळथी राज्यक्रांतियोथी तथा धर्मना झगडाने लइने थतां तोफानोथी आपणा अपूर्व ज्ञानीओनां बनावेला ग्रंथो आपणने मळी शकता नथी.

आ विषयमां हजु शोध करवानो घणो बाकी छे अने हालमां मळता ग्रंथोनो प्रचार करी कोन्फरन्स ते तरफ पण ध्यान आपवा धारे छे प्रथम आ शोधनुं काम पूरुं न करवानुं कारण आ प्रमाणे छे.

जनसमुहने तारवा तथा तेमने सत्यमार्ग बताववा जेमणे पोताना आयुष्यना छेडा-सुधी प्रयास करेलो अने जेमनुं ज्ञान अगाध हतुं, एवा महात्माओ ग्रंथो न लखे एम तो बनेज नहीं, पण ते वखते छापखाना विगेरेना अभावे लखेला ग्रंथनी एक अगर बे प्रतो कोइ स्थळे होय अने ते अमदावादमां हालमां जेम एक भंडारना गृहनो अग्निथी नाश थतां तेमां सैंकडो कीमति अने जेनी बीजी नकल भाग्येज मळे तेवा ग्रंथोनो नाश थइ गयो तेम आवा पूर्वधर महाराजाओना बनावेला ग्रथानो पण नाश थएलो होवो जोइए एवुं अनुमान थाय छे. अने तेथी रहेलुं साहित्य बचावी लेवानु पहेलां धार्युं छे.

हालमां जे साहित्य मळ्युं छे अने मळे छे तेमां आगम शिवायना बीजा घणा ग्रंथो संवत् आठसें पछीनी सालमां लखाएला मळे छे, अने जो अमारूं अनुमान सरूं होय तो जे साहित्य आजे काळना, राजक्रांतिना अने रक्षकोना प्रमादना कारणथी नाश थतां बचेलुं छे. ते तमाम साहित्य बार आनीथी चौद आनी जेटलुं संवत् ८०० पछीना वखतमां लखाएलुं जोवामां आवे छे.

बौद्धनुं पण आ समयमां पुरजोर हतुं भगवानना समकालीन बुद्धदेवनो मत धीमे धीमे पुरजोरमां आवतो जतो हतो. संप्रति महाराजाना प्रणिताए तेने आ देश अने बीजा देशमां पोतानी राज्यसत्ताने नीचे सारी रीते स्थापित कर्यो हतो, परंतु आ देशमां आपणा धुरंधर पंडीतो विद्यमान होवाथी आपणा धर्मने ते लोको काइ नुकशान करी शक्या नहोता. ज्ञाननी न्यूनता थता ज्ञानना धारक महात्माओ कमती थता बौधोने पण आपणा धर्मपर हल्लो करवानुं मन थयुं. आ समय संवत् ५२१ पछीनो गणवानो छे. आ समयमां शिलादित्य राजानी सभामां प्रतिज्ञापूर्वक वाद थयो वादमां एवुं ठरेलुं के हारनारने देशपार करवा. एमां बौधो हारवाथी तेओ देशपार थया एवो संभव छे विक्रम पछी कोइपण जैन राजा थयो होय तेवो इतिहासिक लेख जणातो नथी, अने तेथी

गुजरातमां शिलादित्य राजा थयो ते पहेलाना ग्रंथोनो वखते मतना द्वेषथी बौद्धोए पण नाश कर्यो होय एम अनुमान बांधवाने कारण छे.

उत्तरमांथी शंकराचार्ये, दक्षिणमांथी कुमारिल भट्टे अने गुजरातमांथी मल्लसूरिए बौद्धोने देशपार काढ्या त्यारपछीनुं जैन साहित्य कांइ कांइ दृष्टिगोचर थाय छे.

बौद्धोनो प्रथम विशेष जुलम होवानो संभव छे. कारणके तेम नहोत तो शंकराचार्ये अने कुमारिल भट्टे बौद्धोनुं नाम निशान पण आ देशमां रहेवा दीधुं नहि, अने तेमनी राजाओ पासे कतल करावी तेम करवाने तेमने कारण मळत नहीं.

शिलादित्यनी सभामां पण जैनोनो बौद्धोए प्रथम पराभव करी गुजरातमांथी जैनोने हांकी कहाड्या हता. आवे वखते बौद्धोना हाथमां जैन भंडार आवे तो तेनो नाश करवा तेओ चुके नहीं एम मानवुं छेक कारण विनानुं नहीं गणाय.

देवर्द्धिगणी महाराज पछीथी छेक धनेश्वर सुधी शत्रुंजय महात्म्यना कर्ता थया छे. तेमनी वचेना ३०० वर्षोमां ते समयना कर्तानो करेलो तो एक पण ग्रंथ मळी आव्यो नथी. आ संबंधमां हमारी शोधखोळ चालु छे, अने जो कोई ग्रंथ मळशे तो ते अमे जाहेरमां मुकवा चुकीशुं नहीं.

प्रथम विग्रह थइ गया पछी पाछो मल्लसूरिए बौद्धो साथे वाद कर्यो अने तेमने हराव्या, अने आ देशमां तेमनुं नाम निशान पण रहेवा दीधुं नहीं. एक तरफथी वेदांतना आचार्य अने बीजा तरफथी जैनाचार्योए बौद्धनुं जोर तोडयुं, अने पोताने कृतकृत्य मानवा जेवो प्रसंग लाव्या, पण ते लांबो वखत चाल्युं नहीं. एक गइ अने बीजी आवी तेम आ देशमांथी एक आफत गइ अने तेने बदले मुसलमानो आवता थया. तेथी ग्रंथो पुस्तकारूढ करी तेना रक्षणरूप भंडारोमां व्यवस्थित रीते ग्रंथो राखवानो प्रचार शरु थयो. आम थवाथी पण अवशेष रहेला ज्ञाननो नाश सर्वथैव बंध थयो नहीं. केम के टरी ठाम बेठाने थोडो वखत विल्यो नहीं एटलामां विक्रमना दशमा सैकामां एवो बारीक वखत आवी लाग्यो के मुसल्मान लोको हिंदुस्तानमां आव्या. तेमणे सोमनाथ लुंटयुं, अने देवस्थलो तथा तेमना पुस्तकोनो नाश कर्यो. लाखो माणसोनी कतल थइ, अने करोडोनो माल हिंदमांथी उपाडी गया. आम करवानुं कारण इस्लामी धर्म प्रवर्तावा जोर जुलम करवो ए ज हतुं. हिंदुओना धर्मना चिन्होनो समूळगो विध्वंस थाय तो आ नवो धर्म प्रवर्ते, एम जाणी अर्थ शास्त्रोनो नाश करवा लाग्या. तेमना मददी रक्षणार्थे

भंडारोमां राखेलुं जैन साहित्य सैंकडो वर्ष सुधी बंध बारणे रह्युं. तेथी परिणाम एवुं भय- कर आव्युं के पूर्वेना धुरंधर आचार्योए अपरिमित परिश्रम वेठी रचेला अद्भुत उपयोगी ग्रंथो उद्देहीआदि जंतुओना भक्षणथी तेमज शरदी विगेरे कारणोथी नाश पामी गया.

दाखला तरीके अत्रे अमारी जाणना दुर्लभ्य तथा अनुपलब्ध ग्रंथोनी टुंक नोंध लेवानी अगत्यता जोइए छीए. महानिशीथ जेवा अत्युपयोगी छेद सूत्रनी टीका हालमां क्यांय पण मळी शकती नथी. पंचकल्पना मूळनी स्थिति तेवीज जणाय छे, धरसेनाचार्य रचित विद्यानुं निधान योनीप्राभृत जेनां सतावीश पीठ छे, तेनी पण जीर्णशीर्ण हालत थवाथी नष्ट प्राय थयुं छे. हरिभद्राचार्य महाराजे रचेलां १४४४ प्रकरणोमांथी हालमां गण्या गाठ्यांज मळी आवे छे. उमास्वाती वाचके रचेला ५०० ग्रंथो पैकी पांच ग्रंथो पण पुरा मळी आवता नथी, अने श्रीमद् हेमचंद्राचार्यकृत साडात्रण क्रोड श्लोकनो पण घणो भाग मळतो नथी. मात्र बसो वर्ष अगाउज थएला उपाध्याय श्रीयशोविजयजी महाराजे रचेला सो ग्रंथो पैकी पण जूज ग्रंथोज हाथ आवे छे. बाकी क्यां छे तेनो पत्तो पण लागतो नथी. कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचंद्रसूरिकृत हैमबृहन्न्यास क्यांय पण संपूर्ण स्थितिमां जोवामां आवतो नथी. श्री हेमाचार्यना शिष्य श्रीमद् रामचंद्र सूरिए एकसो प्रबंधो रच्या हता. तेमांना एक दशक जेटला प्रबंधो पण जोवामां आवता नथी विगेरे विगेरे. अनेक विद्वान् आचार्योए रचेला तत्वोना ग्रंथो नाबुद थइ गया.

आवे समये ग्रंथोनो नाश अटकाववाने बाने मुर्खोमां जुना वसतनुं पिशाच पेटुं ते ए के ज्यारे आपणा वडीलोए ग्रंथो प्रसिद्धिमां नहीं लावतां तेमनुं उत्तम रीते संरक्षण करवामांज श्रेय मान्युं. तो आपणे पण तेज मार्गनुं अवलंबन करवुं श्रेष्ट छे. आवी अत्यंत खेदजनक अंधपरंपराना चकडोळामां हिंचका खातुं जैन साहित्य वखत जतां नष्ट प्राय थशे एम जाणी हालमां राज्य कर्ता, दयाळु ब्रिटिश सरकारनी सत्ता तळेना शांत समयमां "**श्री जैन श्वेतांबर कोन्फरन्स**" ना उत्पादक अने नेता नररत्न शेठ **फकीरचंद** प्रेमचंद शेठ गुलाबचंदजी ढढ्ढा एम्. ए., आदि धर्मपरायण जैन कोमना आगेवानोए आपणा पूर्वाचार्योए अथाग महेनते रचेला आपणा जैन साहि- त्यना संग्रहस्थानो (भंडारो) क्यां क्यां छे अने तेमां क्या क्या ग्रंथो सुरक्षित रीते अवशेष रह्या छे. तथा ते ग्रंथो केवी स्थिति भोगवे छे. तेनो तपास करी एक टीप तरतमां प्रसिद्ध करवानी अत्यंत अगत्य छे एम जाणी कोन्फरन्स ओफीसना पुस्तको- द्धार खाता तरफथी प्रसिद्ध भंडारोनी जाणवा जोग माहिती साथेनी उपयोगी टीपो करवा माटे विद्वान पंडितोने रोकी ते कार्यने माटे मोकलवामां आव्या. तेमना प्रयासथी

पाटणना ६ भंडार, जेसलमेरनो भंडार, लिंबडीनो भंडार, तथा खंभातनो भंडार एम नवभंडारोनी टीप तैयार करवामां आवी. अने बाकीना भंडारोनी टीपोनी नकलो उतरावी लीधी.

आ रीते एकत्र करेली टीपो उपरथी ग्रंथोनी अकारादि अनुक्रमवार तारवणी करी विषयवार वर्गणी करवामां आवी छे. मोटा मोटा भागो पृथक् पृथक् देखाडवा माटे तेने लिस्ट नंबर आपी तेना अवयवोना अंगरूप एक नाम आपवामां आव्युं छे.

आ अंगरूपनामो साथे चडतो लिस्ट नंबर जोडवामां आव्यो छे. तदनुसार तेना अंग नव पाडेला होवाथी लिस्ट नंबर पण नवज थया छे. दरेक अंगना अवयवोमां पृथक्क देखाडवा माटे तेना वर्ग तथा क्लास पाडवामां आव्या छे. आ अनेक वर्ग तथा क्लासयुक्त विषयोथी भरपूर लीस्ट-रूप पुस्तकनुं "जैन ग्रंथावली" एवुं नाम आपवामां आव्युं छे आ पुस्तकना नंबर पहेलामां आगम ग्रंथोनुं लीस्ट छे. आ लीस्ट आपतां पृष्ठनी एक बाजुए ग्रंथनुं नाम, तेनी श्लोक-संख्या, ग्रंथना रचनारनुं नाम तथा ते ग्रंथ विक्रमनी कइ सालमां रचायो छे, ते जणाव्युं छे. अने सामेनी बाजुपर ते ग्रंथ कया भंडारमां मोजुद छे ते जणाववा माटे उपर जणावेला भंडारोना संक्षिप्त नाम जणाव्या छे. तेमना पूरा नामनी ओळखाण माटे तथा चोकस स्थळ माटेनी वीगत आगळ आपवामां आवशे. दरेक नाममां शक पडती बाबतोना विशेष खुलासा माटे जोईती फुटनोटस आपवामां आवी छे.

नंबर बीजामां जैन न्याय ग्रंथोनुं लीस्ट छे. आ लीस्टथी मांडीने छेवट सुधीना लीस्टोमां दाखल करेला ग्रंथोनी संपूर्ण माहितीनो एक पेजमांज सारी रीते समावेश थतो होवाथी भंडारोना नाम पण एकज पेजमां नोंध्या छे. नंबर त्रीजा, चोथा, पांचमामा जैन फिलोसोफीना ग्रंथोनुं लिस्ट आपवामां आव्युं छे.

नंबर छमां जैन औपदेशिक ग्रंथोनुं लीस्ट, नंबर ७ मां जैन महात्म्य ग्रंथोनुं लीस्ट नंबर ८ मामां जैन भाषासाहित्यना ग्रंथोनुं लीस्ट, अने नंबर ९ मामां जैन विज्ञानना ग्रंथोनुं लीस्ट आपवामां आव्युं छे.

आ रीते नव लीस्टोना नव नंबर पूरा थाय छे. आ नव नंबरोना नव लीस्टरूप ग्रंथावली नामनुं पुस्तक तैयार थवाथी आपणा महान पूर्वाचार्योए धर्मनी रक्षाना साधनरूप तात्विक ग्रंथो रची आपणा हितमाटे केटलो बधो अपरिमित परिश्रम लीधो छे. ते प्रत्यक्ष रीते पुरवार थयुं छे.

जैन साहित्यने शोलवाना शोखीनोने आ एक उमदा मानस सरोवर हाथ लाग्युं छे. जैन साहित्य हालमां केटलुं अने क्यां क्यां विद्यमान छे. तेनी जिज्ञासावाळा महाशयोने आ ग्रंथावळी बनता लगण चोकस माहिती मेळवी आपवामां अद्वितीय साधन थयुं छे. आ ग्रंथावळीमां मात्र संस्कृत अने मागधी साहित्यज दाखल करवामां आव्युं छे. गुजराती लेखको पण जैन धर्मनी अंदर घणा थया छे, अने तेमांना केटलाक लेखको तो हालमां गुजरातीना सारा गणाता लेखकोथी पण विशेष चडता छे. तेओना अलंकारभूत गणाता कार्ववरोनी जेवा लेख कविताना रूपमां शुद्ध गुजरातीमां लखी गया छे. गुजराती साहित्य जो के १००० मा संवत् पहेलानुं मळतुं नथी तोपण एक हजार पछीनुं घणुं साहित्य मळे छे. आ साहित्यमां संस्कृत कथाओ उपरथी रचाएला रासो, भगवाननी स्तवनाओ, सज्झायो, अने बालावबोध (भाषांतरो) नजरे पडे छे. अत्यार सुधीमां वेपारार्थे पुस्तको छापनाराओए आवा रासो, स्तवनो, स्तुतिओ विगेरे जुदा जुदा रूपमां छापवी प्रसिद्ध करी पुस्तक प्रसिद्धिना कार्य साथे धन मेळववानुं पण कार्य साध्युं छे. पण बीजाओ करे छे तेम कोइपण कर्ताना समग्र लेखो अगर तेवा लखाण उपर सारी टीका अगर लेखकनो इतिहास विगेरे आपी सारा टाइपथी अने सारा कागळोथी पुस्तक छपावी तेने प्रसिद्ध कर्यानुं देखातुं नथी. भीमशी माणेके छापेला रासो विगेरे आमां अपवाद रूप छे. कारण के ते सारा टाइपने सारा कागळ उपर बनता सुधी शुद्ध करीने छापेला छे अने अत्यारे बहोळी संख्या हजु तेवीज बहार पडेली छे. आवा पुस्तको छपाववाना कार्य तरफ हालमां श्री जैनधर्मप्रसारक सभा, विद्याप्रसारकवर्ग, ज्ञान प्रसारक मंडळी विगेरे उद्योग करे छे. अने ते ग्रंथो भाषामां होवाथी तेनी नकलो पण सारी खपे छे. तेथी कोन्फरन्से ते माटे प्रयास करवानो मुलतवी राख्यो छे. पण आ ठेकाणे कह्या विना चालतुं नथी के हालमां जेम श्री त्रिषष्टिशलाकापुरुष चरित्र मूळने भाषांतर सफाईदार कागळ उपर छपायुं छे तेम बीजा रासो विगेरे पण एकत्र करी विवरण साथे गुजरातीना काव्य दोहननी पेठे छपाववानी जरूर छे. पूर्वोक्त मंडळीओए गुजराती साहित्यनी जेम बने तेम तपासीने शोध अने उद्धार करवानुं काम हाथमां लेवानी जरूर छे. हालमां जेम [illegible] छपायेला रासो विगेरे पाछा फरीने छपाय छे तेम न करतां जुदा जुदा भंडारोनी शोध करतां गुजराती साहित्यनी नोंध करी तेमांथी जरूरी जे अनुकूळ अने जेमां नवनो समावेश होय तेवा ग्रंथो प्रथम प्रसिद्धिमां लाववानी जरूर छे. आम करवाथी धर्म अने अर्थ बंने सधाशे. एकलो साहित्यनी शोध थशे अने तेम करतां कांइ अपूर्व [illegible] हाथ लागशे तो तेनाथी द्रव्यय मेळवाशे. आ मंडळोथी जुदो जुदो प्रयास न थाय तो कोन्फरन्से पैसा आपवानी व्यवस्था करी हालमां संस्कृत प्राकृतना उद्धारार्थ [illegible] आपवी आ कोन्फरन्सने प्रयत्न करवामां मदद आपवा कमर बांधवी पडी आवा

छे. अने तेम करतां मुनिवर्ग तरफथी पण तेमने सहायता मळी शकशे. गुजराती भाषामां रचायेलुं साहित्य अमे आ लिस्टमां दाखल कर्युं नथी. ते बाद करतां फक्त संस्कृत तथा मागधीमां रचाएलुं जैनसाहित्य अमारी अटकळ मुजब लगभग साठ लाख श्लोक जेटलुं थाय छे. जो के अत्यारे विद्यमान छे, ते पण सघळुं आ लीस्टमां दाखल थइ शक्युं नथी. हजु लगभग आटलुंज बीजुं साहित्य अमने नहीं मळेला भंडारोमां तेमज जुदाजुदा मुनिराजना भंडारोमां होवानो संभव छे. ते सिवाय विच्छेद गएल साहित्य विगेरे तरफ जोतां जैनसाहित्य घणुं महोटुं हतुं. अने तेनी बराबरी कोईपण मतवाळाए करी नथी. ते आ ग्रंथावळी तैयार थवाथी सिद्ध थयुं छे. उच्च श्रेणीना तत्त्वरुचिवाळा दरेक सज्जनोने आ ग्रंथावळी घणी उपयोगमां आवे तेवी छे.

आ जैन ग्रंथावळी नामनुं पुस्तक जैनमां प्रथमज उदयने पाम्युं छे, अने कोन्फरन्सनो पण आवुं एक उपयोगी पुस्तक बहार पाडवामां प्रथमज प्रयास छे. आ पुस्तक तैयार थतां दरमियान तेनी एक एक नकल हिंदुस्तानना तमाम साक्षर प्रोफेसरोने मोकलवामां आवी हती. जेमांना दरेक महाशयोए सदरहु पुस्तक माटे पोताना उच्च अभिप्राय आपी तेना उपयोगी पणानी कदर बुझी छे.

आ रीते जो के आपणे आवो एक साहित्यनो भोमियो (गाईड) मेळववामां फतेहमंद थया छीए. तो पण ए साधनथी आपणुं कर्तव्य समाप्त थयुं नथी. अमे पूर्वे जणावी गया तेम मुसलमानोनी जुलमी राज्यपद्धतिनी यथास्थित रीते क्रांति थतां हालनी ब्रिटिश सरकारनी न्यायी राज्यनीतिना शांत अमलमां ज्यारे तमाम धर्मीओ पोताना धर्मने पुष्टी आपवाने माटे नानाप्रकारना शोधोमां तल्लीन थई दिनप्रतिदिन आगळने आगळ वधता जाय छे त्यारे आपणे लोकालोक प्रकाशक श्री महावीर स्वामीना बच्चाओ दिनप्रतिदिन थती स्थितिनाश अनुभवता रहीए ए केटलुं शोचनीय कहेवाय. आपणी पाछी अनार्योना समयना आंग्ल, अमेरिकन, जर्मन, इटालियन, जपानीझ, आफ्रिकन आदि मनुष्यो जेओ प्राण वधनुं महत्त्व नहि समजता होवाथी जेमने आपणे (बारबेरियन्स) जंगली तरीके ओळखता हता तेज आंग्ल आदि लोको तेमनी शोधक बुद्धिना बळे [illegible] सुधरेला हिसाबमां पही चुक्या छे के साम्प्रतकाळे शोधोथी आपणा तत्त्ववेत्ताओना गुढ विचारोने पण मात आपवा समर्थ थया छे. एमनी बुद्धि तथा [illegible] देखी [illegible] प्रकारे समजवा लाग्या छे के पोताना साहित्यनी रक्षा करवा [illegible] आपणा महान आचार्योए रचेला अमूल्य ग्रंथो जेनुं हालमां [illegible] दर्शन तो शुं पण [illegible] तेमनुं दुर्लभ थयुं छे. जेवा अपूर्व ग्रंथो जर्मनीना विद्वान प्रोफेसरोनी दृष्टिए

राखवामां आव्या छे, एम आपणे सांभळीए छीए. आपणां पवित्र ग्रंथो आवा मंहदंतर उपर अन्यधर्मीओना हाथमां जवानुं कारण विचार करतां आपणी शिथिलता तथा आपणे शोधक वृत्तिथी वेगळा रह्या तेज जणाय छे. तेमज रोयल एशियाटिक सोसाइटीमां ते लोकोए बजावेली ज्ञाननी उत्तम सेवा जोइने एक बाजुथी अंतरात्मा एटलो शांत थाय छे के तेनुं वर्णन करवुं शक्तिनी बहार छे अने बीजी बाजुए आपणी कोम तरफ दृष्टी फेरवतां एटलो अफसोस तथा लज्जा उत्पन्न थाय छे के शुं आर्यमातानोज आपणापर कोप थयो छे. के आपणा अंतःकरणमां तेवा सद्विचारोने स्थानज आपती नही होय! आ उपरथी एक बीना अत्रे जणाववानी जरूर छे ते एके ज्ञान जेवी सर्वोत्कृष्ट वस्तुने तुच्छ गणनार अन्य भूमिवासीओए शोधक बुद्धिथी पोताना कुविचार फेरवी ज्ञाननी पुष्टी तथा रक्षा करवामां यावत् प्राणांत सुधीनुं कष्ट सहन करवा तत्पर थएला आपणे प्रत्यक्ष जोईए छीए. तो आपणे जे असलथीज ज्ञाननी महत्वता जाणी तेनी यथायोग्य सेवा बजाववानुं व्रत धारण करनार छीए तेमांना दीर्घदर्शीवाळा आचार्यो, विद्वान मुनिवरो, श्रेष्ट आगेवानो तथा गर्भ श्रीमंतोए समग्र जैन साहित्यनी एक जगोए व्यवस्थित रीते रक्षा थई शके तेवा साधनरूप एक "धी सेंट्रल जैन लायब्रेरी" स्थापन करवा माटे उदार विचारोने एकत्र करी तेने माटे मकान आदिनी योजना जेम बने तेम शीघ्रतायी आ माटे करवी न जोईए?

ज्ञाननी रक्षा एज संसाररूपी निबिडबंधनमांथी मुक्त थवानो सेहेलो मार्ग छे. ज्ञान एज मोक्षरूपी मंदिरमां प्रवेश करवानुं प्रथम द्वार छे. ज्ञाननी भक्ति करवाथीज तीर्थंकर आदि महान पुरुषो भवसमुद्रने तरीने मुक्तिने पाम्या छे. ज्ञाननो महिमा जेटलो वर्णवीए तेटलो ओछो छे. ए बाबतनो विशेष विस्तार सूत्रोमां तथा ग्रंथोमां कहेवाएलो छे. ज्ञाननो आवो अगाध महिमा जाणी आपणा ज्ञानात्मा पूर्वाचार्योए ज्ञाननी रक्षारूप भक्ति करवा माटे वर्षमां खास करीने एक दिवस पण नीमी आप्यो छे ते दिवस कार्तिक शुक्ल पंचमीनो छे. अने जे ज्ञान पंचमीना महापर्व नामे प्रसिद्ध छे. पूर्वेना पुण्यवान प्राणीओ आ पवित्र दिवसे मुनिवरोनी माफक तेवुंज पौषध आदि व्रत लइ ज्ञाननी भक्ति करवामां तल्लिन थता हता. तेओ भंडारमां बंद बारणे राखेली तमाम प्रतो दर्शन करवा माटे बहार काढता, अने तेमांनी जे जे प्रतने उद्देही तथा शरदीआदि नुकसान कारक चीजोथी भय पहोंचवानुं अथवा पहोंचेलुं तेमना जाणवामां आवतुं तो तेनो तात्कालीक पुनरुद्धार करवानुं नक्की करी ज्ञाननी रक्षा उत्तम प्रकारे थवाना साधनोनी तेज दिवसे विशेष योजना करी संपूर्ण प्रतोनुं पूजन, अर्चन, मार्जन आदिथी ज्ञाननी भक्ति करी महत्पुण्य उपार्जन करवामां लक्ष आपता हता. ते परंपरागत रूढीने मान आपीने हालमां पण ज्ञाननी रक्षा रूप भक्ति करवा माटे ज्ञान पंचमीने दिवसे ठेर ठेर महोत्सव थाय छे, पण आश्चर्य

के जेम जेम काळ बदलातो जाय छे तेम तेम मनुष्यो पण शुक्तिमासने रजता- मानवा लागता जणाय छे. पूर्वेना वखते भंडारमां रहेला तमाम ग्रंथोने व्यवस्थित तपासी जोइ तेमां पहोंचेला नारा तरफ पूर्ण लक्ष आपी ग्रंथोने दुरस्त तथा अपूर्ण ने पूर्ण बनाववानी अगत्यता विचारता; त्यारे हालमां ज्ञानना रक्षकपणानुं अभिमान वनार महाशयो फक्त जे उपाश्रयमां कोइ मुनिराज विराजता होय तो ते अगर ज्यां राजनो जोग न होय त्यां ते भंडारना मालिक पोते पोताना भंडारमांथी उत्तममां म सारा अक्षरोथी लखावेली अगर सोनेरी अक्षरोथी लखावेली पांच दश प्रतो दर्शन माटे ार काढी तेना उपर चित्र विचित्र झीक अने चळकता कसबथी भरेलां पाठां, चंदुआ, रुमाल दि शणगारी तेनी बाह्य सुंदरतामांज पोतानी कृतकृत्यता मानी ज्ञानभक्तिनी साफल्यता ने छे पण आम बाह्य सुंदरतामां सार्थकता मानवाथी ज्ञाननी केटली हानी थई छे अने थाय , ते तरफ तेमनुं तिलमात्र पण ध्यान खेंचायुं होय तेम जणातुं नथी. आम पूर्वेना द ज्ञानभक्तिना मार्गनो विपर्यास थवाथी आपणा ज्ञानना अभ्यासी मुनि महाशयोने दोईता ग्रंथो मेळववा माटे केवी अनिवार्य अगवडो भोगववी पडे छे. तेना घंटानाद शुं ळी तेमना कर्णरंध्र उपर पड्या नथी! हवे शुभ वखत आवी लाग्यो छे. आ ग्रंथावळी तैयार थवाथी साहित्यना ग्रंथो मेळववा माटेनी चिंता दूर गई छे. ए निर्विवाद छे. हवे साध्य समीप छे, अने साधन मेळववामाटे अमे चतुर्विध संघने नम्रतापूर्वक विनंति करीए छीए तो आवो सर्वोपयोगी हेतु सिद्ध करवा या माटे संघे तैयार थवुं जोईए नहीं. !

अमारी पूर्ण खात्री छे के जैन शासननी उन्नती इच्छनार महाशयो आ वात तेमनी जाणमां आव्यानी साथे एक वेळाए आ पुण्यनुं काम माथे उपाडी लेवा तैयार थशे, अने ते तेमने घटे पण छे.

अमे आ जमानाने अनुसरतुं कार्य आपनी सन्मुख मूक्युं छे. योग्य लागे तो स्वीकार करवो ते तमारुं काम छे. अने अयोग्य जणायतो जेम प्रथमथी थयुं छे, थतु आवे छे; अने थाय छे तेम थशे. एटलुं ध्यानमां राखवानुं छे.

प्रस्तुत ग्रंथावळी तैयार करवामां जे जे मुनि महाशयोए तथा गृहस्थोए पोतानी बनती सहाय आपी आ कार्यने उत्तेजन आप्युं छे ते बाबत तेमनो अंतःकरणपूर्वक उपकार मानीए छीए. आ कार्य खास विद्याविलासी मुनिवर्योनुज छे. अने पूर्वेना प्रबुद्ध आचार्योनुं अनुकरण करवुं ए तेमने उचित छे. अमे आशा राखीए छीए के हालमां विचरती संभिन्न गणाता आपणा मुनिवर्यो आ ग्रंथावळी माटे पोताने योग्य लागे ते सूचना आपवामां कोई पण प्रकारे ढील करशे नहीं. अने अमारा करेला परिश्रमने फलिभूत करशे.

आ ग्रंथावलीनुं कार्य अमे अमारी अल्प मति मुजब तेमां जणावेला ग्रंथनुं नाम, कर्तानुं नाम, श्लोकसंख्या तथा रचना काळना संवतनी चोकसी करवा माटे अमाराथी बनती काळजी राखी पूर्ण लक्ष आप्युं छे. छतां भूल करवी ते मनुष्य मात्रनो स्वभाव छे. ने क्षमा करवी ए सज्जनोनुं शील छे ए उक्ती मुजब अमारा अल्प ज्ञानना योगे मतिदोष थी के प्रुफ सुधारनी बेदरकारी दृष्टीदोषथी ग्रंथना नाममां, श्लोकसंख्यामां, कर्ताना नाममां, रचना काळमां, तथा पद्धति आदिमां जे कांइ भूल चूक थइ होय तेनी कृपापर वांचनारो तेमनी पेठे उदार बुद्धि वापरी क्षमा करशे अने अमने लखी जणाववा तस्दी लेशे ती अमे नम्रतापूर्वक प्रार्थना करीए छीए.

लिंबडी लिस्टनी करवानी के नीचे आपेली फुटनोटोमां अमे जे जे ग्रंथो दुर्लभ्य जणाव्या छे. ते ते ग्रंथो माटे विद्वान मुनि महाराजाओए खास लक्ष राखी शोध खोळ करी ते ग्रंथो दृष्टिगोचर थतां तेमनी हकीकत तथा अमे जणावेला ग्रंथना नाममां, श्लोकसंख्यामां, कर्ताना नाममां अगर रचना काळमां जे कांइ भूल तेमना जाणवामां आवे ते बाबतनी सूचना आ कोन्फरन्स ओफीसना सेक्रेटरीपर मोकली आपवामां आवशे तो तेनो महाउपकार मानी सुधारो करी हेरल्ड पत्र मारफत ते प्रसिद्ध करवामां आवशे. ॐ शांतिः

पायधुनी मुंबई.
ता. १-३-०९ } श्री जैन श्वेताम्बर कोन्फरन्स.

लिस्ट नं. १
जैनागम.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो संवत्.
	अंग ११.			
१	आचारांग.			
	मूळ	२५२५	सुधर्मस्वामि	
	निर्युक्ति गा. ३६२	४५०	भद्रबाहुस्वामि	
	चूर्णी	८३००		
	वृत्ति	१२०००	शीलाचार्य (शीलांक)	९३३
	टीका (प्र. श्रु.)		अजितदेव	
—	दीपिका	९२२५	खरतर जिनहंस	१५८२
२	सूत्रकृतांग.			
	मूळ	२१००	सुधर्मस्वामि	
	निर्युक्ति गा. २०८	२६५	भद्रबाहुस्वामि	
	चूर्णि	९९००		
	वृत्ति	१२८५०	शीलाचार्य	
	दीपिका*	६६००	हर्षकुल	१५८३
—	दीपिका (साधुरंगीय दीपिका)	१००००	साधुरंग	(Gov5)
३	स्थानांग.			
	मूळ	३७००	सुधर्मस्वामि	
	वृत्ति	१४२५०	अभयदेव	११२०
—	वृत्तिगत गाथावृत्ति	१३३०४	खर. सुमतिकल्लोल	१७०५
—	दीपिका	१८०००	नगर्षि	

* [illegible]

[illegible]	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	जेसलमेर.	लींबडी.	[illegible]	भावनगर.	अमदावाद.	अमदावाद.	वडोदरा.	मुंबई.	[illegible]	रिमार्क.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	छे	छे	छे	छे	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	छे	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	०	छे	छे	छे	छे	०	छे	
छे	०	छे	छे	छे	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
०	०	०	छे	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
०	छे	०	छे	छे	०	०	०	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	छे	छे	छे	छे	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	०	छे	छे	छे	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	छे	०	छे	छे	०	छे	छे	छे	०	छे	छे	छे	छे	०	छे	
छे	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
०	०	०	छे	छे	छे	छे	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	छे	
छे	छे	०	छे	छे	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	०	छे	छे	छे	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
०	छे	०	०	०	०	०	०	छे	०	०	०	०	०	०	०	
०	०	०	०	छे	०	०	०	छे	०	०	०	०	०	०	०	

संवत् १५८१ नी लखेली छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो संवत्.
१४	जीवाभिगम.			
	सूत्र	४७००	सुधर्मस्वामि	
—	चूर्णि	१५००		
	वृत्ति	१६०००	मलयगिरि	
—	लघुवृत्ति	११९२	हरिभद्र	
	"	पत्र ४३	देवसूरि	Dc.p,62*
१५	प्रज्ञापना.			
	सूत्र	७७८७	श्यामाचार्य	
	वृत्ति	१४५००	मलयगिरि	
—	लघुवृत्ति	३७२८	हरिभद्र	
	तृतीयपद संग्रहणी गा. १३३	१५०	अभयदेव	
—	" अवचूरि	४३०	कुलमंडन	
१६	जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति.			
	सूत्र	४४५४	सुधर्मस्वामि	
	चूर्णि	१८०९		
	वृत्ति (प्रमेयरत्नमंजूषा)	१८०००	शांतिचंद्र	१६५०
	वृत्ति	१८२५२	धर्मसागर	१६३९
	वृत्ति	१८२५२	हीरविजय	
	वृत्ति	१३२७५	वाचक. पुण्यसागर	१६४५
	वृत्ति	१५०००	ब्रह्मर्षि	

[illegible]	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	जेसलमेर.	लींबडी.	खंभात.	भावनगर.	अमदावाद.	अमदावाद.	कोडाय.	मुंबई.	[illegible]	रिमार्क.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
छे	०	छे	०	छे	०	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	०	०	०	०	०	छे	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
छे	०	छे	०	छे	०	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	०	छे	०	०	०	०	छे	०	०	०	०	०	०	०	छे	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	छे	
छे	०	०	छे	छे	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	०	०	छे	छे	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	०	छे	०	छे	०	०	छे	०	०	०	०	०	०	०	०	
छे	०	छे	छे	०	०	०	छे	०	छे	छे	छे	छे	०	०	छे	
छे	०	०	छे	०	०	०	०	०	०	०	०	छे	०	०	छे	
छे	०	छे	छे	छे	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	०	०	०	छे	छे	०	०	छे	
०	०	०	०	छे	०	०	०	छे	०	०	०	०	०	०	०	
०	०	०	०	०	०	०	०	छे	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
०	०	०	छे	०	०	०	०	०	छे	०	छे	छे	०	०	छे	
०	०	०	०	०	०	०	छे	०	०	०	०	०	०	०	०	
०	०	०	०	०	०	०	०	छे	छे	०	छे	छे	छे	छे	छे	

२

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो संवत्.
१७	चंद्रप्रज्ञप्ति			
	मूल	२२००	सुधर्मस्वामि	
	वृत्ति	९५००	मलयगिरि	
१८	सूर्यप्रज्ञप्ति			
	मूल	२२०५	सुधर्मस्वामि	
	वृत्ति	९०००	मलयगिरि	
१९	[illegible]			
	मूल	११०९	सुधर्मस्वामि	
	वृत्ति	७००	श्रीचंद्र*	११२८
	छेद १			
२४	निशीथ.			
	मूल	८२१	सुधर्मस्वामि	
	बृहद्भाष्य	१२०००		
	भाष्य, गा. ६४३९.	७४००		
	चूर्णि	२८०००	जिनदासमहत्तर	
	,, विंशोद्देशक चूर्णि	१६००	श्रीचंद्र†	

* आ श्रीचंद्रसूरि ते धनेश्वरसूरिना शिष्य हता.

† आ श्रीचंद्रसूरि ते मलधारी हेमचंद्रसूरिना शिष्य हता.

बृहट्टिप्पणि	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	जेसलमेर	लींबडी.	खंभात.	भावनगर.	अमदावाद.	अमदावाद.	वडोदरा.	पूना.	डेक्कनकॉ.	रिमार्क.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
छे	छे	•	छे	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	छे	छे	छे	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	छे	छे	•	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	छे	छे	•	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	छे	छे	छे	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	छे	छे	छे	छे	•	छे	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	•	•	छे	•	•	•	छे	•	•	•	छे	•	•	•	•	
छे	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	•	छे	छे	छे	•	•	छे	
छे	छे	छे	छे	छे	•	छे	•	•	छे	छे	छे	छे	•	•	छे	
छे	छे	•	छे	छे	•	•	•	•	छे	छे	छे	छे	•	•	छे	

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो संवत्.
	निशीथ विंशोद्देशक वृत्ति*	१००	पार्श्वदेव	११७२
	अवचूर्णि.†		प्रद्युम्नशिष्य	De.p 17
	पर्याय	पत्र ४१		De.p.116
	भाष्यविवेक.‡	पत्र १५०	रत्नप्रभशिष्य	
२५	बृहत्कल्प.			
	मुळ	४७३	भद्रबाहुस्वामि	
	बृहद्भाष्य§	१२०००		
	लघुभाष्य	८६००		
	चूर्णि×	१४७८०¶		

* आ वृत्ति बृहट्टिप्पनिकामां नोंधेली छे, पण ते कोई भंडारमां देखवामां आवी नथी, तेथी होवाथी एम अनुमान बंधाय छे के कदाच बृहट्टिप्पनिकामां ते भूलथी नोंधाइ होवी जोइये. सिवाय सहाय करी छे तो ते प्रमाणे आ व्याख्यामां पण तेमनी सहायता संबंधे कंइ लखेलु हशे ते परथी

† अवचूर्णि डेकन कॉलेजमां ताडपत्रपर लखेली छे. तेना कर्त्ता प्रद्युम्नसूरिना शिष्य लखेल छे पण

‡ एना कर्त्ता रत्नप्रभसूरिशिष्य लखेल छे पण ते कोण छे ते नक्की करवानुं छे.

§ डेकन कॉलेजना रिपोर्टमां पेज ८६ मां बृहद्भाष्यना श्लोक ८६०० आपेला छे.

× डेकन कॉलेजना पेज ४९मां लख्युं छे के बृहत्कल्पनी चूर्णिना कर्ता प्रलंबसूरि छे. अने भाष्य

¶ आ श्लोक संख्या एवी रीते छे के श्लो. ११७०० नी सामान्यचूर्णि छे अने श्लोक पनी एक टीपमां श्लो. १४७८० नो आंक मळ्यो छे ते परथी ते संख्या कायम राखी छे. छतां

[illegible]	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	जेसलमेर	लींबडी.	खंभात.	भावनगर.	अमदावाद	अमदावाद	कलकत्ता.	मुंबई.	[illegible]	रिमार्क.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
छे	•	०	०	•	०	०	•	०	०	•	०	•	•	०	•	
•	•	०	०	०	०	•	•	०	•	•	•	•	०	•	छे	
•	•	•	•	•	०	•	०	०	०	०	०	०	•	•	•	
•	•	•	•	•	०	•	•	०	•	०	•	छे	•	•	•	
छे	०	•	छे	•	छे	छे	•	छे	छे	छे	•	छे	छे	छे	छे	
छे	•	•	०	•	•	•	छे	•	•	•	छे	छे	•	०	छे	
छे	छे	छे	•	छे	छे	छे	०	छे	•	छे	छे	छे	•	•	छे	
छे	छे	छे	०	०	छे	छे	छे	•	•	छे	छे	छे	छे	•	छे	

[illegible]

ते कोना छे ते हजी नक्की करवानुं छे.

[illegible] संवत् १११४ छे.

११०० नी [illegible] १२८०० [illegible] छे अने ते [illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो संवत्.
	वृत्ति	४२०००	तपाक्षेमकीर्ति.[॥]	१३३२
—	लघुटीका.[‡]	१३१७		
	निर्युक्ति.[¶]	६२५	भद्रबाहुस्वामि	
२६	व्यवहार			
	मूळ	३७३	भद्रबाहुस्वामि	
	भाष्य गा. ४६२९	५७८६		
	चूर्णि	१०३६०		
	वृत्ति	३३६२५	मलयगिरि	
—	अवचूरि+ (लघुवृत्ति)	पत्र १४२		
२७	दशाश्रुतस्कंध.			
	मूळ§		भद्रबाहु	८९०
	निर्युक्ति गा. १४४	१८०	भद्रबाहु	
	चूर्णि	२२२५		
	वृत्ति	५१५०	ब्रह्मर्षि.[॥]	

॥ एमां आदिना श्लोक ४६०० मलयगिरिकृत छे अने बाकीना क्षेमकीर्तिकृत छे.

‡ एना कर्ता कोण छे ते डेलावाळी प्रत जोवाथी नक्की थाय तेम छे.

¶ दश निर्युक्तिओनी गाथामां कल्प तथा व्यवहारनी निर्युक्ति गणावी छे, पण तेमांनी आ हारनी निर्युक्ति भाष्य भेगी होवी जोइये. ते सिवाय तेनी जूदी प्रत मळी नथी, माटे शोधक जनोए

+ पाटणनी टीपमां अवचूरि लखेल छे ने डेलानी टीपमां लघुवृत्ति करेल छे, माटे ते एकज श्लोकसंख्या मेळववी जरूरनी छे.

§ कल्पसूत्र ए दशाश्रुतस्कंधनु आठमुं अध्ययन छे अने ते श्लोक १२१६ नुं गणाय छे, ते वामां आवनार होवाथी तेना श्लोक बाद करीने आ सूत्रनी श्लोक संख्या आपी छे.

॥ ब्रह्मर्षि पार्श्वचंद्रना शिष्य हता अने तेणे विक्रम संवत् १६०० ना अरसामां आ टीका करी छे

	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	जेसलमेर.	लींबडी.	खंभात.	[illegible]	अमदावाद	[illegible]	[illegible]	मुंबई.	[illegible]	रिमार्क.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	•	•	छे	
	•	•	छे	•	•	•	•	•	•	•	छे	•	•	•	•	
	•	•	•	•	छे	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	
।	•	छे	छे	छे	•	•	•	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
३	छे	•	•	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	•	•	छे	
३	छे	•	•	छे	•	छे	छे	छे	•	छे	छे	छे	•	•	छे	
छे	छे	•	•	छे	छे	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
•	•	•	छे	•	•	•	•	•	•	•	छे	•	•	•	•	
छे	•	•	छे	•	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	छे	•	•	•	•	•	•	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	छे	•	छे	छे	•	छे	छे	•	छे	छे	छे	छे	•	•	छे	
•	•	•	•	•	•	•	•	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो संवत्.
२८	पंचकल्प			
—	मूळ. *	११३३	†	
	भाष्य गा. २५७४	३१८५	संघदास	
	चूर्णि.‡	३२७५		
२९.	महानिशीथ.			
	मूळ.*	४५४८	मू. सुधर्मस्वामि उद्धारकर्ता हरिभद्र.†	
	———			

* पंचकल्पनुं मूल संवत् १६१२ सुधी मोजुद हतुं, पण हालमां ते गुम थयुं छे. एना संबंधे एटलो पत्तो मळ्यो छे के खंभातमां शेठजी देवचंदजीना पासे जे पुस्तको छे तेमां ते प्रत पाना १० [illegible] करी जोइये छीए.

[illegible] मूळ गुम थवाथी हालमां ४५ आगमनी गणतीमां तेना बदले जीतकल्प नामना सूत्रनुं

† पंचकल्पना कर्ता कोण हता ते संबंधे भाष्यकारे मंगलाचरणमां "वंदामि भद्दबाहुं" एवुं पद [illegible] तेना कर्ता संघदास जणाय्या छे एम सांभळ्युं छे. हवे पीठी [illegible] जोइये तो संघदास-

‡ [illegible] रिपोर्टमां पेज ६२ मां चूर्णिकार आम्रदेव लखेल छे. तो ते आ प्रमाण

* बृहट्टिप्पनिकामां एनी लघुवाचना, मध्यमवाचना, अने बृहद्वाचना एम त्रण वाचना [illegible] छे.

[illegible] उधईए [illegible] "तेमनो [illegible] भाग श्रीहरिभद्राचार्ये सांधीने ते ग्रन्थो [illegible] पुस्तकारूढ कर्यां अने विक्रम संवत् ५८५मां हरिभद्रसूरि स्वर्गवासी थया तेथी पुस्त-

पालीताणा	पाटण	पाटण	पाटण	पाटण	पाटण	पाटण	जामनगर	लींबडी	भावनगर	पालनपुर	अमदावाद	अमदावाद	कोडाय	मुंबई	डेक्कनकॉ.	रिमार्क.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
छे	•	•	•	०	०	•	०	०	•	०	०	•	•	०	०	घणुं शोध करतां पण ओनी प्रत हाथ आवी नथी. डेक्कन कॉलेजना संग्रहमां पण ते मळी नथी. पण जो तेनी टीकामां लखेली अन्य छे तो ते मळी शकवानो संभव छे, माटे शुभरुचि शोधक करनार मां
छे	छे	•	छे	•	•	•	छे	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	ग्रंथ भाषामां आवे छे.
छे	छे	०	छे	छे	छे	•	छे	छे	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	लखवुं छे तेथी एम जणाय छे के ते भद्रबाहुस्वामीए रचेलुं हशे-पण! नियुक्तिसूत्रमां नथी तो एम आश्चर्य छे, माटे ए बाबत वधु तपास करवी नहीं थाय तेम छे.
																जणावी रहे छे ते लखवुं बस्तुं छे.
																बहुधा श्लो. १५००–२६००–४५४८ नी प्रतो छे, पण तेमां एकी मुद्रितपत्र हस-
छे	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	तनी छोडी छे. तेथी एम जणाय छे के हरिभद्रसूरिनुं मत सोंप्युं छे. जिनदेवसूरे ५२१ नी साल एम करे हरिभद्रसूरिना स्वर्गवास समयना संवत्सरमां आ सूत्रनो उद्धार करे छे.

३

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो संवत्
	मूल ७.*			
३०	आवश्यक.			
	मूळ	१३०	सुधर्मस्वामि	
	निर्युक्ति गा. २५५०	३१००	भद्रबाहुस्वामि	
	भाष्य (विशेषावश्यक) गा. ३१२५	४०००	जिनभद्रगणि	
	चूर्णि	१३६००†	जिनदासमहत्तर	
—	बृहद्वृत्ति.	२२०००	हरिभद्र	
	वृत्ति §	१८०००	मलयगिरि	
	लघुवृत्ति	१०६५०	तिलकाचार्य	१२९६
	अवचूरि	७८८५	ज्ञानसागर	१४४०
—	अवचूरि पत्र.‡ १२६		शुभवर्द्धन.¶	

* आवश्यक, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन तथा पिंडनिर्युक्ति के ओघ निर्युक्तिमांना गम ते एकने बदेलाई माटे ७ गणाव्या छे. § जेसलमेरनी टीपमां अना श्लोक १०००० लखेल छे.

† बृहट्टिप्पनिकामां एनी श्लोकसंख्या १३६०० तथा १८४७४ एम बे आपेली छे ते परथी बाबत तपास करी नक्की करवी.

‡ दर पत्रे अनुमाने ५० श्लोक गणिए तो ६३०० मा लगभग होवी जोइये.

¶ शुभवर्द्धनगणि हेमविमलसूरिना वारे हतां. हेमविमलसूरि सं. १५७० मां थया छे.

पुस्तकनांम	पाठशा.	पाठशा.	पाठशा.	पाठशा.	पाठशा.	पाठशा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रिमार्क.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
छे	•	छे	छे	•	•	छे	छे	•	•	•	छे	छे	छे	•	छे	
छे	छे	•	छे	छे	•	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	•	छे	छे	•	•	•	छे	•	•		छे	छे	छे	छे	छे	
छे	छे	छे	•	छे	छे	छे	•	•	छे	•	छे	छे	छे	•	छे	
छे	•	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	•	•	•	छे	छे	•	•	•	छे	•	•	•	•	•	छे	
छे	छे	छे	•	छे	•	•	छे	•	छे	छे	छे	छे	•	•	छे	
छे	छे	•	छे	छे	•	•	•	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	छे	•	•	•	•	

[illegible]

[illegible]

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्ता	रच्यानो संवत्
	[illegible]	४६५०	मलधारि हेमचंद्र*	
	[illegible]चूर्णि	२८०००	मलधारि हेमचंद्र	
		[illegible]	मलयगिरि	
	[illegible]	१४०००		
	[illegible]	[illegible]	[illegible]*	Do.

* आ [illegible] तेमना गुरुनुं नाम [illegible]

[illegible] उपलब्ध थई नथी,

[illegible] छे, [illegible]

[illegible]

बृहट्टिप्पणिका	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	जेसलमेर	लींबडी.	खंभात.	भावनगर	[illegible]	अमदावाद	कोडाय.	मुंबई.	[illegible]	रिमार्क.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
छे	छे	छे	छे	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	•	•	छे	
छे	•	छे	छे	छे	छे	•	•	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	
छे	•	छे	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	
•	•	•	छे	•	•	•	छे	•	•	•	•	•	•	•	छे	

आम्रदेव छे. तेमणे सं. ११६४ मां [illegible] टीका रची छे. अने तेमणे [illegible]

[illegible]

[illegible] सं. ११९४ मां [illegible] छे.

[illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो संवत्.
	आवश्यकनी व्याख्याना परचूरण ग्रंथो.			
	श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति	१५५०	नमिसाधु*	११२२
	„ (वंदारुवृत्ति भाष्य)†	२७२०	देवेंद्रसूरि	
	षडावश्यक वृत्ति (अर्थदीपिका)	६६४४	रत्नशेखर	१४९६
	षडावश्यक [illegible] ‡			

* [illegible] नाम [illegible] छे. [illegible] काव्यालंकारपर स. ११२५ मां टीका रची छे.

† [illegible] आदिमां वंदारु होवाथी तेनुं नाम [illegible] देवेंद्रसूरिनुं नाम [illegible] छे, पण केटलाक [illegible] कर्ता [illegible] छे. [illegible] प्रमाणे एना कर्ता देवेंद्रसूरि [illegible] एवा नामथी पण कोई [illegible] [illegible]

‡ [illegible]

	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	जेसलमेर	लींबडी.	खंभात.	भावनगर	अमदावाद	अमदावाद	कोडाय.	मुंबई.	डेकनकॉलेज.	रिमार्क.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
छे	छे	०	०	०	०	०	छे	०	छे	०	छे	छे	०	०	छे	
छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे		
०	०	०	०	छे	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

[illegible]

[illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो संवत्.
	षडावश्यक विधि	२३७५	आंच० महीसागर *	१४९८
	षडावश्यक लघुवृत्ति	३०००	कुलप्रभ †	
	ललित विस्तरा	१२७०	हरिभद्र	
	,, टिप्पनक	१८००	मुनिचंद्र ‡	
—	चैत्यवंदना वृत्ति	४८२	हरिभद्र	
—	,, (बालावबोधा). (जूनीगुर्जर)	७०००	खरतर तरुणप्रभ	१४११
—	चैत्यवंदना महाभाष्य गा०	९२२	शांतिसूरि §	—
	,, भाष्यवृत्ति ‖			
	चैत्यवंदना विचार (गाथाबद्ध) ‖			

* आ महीसागर उपाध्याय आंचलिक जयकेशरिसूरिना शिष्य हता.

† एमनो रचेलो बीजो ग्रंथ आराधनासत्तरी छे.

‡ मुनिचंद्रसूरिए सं. ११७४ मां उपदेशपदनी टीका रची छे. एमना हाथे सं. ११८१ मां

§ उत्तराध्ययन वृत्तिकर्ता थारापद्रगच्छना वादि वेताल शांतिसूरि सं. १०९६ मां स्वर्गस्थ थी स्वीकारिए तो पृथ्वीचंद्र चरित्रना कर्ता शांतिसूरि के जेमणे ते चरित्र सं. ११६१ मां रच्युं छे ते बे शांतिसूरिमांथी आ महाभाष्य कोणे कर्युं छे ते तेवा विशेष उल्लेख शिवाय जाणवुं मुश्केल छे. माटे

एना माटे बृहट्टिप्पणिकामां नीचे मुजब उल्लेख छे:—" चैत्यवंदनामहाभाष्यं श्रीशांति

‖ आ बे ग्रंथ बृहट्टिप्पणिकामां नोंधायला छे पण त्यां तेमना कर्ता तथा श्लोक संख्या नोंधेल माटे ते बाबत कांइ विशेष लखी शकातुं नथी. चैत्यवंदनाविचारमाटे बृहट्टिप्पणिकामां आवो

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रिमार्क.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
•	•	•	•	•	•	•	०	•	•	•	•	•	•	०	छे	
•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	०	•	•	•	छे	
छे	•	•	छे	छे	•	•	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	•	छे	
छे	•	छे	छे	छे	छे	•	•	•	•	•	छे	छे	•	•	छे	
छे	•	छे	•	•	•	•	•	•	•	•	छे	•	•	•	छे	
छे	•	•	•	•	•	•	०	छे	•	•	छे	छे	•	•		
छे	•	०	•	छे	•	०	•	•	•	०	छे	छे	•	•	छे	
छे	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	
छे	०	०	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो संवत्.
	* श्राद्धसामायिकप्रतिक्रमण सूत्रव्याख्याप्रकरण गा.२९३	३६५	जिनदेव	१३८३
	प्रतिक्रमण वृत्ति	७१८	{ जिनहर्ष *	१५२५ Gov.
	,, अवचूरि	१६२०	{ कुलमंडन +	Gov.
—	प्रतिक्रमण वृत्ति ‡		(वृहद्गच्छीय) तिलक-सूरि	
	प्रतिक्रमण क्रमविधि	९००	जयचंद्र ×	१५०६
	प्रतिक्रमण संग्रहणी § (प्रा.)	११५		Gov.
—	प्रत्याख्यान स्वरूप गा. ३६०	४७०	यशोदेव ¶	११८२
	,, वृत्ति ‖	५५०	,,	,,

* आ ग्रंथ माटे बृहट्टिप्पनिकामां नीचे मुजब चोकस नोंध छे:—

" श्राद्धसामायिकप्रतिक्रमणसूत्रव्याख्याप्रकरण ११८२ वर्षे जैनदेवं गा. २९३ श्रो जिनदेवसूरि सोमतिलकसूरिना शिष्य हता तेमनो संक्षिप्त इतिहास जिनप्रभसूरिकृत तीर्थकल्पमांना-निकामां सं. ११८२ आपेल छे त्यां लिखितदोषथी सगडाना बदले एकडो कलायो लागे छे.

* आ जिनहर्षगणि तपगच्छना सोमसुंदरसूरिना शिष्य जयचंद्रसूरिनां शिष्य छे के जेमणे घणां ग्रंथो रच्या छे.

+ कुलमंडनसूरि संवत् १४४२ थी १४४५ सालमां हता.

‡ बृहट्टिप्पनिकामां एना माटे आ रीते उल्लेख छे:—" प्रतिक्रमणसूत्रटीका तिलकसूरि "

× जयचंद्रसूरि ते सोमसुंदरसूरिना शिष्य हतां.

§ आ ग्रंथ डेक्कन कॉलेजमां छे, ते सिवाय बीजे मळतो नथी तो तेनुं के तेनी तपास

¶ यशोदेवसूरिने कोई कोई अगोप यशोभद्रना नामथी पण कहेला छे, तेथी एम जणाय कर्ता यशोभद्र लख्या छे.

‖ बृहट्टिप्पनिकामां आ वृत्ति नोंधी छे पण ते उपलब्ध थइ नथी.

[illegible]	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रिमार्क.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
છે	•	•	-	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	
•	•	•	•	•	•	-	•	•	•	•	•	•	•	•	છે	
•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	છે	
છે	•	છે	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	
•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	છે	છે	છે	•	•	છે	
•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	છે	
છે	•	•	•	•	•	•	•	છે	•	•	•	•	•	•	•	
છે	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	

१६९ " [illegible] छे [illegible] छे [illegible] करवी जोइये.

[illegible] छे, [illegible] नं. ११८१ नी [illegible] छे. [illegible]

[illegible] छे. [illegible]

[illegible] जोइये.

[illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्याने संवत्.
	* श्राद्धसामायिकप्रतिक्रमण सूत्रव्याख्याप्रकरण गा.२९३	३६५	जिनदेव	११८३
	प्रतिक्रमण वृत्ति	७१८	जिनहर्ष •	१५२५ Gov.
	„ अवचूरि	११२०	कुलमंडन +	Gov.
—	प्रतिक्रमण वृत्ति ‡		(बृहद्गच्छीय) सिद्धत्त-सूरि	
	प्रतिक्रमण क्रमविधि	९००	जयचंद्र ×	१५०६
	प्रतिक्रमण संग्रहणी § (प्रा.)	११५		Gov.
—	प्रत्याख्यान स्वरूप गा. ३६०	४००	यशोदेव ¶	११८२
	„ वृत्ति ‖	५५०	„	„

* आ ग्रंथ माटे बृहट्टिप्पनिकामां नीचे मुजब चोकस नोंध छेः—

" श्राद्धसामायिकप्रतिक्रमणसूत्रव्याख्याप्रकरणं ११८३ वर्षे जैनदेवं गा. २९३ " जिनदेवसूरि सोमतिलकसूरिना शिष्य हता तेमनो संक्षिप्त इतिहास जिनप्रभसूरिकृत तीर्थकल्पमांना निकामां सं. ११८३ आपेल छे त्यां लिखितदोषथी सगडाना बदले एकडो कलायो लागे छे.

• आ जिनहर्षगणि तपगच्छना सोमसुंदरसूरिना शिष्य जयचंद्रसूरिनां शिष्य छे के जेमणे नोंध्या छे.

+ कुलमंडनसूरि संवत् १४४२ थी १४४५ सधीमां हता.

‡ बृहट्टिप्पनिकामां एना माटे आ रीते उल्लेख छेः—" प्रतिक्रमणसूत्रटीका दिगंबरी "

× जयचंद्रसूरि ते सोमसुंदरसूरिना शिष्य हतां.

§ आ ग्रंथ डेक्कन कॉलेजमां छे, ते शिवाय बीजे मळतो नथी तो तेटुं के तेनी ...

¶ यशोदेवसूरिने कोई कोई जगोए यशोभद्रना नामथी पण कहेला छे, तेथी एम ... तेना कर्त्ता यशोभद्र लख्या छे.

‖ बृहट्टिप्पनिकामां आ वृत्ति नोंधी छे पण ते उपलब्ध थई नथी.

[illegible]	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	जेसलमेर	लींबडी.	खंभात.	भावनगर	अमदावाद	अमदावाद	कोडाय.	मुंबई.	[illegible]	रिमार्क.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
छे	•	•	-	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	
•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	छे	
•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	छे	
छे	•	छे	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	
•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	छे	छे	छे	•	•	छे	
•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	छे	
छे	•	•	•	•	•	•	•	छे	•	•	•	-	•	•	-	
छे	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	

११९ " [illegible]

[illegible] ११८१ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो संवत्.
—	[illegible]चूर्णि	४००	(मळमेलमां छे)	
—	[illegible] भा. ३३०	२८०	शांतिसूरि*	Gov. 5
	[illegible]	७००	जयचंद्र	
	[illegible] ([illegible])	२५०	मतिसागर‡	११९८
[illegible]	दशवैकालिक.			
	मूळ	७००	शय्यंभवस्वामीजी	
	निर्युक्ति भा. [illegible]	५५०	भद्रबाहुस्वामी	
	चूर्णि	७०००		
	बृहद्वृत्ति	६८५००	हरिभद्रसूरि	
	वृत्ति	७०००	तिलकाचार्य	१२५१
	अवचूर्णि	२१००	सुमतिसूरि *	
	लघुवृत्ति	[illegible]	आगम. [illegible]	१[illegible]

* [illegible]

* [illegible]

* [illegible]

* [illegible]

[illegible]	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	जेसलमेर.	लींबडी.	[illegible]	[illegible]	अमदावाद	अमदावाद	[illegible]	मुंबई.	[illegible]	रिमार्क.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	
•	•	छे	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	
•	•	•	•	•	छे	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	
छे	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	
छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	छे	छे	•	छे	•	छे	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	•	•	छे	छे	•	•	छे	
छे	छे	छे	छे	छे	•	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	•	•	•	•	छे	•	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	•	छे	छे	छे	छे	•	छे	•	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
[illegible]	[illegible]	•	•	•	•	•	•	•	छे	•	•	•	•	•	•	

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो संवत्.
—	,, अवचूरि		शांतिदेव*	
	,,	१८००		
	,,	१२००		
	,, (शब्दार्थवृत्ति)	३०३२	समयसुंदर	अजमेर
—	निर्युक्त्यवचूरि	पत्र ९		
	वृत्तिदीपिका	पत्र १११	माणिक्यशेखर	
३२	उत्तराध्ययन.			
	मूळ	२०००	सुधर्मस्वामी	
	निर्युक्ति गा. ६०७	७००	भद्रबाहुस्वामी	
	चूर्णि	५८५०	गोपालिय महत्तर शिष्य†	
	बृहद्वृत्ति	१६०००	शांतिसूरि ‡	
	लघुवृत्ति	१२०००	नेमिचंद्रसूरि¶	११२९
	वृत्ति	१४२५५	भावविजय	१६[illegible]

* शांतिदेव ने शांतिसूरि ते एकज छे के जुदा छे ते चोक्कस थवुं जोइए. अने जुदा साबित

† जो के इहां गोपालिय महत्तरना शिष्य ते कोण ते संबंधे विशेष नाम आपेल नथी, पण अमारा छतां कोइ चोक्कस पुरावो मळे तो वधु निर्णय थइ शके.

‡ आ शांतिसूरि ते थारापद्रगच्छीय वादिवेताल्शांतिसूरि छे के जेमना माटे वेरे एवी नोंध

¶ एमनुं साधुपणामां देवेंद्रनाम हतुं पण तेओ सूरि थया त्यारे नेमिचंद्रना नामे ओळखाया छे. सैद्धांतिक शिरोमणि तरीके पंकाता हता.

[illegible]	पाटण	पाटण	पाटण	पाटण	पाटण	पाटण	जेसलमेर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रिमार्क.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
•	०	•	ऐ	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	
•	•	•	•	ऐ	•	०	•	•	ऐ	•	•	•	•	•	ऐ	
•	•	•	•	•	•	•	•	ऐ	•	•	•	•	•	•	•	
•	•	•	•	•	०	•	•	•	•	•	•	•	•	०	•	
०	•	•	•	०	०	•	•	•	•	•	ऐ	•	•	•	•	
•	•	•	०	•	•	•	•	•	•	०	ऐ	•	•	•	०	
ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	
ऐ	ऐ	•	ऐ	ऐ	•	•	ऐ	•	•	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	
[illegible]	ऐ	•	ऐ	•	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	•	•	ऐ	ऐ	•	•	ऐ	
ऐ	०	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	•	•	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	
ऐ	०	ऐ	ऐ	•	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	•	ऐ	ऐ	
[illegible]	[illegible]	•	ऐ	•	•	•	•	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	•	•	ऐ	

[illegible] के [illegible].

[illegible] हैं [illegible] होती है.

[illegible] सं० १०११ [illegible] है.

[illegible]

नंबर.	ग्रन्थ.	श्लोक.	कर्ता.	छपायो? संवत्
१३	पिंडनिर्युक्ति.			
	मूळ गा. ७०८	८३५	भद्रबाहुस्वामी	
	वृत्ति	७०००		
	लघुवृत्ति	* ३८००	वीराचार्य †	
	बृहद्वृत्ति	‡ ७०००	मलयगिरि	
	अवचूरि	१८३२	माणिक्यशेखर	
१४	ओघनिर्युक्ति.			
	मूळ गा. ११६४	१३५५	भद्रबाहुस्वामी	
	भाष्य गा. ३२३०	३०००		
—	§ चूर्णि			
	वृत्ति	¶ ८३८५	द्रोणाचार्य:	
	वृत्ति	‖ ७५००	मलयगिरि	
	दीपिका	५३००	माणिक्यशेखर	

* एमां मूळना श्लोक ११५० हरिभद्र सूरिकृत छे. अने बाकीना वीराचार्यकृत छे.

† वीराचार्य माटे बृहट्टिप्पनिकामां एवो उल्लेख छे के " देवाचार्य शिष्य वीराचार्यनी. " वळी छे. एम अभयसूरिकृत अवलोकनी प्रशस्तिमां छे. मुनी रिद्धि पोथी पेज १९ माटे जे देवाचार्यनी लिखित दोर थशे मननी सं. ११६९ मां जीतानुशासननी वृत्तिना कर्ता देवसूरि पण तेमना

‡ अमुक वृत्तिना श्लोक ७५०० छे.

§ चूर्णि बृहट्टिप्पनिकाने पण उपलब्ध थई नथी तेथी ते लोप थवाथी गुम थएली लागे छे.

‖ एमणे अभयदेवसूरिकृत नागीवृत्तिओ शोधी छे. मांडे ते सं. ११९० मां हता.

¶ अमुक श्लोक संख्या ८३७० छे.

पूर्णसूचि	पाटण.	पाटण	पाटण	पाटण.	पाटण.	पाटण.	जेसलमेर.	लींबडी	खंभात.	भावनगर.	अमदावाद.	अमदावाद.	कोडाय.	मुंबई.	सुरत.कर्ता	रिमार्क.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
छे	छे	छे	छे	छे	छे	•	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	•	•	•	•	•	•	छे	•	•	•	•	•	•	•	•	
छे	छे	•	छे	•	•	•	छे	•	•	•	छे	छे	•	•	•	
छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	•	•	•	•	•	•	•	
•	•	•	छे	•	•	•	छे	•	•	•	•	•	•	•	छे	
छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	छे	•	•	छे	•	•	•	छे	•	•	छे	छे	•	•	छे	
छे	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	
छे	•	•	छे	•	छे	छे	छे	छे	•	छे	छे	छे	•	•	छे	
छे	छे	•	छे	•	•	•	•	छे	•	छे	छे	छे	छे	•	छे	
•	•	•	छे	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	०	•	

[illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो संवत्.
	अवचूरि	३२००	ज्ञानसागर	
	उद्धार	१११	—	
३५	नंदि			
	मूळ	७००	देवर्द्धिगणि †	
	चूर्णि	१५००	—	७३३
	लघुवृत्ति	२३००	हरिभद्र	
	वृहद्वृत्ति	७७३२	मलयगिरि	
—	लघुवृत्ति टिप्पनक §			
	(विषमपदपर्याय)	३३००	श्रीचंद्र	
—	सर्वसिद्धांतविषमपदपर्याय	२५९५	श्रीचंद्र	
	अवचूरि	१६०५	देव्यावसूरि ‡	
३६	अनुयोगद्वार.			
	मूळ	१८९९	आर्यरक्षित	

† देवर्द्धिगणिए वीरप्रभुथी ९९३ वर्षे एटलेके विक्रम सं. ५२३ मां सूत्रो पुस्तकारूढ करतां

§ आ बन्ने ग्रंथ जूदा जूदा छे के केम ते विषे विचार करतां तेना कर्त्ता एक होवाथी एम बीजी संख्या सरभीज थई रहे छे ते परथी ते एकज ग्रंथ होय तो पण होय माटे ए बाबत बन्ने ग्रंथना

‡ चंचलमाना भंडारमां रहेली आ अवचूरिना अंते तेना कर्त्ता देव्यावसूरि लखेल छे. पण ए देव्यावसूरि नहि पण देवसूरि होवु जोईये.

पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	जेसलमेर	लींबडी.	[illegible]	भावनगर.	अमदावाद.	अमदावाद.	कोडाय.	मुंबई.	बीकानेर.	रिमार्क.
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
०	०	छे	०	०	०	०	छे	छे	छे	छे	छे	०	०	छे	
०	०	०	छे	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
०	छे	छे	छे	०	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
०	०	०	छे	छे	छे	०	छे	०	०	छे	छे	०	०	छे	
छे	०	०	छे	छे	छे	०	०	०	०	छे	छे	०	०	छे	
०	छे	छे	छे	०	०	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
०	०	०	छे	०	छे	छे	०	०	०	छे	छे	०	०	छे	
छे	०	०	छे	०	छे	छे	०	०	०	०	०	०	०	०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	छे	०	०	०	
छे	छे	छे	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो संवत्.
	चूर्णि	२२६५	जिनदासमहत्तर	
—	लघुवृत्ति	३०००	हरिभद्र	
	बृहद्वृत्ति	५८००	मलधारि हेमचंद्र	
	पयन्ना १०.			
३७	चतुःशरण*			
	मूळ गा. ६४	८०	वीरभद्रगणि †	
	वृत्ति	८००	आंच० भुवनतुंग §	
	अवचूरि		गुणरत्न ‡	
३८	आतुरप्रत्याख्यान.			
	मूळ गा. ८४	१००		
	वृत्ति	४२०	आंच० भुवनतुंग	
	अवचूरि		गुणरत्न	
३९	भक्तपरिज्ञा.			
	मूळ गा. १७१	२१५		
	अवचूरि		गुणरत्न	

* एनुं बीजुं नाम " कुशलानुबंधि अध्ययन " एवुं पण छे.

† आ वीरभद्र महावीर प्रभुना शिष्य हता एम तेनी टीकामां लखेलुं छे तेथी आराधनापताकाना

§ भुवनतुंगसूरि आंचलिक जयशेखरसूरिना वारे हता तेमणे बीजो ग्रंथ सीताचरित्र नामनो रचेल छे.

‡ गुणरत्नसूरि सोमसुंदरसूरिना गुरुभाई हता. तेमणे षड्दर्शन समुच्चयनी टीका तथा सं. १४६६

[illegible]	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	पाटण.	जेसलमेर.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अमदावाद.	अमदावाद.	[illegible]	मुंबई.	[illegible]	रिमार्क.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	•	•	छे	छे	•	•	छे	
छे	•	•	•	•	•	•	छे	•	•	•	•	•	•	•	•	
छे	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	छे	•	छे	छे	•	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	•	•	•	•	•	छे	•	छे	छे	•	छे	छे	•	•	छे	
•	छे	•	छे	छे	•	•	•	छे	•	•	छे	छे	•	•	छे	
छे	छे	•	छे	छे	•	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	•	•	•	•	•	छे	•	•	•	•	छे	छे	•	•	छे	
•	छे	•	छे	छे	•	•	•	छे	•	•	छे	छे	•	•	छे	
छे	छे	•	छे	•	•	•	•	•	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
•	छे	•	छे	•	•	छे	•	छे	•	छे	छे	छे	•	•	छे	

[illegible]

[illegible]

नंबर	नाम	श्लोक	कर्ता	रच्यानो संवत्
४०	संस्तारक.			
	मूळ गा. १२१	१५१		
	अवचूरि*		गुणरत्न	
४१	तंदुलवैचारिक.			
	मूळ गा. ४००	५००		
	वृत्ति	पत्र ३८	विजयविमल †	
४२	चंद्रवेध्यक			
	मूळ गा. ११४	२००		
४३	देवेंद्रस्तव.	३७१		
	मूळ गा. ३०२			
४४	गणिविद्या.	१०५		
	मूळ गा.			
४५	महाप्रत्याख्यान.	१७६		
	मूळ गा. १४३			
४६	वीरस्तव.	५०		
	मूळ गा. ४३			

* चतुःशरण, आतुरप्रत्याख्यान, भक्तपरिज्ञा तथा संस्तारक ए चारे पयन्नानी अवचूरिओ मळीने

† एमने सं. १६३४ मां गच्छाचार पयन्नानी वृत्ति रचेल छे.

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रिमार्क.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
छे	छे	०	छे	०	०	०	०	०	छे	०	छे	छे	०	०	छे	
०	छे	०	छे	०	०	०	०	छे	०	०	छे	छे	०	०	छे	
छे	छे	०	छे	छे	०	छे	०	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	छे	०	छे	०	०	
छे	छे	छे	०	छे	०	छे	छे	०	छे	छे	छे	छे	छे	०	छे	
छे	छे	०	०	छे	छे	छे	०	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	छे	०	छे	छे	छे	छे	०	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	छे	छे	छे	छे	०	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	
छे	छे	०	छे	छे	०	०	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	छे	

[illegible] ८०० [illegible] छे.

उपसंहार.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अवशिष्ट आगमो.

पूर्वप्रदर्शित पिस्तालीश आगमना अंतर्भूत रहेला छतां

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो संवत्.
१	पर्युषणाकल्प ‡			
	मूळ	१२१६	भद्रबाहुस्वामी	
	निर्युक्ति गा. ६८	९५	„	
	निरुक्त	१५८०	विनयचंद्र †	
	टिप्पन	६४०	पृथ्वीचंद्र ¶	
	संदेह विषौषधी वृत्ति	३०४१	जिनप्रभ‡	

१ आ दशे सूत्रो पिस्तालीश आगमना पेटामांज समाय छे अने ते कया कया आगमना नामना विशेष स्मरणना अर्थे इहां तेमने नंबरवार नोंधवामा आव्या छे.

‡ आ सूत्र दशाश्रुतस्कंधना आठमा अध्ययन रूपे छे, छतां ते अलग लखातुं होवाथी वळी ए बारसे श्लोक प्रमाण होवाथी एने "बारसासूत्र" ना नामे पण ओळखवामां आवे छे. ए ए सूत्र छेदग्रंथ होवाथी प्रथम सभा समक्ष वंचातु न हतुं पण विक्रम सं. ५२३ मां आनंदपुर सभासमक्ष वंचाय छे.*

* डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां एना श्लोक ४०० आप्या छे. पण बृहट्टिप्पनिकामां एना श्लोक

† एमणे मल्लिचरित्र नामे महाकाव्य सं. १२८६ मां रचेल छे, तथा तेज वर्षमां उदय

¶ पृथ्वीचन्द्रसूरिए रचेला टिप्पनना अंतमां आ प्रमाणे प्रशस्ति आपी छे. शीलभद्रशिष्य धर्मघोष

‡ एमां श्लोक २४६८ सुधी कल्पसूत्रनी व्याख्या छे अने त्यारकेडे श्लोक ५७३ कल्पसूत्रनी

હાલ અલગ ઓળખવામાં આવતા દશ અવશિષ્ટ મૂળો.

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
૧	૨	૩	૪	૫	૬	૭	૮	૯	૧૦	૧૧	૧૨	૧૩	૧૪	૧૫	૧૬
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	.	.	[illegible]	.	.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	.	[illegible]	[illegible]	.	.	.	[illegible]
[illegible]	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	[illegible]
[illegible]	.	[illegible]	.	.	.	[illegible]	.	.	.	.	.	.	.	.	.
[illegible]	[illegible]	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	[illegible]

વિષય.

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]		
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
.	.	.	.	[illegible]	.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
.	.	.	.	.	.	.	[illegible]	[illegible]	.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	.	[illegible]	
.	[illegible]	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	[illegible]	
.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	
.	.	.	.	.	.	.	.	[illegible]	.	.	.	.	.	[illegible]	
.	.	.	.	.	.	.	[illegible]	.	.	.	.	.	.		
.	.	.	.	.	.	.	.	[illegible]	.	.	.	.	.	[illegible]	
.	.	.	.	.	.	.	.	.		.	.	.	.		
.	.	.	.	.	.	.		.	.	.	.	.	.	[illegible]	
.	.	.	.	.	.	.	.	[illegible]	.	.	.	.	.	.	

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो संवत्.
	अवचूरि	२२००	—	
	कल्पांतर्वाच्य *	२५००	कुलमंडन	
	,,	१८००	सोमसुंदर	
	,,	१९००		
	,,	१५००		
	कल्पसमर्थन	१०००		Gov
	कल्पचर्चा पत्र ३९ (प्रा.)			

* चंचल्बेनना भंडारनी टीपमा रत्नसोमसूरकृत तथा जिनहंसकृत कल्पांतर्वाच्य नोंधेला छे.

[illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो संवत्.
२	जीतकल्प *			
	मूळ गा. १०५	१३०	जिनभद्रगणि	
	चूर्णि	१०००	सिद्धसेन १	
	टिप्पनक (विषमपदव्याख्या)	११२०	श्रीचंद्र	१२२७
	वृत्ति	१८००	तिलकाचार्य	१२७४
	विवरण	५४३		
	भाष्य	३१२५		
	सार ‡ पत्र २१		मेरुतुंग	

* छ छेदमां पंचकल्प कल्पमां गुम थइ जवा तेना स्थाने आ जीतकल्पने केटलाएक गण [illegible] छे. बाकी प्रमाणे तो ते पण छेदग्रंथमांथी उद्धृत करेलो होवाथी छेदग्रंथ तरीके

१ सिद्धसेन नामना पांच आचार्य नीचे प्रमाणे थया जाणवामां आव्या छे:—

१ सिद्धसेन दिवाकर ते वृद्धवादिसूरिना शिष्य हता. तेमनुं बीजुं नाम कुमुदचंद्र हतुं

२ सिद्धसेनगणि ते दिन्नगणिशिष्य-सिंहसूरिशिष्य भास्वामिना शिष्य हता अने तेमणे

३ सिद्धर्षि ते [illegible] शिष्य देवभद्रना शिष्य दुर्गस्वामि शिष्य गर्गर्षिना शिष्य

४ सिद्धसेनसूरि ते देवभद्रसूरिना शिष्य अने यशोदेवसूरिना गुरु हता एमणे सं. ११४२

५ सिद्धसूरि ते उकेश गच्छना देवगुप्तसूरिना शिष्य हता एमणे सं. ११९२ मां बृहत्

हवे आ जीतकल्पनी चूर्णि ए पांच आचार्य पैकी कया आचार्ये रची छे ते माटे विचार [illegible] बृहत्क्षेत्रसमासनी वृत्ति थइ गया छे एटले तेमणे ते रचेली मनाती नथी ज [illegible] [illegible] छे ते संबंधी चोक्कस निर्णय थइ शक्तो नथी [illegible] [illegible] सिद्धर्षि ने रचेल होवानी संभावना लागे छे.

‡ आ सार पत्र २१ नो [illegible] [illegible] नोंधेल छे.

[illegible]

[illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो संवत्.
३	यतिजीतकल्प *			
	मूळ	५००	सोमप्रभ §	
	वृत्ति	५७००	साधुरत्न	१४५६
४	श्राद्धजीतकल्प *			
	मूळ गा. २२१	३००	तपा धर्मघोष	
	वृत्ति	२६४७	सोमतिलक †	
	अवचूरि			
	लघुश्राद्धजीतकल्प			
	मूळ गा. १० ¶	३६	तिलकाचार्य	
	वृत्ति ¶	११०	तिलकाचार्य	

* यतिजीतकल्प तथा श्राद्धजीतकल्प ए [illegible] होवाथी [illegible] छे

§ सोमप्रभसूरि सं. १३१० थी १३७० सुधिना कालमां विद्यमान हता.

† सोमतिलकसूरि संवत् १३७३ मां सूरिपद पाम्या अने सं. १४२४ मां स्वर्गवासी थया [illegible] छे.

[illegible] आयु छे पण ते मूळ होवी ¶ [illegible] छे:—

“ [illegible] भा. २० पृ. ११६.” [illegible] छे.

[illegible]	[illegible]
[illegible]	
[illegible]	
[illegible]	
[illegible]	
[illegible]	
[illegible]	
[illegible]	
[illegible]	

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो संवत्.
५	पाक्षिक सूत्र*			
	मूळ	३००		
	वृत्ति	२७००	यशोदेव	११८०
	अवचूरि	७००		
	चूर्णि †	४००		
	विषमपदपर्याय मंजरी ‡		अकलंकदेव	
६	क्षमण सूत्र §			
	मूळ	१५		
	अवचूरि			

*पाक्षिकसूत्र ए आवश्यक सूत्रना पेटा विभागनु सूत्र छे, कारणके तेमां पाक्षिक दिवसे गणाय छे.

† जेसलमेरनी हंसविजय महाराजे करावेली टीपमां ताडपत्रना पहेला बंधनमां ज पाक्षिक-माटे ते चूर्णि छे के अवचूरि अथवा विवरण छे ते तपासी नक्की करवुं जोईए होए बृहट्टिप्पनिकामां " प्र. ईर्यापथिकी १ चैत्यवंदना २ वदनक ३ चूर्णयः ११७४ वर्षे यशोदेवकृताः केम ते पण तपासवानुं छे.

‡ पदपर्यायमंजरी माटे बृहट्टिप्पनिकामां आ प्रमाणे उल्लेख छे " चैत्यवंदनादि सूत्र १ लागे छे के साधुप्रतिक्रमणमां पाक्षिकसूत्रनी पदपर्यायमंजरी पण अंतर्गत आवी हशे.

§ क्षामणासूत्रने पाक्षिकक्षामणासूत्र पण कहे छे अने ए सूत्र पाक्षिक सूत्रना अंते आववुं होवाथी ते कोई कोई स्थळे अलग पण लिखित मळे छे. तेथी इहां तेने अमे विशेष स्मरणार्थे जुदुं नोंध्युं छे.

[illegible]																टिप्पणी.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	
[illegible]																

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो संवत्.
७	वंदित्तु सूत्र गा. ५४*	६५		
८	ऋषिभाषित ‡			
	मूळ	८१५		
९	संसक्तनिर्युक्ति $ गा. ६४	८०	भद्रबाहुस्वामी	
१०	विशेषावश्यकसूत्र¶ गा. ३६२५	४०००	जिनभद्रगणि	

* वंदित्तुसूत्र ते श्राद्धप्रतिक्रमण होवाथी आवश्यकसूत्रनुं पेटा सूत्रज छे तेना व्याख्याना ग्रंथो
ते नोंध्या नथी. इहां फक्त ते पण एक सूत्र तरीके गणाय छे एवुं जणाववा खातर ते नंबरवार

‡ ऋषिभाषितना पिस्तालीश अध्ययन अथवा भाषित छे. नंदिसूत्रमां चोराशी आगमना नाम
हती एम दशनिर्युक्तिना नामोनी गाथा उपरथी जणाय छे, पण ते निर्युक्ति हाल उपलब्ध थती

$ आ निर्युक्ति कोई सूत्रपर नथी पण अळगी रहेल छे, ते चौदपूर्वधर भद्रबाहुस्वामिनी

¶ आनुं बीजुं नाम महाभाष्य पण छे तेना व्याख्याग्रंथो पूर्वे आवश्यक सूत्रना पेटामां ते महा-
भाष्यमां आवे छे एवुं खास जणाववा खातर तेने नंबरवार आंही इहां नोंधवामां आव्युं छे.

अवशिष्ट पयत्ता.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्याने संवत्.
	अवशिष्ट वीस पयन्ना.			
	बीजी गणत्रीए १० पयन्ना.			
१	अजीवकल्प गा. ४४	५५		
२	गच्छाचार गा. १३८	१७५		
	वृत्ति	५८५०	विजयविमल*	१६३
	अवचूरि	१५६०	वानरर्षि	
	अवचूरि	१६००	हर्षकुल	R. 6
	अवचूरि	४००		
३	†मरणसमाधि गा. ६५६	८३७		
४	सिद्धप्राभृत‡ गा. १२०	१५०		
	वृत्ति	८५०		
५	तीर्थोद्धार § गा. १२३३	१५६५		

* विजयविमलगणि ते आनंदविमलसूरिना शिष्य हता.

डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां पेज १२२ मां आ वृत्तिना कर्ता मलयगणि लखेला छे. ते भूल कोई टेकाणे इतिहास पण जोवामां आव्यो नथी.

† मरणसमाधिने मरणविधि अथवा मरणविभक्ति पण कहेवामां आवे छे.

‡ एने प्राकृतमां सिद्धपाहुडो कहे छे.

§ एने प्राकृतमां तित्थोगालियपयन्न कहे छे.

[illegible]	[illegible]
[illegible]	

[illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो संवत्.
६	आराधनापताका गा. ९९३	१२००	वीरभद्र ɒ	१०७८
७	द्वीपसागर प्रज्ञप्ति गा.२२३	२८०		A. S.
८	ज्योतिष्करंडक	१८५०		
	वृत्ति (ससूत्र)	५०००	मलयगिरि	
९	अंगविद्या	९०००		
१०	तिथिप्रकीर्णक			
	त्रीजी गणत्रीए १० पयन्ना.			
१	पिंडविशुद्धि गा. १०३	१२५	जिनवल्लभ §	
	वृत्ति	४०००	श्रीचंद्र ‡	११८०
	लघुवृत्ति	२८००	यशोदेव	११७६
	दीपिका (लघुवृत्तिरूपा) †	५५०		

ɒ वीरभद्र सम्बन्धी विशेष इतिहास मळ्यो नथी. परंतु संवत् मळ्युं छे. बृहट्टिप्पनिकामां

§ जिनवल्लभगणि विक्रमनी बारमी सदीना मध्यमां हता.

‡ श्रीचंद्रसूरि ते मलधारि हेमचंद्रसूरिना शिष्य छे. तेमणे संवत्११९३मां मुनिसुव्रतस्वामिनुं चरि के तेमना गुरु हेमचंद्रसूरिनी संवत् ११६४ मां स्वहस्तलिखित पोथी पाटणमां मोजूद छे. एम किल्हा "एगवीससहस्से" भूलथी छपायु छे ते परथी पिटर्सनसाहेब गोथो खाधो लागे छे. आ वृत्ति मां वृत्तिकार श्रीचंद्र ते मलधारि हेमचंद्रसूरिनांज शिष्य छे एम चोकस निर्णय थाय छे.

† आ दीपिका बृहट्टिप्पनिका सिवाय उपर बतावेल कोईपण भंडारमां उपलब्ध थइ नथ

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	[illegible]
[illegible]	[illegible]	•	•	[illegible]	[illegible]	•	•	•	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	•	•	[illegible]	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	•	[illegible]	•	•	[illegible]	[illegible]	•	•	[illegible]	[illegible]	•	•	[illegible]	
[illegible]	[illegible]	•	[illegible]	•	•	[illegible]	[illegible]	[illegible]	•	•	[illegible]	[illegible]	•	•	[illegible]	
[illegible]	[illegible]	•	•	[illegible]	•	[illegible]	[illegible]	•	•	•	[illegible]	[illegible]	•	•	[illegible]	
[illegible]	•	•	[illegible]	[illegible]	[illegible]	•	[illegible]	•	[illegible]	•	[illegible]	[illegible]	•	•	[illegible]	
•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	[illegible]	
[illegible]	•	[illegible]	[illegible]	•	•	•	•	•	[illegible]	•	•	•	•	•	•	
[illegible]	•	[illegible]	•	[illegible]	•	•	•	•	•	•	•	[illegible]	•	•	•	
[illegible]	•	[illegible]	•	[illegible]	•	•	[illegible]	[illegible]	[illegible]	•	•	•	•	•	•	
[illegible]	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	

[illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७	[illegible]	[illegible]		
८	[illegible]	[illegible]		
९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०	[illegible]	[illegible]		[illegible]

[illegible]

[illegible]

उपसंहार.

आ रीते सिद्धांतोना आगम दश अवशिष्ट सूत्रो ग्रंथो तथा बीजा अवशिष्ट पयन्ना मळी [illegible] आगमकर्मां कुल पंचोतेर आगम मळ्या छे. उपरांत चौदपूर्वधारीकृत जे ग्रंथ ते आगमरूपे ज गणाय एम नंदिसूत्रमां जे कहेलुं छे तेने अनुसारे चौदपूर्वधारी भद्रबाहुस्वामिकृत दशेक निर्युक्तिओ आगमरूपेज रहेली छे ते निर्युक्तिओमांनी बे निर्युक्तिओ पिंडनिर्युक्ति तथा ओघनिर्युक्ति तो सिद्धांतीन आगममां ज गणाई गई छे अने [illegible] अवशिष्ट आगममां नोंधी छे. उपरांत हमणां रहेली नीचे मुजबनी [illegible] निर्युक्तिओ छे—

१ आवश्यकनिर्युक्ति
२ दशवैकालिकनिर्युक्ति
३ उत्तराध्ययननिर्युक्ति
४ आचारांगनिर्युक्ति
५ सूत्रकृतांगनिर्युक्ति
६ सूर्यप्रज्ञप्तिनिर्युक्ति
७ बृहत्कल्पनिर्युक्ति
८ व्यवहारनिर्युक्ति
९ दशाश्रुतस्कंधनिर्युक्ति
१० ऋषिभाषितनिर्युक्ति

आ दश निर्युक्तिमांथी सूर्यप्रज्ञप्तिनी तथा ऋषिभाषितनी निर्युक्ति मळी शकती नथी एटले ते बाद करतां बाकीनी आठ निर्युक्तिओ हमणां मळे छे तथा [illegible] आवश्यकनी निर्युक्ति पण मळी आवे छे एटले कुल नव सूत्रनी निर्युक्तिओ ते ते सूत्रना पंचांगीना [illegible] पूर्ण करे छे. ते नवे निर्युक्तिओने जो आगमरूपे गणीये तो कुल ८४ आगम थाय छे.

श्रीनंदिसूत्रमां पूर्वे ८४ आगम गणाव्या छे तेमां [illegible] सूत्र छे अने पयन्ना दशक छे, [illegible] ८४ आगमनां [illegible] सूत्र छे, [illegible] छे, [illegible] निर्युक्तिओ छे, अने एक महाभाष्य छे.

चोरासी आगमना संक्षिप्तनाम.

एकताळीस सूत्र.

अंग ११	उपांग १२	छेद ५	मूळ ५	छूटक ८
१ आचार	१ औपपातिक	१ निशीथ	१ आवश्यक	१ कल्पसूत्र
२ सूत्रकृत्	२ राजप्रश्नीय	२ बृहत्कल्प	२ दशवैकालिक	२ जीतकल्प
३ स्थान	३ जीवाभिगम	३ व्यवहार	३ उत्तराध्ययन	३ यतिजीतकल्प
४ समवाय	४ प्रज्ञापना	४ दशाश्रुत	४ नंदि	४ श्राद्धजीतकल्प
५ भगवती	५ जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति	५ महानिशीथ	५ अनुयोगद्वार	५ पाक्षिक
६ ज्ञात	६ चंद्रप्रज्ञप्ति			६ क्षामणा
७ उपासकदशा	७ सूर्यप्रज्ञप्ति			७ वंदित्तु
८ अंतकृद्	८–१२ निरयावल्यादि	(छ छेदमानो पंचकल्प हाल मळतो नथी.	(पिंडनिर्युक्ति तथा ओघनिर्युक्तिने निर्युक्तिओ साथे टांकी छे)	८ ऋषिभाषित
९ अनुत्तरोपपातिक				
१० प्रश्नव्याकरण	(पंचोपाग)			
११ विपाक				
श्लो० ३५३३९	श्लो. २५८३३	(श्लो. ७१०५)	(श्लो. ५४२९)	(श्लो. ३३४१)

त्रीस पयन्ना.

पहेली गणत्रीए.	बीजीगणत्रीए.	त्रीजीगणत्रीए.
१ चतुःशरण	१ अजीवकल्प	१ पिंडनिर्युक्ति
२ आतुरप्रत्याख्यान	२ गच्छाचार	२ सारावली
३ भक्तपरिज्ञा	३ मरणसमाधि	३ पर्यंताराधना
४ संस्तारक	४ सिद्धप्राभृत	४ जीवविभक्ति
५ तंदुलवैचारिक	५ तीर्थोद्गार	५ कवच
६ चंद्रवेध्यक	६ आराधनापताका	६ योनिप्राभृत
७ देवेंद्रस्तव	७ द्वीपसागरप्रज्ञप्ति	७ अंगचूलिया
८ गणिविद्या	८ ज्योतिष्करंडक	८ वंगचूलिया
९ महाप्रत्याख्यान	९ अंगविद्या	९ वृद्धचतुःशरण
१० वीरस्तव	१० तिथिप्रकीर्णक	१० जबूपयन्नो
(श्लो. १५५५)	(श्लो. १५५१२)	(श्लो. २९२५) कुल २०९९२.

बार निर्युक्ति.

१ आवश्यक	४ आचारांग	६ बृहत्कल्प	९ कल्पसूत्र	१० पिंडनिर्युक्ति	(सूर्यप्रज्ञप्ति तथा	(कुले श्लो.
२ दशवैकालिक	५ सूत्रकृदंग	७ व्यवहार		११ ओघनिर्युक्ति	ऋषिभाषितनी नि-	८७३५)
३ उत्तराध्ययन		८ दशाश्रुत		१२ संसक्तनिर्युक्ति	र्युक्ति मळती नथी.	

एक महाभाष्य.

विशेषावश्यक ४००० | (श्लो. कुल ११०४७५)

सूचना.

आ रीते आपना स्मिर्लीदर आगम तथा बीजा अवशिष्ट आगम तथा नव निर्युक्तिओ मळीने एकंदर चोराशी आगमो आपना जैनधर्मरूप महाप्रासादना स्तंभरूपे विराजमान रहेला छे.

ए चोराशी आगमोना मूळनी एकंदर श्लोकसंख्या सुमारे एक लाख दस हजार ना लगभग थाय छे. तेथी ए चोराशी आगमोनो उतारो लेवो होय तो दर हजारे पांच रुपिया लखामणी अने दस रुपिया शोधामणीना गणतां कुले रुपीया १६५० खरच आवे तथा कोई दुर्लभ आगमनी शोध खोळ माटे रु. ३५० वधु खरचवा योग्य गणिये तो पण कुले बे हजार रुपियानी रकममांथी आ काम पार पाडी शकाय तेम छे. माटे आवा काममां पोताना द्रव्यनो सदुपयोग करवा कोई पण आगमभक्त श्रद्धालु सद्गृहस्थ खरी तत्परी धरार पडे तो थोडा खरचे मोटुं काम करी शके तेम छे.

अने आशा राखिये छीये के अमारी आ नम्र सूचनाथी कोई पण महाशय जागृत थईने जाते अथवा बीजाने समजावीने आ टुंका खरचनुं उपयोगी काम अवश्य हाथ धरी संपूर्ण करी उत्तम पुण्यनो भागीदार थशेज.

विशेष सूचना.

शिवाय ए स्तंभरूपी आगमोना टेकारूपे रहेला भाष्य-चूर्णि-वृत्ति-अवचूरि-दीपिका-टिप्पन वगेरे तेमनी व्याख्याना ग्रंथो साथे गणिए तो आखा जिनप्रवचननी श्लोकसंख्या सुमारे चौदपंदर लाखना लगभग थवा जाय छे. आ आखा जिनप्रवचननो एक स्थळे संग्रह करवा माटे तेनी अतिशुद्ध एक नकल उतरावबी होय तो ऊपरना हिसाबे पंदरलाख श्लोकना रुपिया साडीत्रावीस हजार थाय छे अने ते साथे तेमाना दुर्लभ ग्रंथोनी शोध खोळ करवा माटे जुदा जुदा स्थळे माणसो मोकलावी पत्तो मेळवी प्रतो मेळववां जे खरच लागे ते माटे रुपिया सातआठ हजारनी रकम उमेरिए तो

कुले खरच रुपीया त्रीश हजार लागे छे. जो आटलुं काम कोई धनाढ्य शेठ अथवा गर्भश्रीमंत महाशय पार पाडवा इच्छे तो ते पण कोई रीते दुष्कर के दुस्साध्य नथी कारण के आपणी जैनकोममां द्रव्य खरचनार उदार पुरुषोनो कशो टोटो नथी, पण तेमनुं लक्ष्य आवी बाबतोपर खेचावुं जोईये.

श्री जैन श्वेतांबर कॉन्फरन्स ऑफिस. } मोहनलाल चुनीलाल दलाल.
चंपागली-मुंबई, ता. १-२-०७ } आसिस्टंट सेक्रेटरी,



लीस्ट नंबर २.

जैन न्याय.

नंबर.	नाम.	श्लोक	कर्ता.	रचना साल	क्यां छे ?
	वृत्ति	५०००	चंद्रसेन	१२०७	S. H.
४	तत्त्वार्थ सूत्र.A	२२५	उमास्वातिवाचक		मु., मुद्रित.
	भाष्य.B	२१४२	,,		मु., पा. ३-४ मुद्रित
	वृत्ति	१८२८२	सिद्धर्षि C		मु., पा. ३-४
	वृत्ति D	१०८००	यशोभद्र E		पा. ५.
	लघुवृत्ति F	१००००	हरिभद्र G		डेक्कन रिपोर्ट १४५
५	तर्कभाषा	८००	यशोविजय		पा. ४-५ मं. (६.

A आ सूत्रने तत्त्वार्थाधिगम तथा मोक्षशास्त्र पण कहेवामां आवे छे. ए सूत्रो श्वेतांबर दिगंबर बन्ने मान्य करे छे, तेथी एनाउपर बन्ने पक्षोना आचार्योए जुदी जुदी व्याख्या करी छे. आ कारणथी आ जगोए एनी श्वेतांबराचार्यकृत व्याख्याओ नोंधी छे अने आना चोथा भागमां दिगंबरकृत व्याख्याओ नोंधवामां आवशे.

B आ भाष्यना कर्ता उमास्वातिवाचक पोतेज छे एम एनी टीकामां आवेलुं अवतरण उपरथी जणाय छे. पाटणनी एक टीपमां तत्त्वार्थनी नागरवाचककृत एक वृत्ति श्लो. २८९ नोंधी छे, पण ते अमारा अनुमान प्रमाणे भाष्यज होवुं जोईये. कारण के भाष्यनी प्रशस्तिमां नागरवाचके रच्युं छे एम लख्युं छे अने नागरवाचक ते खुद उमास्वातिनुं बीजुं नामज छे. ए बाबतनी खातरी करवी होय तेणे पीटर्सनना बीजा रिपोर्टमां पेज ८३ थी ८४ मां नोंधेलो ते वृत्तिनो प्रांतनो उल्लेख वांची जोवो.

C आ सिद्धर्षि ते दिन्नगणिशिष्य सिंहसूरि तच्छिष्य भास्वामिना शिष्य छे.

D आ वृत्ति फक्त पाटणनी पांचमी टीपमां नोंधाएल छे एटले ते दुर्लभ जेवी छे.

E आ यशोभद्रसूरि ते धर्मघोषसूरिना शिष्य होवा जोईये एम अमारुं धारवुं छे, कारण के पीटर्सनना पेला रिपोर्टना ७६ मां पेजमां प्रत्याख्यानस्वरूप नामना ग्रंथनी प्रांतगाथामां सं. १ मां ते ग्रंथ यशोभद्रसूरिए रच्यो छे एम जणाव्युं छे ते यशोभद्र ते आज यशोभद्र छे एवुं अमारुं अनुमान छे पण चोकस निर्णय पुस्तक जोवाथीज थई शके तेम छे.

F आ लघुवृत्ति फक्त डेक्कन कॉलेजमां मळी आवी छे अने ते डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां पेज १४५ मां नंबर ३६९ मां नोंधेल छे. माटे ए ग्रंथनी पण नकल उतारवानी खास जरूर छे.

G आ हरिभद्रसूरि ते पहेला हरिभद्रसूरि छे के बीजा हरिभद्रसूरि छे ते नक्की करवानी अगत्य छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
६	द्रव्यानुयोगव्याख्या. A	पत्र ४९	भोजपंडित B		अ. १.
७	द्रव्यालंकारतर्क C	४००	पं. रामचंद्र गुणचंद्र D		पु.
८	नयचक्रवाल E		मल्लवादि F		अ. १.

A आ ग्रंथ अमदावादना डेलाना भंडारनी टीपमां नोंधायलो छे माटे ते दुर्लभ होवाथी तेनी नकल करावी लेवानी खास जरूर छे.

B भोजपंडित श्वेतांबर छे के दिगंबर छे तेमज ते क्यारे थयेल छे ते वगेरे हकीकत ग्रंथ जोवाथी मालुम पडे तेम छे.

C आ ग्रंथ बृहट्टिप्पनिकामां नोंधेल छे छतां ते हजु सुधी अमने उपलब्ध थयो नथी. ग्रंथना नामपरथीज ते बहु उपयोगी अने सरस हशे एम जणाय छे माटे एवा ग्रंथनी विशेष शोधी मेळववानी खास जरूरियात छे.

D पं. रामचंद्र ते अमारा अनुमानप्रमाणे हेमाचार्यना शिष्य रामचंद्रगणि होवा जोईये केमके तेमना रचेल जैन नाटक ग्रंथोमां तेमने ए.ना इत्यादिथीज पोताने ओळखावेल छे तेथी बृहट्टिप्पनिकाकारे तेज प्रमाणे ओळखाव्या छे. अने तेमना मध्ये गुणचंद्र नाम छे ते गुणचंद्रनामना बे आचार्य थया छे तेमनां बीजा होवा जोईये. पहेला गुणचंद्रसूरिए सं. ११३९ मां प्राकृत वीरचरित्र रचेल छे, एटले ते तो हेमाचार्यथी पूर्वे थई गया छे. पण बीजा गुणचंद्रसूरि के जेमणे हैमविभ्रमउपर टीका रची छे ते आ गुणचंद्र छे. अने ते रामचंद्रगणिना सहाध्यायी होवाथी बनते हेमाचार्यना शिष्य होय तो पण होय, छतां चोक्कस निर्णय ग्रंथ जोवाथी थई शके.

E नयचक्रवालने द्वादशार नयचक्रना नामे पण ओळखवामां आवे छे. तेना बार विभाग होवाथी तेने "द्वादशार" एटले बार आरावाळुं एवुं विशेषण पण अपाय छे. ए ग्रंथनुं मूळ केटलुं मोटुं छे ते जाणवामां नथी आव्युं माटे जे कोई विद्वान मुनिमहाराजना पास ते ग्रंथ होय तेमणे ते हकीकत अमने अवश्य जणाववा कृपा करवी एवी तेमने नम्र विनंति करवामां आवे छे.

F मल्लवादि आचार्य वीरनिर्वाणथी ८८४ वर्षे एटले के विक्रम सं. ४१४ मां थयेल छे एम प्रभावक चरित्रमां करेलुं छे एवी नोंध पीटर्सनना चोथा रिपोर्टमां ते रिपोर्टना प्रथम भागमां पेज ४ थामां छे. मल्लवादिए सम्मतिसूत्रपर टीका रचेली छे एवो बृहट्टिप्पनिकामां उल्लेख छे पण ते टीका हजु उपलब्ध थई नथी. एमणे बौद्धाचार्य धर्मोत्तरकृत न्यायबिंदु उपर पण टीका एटले के टिप्पन रचेल छे. आ मल्लवादि आचार्ये राजसभामां वाद करी बौद्धोने हरावी जिनशासननी उन्नति करी तेथी तेओनुं नाम आज पर्यंत जगतमां मशहूर छे.

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या नो स	क्यां छे !
१५	पंचविमर्श A	पत्र १९	उदयप्रभ B		डेक्कन रि. पेज
१६	प्रमाणग्रंथ C	पत्र १०८	गुणरत्न D		डेक्कन.
१७	प्रमाणप्रमेयन्याय E	ताडपत्र २२४			जेसलमेर.
१८	प्रमाणमीमांसा F		हेमाचार्य		वृ. जे.
	वृत्ति	२५००	,,		बु. ले. पा. ५ डे

A पंचविमर्श ए नाममां वचे हेतुपदनो अध्याहार करीए तो एनुं बीजुं नाम पंचहेतुविमर्श थइ शके. ए ग्रंथ पण दुर्लभ जेवो लागे छे. माटे अवश्य उतारवा योग्य छे.

B उदयप्रभसूरि बे थया छे. एक द्वितीय हरिभद्रसूरिना शिष्य विजयसेनसूरिना शिष्य हता. वस्तुपाळमंत्रिनी हकीकतनुं संघपतिचरित्र अथवा धर्माभ्युदय महाकाव्य रचेल छे. वळी नामनो एक शिलालेख संवत् १२८७ मां कोतरेलो मळी आव्यो छे. एम विल्सन एशियाटिक रीसर्चिसना १६ मां अंकमां पेज ३०९ मां नोंध करी छे. बीजा उदयप्रभ विजयप्रभसूरिना शिष्य अने मल्लिषेणसूरिना गुरु हता. तेमणे प्रवचनसारोद्धारना विष रचेल छे. ए बीजा उदयप्रभ पण चौदमी सदीनी शरुआतमां थएला होवा जोइए. तेमना शिष्य मल्लिषेणसूरिए सं. १३४९ मां स्याद्वादमंजरी रची छे.

हवे आ पंचविमर्श कया उदयप्रभे रचेल छे ते संबंधे अमारुं अनुमान ए छे के ते मल्लि सूरिना गुरु बीजा उदयप्रभ होवा जोइए. छतां चोकस पुरावो माटे ग्रंथ जोवानी जरूर छे.

C आ नाम अपूर्ण लागे छे. छतां ए पण दुर्लभ ग्रंथ छे माटे एमां शुं हकीकत छे ते माटे तेनो उतारो लेवानी खास जरूर छे.

D गुणरत्नसूरि देवसुंदरसूरिना शिष्य हता. तेमणे सं. १४६६ मां क्रियारत्नसमुच्चय रचेल तथा षड्दर्शनसमुच्चयनी टीका पण तेमणे रचेली छे.

E आ ग्रंथनुं नाम पण विचित्र लागे छे. छतां ते जेसलमेरनी यादी टीपमां तेज नामे नों छे, ते साथे तेना कर्त्तानुं नाम के श्लोकसंख्या आपी नथी. तेथी ते संबंधे बीजो कशो खुलासो म नथी. पण ए अपूर्व ग्रंथ होवाथी एनी पण नकल उतारवानी खास जरूर छे.

F प्रमाणमीमांसानुं मूळ केटलां श्लोकनुं छे ते माटे तेनी प्रत जोवानी जरूर छे. ए ग्रंथ टीका सहित पंन्यासजी श्रीमणिविजयजी महाराज पासे पण छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो स.	क्यां छे ?
१९	प्रमाणसंग्रह A	७१२			बृ.
२०	प्रमाणसुंदर B	८०४	पद्मसुंदर C		पा. ४, अ. २
२१	प्रमाणलक्ष्यलक्षणD	३३००	बुद्धिसागर E		पा. ५. जेसलमेर.
२२	प्रमेयरत्नकोश	१६८०	चंद्रप्रभF		बृ पा. १-४-५ अ.१

A आ ग्रंथनुं नाम पण बृहट्टिप्पनिकामांथी मळ्युं छे. एनामाटे त्यां आवो उल्लेख छेः—

"प्रमाणसंग्रह प्रकरण १ प्रस्ताव जैनं ७१२"

आ उल्लेखपरथी देखाय छे के आ ग्रंथ पण घणो उत्तम होवो जोईए. तो आवा अपूर्व ग्रंथ माटे विशेष शोध खोळ करवा आपणा मुनिमंडळने खास विनंति करवामां आवे छे.

B आ ग्रंथ जैनन्यायनो छे के परमतना न्यायपर जैनकृत व्याख्या रूप छे ए संबंधे निर्णय ते ग्रंथ जोवाथी थई शकशे.

C पद्मसुंदरगणि नागपुरीय तपागच्छमां थएला छे. तेओ सं. १६१२ थी १६६१ सुधी अकबरनी सभामां विद्यमान रहेला छे. तेमना रचेला बीजा ग्रंथ आप्रमाणे छे. तेमणे सं. १६१५ मां रायमल्लाभ्युदय महाकाव्य रचेल छे. तथा सं. १६२५ मां पार्श्वनाथकाव्य रचेल छे. तथा प्राकृतभाषामां तेमणे जंबूस्वामिकथानक रचेल छे, एम पीटर्सनना चोथा रिपोर्टमां तेमना नाम साथे नोंध करी छे.

D आ ग्रंथ पण खास उतारवा योग्य छे. ते डेक्कनकॉलेजनी बन्ने टीपमां नोंधायेल छे.

E बुद्धिसागरसूरि नवांगवृत्तिकार अभयदेवसूरिना गुरु जिनेश्वरसूरिना समकालीन हता. एमणे बुद्धिसागर व्याकरण विक्रम सं. १०८० मां रचेल छे.

F चंद्रप्रभसूरि बे थया छे. एक प्रद्युम्नसूरिना शिष्य अने धनेश्वरसूरिना गुरु चंद्रप्रभसूरि थया छे एम उपदेशकंदलिना प्रशस्ति लेखपरथी जणाय छे. अने बीजा जयसिंहसूरिना शिष्य चंद्रप्रभसूरि थया छे के जेमणे सं. ११५८ मां पूर्णिमागच्छनी स्थापना करी. आ बीजा चंद्रप्रभसूरिए दर्शनशुद्धि प्रकरण रच्युं छे. आ प्रमेयरत्नकोश कया चंद्रप्रभसूरिए रच्यो हशे ते ए ग्रंथनी प्रशस्ति जोवाथी मालम पडी शके तेम छे.

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे
२३	युक्तिप्रकाश A	३००	पद्मसागरB		पा. ५
२४	युक्तिप्रबोध C		मेघविजयD		डेक्कन
	वृत्ति	५०००	,,		डेक्कन.
२५	रत्नाकरावतारिका E	५०००	रत्नप्रभ F		बृ. मुलम्य
	टिप्पन		राजशेखरG		पा. १
	,,	२१०४	ज्ञानचंद्र H		पा.१
	आद्यश्लोकशतार्थ	पत्र ३१			अ. १

A आ ग्रंथ एना नामपरथी तो न्यायनो हशे एम लागे छे, छतां वखते चर्चाग्रंथ हो
होय ते माटे ते ग्रंथ कोई मुनिमहाराज पासे होय तो तेमणे तेमां शी हकीकत छे ते
अमारी नम्र विनंति छे.

B पद्मसागरगणि ते धर्मसागर उपाध्यायना शिष्य हता. तेमणे सं. १६३३ मां नयप्र
तेनी वृत्ति रची छे.

C आ ग्रंथ पण तेनी टीकासाथे खास उतारवा योग्य छे.

D मेघविजयजी उपाध्याये सं. १७५७ मां हैमशब्दानुशासनपर चंद्रप्रभा नामनी टीका र

E रत्नाकर एटले स्याद्वादरत्नाकर तेमां प्रवेश करवा माटे अवतरण करावनार ते
वतारिका एम एनां नामनो अर्थ छे.

F रत्नप्रभसूरि ते वादिदेवसूरिना शिष्य हता. एमणे सं. १२३८ मां उपदेशमाळानी
नामनी टीका रची छे.

G राजशेखरसूरि मलधारि गच्छना हता. अने ते सं. १४०५ मां हता. एम पुरावे
छे. एम पीटर्सनना चोथा रिपोर्टमां जणावेल छे. एमणे चोवीश प्रबंध तथा कथाना चोप
रचेल छे.

H ज्ञानचंद्रगणि क्यारे हता ते माटे कंई इतिहास मळतो नथी तेथी आ टिप्पनना
प्रशस्ति लेख जोवाथी ते समय मळी शके तेम छे,

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	[illegible]	क्यां छे ?
२६	स्याद्वादरत्नाकर A	११५०			डेक्कन.
२७	वादिविजय	७४८	मेघविजय B		पा ४-५ को.
२८	शास्त्रवार्तासमुच्चय		हरिभद्र		पा. ५, को.
	वृत्ति	७०००	यशोदेव		डे पे. ४०९, पा ५मा.
	वृत्ति (स्याद्वादकल्पलता)	१३०००	यशोविजय		पा. ५, को.
२९	(१) षड्दर्शनसमुच्चय	८९	हरिभद्र		पू. गुलाब. मुद्रित.
	वृत्ति	१२५२	गुणरत्न C		पू पा १-४ को. मुद्रित.
	वृत्ति (बीजी)	४२५२	"		पा १-४
	वृत्ति (त्रीजी)	पत्र ३८	विद्यातिलक D		भा. २
	अवचूरि	पत्र ६			को.
	(२) षड्दर्शन समुच्चय	२४०	राजशेखर E		पा ३, ली, डेक्कन.
३०	सम्मतितर्क गा. १६८	२१०	सिद्धसेनदिवाकर		पू गुलाब.
	वृत्ति	२५०००	प्रद्युम्नशिष्य अभयदेव F		पू. "

A आ ग्रंथ घणो मोटो छे, तथा तर्कनो [illegible] छे, ते माटे तेनो [illegible] [illegible] छे.

B मेघविजयगणि घणा ग्रंथ कर्ता छे ते [illegible] पण [illegible] मळी नथी, पण तेओ हीरविजयसूरिनी शाखाना छे. एम तेमना ग्रंथथी जणाय छे.

C गुणरत्नसूरि माटे [illegible] नीचे नोट आपी छे ते जुओ.

D विद्यातिलक ए सोमतिलकसूरिनुं बीजुं नाम छे. तेओए सं. १३८९ मां वीरकल्पना ओ[illegible] [illegible] छे. जिनदेवसूरि एमना शिष्य हता.

E राजशेखरसूरि माटे स्याद्वादकलिकाना टिप्पणनी [illegible] तेमना नाम नीचे आपेली नोट जुओ.

F आ अभयदेवसूरि ते राजगच्छना प्रद्युम्नसूरिना शिष्य हता. आ अभयदेवसूरि [illegible] उत्तराध्ययन बृहद्वृत्तिकार वादिवेताल शान्तिसूरि के जेओ सं. १०९६ मां स्वर्गवासी थया छे [illegible] वर्धमानसूरि तथा अभयदेवसूरि [illegible] हशे, अने ए प्रमाणे तेओ विक्रमनी अगियारमी सदीमां हता एम जणाय छे.

12

नंबर.	नाम.	श्लोक	कर्त्ता.	रच्याना सं.	क्यां छे ?
	वृत्ति A	७००	मल्लवादि		वृ.
	वृत्ति B				वृ.
३१	सर्वज्ञसिद्धिप्रकरण	७३०	हरिभद्र		वृ.जेसल, म.२, डेकन
३२	सिद्धांतरत्न C	१०००	विनयचंद्र D		डेकन.
३३	सिद्धांतरत्नावली E	८५०	जिनोदयशिष्य हेमसूरिनाशिष्यF		डेकन.
३४	सुबोधमंजरी G	पत्र ३			म. २
-	वृत्ति				म. २
३५	स्याद्वादमंजरी	३०००	मल्लिषेण	१३४९	वृ. सुलभ्य. मुद्रित.
३६	स्याद्वादरत्नाकर H	१३०००	वादिदेवसूरि I		वृ. पा. १.२. जे.अ.१ १ अ २ को डेकन.

A आ वृत्ति बृहत्टिप्पनिकारे श्लोकसंख्या साथे नोंधी छे, छतां ते दुलभ्य थई पडी छे, माटे
एवा अपूर्व ग्रंथोनो पत्तो लगाडवा माटे आपणा मुनिमहाराजाओए खास लक्ष्य राखवु घटे छे.

B आ बीजी वृत्ति माटे बृहत्टिप्पनिकामां आ रीते उल्लेख छेः—"सम्मतिवृत्तिरन्यकर्तृका."

C आ ग्रंथ न्यायनो छे के व्याकरणनो छे ते जाणवा माटे तेनी प्रत जोवानी खास जरुर छे.

D विनयचंद्रसूरिए सं. १३२५ मां कल्पनिरुक्त रचेल छे.

E आ ग्रंथना आद्यतनो उल्लेख पीटर्सनना चोथा रिपोर्टमां पाने १२४ मां आपेल छे.

F जिनोदयसूरि खरतरगच्छमां ५४ मा पाटे थया छे. तेओ स.१४१५मा आचार्यपदे आव्या अने
सं. १४३२ मां स्वर्गवासी थया. तेमना शिष्य हेमसूरि थया अने ते हेमसूरिना शिष्ये आ ग्रंथ करल छे.

G सुबोधमंजरी ए न्यायनो ग्रंथ छे के व्याकरणनो छे के औपदेशिक ग्रंथ छे ते चोकसपणे ग्रंथ
जोए मालम पडे, पण त्यां लगण अमे एने इहां न्यायग्रंथमां नोंध्यो छे.

H स्याद्वादरत्नाकर चोराशी हजार श्लोकनो हतो. एम परंपराथी सांभळेल छे. बृहत्टिप्पनि-
कामां तेना श्लोक ३६००० नोंध्या छे. परंतु हालमां तो ते तेर हजारनो अपूर्ण प्रथम मळे छे. आ
एक भारेमां खेदनी विना छे के आवा उत्तम ग्रंथ माटे जो पूरी काळजी राखवामां आवी होत तो तेनी आवी
दुर्दशा नहि थात. पण ज्यारे अमूल्य ताडपत्रोना भंडार कोइने पण बताव्या वगर लांबा वखत लगण बंध
राखी मुकवामां आवेला होवाथी सडी गया हशे त्यारेज आवा उत्तम ग्रंथो नष्टप्राय जेवी स्थितिए पहोंच्या छे. विनोदमां ए अणावड
पडे छे के हजु पण जो आपणा लोको सुलभ्य ग्रंथोना उद्धार पर उतरा करावता रही अपूर्व पुस्तकोना उद्धार
माटे हजुन बेदरकार रहेशे तो ए अपूर्व ग्रंथो टुंक मुदतमां गुम थई जशे एमां जराए संशय नथी.

I वादिदेवसूरि ए नाममां वादि ए विशेषण छे अने देवसूरि ए नाम छे. तेओ मुनिचंद्रसूरिना
पाटे थया छे. तओनो जन्म सं. ११४३ मां, दीक्षा ११५२ मां, सूरिपद ११७४ मां अने स्वर्ग
१२२६ मां थयो छे. एटले तेओ हेमसूरिना समकालीन हता. तेमणे सं. ११८१ मां सिद्धराजनी सभामां
दिगंबर कुमुदचंद्रने हराव्यो हतो. वळी तेमणे सं. १२०४ मा फलोधीमां प्रतिष्ठा करेली छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रचना संवत	क्यां छे?
	वर्ग २ जो.				
	नाना ग्रंथो.				
१	रत्नकोशकार A	४८०			प्र. ४
२	खंडनमंडन B	८५०	परमानंदसूरि C		जेसलमेर.
३	जैनन्याय D	२५००			„
४	षड्दर्शनी E	८९७	मुनिसुंदर	१४५५	प्र. ३. ४. ५. अ. २ को.
५	नयप्रकाश F		पद्मसागर G	१६३३	
	वृत्ति	८२०	„		प्र. ५ कों.

A रत्नकोशकार ग्रंथमां ४८० श्लोको छे के जेम ते ग्रंथ दर्शनविद् छे तथा जेनो ग्रंथमा ग्रंथमां प्रमाणनेवरविद्यानी रचना थी ते स्पष्ट छे अने ते श्लोक १५ था २० नो छे एम मोटेभाग स्वीकार्य कराय छे.

B आ नाम अर्थसूचक जणाय छे, कारणके आ कंई सिद्धान्त नथी पण सामान्य नाम छे अने प्रस्तु नाम ते रुप करीने सिद्धान्त ज छे एवं जोईये.

C परमानंदसूरि सं. १२२१ मां विद्यमान हता, (जुवो पीटर्सनना बीजा रिपोर्टना पेज ६९ मां अनेनो प्रशस्तिलेख) एमणे वर्णाद्रि वर्द्धमानक ग्रंथ टीका तथा प्रजनपरिधान नामे ग्रंथ रचेला छे. एमनी वंशावली आ प्रमाणे छे:—

चंद्रप्रभसूरिना शिष्य धर्मघोषसूरि तथा अभयदेवसूरि हता अने ए अभयदेवसूरिना शिष्य परमानंदसूरि थया.

D आ नाम पण अर्थसूचक सरोज छे. जेसलमेरनी टीप करनार हीरालाले कोन जाने शा कारणे आनी अर्थोक्त टीप करी छे ते मालम पडतुं नथी. मारे जेसलमेरनी टीप परथी कोई शोधकना हाथे बयावनी जरुर छे, पण लिखित ए छे के ए भंडारना रक्षको हवे परथी टीप करवा आवे एम लागतुं नथी.

E आ ग्रंथ न्याय तथा साहित्य बंनेने लागु पडे तेवो छे.

F नयप्रकाशने नयप्रकाशस्तव पण कहेवामां आवे छे, कारण के ते स्तुतिरूप छे.

G पद्मसागर धर्मसागर गणिना शिष्य हता.

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
६	नयप्रदीप A	पत्र ८			भा.
७	न्यायतत्त्व B	२५०			जेसल.
८	न्यायाख्यायी C	पत्र २५			पा. ४
९	प्रमाणसार D	३००	हर्षमुनि E		ली.
१०	प्रमाणांतरभाव F	१२००	यशोदेव G		जेसलमेर.
११	लिंगलिंगिविचार H	१५००			„
१२	विश्वतत्त्वप्रकाश I				डेक्कन.
१३	श्वेतांबरदर्शनसिद्धि J	५१२			बृ.

A नयप्रदीप कोणे रचेल छे ते माटे भावनगरथी खबर मेळववाना छे.

B आ नाम पण [illegible] नोंधेलु छे एटले शक पडतु छे.

C न्यायाख्यायी पाटणनी टीपमा जैनकृत जणावी छे एटले तेना भरोसे अमे अहीं तेने नोंधी छे. एनां शब्द [illegible] के थशे ते गौतमप्रणीत न्यायसूत्र तो नहि होय, माटे आ पुस्तक जोवानी [illegible] छे.

D प्रमाणसार जैनन्याय ग्रंथ छे के परमतना न्यायपर जैनकृत व्याख्याग्रंथ छे ते संबंधे कंई नोंधेलु नथी एटले ते ग्रंथ जे मुनिमहाराजे जोयो होय तमणे ते [illegible] जणाववानी कृपा करवी.

E हर्षमुनि ए टुंकु नाम छे माटे हर्षकीर्ति, हर्षभूषण के हर्षवर्धन ए [illegible] नाम [illegible] ते तेनो [illegible] मळवाथी मालम पडे तेम छे.

F जेसलमेरनी नवी टीपमां आ नाम नोंधेल छे.

G. H. आ नामोनां जेसलमेरनी [illegible] टीपमा नोंधेला छे, एटले तेमना माटे तथा तेना कर्तानां नाम माटे अने श्लोकसंख्या माटे शक राखवो पडे छे. आ ग्रंथ [illegible] ते [illegible] छे, पण [illegible] विशेष [illegible] नोंध्यो छे.

I आ ग्रंथ पण [illegible] ग्रंथ [illegible] होय पण तेमां पण [illegible] मुख्य [illegible] अहीं नोंध्यो छे.

J [illegible]

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रचना संवत्	क्यां छे ?
१४	[illegible] A				[illegible]
१५	[illegible] B	पत्र ३			[illegible]
१६	[illegible] C				[illegible]
१७	[illegible] D	पत्र ८			[illegible]
१८	[illegible] E	पत्र १०			[illegible]
१९	[illegible] F	पत्र ४			[illegible]
२०	[illegible] G				[illegible]
२१	स्याद्वादकलिका	४०	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२२	स्याद्वादभाषा	१००	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२३	[illegible]		[illegible] H		[illegible]

A. B [illegible]

C [illegible]

D. E [illegible]

F [illegible]

G [illegible]

H [illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
	वर्ग ३ जो.				
	[illegible]				
१	[illegible] A	२००			गू.
२	[illegible]				डेक्कन.
३	[illegible]	१००	कीर्तिचंद्र B		पा. ५.
४	[illegible] C	२१५			गू.
५	[illegible] D	५२१	यशोदेव E		गू.
६	ईश्वरनिराकरण				डेक्कन.
७	[illegible] F	पत्र ३			कों.
८	[illegible] G				डेक्कन.
९	[illegible]				डेक्कन.
१०	[illegible]				डेक्कन.

A. C. D. [illegible]

B [illegible]

E [illegible] ११८० [illegible]

F [illegible]

G [illegible]

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या नो सं	क्यां छे ?
११	नास्तिकनिराकरण	१७			लींबडी.
१२	परब्रह्मोत्थापनस्थळ	२४१	भुवनसुंदर A		पा. ५ को.
१३	परहेतुतमोभास्करस्थळ B	पत्र १५			अ. २
१४	परिणामिवस्तुत्त्वस्थापन	८०			बृ.
१५	पंचदर्शनखंडन	पत्र ३			को.
१६	प्रत्यक्षानुमानाधिकप्रमाणनिराकरण	५१९	यशोदेव		बृ.
१७	प्रतिमाप्रतिष्ठास्थापनस्थळ C	पत्र २१	अजितदेव D	११८५	बृ.
१८	प्रत्यक्षस्थापनस्थळ				बृ.
१९	वेदखंडन	१००	कीर्तिचंद्र		पा. ५
२०	वेदबाह्यतानिराकरण E		हरिभद्रसूरि		डेक्कन.
२१	शब्दनिराकरण F				डेक्कन. डेसल.

A भुवनसुंदरसूरि मुनिसुंदरसूरिना वारे हता.

B आ ग्रंथ जैनकृत छे के केम तेनो चोक्कस निर्णय ग्रंथ जोयाथी थई शके तेम छे.

C. E आ बे स्थळ पण पाटण बृहट्टिप्पनिकामां नोंधायला छे तेथी अहीं नोंध्या छे.

D अजितदेवसूरि मुनिचंद्र तथा मानदेवसूरिना शिष्य हता.

E आ ग्रंथ सात [illegible] छे [illegible] ते अपूर्ण ग्रंथ छे.

F आ ग्रंथ अने बृहट्टिप्पनिकामां नोंधायेलो [illegible] ८ पत्र छे के जेथी [illegible] ग्रंथ तपासी [illegible] शके तेम छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
२२	षड्दर्शनखंडन	पत्र २			पा. ४
२३	सर्वज्ञवादस्थळ A				डेकन.
२४	सर्वज्ञव्यवस्थापनावाद B				को बु.
२५	सर्वज्ञव्यवस्थापनास्थळ C				डेकन.
२६	सर्वस्थळ D				डेकन.
२७	सर्वार्थनिराकरणस्थळ	२५०	रविप्रभ E		पा. ४-५, डेकन
२८	सक्षेपेणसर्वज्ञसिद्धि F				डेकन. जे.

A. B. C. D. आ ग्रंथ एकज छे के जूदा जूदा छे ते जाणवा माटे तेमनी प्रतो जोईये.

E रविप्रभसूरि उदयप्रभ तथा जिनचंद्रना गुरु हता अने तेओ तेरमी सदीना वच्चे थया होवा जोईये.

F आ ग्रंथ माटे जेसलमेरनी हंसविजयजीकृत टीपमां सर्वज्ञसिद्धि एटलुंज नाम छे अने ते ताडपत्र ८ नो छे एम नोंध्युं छे. भावनगरनी टीपमां पण तेज नामनी प्रत छे.

अंक	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	बनाया तो संवत्	क्यां छे ?
	वर्ग ९ मो.				
	दिगम्बरकृत न्यायग्रंथो.				
१	[illegible] टीका		[illegible]		पू पा २
२	[illegible] *		प्रभादेव		*
३	आप्तमीमांसा A		समन्तभद्र B	११५	डे क ल.
	टीका	*	वसुनंदि		डे क ल
	भाष्य		अकलंकदेव		डे क ल
	वृत्ति (अष्टसहस्री)	८०००	विद्यानंद		डे मु [illegible] २.
४	आप्तपरीक्षा	१२०	"		"
	वृत्ति	४५००	"		[illegible] डे क ल.
५	[illegible]		देवसेन		[illegible]

* [illegible]

A [illegible]

B [illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
६	जिनसत्तालंकार †		समंतभद्र		†
७	जीवास्तित्ववाद A	१५०			डेक्कन.
८	तत्वार्थनी टीकाओः—				
	गंधहस्ति महाभाष्य B	८४०००	समंतभद्र		†
	टीका (पहेली)	२४००	प्रभाचंद्र (तत्वप्रकाशिका)		डेक्कन.
	टीका (बीजी) (सर्वार्थसिद्धिनाम्नी)	६०००	पूज्यपादस्वामी (देवनंदी)		डे. मुं.भांडवाडो
	टीका (त्रीजी)	११०००	श्रुतसागर		डे. मथुरा.
	टीका (चोथी)	८०००	धर्मभूषण (न्यायदीपिका)		डेक्कन. मुद्रित.
	टीका † (पांचमी)	३२५०	विबुधसेन		†
	टीका † (छट्ठी)		लक्ष्मीदेव		†
	टीका † (सातमी)		शुभचंद्र		†
	टीका † (आठमी)		प्रभाचंद्र (तत्वप्रकाशिका)		†
	टीका † (नवमी)		योगींद्रदेव (तत्वप्रकाशिका)		†
	टीका † (दशमी)		देवीदास		†

† आ चिन्ह माटे पाछळथी अन्यातिवाद उपरनी नोट जुओ.

A आ ग्रंथ डेक्कन कॉलेजना रीपोर्टमां नोंधेल होवाथी ते प्रमाणे तेने अमे इहां नोंध्यो
रंतु ते न्यायनोज छे के खंडनमंडननो छे ते ग्रंथ जोई नकी करवुं जोईवे.

B गंधहस्ति महाभाष्य ते तत्वार्थनी बृहत्वृत्ति छे. अने ते चोराशी हजारनी हती एम
परथी जाणवामां आवेलुं छे. ते प्रमाणे तेने इहां टांकी छे. परंतु ते वृत्ति हालमां क्यां पण उपलब्ध थती न

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	छपा-यां छे.	क्यां छे ?
	टीका (आप्तमीमांसा)1		योगदेव		
	टीका (आप्तमीमांसा) 1 (तत्त्वार्थदीपिका)	५०००	वसुनंदि		1
	राजवार्तिक	१६०००	अकलंक शिष्य		दक्षण.
	श्लोकवार्तिकालंकार	१८०००	महाकलंक		मु. मोरनारो २
	तत्त्वानुशासन 1	५०००	नागसेनमुनि		1
	सम्यग्दर्शन 1		प्रभादेव		1
	तत्त्वसार		देवसेन A		दक्षण.
	टीका 1		सकलकीर्ति B		1
	दीपिका 1	१००	बालचंद्र		

1 आ चिह्न माटे पेज ८७ ना अन्तभागनी उतरती नोट जुओ.

A जिनना देवसेन थए थया छे:—

एक देवसेन ते धर्मसेनना शिष्य अने अमितगतिना गुरु हता. आ देवसेनने माटे अमित-गतिकृत धर्मपरीक्षाना प्रशस्ति लेखमां नोंध छे.

बीजा देवसेन ते विमलसेनना शिष्य हता अने तेमणे भावसंग्रह रचेल छे. एम पीटर्सनना पांचमा रिपोर्टमां नोंध्युं छे.

त्रीजा देवसेन भट्टारक ते रामसेनना शिष्य हता. तेओनो जन्म संवत् ९५१ मां थयो छे. अने तेमणे सं. ९९० मां दर्शनसार रचेल छे. ते सिवाय तत्त्वसार अने भावसंग्रह एवा ग्रंथ प्राकृतमां तेमणेज रचेल छे. अने नयचक्र तथा आलापपद्धति संस्कृतमां रची छे. वळी तेमणे रचेलो धर्मसंग्रह पण संस्कृतमांज हतो एम पिटर्सने नोंध्युं छे.

हवे आ त्रण आचार्यमांथी तत्त्वसारना कर्ता देवसेन ते आ त्रीजा देवसेन छे. एम चोक्कस निर्णय थाय छे.

B आ सकलकीर्ति ते पद्मनंदिना शिष्य हता. अने तेमणे पार्श्वनाथ चरित्र रचेल छे. एम पिटर्सन रिपोर्ट पांचमामां नोंध्युं छे. तेमना माटे वेबर एवी नोंध करी छे के तेओ वि. सं. १५२० मां विद्यमान हता.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रचना संवत.	क्यां छे ?
	[illegible]	८००	अमृतचंद्र.\		डे. कॉ. मु. मोहन
	[illegible]	१८००	सकलकीर्ति		डेक्कन.
	[illegible] $		विद्यानंद		$
	[illegible]	२५०			डेक्कन.
	[illegible]				म. ५
[illegible]	[illegible]		[illegible]		$
१०	[illegible]		[illegible]		$
[illegible]	[illegible] C	[illegible]	यति [illegible]-सुत		मा. २
[illegible]	[illegible] £		[illegible]		$
[illegible]	[illegible] £		विद्यानंद		$
[illegible]	[illegible] $		प्रभाचंद्र		$
[illegible]	[illegible] £		[illegible]		$
[illegible]	[illegible] $		[illegible]		$
[illegible]	[illegible] D	[illegible]			डेक्कन.
[illegible]	[illegible]	३००	[illegible]		[illegible]

\ [illegible]

$ [illegible]

£ [illegible]

[illegible]

[illegible]

अंक.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रचना संवत्.	क्यां छे?
१९	(१) नयचक्र.	१८०	देवसेन		डे. भा. मनुष्य.
	वृत्ति		"		डेक्न.
२०	(२) नयचक्र †		धर्मपाल		†
२१	नयवाद †		प्रभादेव		†
२२	न्यायदीपिका	८००	धर्मभूषण		मुद्रित.
२३	न्यायकुमुदचंद्र A		अकलंकदेव		मू.
	न्यायकुमुदचंद्रोदय	१६०००	प्रभाचंद्र		मु. मुं. गुजराती.
२४	न्यायविनिश्चयालंकार †	२००००	अकलंकदेव		†
२५	न्यायविनिश्चयवृत्ति		अनंतवीर्य		कोल्हाप.
२६	न्यायसद्भावपद	पत्र ५१३			डेक्न
२७	न्यायामृत †		आशाधर		†
२८	परीक्षामुख	पत्र ४२	माणिक्यनंदि		मू. डेक्न.
	वृत्ति (प्रमेयरत्नमाला)	१५००	अनंतवीर्य		मुद्रित.
२९	पत्रपरीक्षा				मू.
३०	प्रमाणप्रमेयकलिका B	६०			डे. को. मू.

† आ चिन्ह माटे पेज ८७ मां अपरनिहार उपरनी नोट जुओ.

A आ ग्रंथ बृहट्टिप्पनिकामां तेनी वृत्तिसाथे नोंधायो छे. अने तेना माटे त्यां आवो उल्लेख छेः—
" न्यायकुमुदचंद्रस्वृत्तिः दिगंबरी अकलंकदेवप्रभाचंद्रकृते वृ. ग्र. १६००० "

B प्रमाणप्रमेयकलिकाना मूळकर्ता कोण छे ते जाणवामां आव्युं नथी.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
	वृत्ति	२०००	नरेंद्रसेन		डे. को.
	वृत्ति	२८७३	शांतिसूरिA		वृ. पा. २
३१	प्रमाणनिर्णय *		विद्यानंद		*
३२	प्रमाणमीमांसा *		*		*
३३	प्रमाणविलास *	२०००	धर्मभूषण		*
३४	प्रमाणदीपिका *		प्रभाचंद्र		*
३५	(१) प्रमाणनौका*		वादिसिंह		*
३६	(२) प्रमाणनौका *		वीरसेन		*
३७	प्रमाणपरीक्षा	१४००	विद्यानंद		डे. जयपुर.
३८	प्रमितवाद *		प्रभादेव		*
३९	प्रमेयकमलमार्तण्ड	१२०००	प्रभाचंद्र		वृ. पा. २-४ मुं. इत्यादि.
४०	भाषामंजरी	२५००	भट्टाकलंक		डेक्कन.
	वृत्ति	८०००			डेक्कन.

A आ शांतिसूरि तेमना नाम उपरथी ते श्वेताम्बर होवा जोइये. अने आ ग्रंथ उपर दिगंबर होवाथी उपर तेमणे आ टीका रची होवी जोइये, कारण के श्वेताम्बर आचार्योए अन्यमतिना ग्रंथोपर टीकाओ रचेली छे. आ वृत्तिनी प्रत तारतम उपर लखायेली पाटणमां मोजूद छे. माटे तेनो खास उतारो करी लेवानी जरूर छे.

* आ चिन्ह माटे पेज ८७ मां अप्रसिद्ध उपरनी नोट जुओ.

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे?
४१	युक्तिचिंतामणि †		सोमदेव A		†
४२	युक्तिवाद †		प्रभादेव		†
४३	युक्त्यनुशासन		समंतभद्र		ईडर
	वृत्ति	२७८२	विद्यानंद		ईडर
४४	शब्दमार्तण्ड †		प्रभाचंद्र		†
४५	वाक्यप्रकाशव्याख्या	पत्र २			मु.
४६	वाग्विलास B	पत्र ६७			अ २
४७	वादमंजरी †		वादिराज		†
४८	वादिकौशिकमार्तण्ड †		प्रभाचंद्र		†
४९	विश्वतत्त्वप्रकाश		भावसेन त्रैविद्य		मु. मोरवाडो २
५०	बृहत्पंचनमस्कार वृत्ति	५००			लींबडी

† आ चिन्ह माटे दिगंबरकृत न्यायनी ग्रंथमाळामां अन्तमांनी उपरनी नोट जुओ.

A आ सोमदेवे यशस्तिलक नामे काव्य शके ८८१ एटले विक्रम संवत् १०१६ मां रचेल छे. अने ते डेक्कन कॉलेजमां मोजूद छे. पिटर्सन चोथा रिपोर्टमां तेमनी आम्नाये वंशावळी आपी छे. देवसंघतिलक तेमना पाटे यशोदेव तेमना पाटे नेमिदेव अने नेमिदेवना पाटे सोमदेव थया छे.

B आ ग्रंथ अमदावादना पंचकल्याणना भंडारनी टीपमां नोंध्यो छे. अने ते न्यायनो हशे एम धारीने तेने अमे अहीं नोंध्यो छे. परंतु वखते ते साहित्यनो पण होय माटे तेमां शुं छे अने ते कोने रचेल छे ते नक्की करवा माटे ते ग्रंथ नजरेनजर जोवानी जरूर छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
९	न्यायालंकार टिप्पन	१००००	अभयतिलक A		जेसलमेर.
१०	महाविद्याविडंबनावृत्ति	२०३०	भुवनसुंदर		पा. ५
	टिप्पन	६५७	,,		पा. ४ लिंबडी.
११	लक्षणसंग्रह B	६९९	रत्नशेखर C		डेक्कन.
१२	सप्तपदार्थी	१९००	जिनवर्धन D		पा. १, खं. भ.

A अभयतिलक उपाध्याये सं. १३१२ मां द्याश्रयनी टीका रचेली छे.

B आ ग्रंथनुं नाम स्वतंत्र लागे छे, छतां अमे तेने इहां व्याख्याग्रंथमां नोंध्यो छे, माटे ए जोवाथी ते जो स्वतंत्र जैनन्यायनो ग्रंथ जणाय तो तेने जैनन्यायना बीजा वर्गमां नाखवो जोइये.

C रत्नशेखरसूरि १५०२ थी सं. १५१७ सुधीमां हता.

D जिनवर्धनकृत आ ग्रंथ खंभातना भंडारमां सं. १५११ मां लखेल छे माटे तेना अगाऊ वर्धन गणि होवा जोईये.

लीस्ट नंबर ३.

जैन फिलॉसोफि.

हरिभद्रसूरिकृत ग्रंथो.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे?
१	अनेकान्तजयपताका A	३५००	हरिभद्र B		वृ., पा. १-४.
	वृत्ति	८२५०	स्वोपज्ञ		वृ. पा. १.
	,, टिप्पन	२०००	मुनिचंद्र		कोडाय. जेसळ.
२	अष्टकसूत्र C	२५६	हरिभद्र		वृ. पा. १सुल
	वृत्ति	३३७४	जिनेश्वर	१०८०	वृ., पा. १-२,को
३	उपदेशपद	गा.१०४०	हरिभद्र		वृ., पा. २ को.
	वृत्ति	१४०००	मुनिचंद्र	११७४	वृ., पा.१-४.को

A आ ग्रंथ पूर्वे जैन न्यायना पाठमां नोंधायो छे, परंतु आ पाठमां हरिभद्र रचेला ग्रंथो अनुक्रमवार नोंधवामां आवनार होवाथी अने इहां पण नोंधवामां आवेल छे.

B हरिभद्रसूरि विक्रम संवत् ५८५ मां स्वर्गवासी थया छे. तेओ याकिनी महत्तरा साधे रचेल होवाथी पोताना नाम साथे " धर्मतो याकिनीमहत्तरासूनु " एवुं विशेषण जोडे छे. १४४४ प्रकरणो रच्यां हतां एम प्रशस्तिओ परथी मालम पडे छे, परंतु दिलगिरीनी छे के तेमांना हालमां थोडांने गणतरीना मांड्या प्रकरणोज हाथ आव्या छे. हरिभद्रसूरिए सर्वोपरिजनत्री उपरान्त रचेलां केटलांक प्रकरणो अमदावादमां पंन्यास दयाविमळजी महाराजना भंडारमां मोजूद छे एम सांभळवामां आव्युं छे. हालमां ते भंडार प. सौभाग्यविमळ महाराजना हस्तक छे अने श्रीमान् शेठ मनसुखभाईना भाई जमनाभाई भगुभाई जेवा धर्मपुरुषनी देखरेखमां छे, तो तेओ अथवा शेठ जमनाभाई ते भंडार उपरथी तेमांना पुस्तकोनी [illegible] बाबत असरकारक [illegible] आशा छे.

C आ सूत्रनां जुदा जुदा नाम आवे छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक	कर्त्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
	वृत्ति (मोटी) A	६४१२	वर्द्धमानसूरि B		जेसलमेर.
४	जंबूद्वीप संग्रहणी C	गा. ३०	हरिभद्र		सुरत्य.
५	ज्ञानादित्य प्रकरण D		हरिभद्र		पा. २, P. 4.
६	दर्शनसत्तरी गा. १५०		हरिभद्र		पा. ३ कोडाय.
	अवचूरि		शिवमंडन		पा. ३
७	देवेंद्रनरकेंद्र प्रकरण E		हरिभद्र		डेक्कन. पेज २०९
	टीका		मुनिचंद्र		डेक्कन.
८	धर्मबिंदु	२५३	हरिभद्र		वृ., पा., १-३-५.
	वृत्ति	३०००	मुनिचंद्र		वृ., पा. १म, सुरत्य
९	धर्मसंग्रहणी गा. १२९६	१७५०	हरिभद्र		वृ १ पा. मुं.

A आ वृत्ति जेसलमेरनी यती टीपमां [illegible] लखेली तेना कर्त्तानुं नाम साथे नोंधल छे. पण तेना कोईपण भंडारमां जोवामां आवी नथी, माटे खबर तेनी उपरथी मळी शोधवी.

B आ वर्द्धमानसूरि ते जिनेश्वरसूरिना गुरु हता ते छे के बीजा छे ते पुस्तकनी प्रशस्ति जोवाथी मालम पडी शके तेम छे.

C जेसलमेर टीपमां एनी ११२ गाथा नोंधल छे.

D आ प्रकरणनुं प्राकृतमां "नाणाइत्त" एवुं नाम छे ते बरोबर छे, पेटर्सन साहेबे तेने संस्कृतमां [illegible] जणाव्युं छे. अने पेटर्सन रिपोर्ट बोलवामां हरिभद्रसूरिनुं नाम दीधेलुं छे तेनो रचेल छे एम जणाय छे.

E आ प्रकरण डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां पेज २०९ मां [illegible] नोंधल छे. आ प्रकरण [illegible] छे, पण रिपोर्टमां तेनी [illegible] नथी, [illegible] छे. [illegible] छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
	वृत्ति A (गुरुशिष्या)	११०००	मलयगिरि		पु., पा., २-३-४.
१०	धूर्ताख्यान (प्रा.)	४०२	हरिभद्र		पा. ४.
११	न्यायप्रवेशकसूत्र.	१०८	हरिभद्र		पु. पा. ४.
	वृत्ति	८८७	[illegible]		पा. २-५
१२	पंचाशक B	११८४	हरिभद्र		पु. पा. २-३-४, को
	वृत्ति	७४८०	अभयदेव	११२४	पु. सुरत्य.
	प्र. पंचाशक चूर्णि C	३३००	यशोदेव	११७२	पु. पा. १-५.
१३	पंचवस्तुक	१७१४	हरिभद्र		पु. पा. २
	वृत्ति	५०५०	[illegible]		पु. पा. ४, कोडाय
१४	[illegible] सूत्र D	२१०	हरिभद्र		पु. पा. २-३.
	वृत्ति	८८०	[illegible]		पु. पा. २-४-५.
१५	[illegible] E	५००	हरिभद्र		A. S. ३, म. १.

A आ वृत्तिने माटे बृहट्टिप्पनिकामां आवो उल्लेख छे:—" [illegible] ११०००-१२००० [illegible] "

B पंचाशक १९ छे एम बृहट्टिप्पनिकामां नोंध्युं छे.

C आ चूर्णि माटे बृहट्टिप्पनिकामां " [illegible] चूर्णिः ११७२ वर्षे यशोदेवीया [illegible] ३३०० " आवो उल्लेख छे.

D बृहट्टिप्पनिकामां [illegible] उल्लेख [illegible] छे:—

" [illegible] ९१० [illegible] ८८० [illegible] [illegible] "

E [illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो स	क्यां छे ?
१६	योगबिंदु	५२०	हरिभद्र		बृ. पा. १-४, के.
	वृत्ति	११२०	स्वोपज्ञ		बृ. पा. १-४ ५
१७	योगदृष्टिसमुच्चय	२२६	हरिभद्र		पा. १-३, कोडाय
	वृत्ति	११७५	स्वोपज्ञ		पा. १-३, कोडाय
	अवचूरि	४५०	साधुराजगणि		A S कोडाय.
१८	योगशतक A गा. १०१		हरिभद्र		S. K.
१९	लग्नशुद्धि गा. १२८ B		"		पा. ३ S.K.कोडाय
२०	लोकतत्वनिर्णय	१७०	"		बृ. कोडाय.
२१	वीरांगदकथा C	पत्र ८	"		अ. २
२२	वेदबाह्यतानिराकरण D		"		डे.
२३	शास्त्रवार्तासमुच्चय		"		{पा. ५ डेक्कन पेज २०९
	लघुवृत्ति	७०००	स्वोपज्ञ		भा.

A आ शतक पाटण संघवीना पाडाना भंडारमां ताडपत्र उपर छे एम पीटर्सनना रिपोर्टमां नोंध्यु छे. ते सिवाय बीजे कोइपण स्थळे उपलब्ध थयु नथी. माटे तेनो उद्धार करावी लेवानी जरुर छे.

B आनुं बीजुं नाम लग्नकुंडलिका पण छे. जुओ रिपोर्ट पहेलो पेज ८८

C अमदावादना वचनबाना भंडारमां आ कथा हरिभद्रसूरिए रचेल छे एम नोंध्युं छे. परंतु ते संबंधी बीजो कोई विशेष पुरावो जोवामां आव्यो नथी माटे ते कोणे रची छे ते चोकस नही करवा माटे तेनी प्रत जोवानी जरुर छे.

D पीटर्सनना पेला रिपोर्टमां पेज ११६ मां आ ग्रंथना कर्ता हरिभद्रसूरि बताव्या छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
	वृत्ति (स्याद्वादकल्पलता)	१३०००	यशोविजय		कोडाय.
२४	श्रावकधर्मतंत्र A		हरिभद्र		डेक्कन पेज २०९
	वृत्ति		मानदेव		डेक्कन पेज २०९
२५	षड्दर्शनसमुच्चय.		हरिभद्र		पा. १-३-४.
	वृत्ति	४२५२	गुणरत्न		पा. ३-४.
२६	षोडशक	३३०	हरिभद्र		वृ. पा १-३-४ को.
	वृत्ति	१५००	यशोदेव		वृ. सुलभ.
२७	समरादित्यचरित्र (प्रा)	१००००	हरिभद्र		पा. ४-५, A. S.
	„ टिप्पन		मतिवर्धन		A. S.
२८	सर्वज्ञसिद्धिप्रकरण B	७३०	हरिभद्र		जेसलमेर वृ.
२९	संबोधप्रकरण C	२०५४	हरिभद्र		अ. १, GOV. 6.
३०	साधुप्रवचनसारप्रकरण D	पत्र ९	हरिभद्र		अ. २

A डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां पेज २०९ मां श्रावकधर्मतंत्र नामे ग्रंथ तेनी वृत्ति साथे नोंधेल छे. पण ते अत्यार सुधी कोई पण जगोए उपलब्ध थयो नथी, अजायबनी वात ए छे के त्यां पण तेनी श्लोक संख्या पण लखी नथी. माटे शोधक जनोए गुम थता आवा उपयोगी ग्रंथनी डेक्कन कॉलेजमां शोध खोळ करी अगर ते ज्यां होय त्यांथी तेनो पत्तो मेळवी उतारो करावी लेवो जोइये.

B आ प्रकरण फक्त जेसलमेरमां हंसविजयजी महाराजनी टीपमां नोंधायुं छे, ते सिवाय बीजे कोईपण स्थळे उपलब्ध थयुं नथी. माटे जेसलमेरना भंडारमांनी प्रत उपरथी तेनो खास उतारो लेवो

जोइये. हमणा खबर मळी छे के ते भावनगरमां तथा पं. आनंदसागरजीना पासे पण छे.

C एनुं अपरनाम तत्त्वप्रकाशक छे. डेलाना भंडारमां ते पत्र ८८ नुं छे एम नोंध्युं छे परंतु ते केटला प्रमाणनुं छे तेनो चोक्कस निर्णय डेलाना भंडारमांनी प्रत नजरे जोयाथीज थई शके.

D आ नाम एक पत्रनुं लागे छे अने ते फक्त अमदावादना चंचळबाना भंडारनी टीपमां नोंधायुं छे. ते सिवाय बीजो कोई विशेष पुरावो जोवामां आव्यो नथी. माटे तेनुं खरुं नाम शुं छे तेनो निर्णय करवो जोइये.

सूचना:—आ ग्रंथो उपरांत हरिभद्रसूरिए जे सूत्रो उपर टीकाओ रची छे ते जैनागमना लिस्टमां नोंधेल छे.

यशोविजयवाचककृत ग्रंथो.

सं.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रचना साल	क्यां छे ?
१	अध्यात्मोपनिषद्	६३१	यशोविजय A		छपाय छे.
२	अध्यात्ममतखंडन		"		छपाय छे
३	अध्यात्मसार	१३००	"		पा. ४ को. पुष्टि
४	अध्यात्ममत परीक्षा		यशोविजय		पा. ५
	वृत्ति	४०००	यशोराज		पा. ५
५	उपदेशरहस्य	०	यशोविजय		कोडाय.
	वृत्ति	३०००	यशोराज		को.
६	कर्मप्रकृति टीका	१३०००	यशोविजय		प. ३ को.
७	गुरुतत्त्वनिर्णय		"		पा. ० की.
	वृत्ति	७०७१	"		प. २ का
८	ज्ञानबिंदु	१२५०	"		छपाय छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्याने सं.	क्यां छे ?
९	ज्ञानसार A		यशोविजय		मुद्रित.
	वृत्ति		देवचंद्र		अ. १
१०	तर्कभाषा B	४००	यशोविजय		पा. ४–५,खं. Gov6
११	देवधर्मपरीक्षा		”		मुद्रित.
१२	द्वात्रिंशद्वात्रिंशिका		”		अ. १ को.
	वृत्ति		स्वोपज्ञ		पा. ३–५
१३	धर्मपरीक्षा		यशोविजय		पा. १ अ १.
	वृत्ति	५५५०	स्वोपज्ञ		पा. ३. अ. १
१४	नयरहस्य C	५११	यशोविजय		पा. ५
१५	नयोपदेश		यशोविजय		पा. ३, अ. १
	टीका D	पत्र९१	स्वोपज्ञ		अ. १
१६	न्यायालोक	१२००	यशोविजय		पा. ३, Gov

A एमां बत्रीस अष्टको छे.

B एने "जैनतर्कभाषा" पण कहे छे.

C आ ग्रंथ फक्त पाटणनी टीपमां नोंधायो छे. माटे आ दुर्लभ ग्रंथनो उतारो करावी लेवानी खास जरूर छे.

D आ टीकानुं नाम नयामृततरंगिणी छे अने ते पं. आनंदसागरजी महाराज पासे पण छे.

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या नो सं	क्यां छे ?
२७	स्याद्वादकल्पलता A	११०००	यशोविजय		पा. ५
२८	स्तोत्रत्रय B				
	शंखेश्वर स्तोत्र	का ११२	यशोविजय		खंभात.
	गोडीपार्श्वस्तोत्र	का. १०८	यशोविजय		खंभात.
	सामीकापार्श्वस्तोत्र	का. ९	यशोविजय		खंभात.
२९	स्तोत्रावलि	पत्र ७	यशोविजय		अ. १

A हरिभद्रसूरिना शास्त्रवार्तासमुच्चयना उपर आ टीका रचेली छे.

B अत्रे त्रण स्तोत्रो छे तेमना नीचे प्रमाणे नाम नोंध्या छे. आ त्रणे स्तोत्रना काव्य अपूर्व छे. [illegible] छे. आ स्तोत्रनी प्रत यशोविजयजीए स्वहस्ते लखी होय एम लागे छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक	कर्त्ता.	रचनानो स.	क्यां छे ?
	कोडायमां भंडार रहेला ग्रंथोनां नाम.				
१	ज्ञानबिंदु A		यशोविजय		
२	स्याद्वादमंजूषा B		यशोविजय		
३	(कूपना दृष्टांत परग्रंथ) C		यशोविजय		

A ज्ञानबिंदुनुं फक्त प्रथम पत्र कोडायमां छे.

B मां हेमचंद्र कृत स्याद्वादमंजरी उपर यशोविजयजीए आ स्याद्वादमंजूषा रची छे. तेना फक्त थोडांक पानां कोडायमां छे.

C आ ग्रन्थ पण प्रथम पत्र कोडायमां छे.

अध्यात्मना ग्रंथो.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता	रच्या नो स	क्यां छे ?
१	अध्यात्मकल्पद्रुम	४२२	मुनिसुंदर		पा. ३-४ कोडाय.
	वृत्ति	३०००	धनविजय A		पा ३. को. डेकन.
	वृत्ति (बीजी)	२७८८	रत्नचंद्रगणि	१६७४	पा. ३-४-५
२	अध्यात्मबिंदु	का. ३२	हर्षवर्धन B		P. 4 अ. २
	टीका	७००	हर्षवर्धन		P. 4 अ. १-२, सं.
३	अध्यात्मकमलमार्तंड	२०५	राजमल (दिगं)		A. S.
४	अध्यात्मसार	१३००	यशोविजय		पा. ४. को मुद्रित.
५	अध्यात्मदीपिका C	पत्र ९			अ. १
६	अध्यात्मगीता D	७००	जिनदत्त		जेसलमेर.
७	आत्मज्ञान E	ता. ४९			पा २.
८	आत्मावबोध F	५००	देवप्रभ (मलधारि)		पू.

A धनविजय गणि संवतनी सदीमां होवा जोइए.

B आ हर्षवर्धन क्यारे थएला छे ते संबंधी ऐतिहासिक बीना मळी नथी.

C आ ग्रंथ अमदावादना डेलाना भंडारनी टीपमां नोंधेल छे. ते सिवाय बीजे क्यांऐ उपलब्ध थतो नथी.

D आ ग्रंथ शक पडतो लागे छे. कारण के ते संबंधी कोई पुरावो जोवामां आवतो नथी, अने ते जेसलमेरनी ईसालकृत टीपमां तेना कर्तांना नाम साथे नोंधेल छे. हवे देवचंद्रजीए अध्यात्मगीता भाषामां रचेली छे अने ते शक श्लोक बावनथी वेगन जेटलीज छे. ते परथी कदाच आ गीता पण भाषामां रचाई हशे एम अनुमान थाय छे. तो ते भाषामां रचाई छे के केम ? तथा ते कोने रची छे ते बाबतनी चोकस खात्री जेसलमेरमांनी तेनी प्रत जोयाथीज थई शके.

E आ ग्रंथ पाटणना बीजा भंडारमां नोंधायो छे अने ते ताडपत्रपर लखेल छे माटे ते खास उतारवा लायक छे.

F आत्मावबोध बृहट्टिप्पनिकामां नोंधेल छे, पण हालमां ते कोई भंडारमां मळतो नथी.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
९	आत्मानुशासन	७०	पार्श्वनाग	१०४२	पा. २-३.
	टीका	ग्रं३१४७			पा. २
१०	आत्मानुशासन		गुणभद्र A		A. S.
११	आराधनासार B				मू.
१२	उपदेशरत्नमाला	३१००	सकलभूषण (दिग)	१६२७	A. S.
१३	चारित्रसार	१०००	चामुंडराज C (दिग)		A. S.
१४	जिनयज्ञादि प्रकरण D	३००	(मुद्रक)		अजमेर
१५	जिनप्रवचनरहस्यकोश	३०२	अमृतचंद्र		पा. ३—५
१६	ज्ञानधारा E	ग्रं. ११३			पा. २.
१७	ज्ञानदीपिका F				मू.
१८	ज्ञानतरंगिणी	पत्र ३६	(ज्ञानभूषण दिगं)	१५६०	पा. ५

A [illegible] छे. [illegible] छे.

B [illegible] छे:—

[illegible] कंई माहिती मळी नथी.

C [illegible] छे [illegible] छे.

D [illegible] छे अने [illegible] छे [illegible] नथी, [illegible] छे अने [illegible]

E [illegible] छे, [illegible] छे [illegible]

F [illegible] छे [illegible]

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
१९	ज्ञानार्णव A	४०००	शुभचंद्र (दिग)		पा. ३-५ मु.
२०	ज्ञानांकुश	का. २८			मु.
२१	तत्त्वबिंदु प्रकरण	पत्र ३			अ. १
२२	तत्त्वामृत	पत्र ५५			अ. १
२३	दर्शनरत्नाकर	१९,८६४	सिद्धांतसारB	१५७०	पा. ३-४-५, ली.
२४	धर्मलक्षण C	१५			A.S.S.K. पा. २
२५	धर्मोपदेशामृत	१९९	(दिग)पद्मनंदि		लींबडी.
२६	ध्यानसार D	पत्र ९	(जैन)		अ. १
२७	ध्यानदीपिका E	पत्र १६	(जैन)		अ. १
२८	ध्यानविचार	७०?			लींबडी.
२९	निर्वाणकांड	पत्र २			पा. ३
३०	निःश्रेयसाधिगम प्रकरण F	पत्र २४	चद्राक?		जेसलमेर.

A. [illegible] १४९९ [illegible] छे.

B. [illegible]

C [illegible]

D. E. [illegible]

F [illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
	[illegible]	[illegible]			[illegible]
[illegible]	[illegible]		[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]			[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
	[illegible]				[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] D		[illegible]

A [illegible]

B [illegible]

C [illegible]

D [illegible]

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे?
४२	योगरत्नसमुच्चय A	पत्र १२			भ. १
४३	योगानुशासन B	१५००			जेसलमेर
४४	योगशतक C	गा. १०१	हरिभद्र		S. K.
४५	योगसंग्रहसार D				बृ.
४६	लघुरत्नत्रय	गा. ४०			पा. २
	टीका E	ताड६३			पा २
४७	समाधि तंत्र		दिगं. कुंदकुंद		A. S.
	टीका	पत्र १५४	पर्वत धर्मार्थी		जेसलमेर.
४८	समाधिशतक		(दिगं) पुज्यपाद		A. S.
४९	समभावशतक F	१०२	धर्मघोष		बृ.
५०	साम्यशतक	१०४	विजयसिंह		बृ. पा. ३

A आ ग्रंथ अमदावादना डेलाना भंडारनी टीपमां नोंधायो छे. ते परथी तेने टांक्यो छे. ते तेना नाम परथी योगनो हशे एम लागे छे, छतां वखते वैदकनो पण होइ शके. तो ते योगनो छे के वैदकनो छे ते बाबत दरकार करी नक्की करवुं जोइये.

B आ ग्रंथ शक पडतो लागे छे कारण के ते एक जेसलमेरनी टीपमां ईशारामां नोंध्यो छे. अने ते त्रुटक छे एम जणावेल छे, तो ते कोणे रच्यो छे तथा तेनो केटलो भाग त्रुटक छे ते तपासी नक्की करवानी जरूर छे.

C आ ग्रंथ हरिभद्रसूरिकृत ग्रंथोमां नोंधायो छे तेज छे.

D एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां नीचे मुजब उल्लेख छेः—

“ योगसंग्रहसारप्राकृतसार्थ ”

E आ टीका एक पाटणना बीजा भंडारमां ताडपत्र उपर लखेली छे ते स्वतंत्र पाटक मुजब दिगंबरकृत छे.

F एना माटे बृहट् टिप्पनिकामां “समभावशतकं योगशास्त्रात्मकं धर्मघोषसूरीयं १०२ ” एम टुंको उल्लेख छे. पण अत्यारसुधी ते कोइपण भंडारमां [illegible] थयुं नथी.

लीस्ट नंबर ४.

जैन फिलॉसोफि.

प्रक्रियाग्रंथो.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
	वर्ग १ लो.				
१	कर्मग्रंथो. A				
	(१) कर्मप्रकृति B गा. ४१५	६००	शिवशर्म C		वृ. पा. ३ सुलभ्य
	चूर्णि D	७०००			वृ. पा. २ जे. खं.
	टिप्पनक	१९२०	मुनिचंद्र		वृ. जेसल E
	वृत्ति (सटुंव)	८०००	मलयगिरि		वृ. पा. ३-४ सुलभ्य
	वृत्ति	१३०००	यशोविजय		पा. ३ मु को.
	(२) पंचसंग्रह F		चंद्रर्षिमहत्तर		वृ.
	वृत्ति G		स्वोपज्ञ		वृ.
	वृत्ति	१८८५०	मलयगिरि		पा. १-२-३ ली.

A आ सभाळा नीचे कर्मसंबंधी वर्णनना खास ग्रंथ नोंध्या छे.

B एने प्राकृतमां "कम्मपयडि" कहे छे. ए ग्रंथ कर्मप्रवाद नामना पूर्वमांथी उद्धृत करेल छे एम तेमां जणाव्युं छे. [illegible] कर्मप्रकृति आसरे श्लोक [illegible] छे अने ते पाटणना नं. ४ तथा ६ वाळा भंडारमां छे.

C शिवशर्मसूरि देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणथी पूर्वे थइ गया छे. केमके नंदिसूत्रनी स्थविरावलीमां कम्मपयडिनुं नाम आवेल छे. तेथी ए ग्रंथ अत्यंत प्राचीन छे.

D एमां बंधनादि आठ करण दर्शावेलां छे.

E जेसलमेरमां बे टीपनो एने विशेषवृत्ति तरीके नोंध्युं छे.

F पंचसंग्रहमां शतक-सप्ततिका-कषायप्राभृत-सत्कर्म अने कर्मप्रकृति ए नामना पांच विभागो छे.

G आ वृत्ति बृहट्टिप्पनिकामां नोंधी छे पण ते कोई भंडारमां उपलब्ध थइ नथी. एना माटे ते टिप्पनिकामां नीचे मुजब उल्लेख छे:—

"पंचसंग्रहस्य शतक १ सप्ततिका, २ कषायप्राभृत, ३ सत्कर्म, ४ कर्मप्रकृति, ५ संग्रहात्मकस्य वृत्तिः [illegible] न."

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रचनानो सं.	क्यां छे ?
	दीपक A	२५००	जिनेश्वर शिष्य वामदेव B		मगीनदास
	(३) पांच प्राचीनकर्मग्रंथ				
	(१) कर्मविपाक	गा. १६८	गर्गर्षि C		मगीनदास
	वृत्ति	९२२	परमानंद D		छू. मगीन. डेक्कन पा ६
	टिप्पन	४२०	उदयप्रभ E		छू. भ. २
	(२) कर्मस्तव	गा. ५७			छू. मगीनदास
	भाष्य F	पत्र १०			पा. २—५
	वृत्ति	१०९०	गोविंदाचार्य G		छू. पा. ५ डे. कॉ.
	वृत्ति		हरिभद्र H		पा. २
	टिप्पन	२९२	उदयप्रभ		छू.

A आ दीपक ते कोई [illegible] वृत्ति होवी जोईए.

B आ वामदेवसूरिनो वधु इतिहास जाणवा माटे प्रशस्ति जोवानी जरुर छे.

C गर्गर्षि [illegible] सिद्धर्षि [illegible] गुरु [illegible] छे. [illegible] सं. ९६२ मां [illegible] छे, [illegible] पूरी थया छे.

D परमानंदसूरिनी वंशावळी आ प्रमाणे छेः—

" [illegible] अने परमानंद [illegible] सं. १२२१ [illegible] सिद्धसूरी अने [illegible] पुस्तको [illegible] छे. [illegible] १ पेज १९.

E उदयप्रभसूरिए सं. १२९९ मां [illegible] छे.

F आ भाष्य [illegible] छे.

G [illegible] छे.

H [illegible] छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
	(३) बंधस्वामित्व				
	वृत्ति	५६०	हरिभद्र	११७२	बृ. जेसल.
	(४) षडशीति A		जिनवल्लभ		बृ. मुलम्य
	भाष्य				पा. ३—५
	वृत्ति	८५०	हरिभद्र	११७२	बृ. पा. १
	वृत्ति (प्रा.)	८०५	रामदेव B		बृ. जेसल.
	वृत्ति	२०००	मलयगिरि		बृ. पा. २-४-५
	वृत्ति	१६३०	यशोदेव		बृ.
	विवरण	पत्र ३२	मेरुवाचक		अ. २
	अवचूरि	७००			सं.
	उद्धार	१६००			सं.
	(५) शतक	गा. १११	शिवशर्म		डेकन.
	भाष्य	गा. २५			डे. पा. ३
	चूर्णि	२३८०			बृ. पा. २-३ जे.अ.२
	वृत्ति	३७४०	मलधारि हेमचंद्र		बृ. पा. ४-५. डे.
	टिप्पन	९७४	उदयप्रभ		बृ.
	अवचूरि	पत्र २५	गुणरत्न		पा ४

A षडशीतिनुं बीजुं नाम आगमिकवस्तुविचारसार छे.

B रामदेव श्री जिनवल्लभसूरिना शिष्य हता.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या ना सं.	क्यां छे ?
	सार्धशतक A		जिनवल्लभ		सु. सुलभ्य.
	भाष्य				पा. ३—५
	चूर्णि	पत्र ९९.	मुनिचंद्र		भ. २
	वृत्ति	८५०	हरिभद्र	११७१	सु.
	वृत्ति	३७००	धनेश्वर	११७१	सु. पा. १-२-६
	वृत्ति B	ताड१५१	चक्रेश्वर C		सु. पा ३ भ. २
	टिप्पनक	१४००			सु. जेसल.
	(४) पांच नव्यकर्मग्रंथ D	५२२	देवेंद्र सूरि E		मुद्रित. सुलभ्य.
	वृत्ति F	१०१३०	स्वोपज्ञ		सु. पा. १-३-४ सुलभ्य.

A आ सार्धशतकनुं अपरनाम "सूक्ष्मार्थविचारसार" छे. आ [illegible] श्री शतकना [illegible] छे. तेनुं कारण ए के तेना [illegible] शब्द [illegible] छे [illegible] आ ग्रंथ [illegible]

B [illegible] सार्धशतकनी प्राकृतवृत्ति [illegible] छे. ते आ वृत्ति [illegible] [illegible] थइ शके.

C चक्रेश्वरसूरि [illegible] सं. ११८७ मां हता. ते वर्धमानसूरीना शिष्य हता. [illegible] तेमना गुरुनुं नाम [illegible] [illegible] छे ते [illegible] [illegible] छे.

D आ पांच नव्य कर्मग्रंथ [illegible] अने [illegible] [illegible] छे.

E देवेंद्रसूरि सं. १३२७ मां [illegible] छे.

F [illegible] छे:—

१ [illegible] १८८२ | २ [illegible] ८१० | ३ [illegible] १४९
४ [illegible] ३८०० | ५ [illegible] [illegible] |

अंक	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या सं	क्यां छे ?
	अवचूरि	२९५८	मुनिशेखर A		पा. १
	अवचूरि B	५४०७	गुणरत्न		पा. ५—६
	कर्मस्तवविवरण	१५०	कमलसंयम	१५५९	जेसलमेर.
	(५) सत्तरि C	गा. ९१	चंद्रर्षिमहत्तर		बृ.
	भाष्य D		अभयदेव		बृ. पा. ४
	चूर्णि	पत्र१३२			बृ. अ. २ जेसल. बे.
	वृत्ति (प्रा.) E	२३००	चंद्रर्षिमहत्तर		बृ.
	वृत्ति	३७८०	मलयगिरि		बृ. पा. २-३ ४-५.
	वृत्ति	४१५०	मुनिशेखर		भावनगर.
	टिप्पनक	गा. ५४०	खरतर रामदेव		बृ. जेसलमेर.
	अवचूरि F		गुणरत्न		पा. ५-६

A मुनिशेखरसूरिए यशोभद्रसूरिकृत पार्श्वस्तव उपर अवचूरि रचेल छे, एटली हकीकत जाणवामां आवी छे. माटे तेमना संबंधे वधु इतिहास जाणवा माटे आ ग्रंथनो प्रशस्ति लेख जोवानी जरुर छे.

B आ अवचूरिनी श्लोकसंख्या पांच कर्मग्रंथ तथा छठी सत्तरिनी अवचूरि मेळवीने नोंधी छे.

C सत्तरि ए प्राकृत नाम छे. संस्कृतमां सप्ततिका नाम छे. एने साथे गणतां छएय तो छ जूना कर्मग्रंथ थाय छे, अने नवा साथे पण तेज चालु रहेल होवाथी नवा कर्मग्रंथ पण छ गणाई शके. तेथी सत्तरिने छठो कर्मग्रंथ गणे छे.

D पाटणनी टीपमां आ भाष्यना कर्त्ता अभयदेव नोंध्या छे तो ते क्या अभयदेव छे ते जाणवा माटे तेनी प्रत जोवी जोईए.

E आ वृत्ति बृहट्टिप्पनिकामां नोंधी छे पण ते क्यां पण उपलब्ध थती नथी, माटे आवा दर्शन ग्रंथनो शोध करवा माटे दरेक जैने ध्यान आपवुं घटे छे.

F अवचूरिनी श्लोकसंख्या नवा कर्मग्रंथनी अवचूरिना साथे गणाई छे.

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
२	छेदसूत्रनाम				
	(१)'व्यवहार' छेदसमास A	गा. ३०	जिनभद्रगणि		पा. २-४ लीं. डे
	चूर्णि	३०००	सिद्धसूरि (देवगुप्तशिष्य)	११९२	पु. पा. १-२-५
	चूर्णि	७८८७	मलयगिरि		पु. पा. ३. डे. कं
	(२)'जितकल्प सूत्र' छेद F	गा. १२७	जिनभद्रगणि		पा. ३. मा अ.२लीं
	चूर्णि	१२११६	तिलकसिंह	११२५	पा. ४-५ भाग.
	चूर्णि	२०००	सालंदसूरि (जिनेश्वर शिष्य)		पा. ५ लीं.
	चूर्णि	३३३४	देवानंद (पद्मप्रभशिष्य)	१५५५	पा. ५ अ. २
	चूर्णि	५११	हरिभद्रसूरि C		पु.पा.१-३म.२. जै
	(३)'यतिजीतकल्प' छेदसम. L	गा. ३०१	श्रीचंद्र		मणीलाल.
	चूर्णि E	१०००	देवभद्र	१२३३	पु.

A आ [illegible] सामनी ओळखाणमां आवे छे. [illegible]
[illegible]

B आ [illegible] ओळखाणमां आवे छे. [illegible]
[illegible]

C आ [illegible] छे.

D [illegible] छे.

E [illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे?
	(४)पद्मदेवीय क्षेत्रस० A	गा. ५५६	पद्मदेव B		पा. २
	(५)'पौरंजय' क्षेत्रस० C	३६२	रत्नशेखर D		पा. १-३ मुद्रित.
	वृत्ति	११००	स्वोपज्ञ		पा.१-२-४ सुरतम्य.
	(६) संग्रहनी क्षेत्रस. E	५०७	उमास्वातिवाचक		सू. पा. ४ अ.१-२
	वृत्ति	२८००			अ. १

A आ ग्रंथनामनुं अस्तित्व जणातुं नथी. एटले तेने कर्त्ताना नामे ओळखावेलो जणाय छे. एनी गा. ५५६ छे के श्लोक ५५६ छे ते माटे पण शंकावाळी खबर छे.

B पद्मदेवसूरि बे थया छे. एक पद्मदेव [illegible] शिष्य [illegible] बीजा [illegible] शिष्य [illegible]. आ बीजा पद्मदेवसूरि सं. ११११ थी ११९१ ना वच्चमां थया अने त्रीजा पद्मदेव सं. १२९२ मा हता [illegible] [illegible] बीजा पद्मदेवसूरि [illegible] [illegible] छे, पण [illegible] [illegible] पद्मदेवसूरि पण होय एम मानी शकवुं मुश्केल छे.

११ आ बे पद्मदेवमांथी कया पद्मदेवसूरिए आ ग्रंथ रच्यो छे ते तेनी प्रशस्ति [illegible] छे, माटे ए बाबते [illegible] शंकावाळी खबर छे.

C आ ग्रंथनामनुं अस्तित्व "[illegible]" [illegible] छे. आ [illegible] [illegible] [illegible] छे.

D रत्नशेखरसूरि सं. १४५६ मां [illegible] [illegible] वृत्ति रची छे.

E आ संग्रह ग्रंथनामनुं [illegible] छे. [illegible] [illegible] श्लोक ५०७ श्लोक छे, [illegible] श्लोक ११११ श्लोक छे अने [illegible] [illegible] [illegible] छे, ते माटे [illegible] [illegible] छे, आ ग्रंथनामनी [illegible] पण थई छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
	(७) "सिरिनिलयं" क्षेत्रस. A	गा. ४८९	सोमतिलक B		बृ. सं.
	वृत्ति C	२३४५			
	लघुवृत्ति D	१०३६	गुणरत्न		पा. ४
	अवचूरि	३८८	"		पा. ३
	अवचूरि	५००	ज्ञानसागर	१४६०	सं.
	(८) " सिरिवीरजिणं " क्षेत्रस. E	गा. ७७			पा. ४ सं.
३	जीवविचारना ग्रंथो.				
	(१) जीवविचार	गा. ५१	शांतिसूरि F		मुद्रित.
	वृत्ति	१०००	रत्नाकरसूरि G		डेकन.

A आ क्षेत्रसमासनुं आदिपद " सिरिनिलयं वीरजीणं " एवुं छे. आने संघातनी टीपमां नवो बृहत्क्षेत्रसमास तरीके ओळखवामां आव्युं छे. बृहत्टिप्पनिकामां एनी गा. ३८९ लखी छे, पण संघातनी टीपमां ४८९ छे.

B सोमतिलकसूरिए सं. ११९४ मां शीलतरंगिणी रची छे. (जैनागम लिस्ट पेज ५६ मांनी नोट जुओ.)

C आ वृत्ति कोणे रचेल छे ते माटे तेनी प्रत जोवी जोईये ते प्रत कया भंडारमां छे ते तारवणी करतां नोंधतां रही गई छे.

D आ लघुवृत्ति अने अवचूरि एकज छे के जूदी छे ते तपासी नक्की करवानुं छे. श्लोकसंख्या जोतां जूदी जणायाथी अमे तेने जूदी नोंधी छे.

E आ क्षेत्रसमासनुं आदिपद " सिरिवीरजीणं वंदिय " एवुं छे. तेनी टीका मळी नथी, पण ते क्यां पण होवी जोईये. माटे तेनी शोध करवी जोईये.

F शांतिसूरि माटे जैनागम लिस्ट पेज २४ मां आपेली तेमना नाम नीचेनी नोट जुवो.

G रत्नाकरसूरि सं. ११७० मां हता एम आपणे जाणिये छीये पण डेकनकॉलेजना रिपोर्टमां तेमना नाम साथे वाचक पद जोडयुं छे, ते भूलथी जोडायुं लागे छे.

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे?
	वृत्ति		ईश्वराचार्य A		पा. ४ अ. १
	वृत्ति		मेघनंद B		अ. १
	वृत्ति		क्षमाकल्याण	१८५०	अ. १
	(२)जीवविचार(बीजो)C	गा. २८			डेक्कन.
	(३)जीवसमास D	गा. २६७			पा. ३ सं. लीं.
	वृत्ति E	६६२७		११६४	बृ.पा.१-४नगीनदास.
	वृत्ति	पत्र २२	[illegible]चार्य F		अ. २
४	दंडकना ग्रंथो.				
	दंडक G	गा. ३६	गजसार H		मुद्रित.

A ईश्वराचार्य क्यारे थया छे ते जाणवा माटे आ वृत्तिनी प्रशस्ति जोवी जोईये. कारण के तेमना संबंधी बीजो कंई इतिहास अमने मळी शक्यो नथी. वृत्तिनी श्लोकसंख्या पाटणनी टीपमां ११५ कहेली छे.

B मेघनंद ए नाम शक पडतुं लागे छे, माटे प्रत तपासवानी जरूर रहे छे.

C आ जीवविचार डेक्कनकॉलेजमां दाखलतर [illegible] छे एम पीटर्सनना पांचमा रिपोर्टपरथी जणायुं छे.

D जीवसमास प्राचीन ग्रंथ छे तेना कर्त्ता कोण छे ते जणायुं नथी.

E आ वृत्ति संवतना नवीनशाहेबेटना भंडारमां दाखल उपर सुद मलधारि हेमचंद्रसूरिना हाथनी लखेली मोजूद छे.

F [illegible] टीपमां [illegible] एवुं नाम लखेल छे पण [illegible] मुख्य ते [illegible] होइ शके अने जो तेम होय तो ए टीका [illegible] देखाय छे.

G आ ग्रंथने सामान्य दंडक तरीके ओळखवामां आवे छे पण असलमां ए नाम [illegible] होय एम लागतुं नथी. असलमां एनुं नाम विचारषट्त्रिंशिका छे. ते उपरांत एने दंडकगर्भित विज्ञप्ति तरीके पण ओळखवामां आवे छे, परंतु हालमां तेने दंडक तरीकेज ओळखवामां आवे छे तेथी अहीं पण दंडक तरीके तेनी नोंध करी छे.

H गजसारमुनि क्यारे थया ते जणायुं नथी.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रचना-नो सं.	क्यां छे ?
	वृत्ति	पत्र १४	रूपचंद्र A		भ. १
	अवचूरि				पा.१
	[illegible] (अवचूरि)				पा. ३
५	[illegible] ग्रंथो.				
	(१)[illegible] B	गा. ५३			मुद्रित.
	वृत्ति	[illegible] ५४	[illegible] C	१२२०	पा. १-२.
	वृत्ति		[illegible]		भ. २
	वृत्ति		देवेंद्र		भ. २
	वृत्ति		सोमसुंदर		भ. २
	वृत्ति	४००			लींबडी
	विवरण	१३००			डेक्कन.
	अवचूरि		[illegible]		भ. २
	अवचूरि		[illegible]सूरि D		पा. १-३-४
	(२) [illegible]विचार E	१२८			पा. ४ भ. १

A [illegible]

B [illegible]

C [illegible]

D [illegible]

E [illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-ना सं.	क्यां छे ?
	सारोद्धार A	गा. ८			डेक्कन.
	(३)नवतत्वगाथा B		देवगुप्त C		बृ.
	भाष्य	गा. १५३	नवांगीकार अभयदेव		बृ. डेक्कन.
	वृत्ति	२४००	यशोदेव	११७४	बृ. डेक्कन. पा. ३-४
	(४)बृहन्नवतत्व D				डेक्कन.
६	संग्रहणीना ग्रंथो.				
	(१)जिनभद्रीय बृहत् संग्रहणी E	गा. ५२०	जिनभद्रगणि		पा. ४ सं.
	वृत्ति	२५००	शालिभद्र F	११३९	बृ. पा. ३-४-५ डेक्कन.
	वृत्ति	५०००	मलयगिरि		बृ. सुलभ्य.
	वृत्ति G	पत्र ४७	जिनवल्लभ		जेसलमेर भं.

A आ नवतत्वविचारसारोद्धारनी आठ गाथा छे अने तेनुं आदिपद " अरहंता भगवंता " एवुं छे. ते डेक्कनकॉलेजना दाबडा उपर छे.

B " एगविहं सम्मत्तं " इत्यादि नवतत्वनी गाथाओ छे.

C देवगुप्तसूरिनुं अपरनाम जिनचंद्र छे तेओ उकेशगच्छना हता अने तेमणे सं १०७३ मां पोते रचेला नवपदप्रकरणउपर " श्रावकानंदी " नामनी वृत्ति रची छे.

D बृहन्नवतत्व केटली गाथानुं छे तथा कोणे रचेलुं छे ते संबंधी कंइ पण हकीकत मळी नथी. माटे ए संबंधी डेक्कनकॉलेजमांनी तेनी प्रत तपासवी जोइये छीये.

E आ संग्रहणीनुं आदिपद " निहविय अट्ठकम्मं " एवुं छे.

F शालिभद्रना बदले पीटर्सनना रिपोर्टमां शीलभद्र नोंध्या छे, पण बृहट्टिप्पनिकामां तथा पाटणनी टीपोमां तथा तेमना ग्रंथमां शालिभद्र नाम मळे छे, माटे रिपोर्टमां नामफेर थयुं लागे छे अथवा कदाच तेमना बे नाम पण होय तो होय.

G जिनवल्लभसूरिए करेला स्वतंत्र ग्रंथ मळे छे, पण तेमणे करेली वृत्ति कोई पण जाणवामां आवी नथी, माटे आ वृत्ति तेमनीज करेली छे के केम ते माटे तेनी प्रत वांचीने नजरे जोवानी जरूर रहे छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्याने सं.	क्यां छे ?
	(२)प्रतिक्रमण संग्रहणी	गा. १६९			सं.
	(३)श्रीचंद्रीय संग्रहणी A	गा. ३१३	श्रीचंद्र		सुलभ्य.
	वृत्ति	३५००	मलधारि देवभद्र		सुलभ्य.
	अवचूरि	१६००	"		पा. १-३-४
	(४)संस्कृत संग्रहणी B	पत्र१६			अ. २
	(५)हारिभद्री जंबूद्वीप संग्रहणी	गा. ११२	हरिभद्रसूरि		मुद्रित.
	वृत्ति	६६७	प्रभानंद	१३९०	पा. २-४-५
	(६)हारिभद्री लघुसंग्रहणी	गा.३३	हरिभद्र		मुद्रित.

A आ संग्रहणीनुं आदिपद " नमिउं अरिहंताई " एवुं छे.

B आ संस्कृत संग्रहणी कोणे रचेली छे ते माटे तेनी प्रत जोवानी जरूर छे.

नं.	नाम.	श्लोक	कर्त्ता.	रचना-संवत्	क्यां छे?
	वर्ग ४ थो.				
	योग ग्रंथो.				
१	[illegible] A	११७०			पा. २
२	[illegible] B	गा. ५५०			पु. पा. ४–६
	वृत्ति C				पु.
३	[illegible] गा. १२०१	५०००	[illegible] D		मुद्रित.
	वृत्ति	१२५००	[illegible]	१२२१	पु. पा. १-२ ४ [illegible]
	[illegible]	१३०२	[illegible] E		पु. पा. १-२ ही.
	[illegible] F	गा. ४	[illegible]		[illegible]

A [illegible]

B [illegible]

C [illegible]

D हेमचंद्रसूरि [illegible] छे. एक [illegible] शिष्य अने [illegible] गुरु, [illegible] गुरु, अने बीजा सं. ११२९ मां [illegible] हेमचंद्रसूरि [illegible] छे. आ [illegible] जोइये.

E उदयचंद्रसूरिए सं. १२९९ मां उपदेशमाळानी कर्णिकावृत्ति रची छे.

F आ ग्रंथ पं. आनंदसागरजी महाराज पासे छे.

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
४	लोकप्रकाश	१७६२१	विनयविजय	१७०८	सुलभ्य.
५	विचारसार A	गा. ८९७	प्रद्युम्नसूरि B		मु. नगीनदास.
६	शास्त्रवार्त्तासंग्रह	पत्र ५४	शांत्याचार्य		भाव.
७	स्थानप्रतिद्वार C	६५४०			पा. २

A विचारसार माटे बृहट्टिप्पनिकामां आवो उल्लेख छे:—" विचारसारप्रकरण प्रद्युम्नसूरिहृतं सोपयोगिवह्रसंग्रहं गा. ८९७." माटे बहु थोडे ठेकाणे हाल मळे छे.

B प्रद्युम्नसूरि आठ थया छेः—

१ प्रद्युम्नसूरि—ते यशोदेवसूरिना शिष्य अने मानदेवसूरिना गुरु हता, मानदेवसूरिना शिष्य विमलचंद्र थया अने तेमना शिष्य उद्योतनसूरि थया. एमणे सर्वदेवसूरिना मार्फत वडगच्छनी स्थापना सं. ९९४ मां करावी माटे उद्योतनसूरिथी पूर्वे चोथी पेढीए थएला तेमना दादागुरु प्रद्युम्नसूरि सं. ९०० ना लगभग थया होय एम मानीए तो मानी शकाय तेम छे.

२ प्रद्युम्नसूरि—सर्वदेवसूरिना शिष्य. सर्वदेवसूरिए सं. ९९४ मां वडगच्छनी स्थापना करी माटे तेमना शिष्य आ प्रद्युम्नसूरि सं. १००० ना अरसामां थया गणी शकाय.

३ प्रद्युम्नसूरि—एओ राजगच्छना हता अने तेओना शिष्य अभयदेवसूरि थया के जेमणे सम्मतितर्कनी टीका रची छे. ए अभयदेवसूरिना शिष्य शांतिसूरि थया अने ते संवत् १०९६ मां स्वर्गवासी थया तेपरथी एम अनुमान बांधी शकाय के तेमना दादागुरु सं. १०५० ना अरसामां होवा जोइये.

४ प्रद्युम्नसूरि—ते यशोभद्रसूरिना शिष्य हता. तेमना शिष्य गुणसेन थया, तेमना शिष्य देवचंद्रसूरि थया अने तेमना शिष्य ते हेमसूरि थया. हेमसूरिना गुरु देवचंद्रसूरिए सं. ११६० मां प्राकृत शांति-चरित्र रचेल छे तो तेमनी चोथी पेढीए थएला प्रद्युम्नसूरि सं. ११०० ना लगभग थया मानी शकाय. आ प्रद्युम्नसूरिए मूलशुद्धिप्रकरण रचेलु छे. के जेनुं बीजु नाम स्थानकप्रकरण छे अने तेना उपर हेमसूरिना गुरु देवचंद्रसूरिए वृत्ति रचेली छे.

५ प्रद्युम्नसूरि—ते सं. ११५९ मां पूर्णिमागच्छना स्थापनार चंद्रप्रभसूरिना गुरु थया छे.

६ प्रद्युम्नसूरि—ते बुद्धिसागरसूरिना शिष्य अने देवचंद्रसूरिना गुरु सं. १२९२ मां थएला छे.

७ प्रद्युम्नसूरि ते सं. १२९४ मां थएला धर्मघोषसूरिना शिष्य देवप्रभसूरिना शिष्य हता. एटले तेओ सं. १३२५ ना अरसामां थया गणी शकाय.

८ प्रद्युम्नसूरि ते कनकप्रभसूरिना शिष्य हता तेओए सं. १३२२ मां विवेकमंजरीनी टीका शोधी छे तथा सं. १३३४ मां शालिभद्र चरित्र शोधेल छे.

आ रीते आ आठ प्रद्युम्नसूरिओमांना सातमा देवप्रभसूरिना शिष्य प्रद्युम्नसूरिए आ विचारसार प्रकरण रचेलुं छे. (जुवो पीटर्सनना रिपोर्ट त्रीजानो पेज २७०)

C आ ग्रंथनुं नाम पण अपूर्व जेवुं लागे छे हवां तेमां शी विना छे ते ग्रंथ जोयाथी जाणी शकाय माटे पाटणमां हाथवगर रहेला आ ग्रंथनी नकल उतरावी जोइये.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं	क्यां छे ?
	वर्ग ३ जो. संग्रह ग्रंथो.				
१	अनेकशास्त्रसारसमुच्चय A	११००		१६८५	डेक्कन.
२	अनेकग्रंथविचारसंग्रह	पत्र ३९			अ. १
३	कर्मादिविचारसार				डेक्कन. पेज १७२
४	गाथाविचार	७००			पा. ४
५	गाथासहस्री B		समयसुंदर		पीटर्सनरिपोर्टहेमां अ.
६	ग्रंथसारसमुच्चय	३४०	कुलभद्र		डेक्कन.
७	जीवाजीवविचारविवरण C	३०००			जेसलमेर.
८	द्रव्यपर्यायस्वरूप C	६००			जेसलमेर.
९	नानाविचारसंग्रह	पत्र २०			अ. १
१०	निःशेषसिद्धांतविचार D	३६७०	विमलसूरिशिष्य चंद्रकीर्ति		नगीनदास.

A डेक्कनकॉलेजमां ए ग्रंथनी प्रत सं. १४६१ मां लखायली मोजुद छे.

B आ ग्रंथ पीटर्सनना त्रीजा रिपोर्टमां अमदावादना पुस्तकोना आपेलना उतारा लेता त्यां नोंध्यो छे.

C.C आ बे ग्रंथ जेसलमेरनी टीपमां हिंदमां नोंध्या छे अने ते तूटक छे एम जणाव्युं छे. एनाथ धारवा सुझे छे केवो ग्रंथ जीवाजीवविचारनुं ज विवरण होय तो होय माटे तेनी प्रत कोई नथी करवुं जोइये जोने.

D एना बे खंड छे. पेहेला खंडनां श्लोक २००० छे अने बीजानां श्लोक १६७० छे. आ ग्रंथनी प्रत सं. १२१२ नो लखेली संवतना नगीनदासशेठना भंडारमां मोजुद छे एना अपरनाम "सिद्धांतविचार" तथा 'सिद्धांतोद्धार' एवां छे. (जुओ पेन्ने रिपोर्ट पेज ३२–३३)

नम्बर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
११	प्रवचनविचारसार A		नयकुंजर B		पा. १-२ को.
१२	पंचसतत्यधिकार	पत्र ४६			डेक्कन रिपोर्ट पेज १२
१३	पंचाशितप्रबोधसंबंध		शुभशील		डेक्कन.
१४	विचाररत्नसंग्रह	१५०००	जयसोम	१६५७	पीटर्सन रिपोर्ट १ मां अमदावाद
१५	विचाररत्नसार	पत्र २३			पा. १
१६	विचाररत्नाकर	९६१०	कीर्तिविजयगणि		पा. २-३-४-५ को.
१७	विचारसारसंग्रह	७११३			पा. ७
१८	विचारसारसंग्रह (पंजो)	पत्र १८			का. १
१९	विचारशतक	पत्र ४५	समयसुंदर		अ. १
२०	विशेषशतक	पत्र ५७	समयसुंदर		अ. १
२१	विषयरत्नाकर	१८०००			कोडाय.
२२	शास्त्रसारसमुच्चय C	१६००			जेसलमेर.
२३	श्रुतविचार D				पा. ४

A आ ग्रंथमां जुदा जुदा [illegible] नोंध छे.

B नयकुंजर उपाध्याय [illegible] छे.

C [illegible] "[illegible]" [illegible] छे. [illegible]

D आ [illegible] छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे?
२४	षड्स्थानस्थितिविचार A	२०००			जेसलमेर
२५	सारसमुच्चय	पत्र ८			डेक्कन पेज ६५
२६	सिद्धांतविचार	७२२	समयमाणिक्य		पा. ४
२७	सिद्धांतविचारसंग्रह	पत्र१६५			ल. २
२८	सिद्धांतहुंडी	पत्र २२१			ल. ४

A जेसलमेरनी यादीमां हस्तकले आ ग्रंथ नोंधेल छे, पण ते कोई ग्रंथनी वृत्ति छे के केम ते नक्की पडतुं नथी.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
१७	द्रव्यप्रकाशप्रकरण				भा. १
१८	पदार्थस्थानांतरसंग्रहप्रकरण A	गा. ११९	वर्द्धमानसूरि B शिष्य चंद्रेश्वर		लींबडी.
१९	पुद्गलपरावर्तस्वरूप प्रकरण				भा. १
	अवचूरि	पत्र २			भा. १
२०	पुद्गलभंगप्रकरण				भा. १
	अवचूरि C	पत्र ७	नयविजय D		भा. १ डेक्कन पेज २१५
२१	पंचनिर्ग्रंथीप्रकरण	गा १०५	अभयदेव		पा. २-३-४ सुरत.
	अवचूरि	२६०			पा. ३-५
	पंचनिर्ग्रंथीप्रकरण E (बीजुं)		यशोविजय		डेक्कन
२२	पंचलिंगीप्रकरण F	गा. १०१	जिनेश्वर		पा. ४ खं.
	वृत्ति	६६००	जिनपति		पा. १-४ जेसल
	लघुवृत्ति	११४८	सर्वराज		पा. ४

A. आ ग्रंथ छपाएला लागे छे.

B आ वर्द्धमानसूरि [illegible] सं. ११८० मां [illegible] पुस्तक [illegible] छे. जुओ रिपोर्ट ५ [illegible] पेज ५८.

C डेक्कनकॉलेज रिपोर्टमां एने "निर्युक्ति" कही छे [illegible] छे.

D आ [illegible] छे.

E डेक्कनकॉलेज रिपोर्टमां पेज ३० मां आ प्रकरण [illegible] छे, [illegible] छे.

F [illegible] छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक	कर्त्ता.	रच्याना सं.	क्यां छे?
	टिप्पन A		जिनपाल B		पा.१ भ. २ डे.
२३	प्रवचनसारप्रकरण C	३००			जेसल.
२४	कर्मोदयप्रकरण				भ. १
	अवचूरि	पत्र ५			भ. १
२५	बंधहेतुदयत्रिभंगीप्रकरण		हर्षकुल		अ. १ डेकन.
	वृत्ति	७००	आनंदविजयD		अ. १ डेकन.
२६	भावप्रकरण	गा. ३०	विजयविमल	१६२३	पा. ३ लीं.
	अवचूरि	पत्र ७	स्वोपज्ञ		पा. ३ लीं.
२७	मोहनीयबंधप्रकरण	पत्र २			अ. १
२८	मङ्गलप्रकरण	गा. ९९	विनयकुशल		पा. ३
	वृत्ति		"	१६५१	पा. ३
२९	रत्नसंचय				पा. २ को.
३०	विचारमंजरीप्रकरण	पत्र ७	मगधि		भ. २ राधनपुर
३१	विचाररसायनप्रकरण E	गा. ८७	महेश्वरसूरि	१५७३	नगीनदास.
	अवचूरि				भ. १

A आ टिप्पन बधडवाळंनी टीपमां पत्र १५९ नु नोंध्युं छे, पन अमारा धारवा मुजब तेनी आदिमां कोई बीजो ग्रंथ हशे. अने प्रांतमां आ टिप्पन हशे.

B जिनवल्लभसूरिए सं. १२९४ मां चर्चरीनी वृत्ति रची छे.

C हालमां आ ग्रंथ तूटक लखेले नोंधेल छे, माटे ते तपासी नक्की करवुं जोइये के ते होनो रचेल छे.

D समवायांगना हेलानी टीपमां एना कर्त्ता वनरचि लख्या छे.

E हेलनी टीपमां एनुं नाम " विचारप्रकरण–महेश्वरसूरिकृत " एम करीने नोंध्युं छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे?
३२	विचारसारप्रकरण	पत्र ५	देवचंदजी		अ. १ भाव.
	वृत्ति	पत्र ४२	स्वोपज्ञ		अ. १
३३	श्रावकप्रतिमाप्रकरण				भरुच.
	अवचूरि	पत्र ५			भरुच.
३४	श्रावकव्रतव्यवस्थाप्रकरण	गा. १०३			लींबडी.
३५	श्रावकव्रतभंगप्रकरण				पा. ३ जेसल
	अवचूरि	२२०			पा ३
३६	षड्द्रव्यप्रकरण	पत्र ८			अ. १
३७	समवसरणप्रकरण	१९५	धर्मघोष		पा. ३—४
	अवचूरि				पा. ३—४
३८	संवरद्वारप्रकरण	पत्र ८			अ १
३९	साधुप्रतिमाप्रकरण A				जेसलमेर.
४०	सिद्धदंडिकाप्रकरण		देवेंद्रसूरि		भाव. अ. १. डे.
४१	सिद्धांतसारप्रकरण	१००	प्रद्युम्नसूरि B		जेसलमेर.
४२	सिद्धांतोद्धारप्रकरण	गा. १२१	वर्द्धमानसूरिशिष्य महेश्वर		लींबडी.

A आ प्रकरण डॉक्टरबुह्लरे करेली जेसलमेरनी टीपमां नोंध्युं छे.

B आ नाम टीकाके नोंध्युं छे माटे ते खातरी वगरनुं छे.

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
	वर्ग ५ मो.				
	नाना प्रकरणो-ग्राम पांचमो.				
१	अर्हत्प्रवचनप्रकरण A				धर्मीनदास.
२	आगमोद्धारगाथा	गा. ७१			लींबडी.
३	कालचक्रविचार	गा. ८५			लींबडी. जेसलमेर
४	गुणस्थानकविवरणगाथा	गा. १७			मां.
५	चत्वारिंशद्द्वारगाथाविवरण	पत्र ३	देवेंद्रसूरि		पा. ३
६	जंबूद्वीप[illegible]	पत्र ८			पा. ३
७	नयसारगाथा				[illegible]
८	निमित्तसूत्रगाथा				पा. १
९	नरकोद्धारविचार	पत्र १४			पा. ४
१०	पुद्गलपरावर्त्तनाविचार	गा. १०			सं
११	पंचनिर्ग्रंथीविचार	पत्र ९			पा २
१२	भूपकवारादिविचार	पत्र ५			पा. १
१३	भावकर्मप्रकृतिविचारगाथा टिप्पण B	१५७	जिनदेव		सु.
१४	श्रावकगुण	गा. ११			सं.
१५	सूक्ष्मविचारगाथा वृत्ति	पत्र ४			डेक्कन.
१६	स्थंडिलविचार	पत्र ११			पा ४

A [illegible]

B [illegible]

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे?
	वर्ग ७ मो A				
	संख्यावाचकनामवाळां प्रकरणो.				
	विंशिका.				
१	सिद्धगुणविंशिका B				पेटन.
	पंचविंशिका.				
१	[illegible]पंचविंशतिका				ल १
	अवचूरि				ल १
	द्वात्रिंशिका.				
१	[illegible]द्वात्रिंशिका				ल १
२	[illegible]द्वात्रिंशिका				सुरत.
	अवचूरि	१००	[illegible]		ल १ पेटन
	षट्त्रिंशिका.				
१	[illegible]षट्त्रिंशिका				
	वृत्ति	१०२५	[illegible]	१६४०	ल ४
२	[illegible]षट्त्रिंशिका		[illegible]		ल १ पेटन
	वृत्ति	८००	[illegible]		ल १ पेटन.

A [illegible]

B [illegible]

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे?
३	गुणगुणषट्त्रिंशिका		वज्रसेन A		सुलभ्य.
	वृत्ति	१२९७	रत्नशेखर		पा. ३-४ माय.
४	दानषट्त्रिंशिका				पा १
	वृत्ति B				जेसलमेर
	मयसूरि		विनयरत्न		पा. ३
५	निगोदषट्त्रिंशिका		धर्मघोष		बृ. पा. २-३ सं.
	वृत्ति	५१३	रत्नसिंह C		बृ. पा. २-३
६	D परमाणुविचारषट्त्रिंशिका		धर्मघोष		बृ. पा. २—३
	वृत्ति		रत्नसिंह		बृ. पा. २—३
७	पुद्गलषट्त्रिंशिका		धर्मघोष		बृ. पा. २—३ सं.
	वृत्ति		रत्नसिंह		बृ. पा. २—३

A वज्रसेनसूरि घणा थया छे. पेला वज्रसेन ते वइरस्वामिना शिष्य हता. बीजा वज्रसेन ते विजयचंद्रसूरिना शिष्य हता अने त्रीजा वज्रसेन ते रत्नशेखरना गुरु हेमतिलकसूरिना गुरु हता. आ त्रीजा वज्रसेनसूरिने अलाउद्दीन बादशाहे [illegible] सभा भरावी आप्यो हतो एम केटरे नोंध करी छे. आ कारणथी अमारा ध्यान मुजब त्रीजा वज्रसेनसूरिए आ षट्त्रिंशिका रची होवी जोईये, केमके शिष्य प्रशिष्ये टीका रची छे एम जणाय छे.

B जेसलमेरना टीपमां आ वृत्ति नोंधी छे पण कर्ता ते अज्ञात छे एम जणाय छे. [illegible] निर्णय करवा माटे तेनी प्रत जोवानी जरूर छे.

C रत्नसिंहसूरि जिनचंद्रसूरिना शिष्य हता. जिनचंद्रसूरि सं. १३२५ मां [illegible] लखे छे. माटे रत्नसिंहसूरि सं. १३५० ना आशरामां होवा जोइये.

D [illegible] नाम षट्त्रिंशिका छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
८	पौषधषट्त्रिंशिका				पा. ४ ०
	वृत्ति		जयसोम	११४५	पा ४
९	बंधषट्त्रिंशिका		धर्मघोष		पू. पा. २ सं
	वृत्ति		रत्नसिंह		पू. पा. २
१०	भावषट्त्रिंशिकाA				अ. १
	अवचूरि	पत्र ५			अ. १
११	सिद्धांतषट्त्रिंशिका				अ. १
	वृत्ति	७२७			पा. ३ अ १

A भावषट्त्रिंशिकानुं बीजुं नाम रहस्यषट्त्रिंशिका छे.

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
	पंचाशिकाओ.				
१	त्रिषष्ठिशलाका पंचाशिका				अ. १
२	पुद्गलपंचाशिका (सावचूरि)	पत्र ११			अ. १
३	क्रियापंचाशिका(सावचूरि	पत्र ५	विजयविमल		डेक्कन
४	दानपंचाशिका				भाव.
५	समवसरणपंचाशिका				अ.२
६	सिद्धपंचाशिका A		देवेंद्रसूरि		बृ. पा.३-४ डेक्कन
	वृत्ति	७१०	स्वोपज्ञ		बृ.
	अवचूरि	३२८			पा १-४

A डेक्कनकॉलेजना रिपोर्टमां सिद्धपंचाशिकाना कर्त्ता विद्यासागर जणाव्या छे. (जुओ नं. १२१)

परंतु ते असल प्रत मुजब अवचूरिना कर्त्ता होवा जोइये.

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रचया नो सं.	क्यां छे ?
	सत्तरिओ.				
१	अंगुलसत्तरि		मुनिचंद्र		पू. पा ३
	अवचूरि				पा.३
२	आगमोद्धारसत्तरि				जेसलमेर
३	आवश्यकसत्तरि A		मुनिचंद्र		भाव.
	वृत्ति	१०४०	महेश्वर		पा.४.भाव.
४	करणसत्तरि				जेसल.
	वृत्ति B	३०००			जेसल.
५	कालसत्तरि		धर्मघोष		पा.३-४
६	गुरुगुणसत्तरि		सोमचंद्र		जेसलमेर
७	दर्शनसत्तरि C		हरिभद्र		पू. पा. १
८	दानसत्तरि				अ. २
९	द्रव्यसत्तरि		लावण्यसागर		अ. १
	वृत्ति	ग्रं २८	स्वोपज्ञ		अ. १ मकब
१०	यात्रासत्तरि				अ. १
११	वनस्पतिसत्तरि		मुनिचंद्र		पा. ३

A [illegible] नाम " [illegible] " छे.

B [illegible] छे.

C [illegible] ११० [illegible] छे. [illegible] छे [illegible] छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
१२	विचारसत्तरि		महेंद्रसूरि A		पा. १ भरुच
	वृत्तिB	४११६	विनयकुशल		डेकन. भरुच.
	अवचूरि	५००			पा. ३
१३	विमयसत्तरि				अ. ९
१४	शुभगणसत्तरि C				जेसल.
	वृत्ति	पत्र ७९			जेसल.
१५	सूक्ष्मार्थसत्तरि		चक्रेश्वरसूरि		लींबडी.
	टिप्पन				लींबडी.

A महेंद्रसूरी हेमसूरीना शिष्य हता एम सोमप्रभसूरिए कुमारपालप्रतिबोधमां जणाव्युं छे. जुओ रि. ५ पेज ३३

B डेक्कन कॉलेजना लीस्टमां पेज १४० मां विचारसत्तरिना कर्त्ता विनयकुशल लखेल छे ते भूल छे.

C जेसलमेरनी बे टीपमां आ नाम लखेल छे. माटे तेनुं सम्पूर्ण नाम शुभ-लगन—के शुभना परंतु ते अनिश्चित थई पडे छे, माटे हाल जोयाथी तेनो निर्णय थई शके तेम छे.

श्री जैन श्वेतांबर कॉन्फरन्स ऑफिस } न्यालचंद लक्ष्मीचंद सोनी.
पिंजरापोल पेठ नं. ४ मुंबई } आसिस्टंट सेक्रेटरी,

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
	वर्ग ८ मो.				
	प्रक्रियाने लगता स्तवस्तोत्र.				
	स्तव				
१	कायस्थितिस्तव A		कुलमंडन		वृ.पा. २. भ.१-२
	वृत्ति		रत्नसिंह		पा. २ भ. २.
२	चैत्यप्रतिष्ठातिस्तव (साथ)	पत्र १०	देवेंद्रसूरि		कोडाय.
३	देहस्थितिस्तव	गा. २४			पा. २ सं.
	वृत्ति		कुलमंडन		पा. २.
४	पुद्गलपरावर्तस्तव B (साथ)	गा. ११			डेक्कन.
५	भवस्थितिस्तव (सावचूरि)				पा. २
६	योनिस्तव				पा. २-३
७	लब्धिस्तव (सावचूरि)				पा. २-३, भ. १
८	लोकांतिकस्तव				पा. २
९	शाश्वतबिंबसंख्यास्तव (साथ)		देवेंद्रसूरि		पा. १ साथ.
१०	समवसरणस्तव	गा. २४			लींबडी.
११	सम्यक्त्वस्वरूपस्तव(साथ)	गा. २५	देवेंद्रसूरि		पा.२-३नी डे.साथ.

A [illegible] कायस्थितिस्तवना कर्ता कुलमंडनसूरि होवा छे.

B आ पुद्गलपरावर्तस्तव संपूर्ण छे एम [illegible] छे.

नंबर.	नाम	श्लोक.	कर्त्ता.	रचना नो सं	क्यां छे ?
	स्तोत्र				
१	दुःषमाकालश्रमणसंघस्तोत्र A	पत्र ३	विजयानंद धर्मकीर्ति		भ. १
२	युगप्रधानस्तोत्र (साव)	पत्र १४			भ. १
३	सम्यक्त्वरहस्यस्तोत्र	पत्र ३	सिद्धसूरि		पा. ३

A आ स्तोत्रना अंते एवुं पद छे के ' सिरिविजयाणंदधम्मकित्तियं ' ए परथी एम लागे छे के विजयानंदसूरिनुं अपरनाम धर्मकीर्तिसूरि हशे.

लीस्ट नंबर ५.

जैन फिलॉसोफि.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
	वृत्ति		जयसोम		माव.
१८	पौषधविधिप्रकरण	२३३	जिनवल्लभ		पा. १-४-५
	वृत्ति	३५५५	जिनचंद्र	१६१७	पा. १-४-५
१९	प्रतिक्रमणक्रमविधि ‡	८११	जयचंद्र	१५०६	पा. ३—४
२०	प्रतिष्ठाकल्पोः—*				
	कल्प पहेलो(प्रतिष्ठाप०) A	११९२	पादलिप्तसूरि II		पा. ४ माव.
	,, बीजो (प्रतिष्ठाविधि) B	पत्र १८	तिलकाचार्य		म. १
	,, त्रीजो(प्रतिष्ठाविधि) C	पत्र १३	नरेश्वर		म. १
	,, चोथो (प्रतिष्ठाविधि) D	४८०	गुणरत्न		डेक्कन.
	,, पांचमो E	११०००	सकलचंद्र		लीं. डेक्कन.
	,, छट्ठो F	४९५			पा. ३—४
	,, सातमो G	४००			लीं.

‡ आ ग्रंथ जैनागमना लिस्टमां पेज ३२ मां नोंधायलो छे, छतां तेमां क्रियानी विधि बतावेली होवाथी आ स्थले पण तेनुं नाम नोंध्युं छे.

* प्रतिष्ठाकल्प अनेक छे, तेओमांना जे जे कल्पो टीपमां नोंधाया छे ते इहां नीचे टांक्या छे. वळी एवुं संभळाय छे के हरिभद्रसूरि तथा समुद्राचार्यना रचेल प्रतिष्ठाकल्प पण छे, पण ते क्यां छे ते अमारा जाणवामां नहि आव्याथी अमे तेमनां नाम इहां टांक्यां नथी. माटे जे मुनिमहाशयोने ते कल्पो क्यां छे तेनी खबर होय तेमणे अमने ते बाबत लखी जणाववी.

A आ प्रतिष्ठाकल्पने ' प्रतिष्ठापद्धति ' पण कहे छे अने ते संस्कृतमां छे.

B आ प्रतिष्ठाकल्पने ' जिनध्वजदंडप्रतिष्ठाविधि ' एवा नामथी टीपमां नोंधवामां आव्यो छे.

C. D आ बे प्रतिष्ठाकल्पोने ' प्रतिष्ठाविधि ' ना नामथी ओळखावेल छे.

E. F. G आ त्रणेने ' प्रतिष्ठाकल्प ' एवा सादा नामथीज टीपोमां ओळखाव्या छे तेमांनो सातमो प्रतिष्ठाकल्प जरा मिश्रसंस्कृतमां लखायलो छे.

H पादलिप्तसूरिए शत्रुंजयकल्प तथा तरंगवतीकथा नामे ग्रंथ रचेल छे. तेओ क्यारे थया ते बाबतनी चोक्कस साल जाणवामां आवी नथी. परंतु तेओ भोजराज तथा श्रीहेमचंद्रसूरिथी घणा पहेला थएला छे तेमने प्राकृत भाषामां ' पालित ' तथा ' पालित्तय ' एवा नामे ओळखवामां आवे छे, अने पालिताणाना शहेरनुं नाम तेमना नाम परथीज पडेलुं कहेवाय छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
	A कल्प आठमो (प्रतिष्ठाविधान)	३६०			डेक्कन.
	,, नवमो (जिनप्रतिष्ठा) B				बृ. पा. ३
	,, दशमो (बिंबप्रवेशविधि) C	२९२			पा. ५
२१	प्रत्याख्यानविचारणा D	गा. २३७	शालिसूरि		डेक्कन.
२२	मुक्तियुक्तियोगविधि	पत्र १८	हर्षकुल		अ. २
२३	यतिआहारपद्धति				अ. १
२४	यतिदिनचर्या	गा. २९६	देवसूरि		पा. ३—४
	वृत्ति	३५००	मतिसागर		पा. ४. अ. २ भाव.
	वृत्ति	पत्र ५९	भावदेव		भाव.
२५	विधिप्रपा	३५७४	जिनप्रभ	१३६३	पा. १-३-४
	,, E	३३००	उदयंकर F		रिपोर्ट ६

A आ आठमो कल्पने 'प्रतिष्ठाविधान' ना नामथी ओळखावेल छे.

B नवमा कल्पने बृहट्टिप्पनिकामां 'जिनप्रतिष्ठा' एटला उल्लेखथीज नोंधेल छे अने पाटणनी टीपमां 'जिनबिंबप्रतिष्ठाविधि' एवा नामथी नोंधेल छे.

C दशमा कल्पने पाटणनी टीपमां 'बिंबप्रवेशविधि' ना नामे नोंधेल छे ए कदाच प्रतिष्ठाकल्पनोज होय तेम तेनो विभागरूप करीने अने ह्यां ए प्रतिष्ठाकल्पना पेटामां गण्यो छे.

D आ ग्रंथ पूर्वे जैनग्रन्थ लिस्टमां पेज २४ मां "प्रत्याख्यानविचारणादि" एवा नाम थी नोंधायल छे, पण तेनो क्रियानुष्ठाननी विधि वर्णवेल होवाथी ह्यां पण नोंध्यो छे.

E. F आ ग्रंथनुं नाम रिपोर्टमां 'विधिप्रपा' एवुं आपेल छे. ते जैनाचार्यकृत छे के केम ते शक पडतो विना छे केमके तेना कर्तानुं नाम उदयंकर नोंध्युं छे ते नामना कोई जैनाचार्य पण जाणवामां आव्या नथी, माटे तेनी प्रत तपासवानी जरूर छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रचना-नो सं.	क्यां छे ?
२७	विवेकविलास	११८९	जिनदत्त A		सुलभ.
	वृत्ति	२२१९५	भानुचंद्र	१६७१	पा. ३ अ. १
२८	श्राद्धदिनकृत्य	गा. ३४४	देवेंद्रसूरि		सुलभ.
	वृत्ति	१२८२०	"	१४११	मु. पा. १-२-४
	अवचूरि				को.
२९	श्राद्धविधि				पा. ३-४ को.
	वृत्ति	६७६१	रत्नशेखर	१५०६	सुलभ.
३०	श्राद्धविधिविनिश्चय		हर्षभूषण		पा. ४ अ. २
३१	श्राद्धप्रतिक्रमण				पा. १
	वृत्ति	१५१३१	[illegible]	१११७	पा. १ अं.
३१	श्रावकधर्मविचार B	१००	गुणशील C		जेसलमेर.
३२	श्रावकधर्मविचार D				जेसलमेर.
३३	श्रावकविधि E		धनपाल		डेक्कन रिपो १८१
	वृत्ति F		संघतिलक		
	श्रावकविधि ([illegible]) G	गा. २४			कोडीरी.

A [illegible] १३३ [illegible]

B. C [illegible]

D. [illegible]

E [illegible]

F [illegible]

G [illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रचना नो सं.	क्यां छे ?
	वर्ग २ जो.				
	विधि ग्रंथो.				
१	अनुष्ठानविधि	१०४६			पा. २ मगीनदास.
२	अर्हदभिषेकविधि*	१००	वादिवेताळ		जेसलमेर.
३	अष्टप्रकारपूजाविधि				पा. २
४	आराधनाविधि*				जेसलमेर.
५	आलोचनापदसंग्रह A				बृ.
६	ऊनोदरिकादितप				डेक्कन.
७	उपधानविधि	ताड७१			पा. २.
८	उपधानपौषधविशेषविधि		चक्रेश्वरसूरि		झोंपडी.
९	उपधानस्वरूप B		देवसूरि		बृ.
१०	उपासकपाठ C				डेक्कन.
११	उपासकप्रतिमाविवरण				जामनगर.
१२	जिनस्नात्रविधि*	६०	वादिवेताळ		जेसलमेर.
१३	तपोयोगविधि टीका*	१०००	(त्रुटक)		जेसलमेर.
१४	दृष्टिविधि D	पत्र ३			जेसलमेर बे.

* आ निशानीवाळा ग्रंथो दिगंबरी केटला ग्रंथनांधी मळ्या छे तेथी तेमनी खरी खातरी माटे तेमनी प्रतो जोवानी जरूर छे.

A. B आ बे ग्रंथ बृहट्टिप्पनिकामां नोंधेला छे, पण ते उपलब्ध थया नथी.

C आनुं नाम उपासकपाठ छे के उपासकपद छे ते इंग्रेजी सेलिंगपरथी नक्की थई शक्युं नथी माटे तेनी प्रत जोवानी जरूर छे.

D दृष्टिविधि ते शी बाबतनो ग्रंथ छे ते जणायुं नथी. कदाच ते ज्योतिषनो ग्रंथ होय तोपण होय माटे तेनी प्रत जोई नक्की करवानुं छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
१५	नंदिविधि (प्राकृतपद्य)*	५००	(त्रूटक)		जेसलमेर.
१६	पल्योपमोपवासविधिA			१२६०	नगीनदास.
१७	पूजाविधि *	६००	जिनप्रभ		जेसलमेर.
१८	पौषधविधि		चक्रेश्वरसूरि		डॉ.
१९	प्रत्याख्यानस्थानविवरण B	१५०	जिनप्रभ		जेसलमेर वे.
२०	प्रत्याख्यानस्थानविधि * (सटीक)	१५००			जेसलमेर.
२१	मुखवस्त्रिकाप्रतिलेखनाधिकार	२४०			पा. ४.
२२	मुद्राविधि	पत्र ४८			पा. ३.
२३	यतिप्रतिक्रमणविधि				पा. २.
२४	यतियोगविधान				जेसलमेर वे.
२५	वंदनस्थानविवरण	१५०	जिनप्रभ		जेसलमेर वे.
२६	शांतिपर्वविधि	२६९	जिनप्रभ		जेसलमेर.
२७	श्रावकप्रतिक्रमणविधि	ता३८९			पा २
२८	षडावश्यकविधि C	२३७५	आंचलिक महीसागर	१३९४	पा. ४
२९	स्थापनाकल्पविधि	पत्र ४			पा. ३

A आ ग्रंथ सं. १२६० मां ताडपत्रपर लखेलो खंभातना शेठ नगीनदासना भंडारमां छे ए
रिपोर्टमां नोंध्युं छे.

B अगाऊ जैनागमना लीस्टमां पेज ३४ मां प्रत्याख्यानस्थानविवरणं श्लोक ७०० नुं जयचं
द्रसूरिकृत नोंधेल छे ते अने आ ग्रंथ जूदा छे एम लागे छे.

C आ ग्रंथ पूर्वे जैनागम लीस्टमां पेज २४ मां नोंधायलो छे, छतां ते विधिदर्शक ग्रंथ होवाथ
तेने इहां पण नोंध्यो छे.

नंबर	नाम	श्लोक	कर्ता	रच्या संवत्	क्यां छे ?
	वर्ग ३ जो.				
	सामाचारीना ग्रंथो.				
१	समयदेवसूरिकृतसामाचारी A	१५००	नवांगीकार अभयदेव		पा.३
२	[illegible]सामाचारी	१०५०			पा. ४ देवच.
३	[illegible]सामाचारी	पत्र ५२			क. १
४	[illegible]सामाचारी B	१५००			देवच.
५	[illegible]सूरिकृत[illegible] समद C	२२००	[illegible]	१४४१	पा. १-३-४ [illegible]
६	[illegible]सामाचारी D				[illegible]
७	जिनचंद्रसूरिकृतसामाचारी E	ला.२८१	जिनचंद्र		पा. २
८	जिनसूरिकृत[illegible] F	१५१२	जिनसूरि		पा. २-५
९	जिन[illegible]सूरिकृत[illegible] सामाचारी G	पा.४	जिन[illegible]		डी.

A [illegible]

B [illegible]

C [illegible] —

* [illegible] *

D [illegible]

E. F [illegible]

G [illegible]

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
१०	तपासामाचारी A	७००			वृ.
११	तिलकाचार्यकृतपूनमिया सामाचारी B	२५००	तिलकाचार्य		पाटन. जेसलमेर.
१२	देवगुप्तसूरिकृतश्रावकसामाचारी	पत्र ५	देवगुप्त		वृ. म. २
	वृत्ति C	१२००	देवगुप्त		वृ.
१३	देवप्रभमलधारीकृतसामाचारी D		देवप्रभमलधारि		वृ.
१४	नरेश्वरसूरिकृत सामाचारी E	४०४२	नरेश्वरसूरि F		पा. ५. लीं.
१५	भावदेवसूरिकृतयतिसामाचारी	गा. १५४	भावदेव		सं.
	वृत्ति	पत्र ५०	मतिसागर *		सं.
१६	यशोविजयवाचककृतसामाचारी		यशोविजय		भाव.
	वृत्ति	पत्र ३२	स्वोपज्ञ		भाव.

A बृहट्टिप्पनिकामां आ सामाचारी नोंधी छे पण अमारा जोवामां हजु नथी आवी, माटे जो कोई मुनि महाशय पासे ते होय तेमणे अमने तेनी हकीकत जणाववा कृपा करवी.

B जेसल्मेरनी टीपमां हीरालाले एनी श्लोकसंख्या २५०० नी नोंधी छे.

C देवगुप्तसूरिकृत श्रावकसामाचारीनी वृत्ति उपलब्ध थई नथी माटे ते पण जेमनापासे होय तेमणे अमने खबर आपवी.

D आ सामाचारी माटे बृहट्टिप्पनिकामां नीचे मुजब उल्लेख छेः—

" सामाचारी ११६ अधिकारा मलधारि देवप्रभसूरिया "

E आ सामाचारीनुं अपरनाम सुविहितसामाचारी पण छे.

F पाटणनी टीपमां कुलप्रभशिष्य नरेश्वर लख्या छे त्यारे पीटर्सनी टीपमां कुलप्रभशिष्य धनेश्वरसूरिए रची एवुं लख्युं छे, माटे ते नरेश्वरसूरिकृत छे के धनेश्वरसूरिकृत छे ते माटे पाटणनी प्रत तपासवी जोईए. तेमज पाटणना एनी श्लोकसंख्या ४०४२ श्लोक छे त्यारे पीटर्सीमां ३७०० छे छतां ग्रंथ तेनो तेज छे केमके पीटर्सनी टीपमां पण तेनुं अपरनाम सुविहितसम आपेल छे.

* पूर्वे यतिदिनचर्यानी वृत्ति मतिसागरकृत नोंधाई छे तो ते अने आ एकज हशे के.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
१७	श्रावकसामाचारी	११७५			पा. १-२-४-५
१८	श्रीचंद्रसूरिकृतसुबोधासामाचारी A	१३११	धनेश्वरशिष्य श्रीचंद्र		बृ. पा. १
१९	सामाचारी	पत्र ११			पा. ३
२०	सामाचारी (योग्य)	२०००			पा. ५
२१	हरिप्रभसूरिकृतसाधुसामाचारी	५२७	हरिप्रभ B		पा ३-५ म. १
२२	हरिभद्रसूरिकृतश्रावकसामाचारी C	१२००	हरिभद्र		जेसलमेर.

A एटले के बृहट्टिप्पनिकामां आ ग्रन्थनो उल्लेख छे:—" सामाचारी सुबोधा सर्वानुष्ठानगोचरा धनेश्वरशिष्य श्रीचंद्रीया १२५०—१२११" आ ग्रन्थनी तो बेनी श्लोकसंख्या पण भिन्न भिन्न नोंधेली छे. टीपी अने हमां पाटणनी टीपमां नोंधयली श्लोकसंख्या मोटी छे.

B केटलीक टीपमां हरिप्रभना बदले हरिभद्रनाम लखेल छे.

C टीपमां कर्तानुं नाम हरिभद्र लख्युं छे पण ते शक पडती चिन्ता छे कदाच ते द्वितीय हरिभद्र होय तो होय पण चोक्स निर्णय माटे प्रत तपासी जोवानी जरूर रहे छे.

खंडनमंडनना ग्रंथो.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे?
१	. अंचलमतदलन	१०००	हर्षभूषण	१४८०	पा.३-४-५
२	अंचलमतस्थापन A	पत्र२५			अ. २
३	आचरणाशतक B				यु.
४	आचरणोपन्यास C	४००			A. S.
५	उपधाननिराकरणसंधि D	पत्र५			अ. २
६	औष्ट्रिकमतोत्सूत्रदीपिका	७१६	धर्मसागर	१६१७	पा. ३-१०
७	औष्ट्रिकमतोत्सूत्रोद्घाटन कुलक	२२	,,		पा. ४
८	कालस्वरूपद्वात्रिंशिका E		जिनदत्त F		पा. १ जेसल.
	वृत्ति		जिनपाल G		पा. १

A आ ग्रंथ फक्त अमदावादना चंचलबाइना भंडारनी टीपमां नोंधेल होवाथी तेने अहीं नों
पण ते संबंधी ऐतिहासिक विगत मळी नथी.

B बृहट्टिप्पनिकामां "आचरणाशतकं चरणलक्ष्मीरक्षितकं शतपदीपूर्वपक्षरूपं" आवो उल्ले

C आ ग्रंथ फक्त एशिआटिक सोसायटीमां नोंधायो छे, माटे ते दुर्लभ्य छे.

D आ ग्रंथ पण चंचलबाइना भंडारनी टीपमां नोंध्यो छे ते शिवाय बीजे स्थळे उपलब्ध थयां

E जेसलमेरनी टीपमां एनुं नाम कालस्वरूपकुलक नोंध्युं छे.

F जिनदत्त नामना त्रण आचार्य थया जाणवामां आव्या छे;—

(१)जिनदत्तसूरि ते वायडगच्छीय जीवदेवसूरिना शिष्य हता. तेमणे विवेकविलास न
ग्रंथ रचेल छे, अने तेओ वस्तुपालनी वारे सं. १२७७ मां विद्यमान हता.

(२) जिनदत्तसूरि ते खरतर जिनवल्लभगणिना शिष्य अने जिनचंद्रसूरिना गुरु हता.
ओनो जन्म सं. ११३२मां दीक्षा सं. ११४१ मां सूरिपद सं. ११६९ मां
स्वर्गवास सं.१२११मां थयो हतो. एमणे संदेहदोलावलि प्रकरण विगेरे ग्रंथो रच्य

(३)जिनदत्तसूरि ते देवसूरिकृत जीवानुशासनना शोधनार अने सतगृह नामना स्थळे रे
हता तेओ पण सं. ११६२ ना अरसामां थएला छे.

हवे आ कालद्वात्रिंशिका आ उपर जणावेल त्रण आचार्य मांहेला कया जिनदत्ताचार्ये रची छे
बाबत विचार करतां एम मालुम पडे छे के ते खरतर जिनदत्तसूरिएज रची होवी विशेष संभवित लागे
छतां चोक्कस निर्णय ग्रंथ जोयाथी थई शके तेम छे.

G आ जिनपालसूरि ते जिनपतिसूरिना शिष्य हता. एमणे सं. १२९३मां द्वादशकुलकनी टीका रची

अनु.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
९	कुपक्षकौशिकसहस्रकिरणA	१७८८२	धर्मसागर		पा. ३, ४-५ जे.
१०	कुमताहिविषजांगुली अपरनाम(हितोपदेश)	५१८	रत्नचंद्र	१६७७	पा. ३, लींबडी.
११	केवलिप्रकरणB (ताड)				P. 5, डे.
१२	केवलिभुक्तिस्त्रीमुक्तिप्रकरण	९००			बृ. पा. २
	,, संग्रहश्लोक	६९			बृ. पा. २
१३	खरतरमतनिरूपण शास्त्रविधिC	पत्र ६७			अ. २
१४	गणधरसार्धशतक	२८५	जिनदत्त D		पा. १-२.
	वृत्ति	६०००	सुमतिगणि E	१२९५	पा. १-३ अ. २जे.सु.

A एनुं बीजुं नाम प्रवचनपरीक्षा छे.

B आ केवलिप्रकरण हेमचन्द्रकृतनुं छे. ते संस्कृतमां रचायेलुं छे अने ताडपत्रपर लखेलुं छे. माटे ते केवलिप्रकरण छे के केवलिभुक्तिस्त्रीमुक्ति नामनुं प्रकरण छे ते नक्की करवा माटे तेनी प्रत जोवानी जरूर छे.

C आ नाम शक पडतुं लागे छे अने ते अमदावादना चंचलबाईना भंडारनी टीपमां नोंधेल छे, तो तेनुं खरूं नाम शुं छे अने ते कोने रचेल छे ते बाबत नक्की करवा तेनी प्रत जोवानी जरूर छे.

D आ जिनदत्तसूरि माटे पाटण पछी काव्यशिक्षा उपरनी नोट जुओ.

E सुमतिगणि बे थया छे. एक सुमतिवाचक ते कथारत्नकोशना करनार देवभद्रसूरिना गुरु हता. देवभद्रसूरिए ते ग्रंथ सं. ११५८ मां रचेल छे. वळी महावीरचरित्रना कर्ता गुणचंद्रगणिना गुरु पण तेज हता. गुणचंद्रगणिए वीरचरित्र सं. ११३९ मां रचेल छे. बीजा सुमतिगणिने माटे पाटण तथा जेसलमेरनी टीपोमां ते जिनपतिसूरिना शिष्य हता एम नोंधेल छे. जिनपतिसूरि सं.१२७७ सुधी विद्यमान हता.

हवे आ वृत्ति रच्यानो संवत् १२९५ आपेल छे ते परथी आ वृत्ति बीजा सुमतिगणिए रची छे एम चोक्कस निर्णय थाय छे.

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे?
	लघुवृत्ति		सर्वराजगणिA		पा.१
१५	गणधरसार्द्धशतक B		सोमचंद्र C		अ. २
१६	गुरुतत्त्वप्रदीप D	२४५			पा. १
१७	चर्चरी		जिनदत्त		पा. १
	वृत्ति	३३५	जिनपाल	१२९४	पा. १ को.
१८	चर्चाग्रंथ E	१७००			लींबडी.
१९	चार्चिक F	४८०			पा. ५
२०	चैत्यप्रतिष्ठाप्रकरण G(ताड)				P. 5
२१	तपोटमतकुट्टन	११०	जिनप्रभ H		पा. ३, जेसल.

A एमणे पंचलिंगीनी लघुवृत्ति पण रची छे.

B आ ग्रंथ अमदावादना चंचलबाईना भंडारनी टीपमां नोंधेल होवाथी अहीं नोंध्यो छे. पण गणधरसार्द्धशतकनुं बीजुं नाम तो नहीं होय ते बाबत तेनी प्रत जोई नक्की करवु जोईये.

C आ सोमचंद्रसूरि ते रत्नशेखरसूरिना शिष्य हता. एमणे सं. १५०४ मां कथामहोदधि ग्रंथ रच्येल छे.

D एनु बीजुं नाम "उत्सूत्रपदोद्घाटनकुलक" छे.

E आ ग्रंथ लींबडीना भंडारनी टीपमां नोंधायो छे पण ते संबंधी ऐतिहासिक बीना तेमज कर्त्तानुं नाम शुं छे ते जाणवामां आव्युं नथी. ते कोई खरतर आचार्ये रच्यो होवो जोइये.

F सदरहु ग्रंथनु पण विशिष्टनाम जाणवामां आव्यु नथी.

G आ प्रकरण फक्त पिटर्सनना पांचमा रिपोर्टमां नोंधेल छे माटे ते उतारवा योग्य छे.

H जिनप्रभसूरिए विक्रमसंवत् १३६४ मां लघुवृत्तिकमणनी वृत्ति रची छे. (जुओ पेटर्सन) जेसलमेरनी टीपमां ईत्यादि ते श्लोक ८०० नुं छे अने जिनप्रभशिष्य गुणप्रभसूरिए रच्युं छे एम नोंध्युं परंतु अमारा जाणवा प्रमाणे तो जिनप्रभसूरिए रचेल छे अने ते श्लोक ११० जेटलुं छे अने गुणप्रभसूरिए तेनी प्रत लखावी होय तो होय ए बाबतनी खात्री करवा माटे जेसलमेरना भंडारनी तेनी प्रत नजरोनजर जोवानी आवश्य छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
२३	द्वादशकुलक	पत्र ११	हीरसूरि A		भ. १
२३	दिगंबरमतखंडन B	१५८			पा. ५
२४	द्विजवदनचपेटा C		हेमचंद्र D		वृ. पा. ३
	"	पत्र ४	हरिभद्र		को.
२५	द्विजवदनचपेटावृत्ति		(वीराचार्यकृत)		वृ. भ. २, पा ४
२६	धर्मपरीक्षा	१०१९	अमितगति E दिगंबर		वृ.पा.४.

A आ हीरसूरि ते हीरविजयसूरि छे तेओ सं. १५८३ थी सं. १६५२ सुधीना छ.

B आ [illegible] नाम [illegible] [illegible] नहीं [illegible].

C [illegible] " [illegible] " [illegible] छे.

D आ [illegible] छे, [illegible] [illegible] [illegible].

E आ अमितगति [illegible] १०५० [illegible] छे. [illegible] छे.

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
२७	धर्मपरीक्षा A	१८५०	जिनमंडन B		पा. २
२८	धूर्ताख्यान(प्रा.)	६०२	हरिभद्रसूरि		पा.४-५
	निजतीर्थिककल्पितकुमत निरास C		द्वि.हरिभद्र		सु.भ.१
२९	पर्वरत्नावली	११४४	जयसागर D	१४७८	भ. २
३०	पर्वविचार		दयावर्द्धनE		A. S.
३१	पर्युषणस्थिति	२५८	हर्षभूषण	१४८६	पा.५
३२	पर्युषणशतकप्रकरण	पत्र ७	धर्मसागर		भावनगर.
	वृत्ति		"		भाव जामनगर
३३	प्रश्नचिंतामणि	२६००	वीरविजय	१८६८	सं.
३४	प्रश्नोत्तरपंचाशिका	पत्र २०			भ. १
३५	प्रश्नोत्तरसार्द्धशतक	पत्र ५७			भ. १
३६	प्रतिमाहुंडी	२०००			A. S.
३७	पूर्णिमागच्छीयविचार	पत्र ८०			A. S.

A आ ग्रंथ खास उतारवा योग्य छे.

B जिनमंडनगणि सोमसुंदरसूरिना शिष्य हता. एमणे कुमारपालप्रबंध सं. १४९२ मां रच्यो छे.

C आनुं बीजुं नाम तत्त्वबोधप्रकरण छे. बृहट्टिप्पनिकामां तेना माटे आवो उल्लेख छे:-" तीर्थिककल्पितकुमतनिरासापरनामक तत्त्वबोधप्रकरणं हरिभद्रीयं आंचलिकपौर्णमतछिद्रं ५०४० ".

D आ जयसागर उपाध्याय ते खरतर जिनराजसूरिना शिष्य हता. एमणे सं.१४९५ संदेहदोलावली उपर विवरणकरंडिका नामनी लघुटीका रची छे.

E दयावर्द्धनगणि विक्रमनी सोळमी सदीना अंतमां थएला छे.

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] A	[illegible]	[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible] B				[illegible]
[illegible]	[illegible] C	[illegible]	[illegible] D		[illegible]
[illegible]	[illegible]				[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible] G	[illegible]			[illegible]
[illegible]	[illegible] H		[illegible]	[illegible]	[illegible]

वर्ग १ लो.

प्रकरण ग्रंथो.

अ.

नं.	नाम	श्लोक	कर्ता.	रच्या संवत्	क्यां छे ?
१	अंतरंगप्रबोध (प्रा.) A				पा. ४.
२	अंतरंगसंधि (प्रा.)	२०६	रत्नप्रभ B	१३९२	पा. २. डेक्कन.

A आ अंतरंगप्रबोध प्राकृतमां रचायलो छे, पण ते अद्दरी भरेल छे.

B रत्नप्रभ नामना पांच आचार्य थया जणायामां आव्या छेः—

(१) रत्नप्रभसूरि—ते वादिदेवसूरिना शिष्य अने सं. १२३८ मां उपदेशमालानी दोघट्टी वृत्तिना करनार हता.

(२) रत्नप्रभसूरि—ते प्रद्युम्नसूरिना वंशमां देवानंदसूरि थया, तेमना बे शिष्य एक परमानंद अने बीजा रत्नप्रभसूरि थया. आ रत्नप्रभसूरि पण तेरमी सदीना आरंभमां होवा जोईए.

(३) रत्नप्रभसूरि-ते यशोदेवसूरिना शिष्य मानदेव अने तेमना शिष्य ते रत्नप्रभसूरि थया. तेओ सं. १३०८ मां विद्यमान हता.

(४) रत्नप्रभसूरि-ते आ अंतरंगसंधिना करनार छे, एम पिटर्सनना रिपोर्ट पांचमांमां जणाव्युं छे.

(५) रत्नप्रभसूरि-ते नरचंद्रसूरिना शिष्य हता. एमणे बीजा साथमां भ्रातृ पंडित गुणभद्र तथा श्रावक. श्राविकाना सहायथी सं. १४१८ मां धर्मविधिप्रकरण तथा तेनी वृत्ति रचावी हती. एटले अंतरंगसंधिना करनार रत्नप्रभसूरिना समयमां अने एमना समयमां थोडुंक अंतर रहे छे. ते परथी आ संधिना करनार आ पांचमा रत्नप्रभसूरि होय तो होय.

आ रीते आ पांच रत्नप्रभसूरिमांना कया रत्नप्रभसूरिए आ अंतरंगसंधि रच्यो छे, ते बाबत चोकस निर्णय थतो नथी. कारण के रिपोर्ट पांचमांना पेज १२७ मां आ ग्रंथनी प्रशस्ति लेता प्रान्ते " श्रीधर्मप्रभसूरि रत्नप्रभकृतिरियम् " एवी नोंध करेल छे, ते परथी आ रत्नप्रभसूरि धर्मप्रभसूरिना शिष्य हता के था बे जणा मळीने आ संधि रचायलो छे, अथवा तो उपर जणावेल पांच आचार्यमांना कया आचार्ये ते रचेल छे ते बाबत शक रहे छे. माटे ए बाबतनो निर्णय करवो कोई विशेष पुरावो मळ्या वगर बनवो मुश्केल छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
	आ.				
३	आगमअष्टोत्तरी		अभयदेव		पा. ३-४ को.
	वृत्ति	पत्र १२	चंद्रमुनि A		भ. २
४	आत्मनिंदाष्टक				पा. ३
५	आत्मप्रबोध	३३००	जिनलाभ	१८८३	ली. को. सुलभ.
६	आत्मशिक्षा	पत्र १०			भ. १
७	आत्मोपदेशमाला	पत्र १०			भ २
८	आदिनाथदेशना	११३६			सं. भाव.
	वृत्ति	पत्र ५१			भ. १
९	आराधना	गा. ८९	अभयदेव		मगनदास, जेसल.
	,, (बीजी)		अजितदेव B		पा. ३
१०	आराधनापंचक	गा. ३१९			मगनदास.
११	आराधनासत्तरी	गा. ७०	कुलमंडन C		मगनदास.

A आ चंद्रमुनि ते [illegible] अभयदेवसूरि [illegible]
[illegible]

B [illegible] अजितदेव [illegible] छे. [illegible]
[illegible]

C [illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]		[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]			[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]			[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]

[illegible]

नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
वृत्ति	१४०००	मुनिचंद्र	११७४	बृ. पा. १-४ को.
वृत्ति (बीजी)	६४१३	धर्मनाथ		जेसलमेर.
उपदेशप्रासाद	पद्य ३१			भाय. डेक्कन.
वृत्ति	१००००	विजयलक्ष्मी A		डेक्कन.
उपदेशमाला	गा.५४४	धर्मदास B		पा.१ २-३-५ मुलाय.
वृत्ति (प्राकृत) C		जयसिंह	९१३	बृ.
वृत्ति (हेयोपादेया)	९५००	सिद्धर्षि		बृ. पा. २-५
वृत्ति (कर्णिका)	१२२७४	उदयप्रभ	१२९९	बृ. पा. २
वृत्ति (दोघट्टी)	११७६४	रत्नप्रभ	१२३८	बृ. पा.१-२-५ डेक्कन.
वृत्ति	७६००	रामविजय	१७८१	जेसल. लींबडी.
विवरण	८४१२४	सर्वानंद		भ. २
लघुवृत्ति	४१७०	सिद्धर्षि		बृ. पा. १ भाय.

A आ विजयलक्ष्मीसूरि ते [illegible] पेज २११ मां [illegible] [illegible] छे के, कोई [illegible] छे ते [illegible] आ वृत्तिनो [illegible] [illegible] छे.

B आ धर्मदासगणि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे.

C आ [illegible] [illegible] छे, [illegible] [illegible] नथी.

[illegible] "उपदेशमालावृत्तिः [illegible] २११ [illegible]" [illegible] छे. [illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-ना सं.	क्यां छे ?
	अवचूरि	२०००	धर्मनंदन		पा. ४ डेकन. माय.
	अवचूरि	१५००	जयशेखर		पा. ४
	अवचूरि		अमरचंद्र	१५१८	पीटर्सन रिपोर्ट ५
	गाथाशतार्थ	पत्र २७			अ. १
	कथा		जिनभद्र A	१२०४	नगीनदास.
	उपदेशमाला B (बीजी)	गा. ५४२			नगीनदास.
	उपदेशमाला (त्रीजी)	गा. ३०	पद्मसागर		जेसलमेर.
२०	उपदेशमणिमाला				पा. २
२१	उपदेशरत्नकोश	गा. ६२	जिनेश्वर C		पा. ३-४ माय.
	वृत्ति	२५००	देवभद्र D		नगीनदास.
२२	उपदेशरत्नमाला	गा. २५			ली.
२३	उपदेशरत्नाकर	पत्र १२	मुनिसुंदर		पा. ३, को. माय.
	वृत्ति	७२७५	स्वोपज्ञ		पा. ३-४ को. माय.

A आ जिनभद्रसूरि शालिभद्रसूरिना शिष्य हता. तेमना माटे पिटर्सन रिपोर्ट बीजाना पेज ८३ मां आ ग्रंथनी नोंध लेतां माते "शालिभद्रसूरीण सिस्सेहिं ३ सिरिजिणभद्दमुणीदेहिं" आ टीके नोंध्युं छे.

B आ उपदेशमालानी गाथाओ पण पहेली उपदेशमालाने मळतीज छे, पण तेनो आगळ तरफनां के वहन ग्रुदीज भागे छे. तेनुं आदिपद "सुरदेवय च वंदे मानुसारण सिरिसम्मत्तं भणं" आचुं छे ते पाधी आ उपदेशमाला वहन ग्रुदीज करे छे.

C आ जिनेश्वरसूरि ते क्या जिनेश्वरसूरि छे ते बाबत तेनो कोई विशेष पुरावो मळतो नथी.

D आ देवभद्रसूरि संबंधी पण ऐतिहासिक बीना मळी शकती नथी. पण पं. आणंदसागरजी महाराजना कहेवा मुजब आ देवभद्रसूरि ते संग्रहणीनी टीकाना करनार मलधारि देवभद्रसूरि होय केदेव.

नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
उपदेशरसायन A		जिनदत्त		पा. १ डेक्कन पेज ११४
वृत्ति	२७९०	जिनपाळ		पा. १
उपदेशरहस्य		यशोविजय		म. १ को.
वृत्ति	३०००	स्वोपज्ञ		म. १ को.
उपदेशरहस्य B (बीजो)	५००			जेसलमेर.
उपदेशशतक C		मेरुतुंग D		डेक्कन पेज १३
उपदेशशतक E (बीजुं)		विमल	१७९३	पा. ४-५
वृत्ति	पत्र ४८			अ. २
उपदेशसप्ततिका	२८०० F	सोमधर्म	१६०३	पा. १-४ को.
उपदेशसत्तरी				पा. ३ माण.
वृत्ति	७९७५	क्षेमराज		पा. ३ माण.

A आ ग्रंथने केटलीक प्रतोमां उपदेश रसायनना नामे ओळखावेल छे, त्यारे केटलीक प्रतोमां तेनुं नाम उपदेशरसाळ आप्युं छे. परंतु तपास करतां तेनुं खरुं नाम उपदेशरसाळज छे.

B आ ग्रंथ टिप्पणिमां नोंधेल होवाथी शक पडतो छे, माटे तेनी प्रत जोवानी जरूर छे.

C एनुं कर्त्ताना "महापुरुषचरित्र" छे. ते संस्कृतमां रचायलुं छे एम डेक्कनकॉलेजना रीपोर्टमां बनावेलुं छे ते परथी एम लागे छे के कदाच ते टीका हशे. छतां चोक्कस निर्णय माटे तेनी प्रत तपासवानी जरूर छे.

D आ मेरुतुंगसूरि चंद्रप्रभसूरिना शिष्य हता. एमणे प्रबंधचिंतामणि संवत् १३६७ मां रच्यो छे.

E आ ग्रंथ [illegible] शतकना वर्णनमां नोंधवामां आवशे पण तेमां उपदेशनो विषय होवाथी अहीं पण नोंध्युं छे.

F आ श्लोकसंख्या कोडीनारनी टीपमां नोंधेल होवाथी अहीं दाखल करी छे. पाटणनी टीपमां तेनी श्लोकसंख्या लगभग दोढीक बतावेल छे. ए बाबत तेनुं चोक्कस प्रमाण जे मुनिमहाराजने खबर होय तेमने ते अमोने लखी जणाववा कृपा करवी.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-ना सं.	क्यां छे ?
	अवचूरि	२०००	धर्मनंदन		पा. ४ डेकन. भाव.
	अवचूरि	१५००	जयशेखर		पा. ४
	अवचूरि		अमरचंद्र	१५१८	पीटर्सन रिपोर्ट ५
	गाथाशतार्थ	पत्र २७			अ. १
	कथा		जिनभद्र A	१२०४	नगीनदास.
	उपदेशमाला B (बीजी)	गा. ५४२			नगीनदास.
	उपदेशमाला (त्रीजी)	गा. ३०	पद्मसागर		जेसलमेर.
२०	उपदेशमणिमाला				पा. २
२१	उपदेशरत्नकोश	गा. २६	जिनेश्वर C		पा. ३-४ भाव.
	वृत्ति	२९००	देवभद्र D		नगीनदास.
२२	उपदेशरत्नमाला	गा. २५			लीं.
२३	उपदेशरत्नाकर	पत्र १२	मुनिसुंदर		पा. ३, को. भाव.
	वृत्ति	७६७५	स्वोपज्ञ		पा. ३-४ को. भाव.

A आ जिनभद्रसूरि शालिभद्रसूरिना शिष्य हता. तेमना माटे पिटर्सन रिपोर्ट त्रीजाना पेज ८३ मां आ ग्रंथनी नोंध लेतां प्रांते "सालिभद्दसूरीण सिस्सेहिं ३ सिरिजिणभद्दमुणिंदेहिं" आ रीते नोंध्युं छे.

B आ उपदेशमालानी गाथाओ पण पहेली उपदेशमालाने मळतीज छे, पण तेनो आयंत तपासतां ते तद्दन जुदीज लागे छे. तेनुं आदिपद "सुयदेवयं च वंदे यासुपसायएण सिक्खियं नाणं" आवुं छे ते परथी आ उपदेशमाला तद्दन जुदीज ठरे छे.

C आ जिनेश्वरसूरि ते कया जिनेश्वरसूरि छे ते बाबत तेवो कोई विशेष पुरावो जाणवामां आव्यो नथी.

D आ देवभद्रसूरि संबंधी पण ऐतिहासिक बीना मळी शकती नथी. पण पं. आणंदसागरजी महाराजना जणाव्या मुजब आ देवभद्रसूरि ते संग्रहणीनी वृत्तिना करनार मलधारि देवभद्रसूरि होवा जोईए.

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रचना-नो सं	क्यां छे ?
६४	उपदेशमाला A		जिनदत्त		पा. १ डेक्कन पेज ११४
	वृत्ति	२७९०	जिनपाल		पा १
६५	उपदेशपद		यशोविजय		भ. १ बो.
	वृत्ति	१३००	[illegible]		भ. १ बो.
	उपदेशपदवृत्ति B (बीजी)	५००			जेसलमेर.
६६	उपदेशमाला C		हेमचंद्र D		डेक्कन पेज ११
	उपदेशमाला E (बीजी)		[illegible]	१७९१	पा ४-५
	वृत्ति	५४४८			भ. २
६७	उपदेशसप्ततिका	५८०० F	सोमधर्म	१५०३	पा १-४ बो
६८	उपदेशमाला				पा. ३ भाव.
	वृत्ति	७५७५	[illegible]		पा ३ भाव

A [illegible] उपदेशमाला [illegible] डेक्कन [illegible]

B [illegible]

C [illegible]

D [illegible]

E [illegible]

F [illegible]

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो स.	क्यां छे ?
२९	उपदेशसंग्रह	पत्र ७			अ. २
३०	उपदेशसार A (गद्य)	गाड३०६			पा. २ भाव. मदन.
	,, B (बीजो)	पत्र ३३			अ. १
३१	उपमितिभवप्रपंचा (कथा)	१६०००	सिद्धर्षि	९६२	पा. २-३
	,, उद्धार C	२३२८	देवसूरि D		वृ. पा. २
	,, सारसमुच्चय	१४६०	वर्द्धमान		वृ. नगीनदास.
	,, सारोद्धार	५७०	देवेंद्र E	१२९८	वृ. पा. १-२-५
	,, सारोद्धार	पत्र ९३	रत्नसूरि F		राधनपुर.

A, B. आ बन्ने ग्रंथ एकज छे के जुदा जुदा छे ते नक्की करवा माटे तेनी प्रतो जोवी जोईए.

C उपमितिभवप्रपंचोद्धार माटे बृहट्टिप्पनिकामां नीचे मुजब उल्लेख छे:—

" उपमितभवप्रपंचोद्धारः स. देवसूरिकृतः २३७० अनु. "

D देवसूरि नामना चार आचार्य थया जाणवामां आव्या छे:—

एक देवसूरि जीवानुशासनना करनार वीरचंद्रसूरिना शिष्य हता.

बीजा देवसूरि मुनिचंद्र अने मानदेवसूरिना शिष्य हता, ने त्रीजा देवसूरि ते धनेश्वरसूरिना चार शिष्य. वीरभद्र, देवसूरि, देवभद्र अने देवेंद्रसूरि एमांना बीजा अने चोथा देवसूरि ते विजयसिंहसूरि शिष्य अमयदेव तच्छिष्य श्रीचंद्र अने तेना शिष्य देवसूरि थया अने तेमणेज आ उद्धार रच्यो छे.

E आ देवेंद्रसूरि अमारा धारवा प्रमाणे धनेश्वरसूरिना उपर जणावेल चार शिष्यमांना होवा जोईए. छतां चोक्कस पुरावा माटे प्रत जोवी जोईए. एमणे चंद्रप्रभचरित्र संवत् १२६४ मां रचेल छे.

F आ नाम अपूर्ण छे माटे तेनुं खरुं नाम शुं छे ते नक्की करवा माटे राधनपुरना भंडारमांनी तेनी प्रत तपासवानी जरूर छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
	ऋ.				
३२	ऋषिमंडलसूत्र A	गा. २१०	धर्मघोष		बृ. पा.३-४
	वृत्ति (पेली)	७९९०	पद्ममंदिर		ल. २ डेक्कन.
	वृत्ति (बीजी)	१८०००	शुभवर्द्धन B		पा. ३
	वृत्ति (त्रीजी)	४२००	हर्षनंदन C		डेक्कन.
	वृत्ति (चोथी) D	४०००	आंच. भुवनतुंग		लीं.
	वृत्ति (पांचमी)	ग. २६१	खर. जिनसागर		अ. १
	वृत्ति (छठी)	ग. १३५	कीर्तिरत्न		अ. २
	अवचूरि				पा. ३
३३	ऋषिमंडलस्तव E	गा.२७१			बृ.
	वृत्ति	४६१४			बृ.
३४	ऋषिमंडलस्तोत्र (सं.)F	७०	मेरुतुंग		बृ.

A एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां "भक्तिभरोनतेत्यादि ऋषिमंडलसूत्र गा. २१०" आ रीते नोंध छे. एनुं आदिपद भत्तिब्भर पण छे.

B आ शुभवर्द्धनगणि ते सोमसुंदरसूरिना संतानमांना साधुविजयगणिना शिष्य हता, एटले तेमो विक्रमनी सोळमी सदीना अरसामां थया होय जोईए.

C आ हर्षनंदन उपाध्याय अढारमी सदीना प्रारंभमां थया छे तेम होवुं जोईए.

D आ वृत्ति पण लींबडीना भंडारनी टीपमां नोंधी छे, पण ते त्यां श्लोक ४००० सुधीनी एटले दर्शनभद्रनी कथा सुधी छे. बाकीनो थोडोक भाग अपूर्ण छे.

E ऋषिमंडल स्तवने प्राकृतमां इसिमंडलस्तव पण कहेवाय छे. बृहट्टिप्पनिकामां एना माटे " इसिमंडलेत्यादि ऋषिमंडलस्तव गा. २७१" आवी नोंध छे. एने महर्षिस्तव पण कहे छे. आ स्तव तेनी वृत्ति साथे बृहट्टिप्पनिकामां नोंधेलो छे, पण इतुर्भुसु अमोने ते क्यां पण उपलब्ध थयो नथी. माटे तदनुं कहेवुं तेनुं वृत्ति साथे क्यां होय त्यांथी तपासी मेळववो जोईए.

F आ स्तोत्र संस्कृतमां रचायुं छे अने तेनी ७० कडीओ छे. बृहट्टिप्पनिकामां तेना माटे " ऋषिमंडलस्तवः सं, मेरुतुंगसूरिकृतः काव्य ७० " आवो उल्लेख छे.

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे
	ए.				
३५	एकोनत्रिंशत्भावना				अ. १ को.
	क.				
३६	कथानककोश	गा. ३०	जिनेश्वर		सी.
३७	कर्पूरप्रकरण	३५०	हरिसाधु		मुद्रित.
	वृत्ति	१७६८			पा. १-२ को.
	अवचूरि	१२६०	जिनसागर	१५५१	पा. ४
३८	कस्तूरीप्रकरण	का. १८२	हेमविजय A		पा. ३ सं.
	वृत्ति	पत्र २६			भाव.
३९	कृष्णयुधिष्ठिरधर्मगोष्ठी B	४६८			डेकन पेज ११४
४०	कामघट C				डेकन पेज ३१
४१	क्षपकशिक्षाप्रकरण	पत्र ८			अ. १

A आ हेमविजयगणि सेनसूरिनी वारे थएला छे.

B आ ग्रंथ डेकन कॉलेजना रिपोर्टमां पेज ११४ मां नोंधीने नोंध्युं छे के ते संस्कृत, प्राकृत अने गुर्जर भाषामां रचायलो छे. पण ते कोणे रचेल छे ते संबंधी कशी बीना आपवामां आवी नथी, तेथी शक रहे छे के वखते ते अन्यमतिनो पण होई शके, माटे ए बाबतनी बेशक खातरी करवा माटे तेनी प्रत तपासवानी जरूर छे.

C सदरहु ग्रंथ पण डेकन कॉलेजना रिपोर्टमां ते प्राकृत अने गुर्जर भाषामां रचायलो छे एम जणाव्युं छे. पण तेना नाम उपरथी शक पडे छे माटे तेनी पण प्रत जोवाथी निर्णय थई शके.

	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे?
	ग.				
५२	गाथाकोश A	गा. ६४			डेक्कन.पीटर्सन रि.५
५३	गुणमालाप्रकरण		मानविजय		पा ५.भ. १ डेक्कन.
	वृत्ति	१५१००	(स्वोपज्ञ)		पा.५ भ. १ डेक्कन.
५४	गुणस्थानकव्याख्या B	४४८			पा. ५
५५	गुणस्थानसिद्धि C	१७४			पा. ५
५६	गौतमपृच्छा	गा. ६४			पा. ३ गुजरात.
	वृत्ति	५६००	जय कीर्तितिलक		बु पा. १-३
	वृत्ति (बीजी)	१८००	मतिवर्धन		पा. ३. डेक्कन
५७	गौतमकुलक D (प्रा.)	गा. ४२			बु.
	घ.				
५८	घनुर्गतिभावनासंधि	गा. ७४			डेक्कन.
५९	घटिकायंत्रोपयोगमान	गा १७			पा. १-४

A [illegible]

B, C [illegible]

D [illegible]

नंबर	नाम	श्लोक.	कर्ता.	रचना संवत्	क्यां छे ?
	प.				
[illegible]	[illegible]		मानतुंग		मु. छेपाल.
	वृत्ति A	१६००	[illegible]	१२९०	मु. छेपाल.
[illegible]	[illegible]	गा. ११३			मतीनदास.
[illegible]	[illegible]	१००			छेपाल.
[illegible]	[illegible]		देवसूरि B		पा. ४
	वृ. [illegible]	२२०००	(स्वोपज्ञ)	११८२	पा. १-४
[illegible]	[illegible]				पा. २
[illegible]	[illegible]	गा. २०			मतीनदास
	ब				
[illegible]	[illegible] ([illegible])				[illegible] २४
[illegible]	[illegible] C		[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible] D	३४			[illegible]
[illegible]	[illegible]	गा. ८३	[illegible]		पा. २

[illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
६०	शतांकुश A	का. २८			पु. भ. १
	त.				
६१	तत्त्वबिंदु B	७१			पु.
६२	तीर्थमालाप्रकरण	पद्य ८			भ. १
	द.				
६३	दर्शनमाला C (सं.)	७००			जेसल.
६४	दर्शनशुद्धिप्रकरण D	गा २२६	चंद्रप्रभ		पु. लीं.
	वृत्ति	पत्र ८६	विमलगणि E	११८४	पा. १
	वृत्ति	३८००	देवभद्र F		पु. पा. १-२-४-५ लीं.
	अवचूरि	६५०			डेक्कन.
६५	दशदृष्टांतगीता (प्रा.)	पत्र ४	सोमविमल G		डेक्कन.

A आ शतांकुश कुलक जेवुं लागे छे. जुदा जेना नाम उपरथी ते ग्रंथ पण होई शके माटे जुदा अने जैने ग्रंथ धारीने जुदा नोंध्यो छे.

B आ तत्त्वबिंदु गद्यरूपे छे.

C आ नामना शक पडतुं लागे छे कारण के ते संबंधी कोई बीजो पुरावो बीजामां आवतो नथी अने ते टेस्सिटोरीनी टीकामां ईशारेल नोंध्युं छे. तो ते आ नामनो ग्रंथ छे अने तेनुं खरूं नाम शुं छे ते बाबतनो खुलासो करवा माटे तेनी प्रत मंगावी तपासवानी जरूर छे.

D आ दर्शनशुद्धिनुं नाम संदेहनिर्णय छे. पिटर्सन रिपोर्ट चोथाना पेज १४५ मां एनुं अपरनाम सम्यक्त्वप्रकरण छे एम जणावेल छे, कर्ता प्रकरणना करनार पण पौर्णमिक चंद्रप्रभसूरि होवाथी आ बंने ग्रंथो एकज छे के जुदा जुदा छे ते बाबत शक रहे छे. माटे हालमां अमे तेमना नाम नीचे नंबर जुदा जुदा नोंध्या छे. हमणा पन्यासजी आनंदसागरजी महाराज तरफथी खबर मळी छे के, दर्शनशुद्धिना करनार पौर्णमिक चंद्रप्रभसूरि नथी पण चंद्रसूरि छे.

E आ विमलगणि धर्मघोषसूरिना शिष्य हता.

F आ देवभद्रसूरिनी बहु हकीकत जणाती माटे आ वृत्तिनी प्रशस्ति जोवानी जरूर छे.

G आ सोमविमलसूरि हेमसोमसूरिना गुरु हता, तेओ तपगच्छना नायक हता ने सं. १६४६ मां विद्यमान हता.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
८२	धर्मोपदेश	८३३२	यशोदेव	१२०५	बृ.
	धर्मोपदेश A (बीजो.)				
	लघुवृत्ति	गा. २२४	कृष्णर्षिशिष्य जयसिंह.	९१५	बृ. पा. २. ऑ.
	धर्मोपदेश (त्रीजो)	प. ८५	मेरुतुंग.		डेक्कन पे. ११५
	धर्मोपदेश (चोथो.)	७००			डेक्कन.
८३	धर्मोपदेशमाला B	गा. १०२	जयसिंह		पा. २-४ पी. रि. ५
	वृत्ति	६६५०	जयसिंह C		बृ. पा. २-५
	वृत्ति	१३०००	विजयसिंह D		बृ. पा. २
	धर्मोपदेशमाला (बीजी.)E	गा. १०४	यशोदेव		बृ. पीटर्सन रि.१ पेज २९-४७

A आ धर्मोपदेशप्रकरण इहां नोंध्युं छे. पण ते क्यां पण उपलब्ध थयु नथी.

B आ धर्मोपदेशमालाना आद्यन्तना उतारा नीचे मुजब छे:—

आद्यमां " सिज्झउ मज्झ वि सुयदेवी तुज्झ भरणाउ सुंदरा ज्झत्ति। धम्मोवएसमाला विमलगुणा जय पडायव्व।" आ गाथा आदीने अन्तमां " इयजयसायइक्कन्दमुणिवसीस जयसिंहसूरिणा रइया। धम्मोवएसमाला कम्मक्खयमिच्छमाणेण।" आ उपरथी आ धर्मोपदेशमालाना करनार जयसिंहसूरि ते सं. ९१५ मां धर्मोपदेशनी लघुवृत्तिना करनार कृष्णर्षिशिष्य जयसिंहसूरिज छे. जेसलमेरनी हीराभाले करेली टीपमां एना कर्ता गोविंदगणि जणाव्या छे, पण ते बाबत तेनुं कोई प्रमाण न मळवाथी ए नाम तदन अप्रमाणिक गणि शकाय तेम छे.

C आ जयसिंहसूरि मूळकारज छे के तदनुरूप नामना थएला छे ते छे ते बाबतनो चोक्कस निर्णय आ वृत्तिनो प्रशस्तिलेख जोया वगर थई शके तेम नथी.

D आ विजयसिंहसूरि मलधारी हेमचंद्रसूरिना शिष्य हता. एटले आ वृत्ति तेमणे विक्रमनी बारमी सदीना अन्तरीमां रची होवी जोईए.

E आ धर्मोपदेशमालानी आदिनी गाथा पण " सिज्झउ मज्झ वि " एवीज छे, पण तेना *पछीनी गाथा जयसिंहसूरिकृत धर्मोपदेशमालाथी तदन जुदी छे. ए बाबतनी खात्री करवी होयतो* पिटर्सनना रिपोर्ट पहेलाना पेज २९ मां जुओ. सिवाय तेज रिपोर्टना पेज४७ मां कर्ताना नाम वगरनी एक बीजी पण धर्मोपदेशमाला नोंधेली छे. अने तेनी अंतनी गाथा उपर जणावेल बे धर्मोपदेशमाला करता भिन्न छे. छतां ते जुदी जुदी छे के एकज छे ते बाबतनी खातरी करवा तेनी प्रतो परस्पर *मेळववी जोईए जोईए.*

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
	न.				
८४	नरभवदृष्टांतोपनय		नयधिमल		पा. १
८५	नवकारप्रकरण	गा. २७			लीं. नगीनदास.
८६	नवपदप्रकरण	गा. १४०	जिनचंद्र A		पा. १-२-४ सं.
	वृत्ति (पेहेली)	२२१०	जिनचंद्र	१०७१	बृ. पा. २
	वृत्ति (बीजी)	२१३०	देवगुप्त B	१०७२	बृ.
	वृत्ति (त्रीजी)	२६००	कुलचंद्र	१०७३	बृ. पा. २
	वृत्ति (चोथी)	९५००	यशोदेव	११६५	बृ. पा. १-४-५
	वृत्ति (पांचमी) C	९०००	देवेंद्र	११८२	बृ.
८७	नवविधभावना	२२६			पा. ४
८८	नारीबोध (प्रा.) D	३००			जेसल.
८९	न्यायधर्मोपदेश	७८३	(अपूर्ण)		डेक्कन.
	प.				
९०	पंचनमस्कारफल	गा. ११८	जिनचंद्र		लीं. जेसल.

A आ जिनचंद्रसूरि उकेशगच्छना हता, परंतु अपरनाम देवगुप्तसूरि छे. तेमनी वंशावली आ रीते छे:—देवगुप्तसूरि तेमना शिष्य कक्कसूरि तेमना शिष्य सिद्धसूरि तेमना शिष्य देवगुप्तसूरि अने तेमना शिष्य यशोदेवसूरि थया.

B देवगुप्तसूरि ते कक्कसूरिशिष्य सिद्धसूरिना शिष्य छे.

C आ वृत्ति माटे बृहट्टिप्पनिकामां "अभिनवदेववृत्तिः ११८२ वर्षे सूत्रकारदेवेंद्रीया ९००० " आवी नोंध छे.

D आ ग्रंथ जेसलमेरनी टीपमां लखेलो नोंध्यो छे तेथी शक रहे छे, माटे तेनी प्रत मेळववानी जरूर छे.

*	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
*१	[illegible]		जयप्रभसूरि A		पीटर्सन रि. ५
*२	[illegible]	गा. ८४	धर्मघोष B	११८१	पा. २ पीटर्सन ५
	[illegible] C (बीजुं)	गा. ६४	मानतुंग		सं. मगनलाल
*३	[illegible]	गा. ८५	सोमसूरि		पा. ३-४ भ. १
*४	[illegible] D	२४५	जिनवल्लभ		लींबडी.
*५	[illegible]	गा. ११८			सं. मगनलाल.
*६	[illegible] E	६८५	मलधारिहेमचंद्र		पु. मुलचंद.
	चूर्णि	१३९६८	[illegible]	११७४	पु. पा. १-२-३-५
	चूर्णि	२०००	[illegible] F	११९२	पा. १-४ भंडार. [illegible]
	लघुचूर्णि	२३१०			भा.
		१९००	[illegible]	१३६४	पा. १ [illegible]

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रचना-नो सं.	क्यां छे ?
९७	पुद्गलक्षम A	ताड १९			पा. २
९८	प्रतिलेखनाप्रकरण				पा. ४
९९	प्रबोधचिंतामणि	२०३२	अंच. जयशेखर	१४६२	पा. १-३-४
१००	प्रवचनमातृप्रकरण	पत्र १			अ. १
१०१	प्रव्रज्याविधान	गा. १५	परमानंदसूरि B		पू. पीटर्सन ५
	वृत्ति	४५००	प्रद्युम्नसूरि	१३२८	पू. डी. डेक्कन.
	वृत्ति C	२५८	जिनप्रभ		पू.
१०२	प्रश्नोत्तररत्नमाला	गा. २९	विमलसूरि		पा. १-२ ३-४मुद्रित
	वृत्ति	ताड १८	देवेंद्रसूरि	१४२९	पू. पा. २—३
	वृत्ति	पत्र १९१	मुनिभद्र		अ. २
	अवचूरि	४९६			पा. १-२-४-५
	ब.				
१०३	बोधप्रदीपिका D	गा. ५२			पू.
१०४	बोधप्रदीपिका				डेक्कन पेज ३१
	भ.				
१०५	भवभावना.	गा.५३१	मलधारिहेमचंद्र	११७०	पू. पा. १-२ ली. मु.

A आ पुद्गलक्षम पाटणना बीजा नवरना भंडारनी टीपमां लखेलो छे, पण ते बीजे स्थळे उपलब्ध थतो नथी.

B आ परमानंदसूरि माटे आ पुस्तकना पेज ८१ मां तेमना नाम नीचेनी नोट जुओ.

C बृहट्टिप्पनिकामां आ वृत्ति माटे "प्रव्रज्याविधानवृत्तिः जैनप्रभी २५८" आवो नोंध छे. पण ते अन्यत्र क्यांय उपलब्ध थई नथी.

D आ बोधप्रदीपिका सूक्तरूपे छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे?
	वृत्ति	१२९९०	स्वोपज्ञ	११७०	बृ. पा. १-२ मुलम्य
	अवचूरि	४३५			पा. ४
१०६	भावना A	पत्र २०	अल्तु		म. १
१०७	भावनाद्वात्रिंशिका				डेक्कन.
१०८	भावनाप्रकरण B	४९४			डेक्कनताड
१०९	भावनासंधि C म.	७७	देवसूरिशिष्य शिवदेव		पा. ३
११०	मार्गतत्त्वप्रकरण				पा. ३
१११	मूलशुद्धि D (स्थानप्रकरण)	गा.२१२	प्रद्युम्नसूरि E		बृ. पा. २-४-५
	वृत्ति	१३०००	देवचंद्र		बृ. पा. १-२-४-५
११२	मृगापुत्रसंधि F	गा. ६०			पीटर्सन ५

A आ भावना कदाच गुजराथीमां रचायली होय तो होय. वळी कर्त्तानुं नाम पण विचित्र जेवुं लागे छे माटे तेनी प्रत जोवानी जरूर रहे छे.

B आ प्रकरण डेक्कन कॉलेजमां ताडपत्रपर छे अने ते संस्कृतमां छे.

C आ भावनासंधि प्राकृतमां छे पण तेनी चोक्स गाथा केटली छे ते जाणवामां आवी नथी.

D आ मूळशुद्धिनुं बीजुं नाम स्थानकप्रकरण छे. बृहट्टिप्पनिकामां एना माटे " स्थानवृत्तिर्हेमसूरिगुरुदेवचंद्रीया तत्सूत्रं प्रद्युम्नसूरिकृतं १३००० " आवी नोंध छे.

E प्रद्युम्नसूरि माटे आ पुस्तकना पेज १२८ मां तेमना नाम उपरनी नोटमां जणावेल चोथा प्रद्युम्नसूरिनो इतिहास जुओ.

F आ संधि जुनी गुर्जरमां रचायली छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
	य.				
११३	यतिदिनचर्यावालिका (प्रा.)		पृथ्वीचंद्र A		डेक्कन.
११४	यद्धर्ममाला B	११०			रिपोर्ट ५
११५	योगशास्त्र C	१२००	हेमसूरि		छु. पा. मुद्रय.
	वृत्ति	१२०००	स्वोपज्ञ		छु. पा. मुद्रय.
	अवचूरि	१५००			पा. १-४
	आंतरश्लैत्यपंजनवृत्ति	१०११	स्वोपज्ञ		पा. २
	आंतरश्लोक				पा. २ ली.
	र.				
११६	रत्नावली D	४०००			बंगाल.
११७	रूपकमाला		पुण्यनंदन		डेक्कन.
	वृत्ति	४००	समयसुंदर		डेक्कन.
	व.				
११८	वर्धमानदेशना	५५००	शुभवर्धन	१५५२	पा. ३—४ थे

A [illegible]

B [illegible]

C [illegible]

D [illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
१४९	संदेहसमुच्चयदीपिका		नरचंद्र A		ली. भ. १
१५०	संबोधसत्तरी		जयशेखर		पा. १—३ मुद्रित.
	वृत्ति				को.
१५१	संबोधप्रकरण	गा ३५	महेश्वरसूरि		पा. ४ ली.
	वृत्ति	५३००	हेमहंसशिष्य B		डेक्कन.
१५२	संवेगद्रुमकंदलि	गा. ५२			डेक्कन.
१५३	संवेगद्रुमकंदलि	गा. ५२	जिनदत्ताचार्य		बृ पा. १-५
१५४	संवेगरंगशाला	पत्र ९.	संगमकवि C		डेक्कन पेज १४
१५५	संवेगमंजरी D		देवभद्र		डेक्कन.
१५६	संवेगमाला	गा २५.	दिग. ब्रह्म		ला मतिसागर.
१५७	संवेगरंगशाला	१००५३	जिनचंद्रसूरि सातुर्जिनचंद्र E	११२५	बृ पा. ५ भ. १ के पा. ३ भ. २
१५८	संवेगदृष्टांत F				

A [illegible] हता. [illegible]

B [illegible]

C [illegible]

D [illegible]

E [illegible]

F [illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
	वृत्ति				भ. १
१५९	सामान्यधर्मोपदेश	पत्र १०			भ. १
१६०	सिद्धांतरत्नावली	का. ३२	हेमसूरिशिष्य		डेक्कन.
१६१	सिंदूरप्रकरण	का. ९८	सोमप्रभ		मुद्रित.
	वृत्ति	पत्र१२७	चारित्रवर्धन		भाव.
	वृत्ति (बीजी)	पत्र ४८	हर्षकीर्ति		पा. ३
	वृत्ति (त्रीजी)	६००	खर. जिनतिलक		लीं.
	अवचूरि	१५००			लीं.
१६२	सुजनसप्तिका A				पा. ३—५
१६३	सूक्तिद्वात्रिंशिका				पीटर्सन ५
	वृत्ति	१९८			पीटर्सन ५
	ह.				
१६४	हितायरण (प्रा.)				पा. ४

A आ सुजनसप्तिका ते अमारा धारवा मुजब आ पुस्तकना पृष्ठ १४४ मां सुजनसप्तकना नामे लखेली छे हशे.

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो स.	क्यां छे ?
	वृत्ति	१२४३२	सकलचंद्र	१६३०	पा. ४—१
१९५	हितोपदेशमाला	गा. ५२६	प्रभानंद		बृ. टि. ६
	वृत्ति A	९५००	परमानंद	१३०४	बृ. जेसल.
१९६	हितोपदेशामृत B (प्रा.)	३१००	परमानंद		जेसल.

A आ वृत्ति माटे बृहट्टिप्पनिकामां "हितोपदेशमालावृत्तिःसूत्रकारप्रभानंदभानु पं. परमानंदीया ११०४ वर्षे ९५०० " आवी नोंध छे.

B जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले आ ग्रंथ ताडपत्रपर लखेलो छे एम नोंध्युं छे. पण तेना कर्त्ताना नामनो शक रहे छे के यत्नथी ते परमानंदसूरिकृत हितोपदेशमालानी वृत्ति तो नहि होय, माटे ते पुं के निर्णय चोकस खातरी करवा तेनी प्रत तपासवानी अगत्य छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे?
	वर्ग २ जो.				
	कुलको.*				
	अ.				
१	अज्ञानोच्छग्रहणकुलक				म. १
	अवचूरि				म. १
२	अढारपापस्थानककुलक	पत्र १			खंभात.
३	अनित्यकुलक A	गा. २२			P. 5.
४	अनित्यताकुलक B				डेक्कन.
५	अनर्थदंडपरिहारकुलक				म. २
६	अभयकुलक				पालनपुर.
७	अभव्यकुलक				म. १
८	अवस्थाकुलक	७५	जिनदत्त		जेसलमेर.
९	अन्यायच्छेदकुलक		आनंदविजय		म २

* पूर्वाचार्योए उपदेशपर नाना नाना कुलको अनेक रच्यां छे, पण तेमांनां अमोने जे जे उपलब्ध थया छे ते ते अनुक्रमवार आ वर्गमां दाखल कर्यां छे. सिवाय मुनिचंद्रसूरिकृत कुलको, जिनसूरिकृत कुलको तथा धर्मघोषशिष्य रत्नसिंहसूरिकृत कुलकोने एकत्रित करी जुदां जुदां पण नोंध्यां छे.

A, B आ बन्ने कुलको अमारा समजवा प्रमाणे एकज होय एम लागे छे, छतां चोक्कस निर्णय तेनी प्रतो मेळव्याथी थई शके तेम छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्याना सं.	क्यां छे ?
	आ.				
१०	आत्मबोधकुलक A				पिटर्सन रि. ५
११	आत्मशुद्धिकुलक				जेसलमेर.
१२	आत्मसंबोधकुलक B	गा. २१			पीटर्सन रिपोर्ट ५
१३	आत्महितकुलक				म. १
१४	आत्मानुशासन C (प्रा.)				नगीनदास.
१५	आराधनाकुलक	गा. ८६	अभयदेव D		पा. ३ नगीनदास.
	" E (बीजुं)	१७			पिटर्सन रि. ५
१६	आराधनाविधिकुलक				पा. २
	वृत्ति	ताड१२१			पा. २
१७	आलोचनाकुलक F				जेसलमेर.
	इ.				
१८	इरियावहीकुलक	पत्र २			म. १

A एना आद्यमां " संसारम्मि असारे नत्थिसुहं वाहिवेयणापउरे " आवी रीते पिटर्सन रिपोर्ट पांचमांना पेज १११ मां नोंध करी छे.

B एनु आदिपद " उवसग्गा कई हुंता " एवं छे.

C आ आत्मानुशासन प्राकृतमां रचायलुं संवतना शेठ नगीनदासना भंडारमां छे, पण ते सौ अपूर्ण स्थितिमां छे.

D आ अभयदेवसूरि ते जिनेश्वरसूरि शिष्य नवांगी टीकाकार अभयदेवसूरि छे.

E एनु आदिपद " संवेगे " एवुं छे.

F आ कुलक जेसलमेरनी हीरविजयजी महाराजनी टीपमां नोंधेलुं छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
	उ.				
१९	उत्तमपुरुषकुलक	गा. १४			लींबडी.
२०	उत्साहकुलक A	२५			जेसलमेर.
२१	उपदेशकुलक	गा. ५२	देवेंद्रसूरि		मांगरोल.
	उपदेशकुलक B (बीजुं)	५०	जिनदत्त		जेसलमेर.
२२	उपदेशमणिमालाकुलक		जिनेश्वर		A. S.
	क.				
२३	कर्मविपाककुलक				पा. ३
२४	कालस्वरूपकुलक		जिनवल्लभ		डेक्कन पेज २०८
२५	क्षान्तिकुलक		रत्नसूरि C		डेक्कन.
२६	क्षामणाकुलक D	गा. २६			रां. पिटर्सन रि. ५
	ग.				
२७	गुरुगुणषट्त्रिंशिकाकुलक	गा. ४	वज्रसेन		खंभात.
	दीपिका	पत्र २१	रत्नशेखर E		खंभात.

A आ कुलक जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंध्युं छे.

B उपदेश कुलक हीरालाले तेना कर्तानां नाम साथे नोंध्युं छे, पण कर्तांना नाममां शक रहे छे.

C आ नाम कांईक अपूर्ण लागे छे माटे तेनुं पूर्ण नाम शुं छे ते नक्की करवा माटे डेक्कन कॉलेजवाळी तेनी प्रत जोवी जोईए.

D एनुं आदिपद "जो कोई मए कीतो" एवुं छे.

E आ रत्नशेखरसूरि नागपुरीय शाखाना हेमतिलकसूरिना शिष्य अने वज्रसेनसूरिना प्रशिष्य हता. एमने श्रीपालचरित्र प्राकृतमां सं. १४२८ मां रच्युं छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे?
५०	[illegible] A	२००			जेसल.
५१	[illegible]	पत्र १			भ. १
	ग.				
५२	[illegible]				जेसल.
५३	[illegible] B	गा. १८	जिनप्रभ		पिटर्सन रि. ५
५४	[illegible]				भ. १
५५	[illegible]	गा. ३०	[illegible]		[illegible]
	म.				
५६	[illegible]				जेसल.
५७	[illegible]	४०	[illegible]		A. S.
५८	[illegible]				भ. १
	न.				
५९	[illegible]	गा. ८			[illegible]
६०	[illegible] C	५०			जेसल.
६१	[illegible] D	४०			जेसल.

A [illegible]

B [illegible]

C, D [illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रचना संवत	क्यां छे?
६२	पर्यंताराधनाकुलक				A. S.
६३	पुण्यकुलक सटीक	७५			पा. ३-४ रि. ६
६४	पुण्यपापकुलक	गा. १६	जिनकीर्ति.		लींबडी.
६५	पुण्यलाभकुलक	गा. १०			लींबडी.
६६	पूजादिद्वाष्टक (सं.) A		पद्मदेवशिष्य लखमचंद्र		पिटर्सन रि. ५
६७	प्रणिधानकुलक B	गा. ९०	देवेंद्रसूरि		नगीनदास.
६८	प्रतिलेखनाकुलक	गा. १२५	विजयविमल C		पा. ३, डेक्कन.
	प्रतिलेखनाकुलक (बीजुं)	गा. ३६			लींबडी.
६९	प्रत्याख्यानादिस्वरूपकुलक				प्र.२
७०	प्रमादपरिहारकुलक	गा. ३३			खंभात.
७१	प्रमादस्थानप्रकरण				भाव.
	म.				
७२	मधुरककुलक	३५			जेसल.
७३	भावनाकुलक D	२५	सोमदेव		जेसल.
	भावनाकुलक (बीजुं)	गा.१०२			खंभात.

A आमां पूजाष्टक, [illegible], [illegible], उपदेशाष्टक, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] अने स्तोत्र आदि [illegible] छे.

B एनुं [illegible] " [illegible] " छे. [illegible] ६८ [illegible] [illegible] छे.

C [illegible] संवत् १६११ मां [illegible] छे.

D आ [illegible] [illegible] छे.

नं	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
७४	भावविशुद्धिकुलक A	३०	शिवदेवसूरि		जेसल.
	म.				
७५	मंगलकुलक B	का. १४	धर्मसूरि		पिटर्सन रि. ५
७६	मनोनिग्रहभावनाकुलक				A. S.
७७	महासतीकुलक				पा. ४
७८	मिथ्यात्वकुलक	३०			पिटर्सन रि. ५
७९	मिथ्यात्वपरिहारकुलक	गा. २६			कांबडी.
८०	मिथ्यादुष्कृतकुलक C				जेसल.
८१	मुनिचंद्रकुलक D	४०			जेसल.
८२	मृगावतीकुलक				डेक्कन.
	व.				
८३	वंदनकुलक				बृ.
	वृत्ति E	४३७५	जिनकुशलसूरि F		बृ.

A आ कुलक जेसलमेरनी हीरालाले करेली टीपमां नोंधायलु छे.

B मंगल कुलकने "मंगलाष्टक" आ सादा नामथी विशेष ओळखवामां आवे छे. एवा काव्य घणां बनाव्यां छे ते प्रशस्तिना काव्यो साथे गणवाथी थाय छे.

C एनुं आदिपद "जो कोइय कामिणो" एवु छे.

D मणहर कुलक जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंध्युं छे. पण शक रहे छे के कदाच ते बृहट्टिप्पनिकामां नोंधेलुं वंदनकुलक तो नहीं होय माटे तेनी प्रत जोवानी जरूर छे.

E बृहट्टिप्पनिकामां आ वृत्ति माटे "वंदनकुलकवृत्तिः श्रीजिनकुशलसूरिकृता ४३७५" आवी टुंकी नोंध छे.

F आ जिनकुशलसूरि खरतर गच्छना जिनचंद्रसूरिना पाटे थयेला छे. एमनाज उपदेशथी देरासर मंदिर "लक्ष्मीवसति" नामनुं चैत्य करावी तेमां [illegible] महाराजना बिंबनी प्रतिष्ठा करावी हती. आ जिनकुशलसूरिने बीजे ठेकाणे पण एवी रीते नोंध्या छे. एटले तेओ विक्रम सं. १३७५ ना अरसामां विद्यमान हता.

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे?
८४	विचारकुलक				राधनपुर.
८५	विधवाकुलक	गा. १०			लींबडी.
८६	विषयविनिग्रहकुलक A				पू.
	वृत्ति	१०००८	मलचंद्र	१३३७	पू.
८७	वीरचरित्रकुलक		जिनवल्लभ		पा. ३
८८	वैराग्यकुलक				पा. ३ वेंकट.
	„ (बीजुं)	गा. २३			सं. जेसल.
	श.				
८९	शिवकुलक				राधनपुर.
९०	शीलकुलक	गा. २०			लींबडी.
९१	श्रावककुलक				म. १
९२	श्रावकदिनकृत्यकुलक				पा. ३
	स.				
९३	संघकुलक				पा. ४, म. १
९४	संज्ञाकुलक				म. १
९५	संविज्ञनियमकुलक				भाव.
९६	संसारकुलक				म. १
९७	संसारभावनाकुलक				म. १
९८	संसारघोरस्वरूपकुलक B	२५			जेसल.

A आ कुलक बृहट्टिप्पनिकामां तेनी वृत्ति साथे नोंध्युं छे. ते टिप्पनिकामां तेना माटे "विषयविनिग्रहकुलवृत्तिः १३३७ वर्षे मालचंद्री १०००८" आवो नोंध छे. पण ते क्यां पण उपलब्ध थई नथी.

B बदराह कुलक जेसलमेरनी टीपमां करेली रीतमां नोंधायुं छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे?
९९	[illegible]कुलक	गा. ३५	अमरचंद्र		भाव. वि. दि. ५
१००	[illegible]कुलक *	४०			जेसल.
१०१	[illegible]कुलक	गा. २१	अभयदेव		भींवडी.
१०२	साधुप्रतिमाविचारना				पा. ४
१०३	[illegible]कुलक *	४०			जेसल.
१०४	साधुधर्मविधानकुलक	गा ४७			राधनपुर.
१०५	साधुसामाचारीकुलक	गा. ४६	सोमसूरि		भींवडी.
१०६	साधारणगुणोपदेशकुलक				A. S. 5.
१०७	सिद्धिगतिकुलक *	६०			जेसल.
१०८	सुदर्शनाकुलक		जिनसिंह		A. S.
१०९	सुकृतसागरकुलक *				जेसल.
११०	[illegible]कुलक A	गा. २१			[illegible] दि. ५
१११	[illegible]कुलक	पद्य १			अ. १
	ह				
११२	हितोपदेशकुलक				A. S.
	हितोपदेशकुलक (वृद्ध)				A. S.

* [illegible]

A [illegible]

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
	देवसूरिकृतकुलको*				
११३	प्रभातस्मरणकुलक	गा. ३३	देवसूरि A		लींबडी.
११४	मुनिचंद्रगुरुस्तुति	२५	,,		लींबडी.
	,, (प्रा.)	५५	,,		लींबडी.
११५	श्रावकधर्मकुलक (प्रा.)	५७	,,		लींबडी.
	मुनिचंद्रसूरिकृतकुलको‡				
११६	अनुशासनांकुशकुलक	गा. २५	मुनिचंद्र		लींबडी.
११७	उपदेशामृतकुलक	गा. २५	,,		लींबडी.
	,, (बीजुं)	गा. ३२	,,		लींबडी.
११८	उपदेशपंचाशिका	गा. ५०	,,		लींबडी.
११९	धर्मोपदेशकुलक	गा. २५	,,		लींबडी.
	,, (बीजुं)		,,		लींबडी.
१२०	प्राभातिकस्तुति (सं.)	का. ९	,,		लींबडी.
१२१	मोक्षोपदेशपंचाशत् (सं.)		,,		लींबडी.
१२२	रत्नत्रयकुलक	गा. ३१	,,		लींबडी.
१२३	शोकहरउपदेशकुलक	गा. ३३	,,		A. S.

* आ मथाळा नीचे देवसूरिए रचेलां कुलको नोंधवामां आव्यां छे.

A आ देवसूरि मुनिचंद्रसूरिना शिष्य हता, मुनिचंद्रसूरिए सं. ११४४ मां उत्तराध्ययननी टीका रची छे. एटले तेओ विक्रमना बारमा सैकामां हता.

‡ आ मथाळा नीचे मुनिचंद्रसूरिए रचेलां कुलकोने अनुक्रमवार नोंध्यां छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रचया-नो सं.	क्यां छे
१२४	सम्यक्त्वोत्पादविधि	गा. २९	मुनिचंद्र		लींबडी.
१२५	सामान्यगुणोपदेशकुलक	गा. २५	,,		लींबडी.
१२६	हितोपदेशकुलक	गा. २५	,,		लींबडी.
	रत्नसिंहसूरिकृतकुलको§				
१२७	आत्महितकुलक	गा. ३२	रत्नसिंह A.	१२४८	लींबडी.
१२८	आत्मानुशास्तिकुलक (सं.)	२५	,,		लींबडी.
१२९	आत्मानुशासनकुलक	गा. ५६	,,		लींबडी.
१३०	उपदेशकुलक	गा. २६	,,		लींबडी.
१३१	गुर्वाराधनाकुलक		,,		A. S.
१३२	जिनेन्द्रविज्ञप्तिकुलक	गा. ३०	,,		लींबडी.
१३३	धर्माचार्यबहुमानकुलक	गा. ३४	,,		लींबडी.

§ आ मथाळा नीचे रत्नसिंहसूरिकृत कुलको एकत्र करी क्रमवार नोंध्या छे.

A रत्नसिंह नामना त्रण आचार्य थया जाणवामां आव्या छेः—

एक रत्नसिंहसूरि सैद्धांतिक श्रीमुनिचंद्रसूरिना शिष्य अने सं. १२२५ मां कल्पनिरुक्तना [...] जिनचंद्रसूरिना गुरु हता एटले तेओ विक्रमनी चौदमी सदीमां थयेला छे.

बीजा रत्नसिंहसूरि अगतिलकसूरिना शिष्य अने उदयवल्लभसूरिना गुरु हता. तेमना [...] ज्ञानसागरसूरिए सं. १५१७ मां श्रीपालकथा रची छे. एटले तेमना दादा गुरु आ बीजा रत्नसिं[...] विक्रमनी पंदरमी सदीना मध्यभागमां थया होवा जोईए.

त्रीजा रत्नसिंहसूरि के जेमणे तपागच्छमां नायक तरीके पंकाता हेमचंद्रसूरिना वारे सं. १३[...] [...]नुचरित्र नामे महाकाव्य रचेल छे.

हवे आ कुलकोने कर्त्ता रत्नसिंहसूरि माटे लींबडीना भंडारनी टीपमां तेओ धर्मसूरिना [...] हता, अने तेमणे आ कुलको सं. १२४८ मां रच्यां छे, एम जोतां अत्यंत होवाथी तेना क[...] तेमने उक्त दश अत्येक त्रण आचार्योना समयथी भिन्न होवाथी आ रत्नसिंहसूरि उक्त त्रण [...]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	संवत.	क्यां छे ?
१३४	परमसुखद्वात्रिंशिकाकुलक		रत्नसिंह		लींबडी.
१३५	पर्यंताराधनाकुलक	गा. ११	,,		लींबडी.
१३६	क्रमोनिमदभावनाकुलक	गा. ४४	,,		लींबडी.
१३७	श्रावकपर्याभिमदकुलक(गद्य)		,,		लींबडी.
१३८	संवेगामृतपद्धति (प्रा.)	गा. ११२	,,		लींबडी.
१३९	,, (सं.)	४२	,,		लींबडी.
१४०	संवेगरंगमाला	गा. ५०	,,		लींबडी.

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं	क्यां छे ?
	वर्ग ३ जो.				
	शतको *				
१	आत्मशिक्षाशतक.	१२५			पा. ४. माय.
२	आदिनाथदेशनाशतक				पा. ३
३	आभाणशतक A				पा. १ अ.१
४	इंद्रियपराजयशतक				पा. १-३
५	उपदेशशतक B	१०९	विजयविमळ	१७९३	पा. ४-५
	वृत्ति	पत्र ४९			अ. २
	उपदेशशतक (थोडुं)		मेरतुंग		डेकन.
६	ऋषभशतक	का. १२६	हेमविजयगणि	१६५६	खं.
७	कालशतक (प्रा.)		मुनिचंद्र		पा. ३
८	कालविचारशतक				डेकन पेज १७२
९	त्रिविक्रमशत	पत्र ४			अ. २
१०	दृष्टांतशतक C				वृ. पा. ३
	दृष्टांतशतकD (थोडुं)		तेजसिंह		डेकन.

* सोनी संख्याने शत कहेवाय छे अने शत जेमां छे ते शतक कहेवाय ते मुजब आ शतको [illegible] श्लोकथी ग्रथित करेला होवाथी शतकना नामे ओळखाय छे.

A आ शतक स्तुतिरूपे छे.

B उपदेशशतक खास उपदेशनो ग्रंथ होवाथी पूर्वे औपदेशिक प्रकरणोना वर्गमां नोंध्युं छे [illegible] ते शतकना नामथी ओळखावेल होवाथी इहां पण नोंध्युं छे.

C, D. आ बन्ने दृष्टांतशतको एकज छे के जूदा जूदा छे ते माटे बन्नेना आद्यंत वपरावा [illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
	दृष्टांतशतक A (बीजुं)		नंदसूरि		रिपोर्ट ६
	अवचूरी				रिपोर्ट ६
११	धनदत्रिशती B		धनदराज (संघपति)		पा. १-५
१२	ध्यानशतक				भ. १
	वृत्ति	पत्र ३८			भ. १
१३	नागराजशतक	.			भ. १
१४	पद्मानंदशतक		पद्मानंद		पा. ५ भाव.
१५	पर्वविंशतिशतक				भ. २
१६	भर्तृहरिशतकत्रय		भर्तृहरि		मुद्रित.
	वृत्ति	२३००	धनसार		A. S.
	वृत्ति (बीजी) C	५००	जिनसमुद्र		जेसल-चे.
१७	भावशतक	१०१	समयसुंदर	१६४१	सयात.
	भावशतक (बीजुं)	पत्र ८	हेमविजय D		डेक्कन. पेज. १११
	भावशतक E (प्रा.)(त्रीजुं)				जेसल.

A आ बीजा दृष्टांत शतकने छठा रिपोर्टमां अवचूरि साथे नोंध्युं छे, पण कर्त्ताना नाम परथी शक रहे छे के वखते आ ग्रंथकार नंदसूरि ते कोई दिगम्बराचार्य तो होय नहीं माटे तेना ग्रंथनी प्रशस्ति वगेरे तपासी जोवानी जरूर रहे छे.

B एमां धनदराज कविए रचेलां शृंगार, वैराग्य अने नीतिपर त्रण शतको छे, अने ते भर्तृहरिना शतको जेवा बहु सरस छे.

C आ वृत्ति जेसलमेरनी बन्ने टीपोमां नोंधेली छे. पण अन्यस्थले उपलब्ध थई नथी.

D डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां आ हेमविजयसूरिने दिगम्बरकृत ग्रंथोनी नोंध लेतां तेमने दिगम्बर तरीके जणाव्या छे, तो ते दिगम्बर हता के श्वेतांबर छे ते बाबत निर्णय करवा डेक्कन कॉलेजमांनी प्रत जोई तपासवी जोईये.

E आ भावशतक जेसलमेरनी टीपमां प्राकृतमां छे एम जणाव्युं छे पण टीकाकारनुं नाम अत्यारसुधी जोवुं बाकी छे. माटे तेनी प्रत मंगावी तपासवानी जरूर छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
	वृत्ति		मलनागकवि		जेसल.
१८	मात्रार्थशतक				भ. १
१९	भावनाशतक	पत्र ४			भ. २
२०	मूर्खशतक				डेक्कन.
२१	योगशतक A	गा. १०१	हरिभद्र		मगीनदास
२२	विचारशतक		समयसुंदर		भ. १
२३	विज्ञप्तिशतक				डेक्कन.
२४	विनयविलासशतक				भ. १
	वृत्ति	पत्र ६०			भ. १
२५	विशेषशतक		समयसुंदर		भ. १
२६	विसंवादशतक B		"		A. H.
२७	विहारशतक				भ. १
	वृत्ति	पत्र ११			भ. १
२८	वैराग्यशतक				पा. १-२
	वृत्ति	पत्र १९	गुणविनय C		भ. १

A योगशतक पूर्वे हरिभद्रसूरिकृत [illegible] नोंध्युं छे, [illegible] ते शतकना साथे [illegible] [illegible] नोंध्युं छे.

B आ शतकना [illegible] [illegible] [illegible]

C आ [illegible] [illegible] सं. ११७० [illegible]

[illegible]

नं	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्याना सं.	क्यां छे ?
२९	व्याख्यानविधिशतक				कोडाय.
	वृत्ति	पत्र २१			अ. १
३०	संदेहशतक A	पत्र ८			अ. १
३१	संवादशतक				पा. ४-५
३२	संवेगशतक B	पत्र ६			अ. २
३३	साधुगुणशतक				अ. २
३४	सोमशतक	पत्र ९			डेक्कन.
	जुदाजुदा विषयोमां नोंधायेला शतको. •				
१	ऋषभशतक ‡				
२	कुमारविहारशतक C				
३	जिनशतक ‡				
४	नेमिशतक ‡				
५	प्रश्नपद्धतिशतक D				

A आ संदेहशतक अमदावादना डेलाना भंडारनी टीपमां पत्र आठनुं नोंध्युं छे ते परथी शक रहे छे के ते त्यां वृत्ति साथे तो नहीं होय माटे तेनी प्रत जोई नक्की करवुं जोइये.

B आ संवेगशतक ते कदाच वैराग्यशतकनुं बीजुं नाम होय तो पण होय माटे तेनी खरी खातरी तेनी प्रत जोया वगर थई शके तेम नथी.

• आ मथाळा नीचे नोंधेला शतको आगळ ते ते वर्गमां विशेष माहिती साथे नोंधवामां आवशे. अहीं फक्त तेमना नाम मात्र दर्शाववामां आव्या छे.

‡ आ निशानीवाळा शतको स्तुतिरूपमां रचाएलां होवाथी ते स्तुतिग्रंथोना वर्गमां दाखल करवामां आवनार छे.

C आ शतक काव्य रूपे रचेल होवाथी आगळ काव्यना वर्गमां नोंधवामां आवशे.

D दरेक शतक शिल्पना ग्रंथोना वर्गमां विशेष हकीकत साथे नोंधवामां आवनार छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे?
६	वीतरागशतक ?				
७	शृंगारशतक				
८	पद्मिशतक A				
९	सर्वज्ञशतक B				
१०	सूर्यशतक ?				

A आ शतकमां उपदेशनो विषय होवाथी पूर्वे औपदेशिकना प्रकरण ग्रंथोमां नोंधायुं छे.

B एमां सर्वज्ञना ध्याननुं स्वरूप देखाड्युं छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
	वर्ग ४ थो. *				
१	अनेक प्रबंध A (गद्य)				प्र. १
२	अभयदेवप्रबंध	पत्र४			पा. ३
३	इतिहाससमुच्चय B	९१८			पा. ५
४	उपदेशतरंगिणी	३३००	रत्नमंदिरगणि		पा. १-४
५	कीर्तिकल्लोलिनी	पत्र १३	हेमविजय		डेक्कन. पेज ६६
६	कुमारपालचरित्र (प्रा.)	९५०	हरिश्चंद्र C		पा. २
	कुमारपालचरित्र (मोटुं)	६०३७	जयसिंह	१३१३	पा.४-५ भाव. रि. ३
	कुमारपालचरित्र (मोटुं)	पत्र ३६	चारित्रसुंदर		प्र. २
७	कुमारपालप्रतिबोध (सं.) D	२५७५			पू.
	कुमारपालप्रतिबोध E	८८००	सोमप्रभ	१२४१	पीटर्सन रि. ५

* आ वर्गमां अमारा जाणवामां आवेला इतिहासना ग्रंथोने एकत्र करी कक्कावार नोंध्या छे. इतिहासना ग्रंथो प्राये औपदेशिकनेज मळता होय छे, तेथी खास तेमने आ औपदेशिकना पेटामां दाखल करवामां आव्या छे.

A अमदावादना डेलाना भंडारनी टीपमां उपरनुं नाम टांकेलुं छे, तो तेमां क्या क्या प्रबंधो छे ते जाणवा माटे तेनी प्रत नजरे जोवानी अवश्यकता छे.

B एमां स्वतंत्र ऐतिहासिक विना छे के अन्यमति बाबत छे ते बाबत शक रहे छे, माटे तेनी पण प्रत जोवी जोइये.

C आ हरिश्चंद्र ते अमारा धारवा मुजब धर्मशर्माभ्युदय महाकाव्यना करनार दिगम्बर हरिश्चंद्रसूरि होवा जोइये.

D एना माटे बृहत् टिप्पनिकामां "कुमारपालप्रतिबोधः संस्कृतः २५७५" आवी नोंध छे. पण ते अमोने हजुसुधी क्यां पण उपलब्ध थयो नथी.

E बृहत् टिप्पनिकामां एना माटे नीचे मुजब नोंध छे.

"कुमारपालप्रतिबोधक प्राकृत सोमप्रभसूरिभिः १२४१ वर्षे कृतः ८८००"

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रचया-नो सं	क्यां छे ?
८	कुमारपालप्रबंध	२४५६	जिनमडंन	१४९१	पा. २-३-४ डेक्कन.
९	कुमारदेवप्रबंध	पत्र १२			अ. १
१०	कुमारविहारप्रबंध(सं.)				डेक्कन पेज ३४१
११	गुरुगुणरत्नाकरकाव्य A	पत्र १२			डेक्कन.
१२	गुर्वावली B	७९८	मुनिसुंदर	१४६६	पा. ३-४ लींबडी.
	गुर्वावली (बीजी)		धर्मसागर	१६४८	पा. ३-४
	वृत्ति	६०१	स्वोपज्ञ		पा. १-४
	गुर्वावली (त्रीजी)	गा. ११			लींबडी.
१३	गुर्वावलीविशुद्धि C	८९०			पा. ४
१४	गुरुस्तुति	का. १८			पिटर्सन रि. ५
१५	चतुर्विंशतिप्रबंध D	४०००	राजशेखर	१४०५	वृ. पा. १-३-४-
१६	चित्रोडमहार्णवविहारप्रशस्ति	का.१०४	चारित्ररत्न	१४९५	खंभात.
१७	जगडूप्रबंध	पत्र २			लींबडी.
१८	जयसिंहप्रबंध (गद्य)	पत्र ५			अ. १
१९	जिनचंद्रसूरिगुणसप्ततिका	गा. ७४	जिनकुशल		लींबडी.
२०	जिनप्रभप्रबंध	१४३			पा. ४

A एनुं अपरनाम " सोमचरित " छे.

B एनुं बीजुं नाम " [illegible] " पण छे.

C आ गुर्वावलीविशुद्धि ते [illegible] धर्मसागरसूरि कृत गुर्वावली [illegible] ना [illegible] छे.

D [illegible] " १४ अने ८४ [illegible] " [illegible]

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
२१	झांझणप्रबंध A	पत्र ८८	रत्नमंडन B		म. २ जेसल.
२२	देवर्द्धिकथा	पत्र २१			म. १
२३	मंत्रोपाख्यान C	पत्र १०			डेक्कन.
२४	नाभिनंदनोद्धारप्रबंध	पत्र ६१			म. १
२५	पट्टावली	पत्र १२		१७१२	पा. ४
२६	पट्टावली D	४०	जिनदत्त		जेसल.
२७	पट्टावली सारोद्धार	३८०	रविवर्द्धन		डेक्कन.
२८	पूर्वपुरुषप्रबंध (गद्य)	पत्र १०			म. १
२९	पृथ्वीधरचरित्र		रत्नमंडन		डेक्कन.
३०	पृथ्वीचंद्रविजय सटीक E		जीनराज		डेक्कन.
३१	प्रबंधकोश	पत्र ५०	चंद्रशेखर F		म. २ डेक्कन.

A एनुं अपरनाम " सुकृतसागर " एवुं छे.

B आ नाम अमदावादना संघवाडाना भंडारनी टीपमां नोंध्युं छे. जेसलमेरनी टीपमां इत्यभिधानी महाराजे कर्त्तानुं नाम आप्युं नथी. पण संघवाडाना भंडारनी टीपमां तेना पत्र २७ नोंध्या छे, माटे ते एकज छे के जूदा जूदा छे ते वात नक्की करवा तेनी प्रते मेळवी तपासवी जोइये.

C आ मंत्रोपाख्यान अमारा धारवा मुजब अन्यकर्तृक करेलुं होवुं जोइये.

D आ पट्टावली जेसलमेरनी टीपमां दिगंबरनी नोंधी छे.

E आ ग्रंथ तेनी टीका सहीत डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां नोंधायो छे, पण कर्त्तानुं नाम उपरथी ते अस्पष्टीकृत होय तेम विशेष समजाय छे.

F आ चंद्रशेखरसूरि विक्रमनी चौदमी सदीमां थया होवा जोइये.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं	क्यां छे ?
३२	प्रबंधचिंतामणि A	५११५	मेरुतुंग B		बृ. पा. ४
३३	प्रबंधपंचक C	३००			रिपोर्ट ६.
३४	प्रभावकचरित्र	५७८०	प्रभाचंद्र .	१३३४	पा. ३-४ भाव.
३५	बप्पभट्टीचरित्र	६६०			लीं. डेकन.
३६	बौद्धमतोत्पत्तिप्रकरण D	४००			जेसल.
३७	भोजप्रबंध	३७००	शुभशील		लींबडी.
	भोजप्रबंध (बीजो)	२०००	बल्लाळ		पा. ४ संघात.
	भोजप्रबंध (त्रीजो)	८५०	मेरुतुंग		डेकन.
	भोजप्रबंध (चोथो)		रत्नमंदिर		अ. २
	भोजप्रबंध (पांचमो)		सत्यराजगणि		अ. २

A बृहत्‌टिप्पनिकामां एने प्रबंधचूडामणिना नामे नोंध्युं छे. तेना माटे ते टिप्पनिकामां "प्र[illegible] चूडामणिर्मेरुतुंगसूरिय: १५०४" आवो नोंध छे.

B आ मेरुतुंगसूरि ते चंद्रप्रभसूरिना शिष्य हता. पिटर्सन रिपोर्ट चोथामां तेमना माटे बु[illegible] एवी नोंध करी छे के, तेमणे आ ग्रंथ वि. सं. १३६७ मां रच्यो छे एम तेमां जणाव्युं छे.

C एमां पांच पूर्वाचार्योना प्रबंधो छे. भद्रबाहुप्रबंध, जीवदेवप्रबंध, आर्यमंगुप्रबंध, आर्यखपुट[illegible] अने पादलिप्तप्रबंध मळी पांच प्रबंधो छे.

D आ प्रकरण जेसलमेरनी टीपमां हयातीले नोंध्युं छे तेथी शक पडतुं छे माटे तेनी प्रत न[illegible] तपासवानी जरूर छे. अने जो ते एज नामथी त्यां मळी आवे तो साथ तेनी नकल उतरावी ले[illegible] अगत्यनी छे.

अंक.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे?
३८	मंडपीयसंघप्रशस्ति	३६			पा. ५
३९	मुंजराजादिप्रबंध A	पत्र १७	मेरुतुंग		पा. ३
४०	यवनपरिपाट्यनुक्रम	७२०	दलपतिराय		डेक्कन.
४१	रत्नश्रावकप्रबंध	पत्र ४			अ. १ जेसल.
४२	राजतरंगिणी *	पत्र ३८६	कल्हण		डेक्कन.
	„ * बीजी)	पत्र ४७	जोनराज		डेक्कन.
	„ * (त्रीजी)	पत्र ६५	श्रीवर		डेक्कन.
	„ * संग्रह	पत्र १०	शाहआलम		डेक्कन.
४३	राजावलीपताका	पत्र ४८	प्राज्यभट्ट		डेक्कन.
४४	लघुपौशालिकपट्टावली	५००			पा. ५
४५	वस्तुपालचरित्र B	७०००	वर्द्धमानसूरि		रिपोर्ट. ६
	वस्तुपालचरित्र (बीजुं)	४८३९	जयचंद्र शिष्य जिनहर्ष	१४९७	पा. ५. डेक्कन.

A आ ग्रंथ ते मेरुतुंगसूरिकृत प्रबंधचिंतामणिनो भाग होय तो पण होय माटे तेनी खात्री करी लेवानी जरूर छे.

* आ निशानीवाळा ग्रंथ अजैनकृत छे, पण ते खास इतिहासना होवाथी अहीं दाखल कर्या छे.

B आ वस्तुपालचरित्र पण दक्षिणीक [illegible] रिपोर्टमां नोंध्युं छे, पण हजी सुधी अमोने ते कोईपण भंडारमां उपलब्ध थयुं नथी.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं	क्यां छे?
४६	वस्तुपालप्रबंध	७१०	राजशेखर		पा. ४
	„ (बीजो)	२७५			पा. ५
	वस्तुपालतेजपालप्रबंध(गद्य)	पत्र ६			अ. १
	„ (श्लोकबद्ध)	पत्र ५			अ. १
४७	वस्तुपालप्रशस्ति	१४०			पा.१ जेसल. डे
४८	विक्रमादित्यचरित्र A	पत्र ७५	रामचंद्र		डेकन.
४९	विक्रमप्रबंध	प. १३			डेकन.
	विक्रमादित्यप्रबंध		विद्यापतिभट्ट		अ. २.
५०	विमलचरित्र B	पत्र ४२			अ. १
५१	विमलप्रासादप्रबंध	१५०			पा.४–५
५२	विविधतीर्थकल्प		जिनप्रभ		पा. १ डेकन.
५३	वृहत्पोशालिकपट्टावली				पा. ५
	टीका	६८७	घनरत्नसूरिशिष्यहर्षकुल		पा. ५
५४	शालिवाहनचरित्र	१८००	शुभशील	१५४०	पा. ५
५५	सुगुरुपद्धति (ताड)	गा. २६			पीटर्सन रि. ५

A आ चरित्र फक्त डेकन कॉलेजमां छे.

B विमलचरित्र अमदावादना डेलाना भंडारमां छे. अन्य स्थळे क्वचित ज मळी शके छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्याने सं.	क्यां छे?
५६	समयमातृका A,	पत्र ४७	क्षेमेंद्र		डेक्कन.
५७	सोहकप्रबंध B				डेक्कन.
५८	स्तंभनपार्श्वप्रबंध	पत्र ९३	मेरुतुंग	१४००	पा. ३
५९	हरिभद्रकथा	पत्र ४८			डेक्कन
६०	हरिभद्रप्रबंध	पत्र १२			भ.२
६१	हरिवंश C	पत्र३३०			डेक्कन.

A, B आ बन्ने ग्रंथो डेक्कन कॉलेजना लिस्टमां नोंघेला छे, पण तेमांनी चोक्कस माहिती जाणवा माटे डेक्कन कॉलेजमांनी तेनी प्रतो तपासी जोवानी जरूर छे.

C वदराडु ग्रंथ पण डेक्कन कॉलेजमांज छे. पण ते अमारा धारवा मुजब कोई दिगम्बर आचार्ये रच्यो होवो जोईए. छतां चोक्कस निर्णय माटे तेनी पण प्रत जोवी जोईये.

चरित्रना ग्रंथो.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो स.	क्यां छे ?
	वर्ग २ जो.*				
	अ.				
१	अगिगुप्तचरित्र A	६५०			लिंबडी ६, जेसल
२	अंबडचरित्र B (ग.)	१२६०	मुनिरत्न C		पा ३-४-५ अं.
३	अमरकुमारचरित्र	९०००	पद्मतिलक D		पा. ५ जेसल.
	" E (पीराजु)	४०००			जेसल.
४	अमरतेजचरित्र(मोहनराज)				मदन.
५	अमरसेनवयरसेनचरित्र		खर. मतिनंदन		पा. ४

* आ वर्गमां [illegible] समस्त चरित्रना ग्रंथो अनुक्रमवार [illegible]

A [illegible] सं. १४२८ मां [illegible] [illegible] [illegible] अनुमान [illegible]

B [illegible]

C [illegible]

D [illegible]

E [illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
	आ.				
६	आरामशोभचरित्र(श्लोकबद्ध)	पत्र २२	खर. जिनहर्ष		राधनपुर
	उ.				
७	उत्तमचरित्र	२७५			पा.३-४ डेक्कन.
८	उत्तमकुमारचरित्र	३३०	चारुचंद्रीय		अ. २ डेक्कन.
९	उदायनराजचरित्र(श्लोकबद्ध)	पत्र ४१			अ. १
	ऋ.				
१०	ऋषिदत्ताचरित्र A (प्रा.)	१५५०	गुणपाल	१२६४ १२८८	बृ. डेक्कन पेज १६४
	ए.				
११	एकादशगणधरचरित्र B	६५००	देवमत्युपाध्याय		बृ.
	क.				
१२	कनकरथचरित्र	पत्र ६७	•		अ. १
१३	कनकावतीचरित्र C	पत्र ३५	जिनसूरि		डेक्कन पेज ३६

A आ चरित्र फक्त डेक्कन कॉलेजमां छे, बृहट्टिप्पनिकाकारे नोंध्युं छे पण तेने उपलब्ध थयुं नथी. डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां संवतनो विकल्प बतावेल होवाथी अमे पण बन्ने अंकोथी रचना समय दर्शाव्यो छे.

B आ चरित्र बृहट्टिप्पनिकामां नोंध्युं छे. बाकी क्यां पण उपलब्ध थयुं नथी. एना माटे ते टिप्पनिकामां "११ गणधरच. सं. देवमत्युपाध्यायीयं ६५००" आवी नोंध छे. एमां श्रीमहावीरस्वामीना गणधरोना चरित्र छे.

C आ कनकावती चरित्र प्राकृत तथा संस्कृत भाषामां रचायुं छे. एम डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां जणाव्युं छे, पण कर्तानुं नाम अपूर्ण लागे छे माटे तेनुं पूर्ण नाम शुं छे ते जाणवा माटे तेनी प्रत तपासी जोवानी जरूर रहे छे.

नं	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
१४	कलावतीचरित्र (श्लोकबद्ध)	पत्र ८			अ. १
	" A (बीजुं)	ताड ८४			पा. २
१५	कुर्मापुत्रचरित्र (सं.)	२५००			जेसल.
१६	कुवलयमाला (प्रा.)	१००००	उद्योतनसुरि B	८३५	बृ. डेकन
	कुवलयमाला C (सं.)	३८९४	रत्नप्रम		बृ.
१७	कृतपुण्यचरित्र	१६५०	पूर्णभद्र	१२८५	जेसल.
१८	कृष्णचरित्र D (प्रा.)	१४००			डेकन.
	ग.				
१९	गुणधर्मचरित्र	१९४८	मांघ.माणिक्य सुंदर		पा. ४-५-६ डे.
२०	गुणसुंदरीचरित्र	पत्र १२			जेसल.

A आ चरित्र पाटणना भंडार नंबर बीजामां ताडपत्रपर लखेलुं छे, पण ते कोणे रचेलुं छे
तपासवानी अगत्य छे.

B आ उद्योतनसुरि ते प्रथम देवसुरिना शिष्य नेमिचंद्रसुरिना शिष्य हता. आ उद्योतनसुरि
छट्ठी पेहेढीए देवसुरिना शिष्य उद्योतनसुरि विक्रमनी बारमी सदीनी शरुआतमां थया, ते परथी तेम
पहेली पेहेढीए थएला उद्योतनसुरि विक्रमनी नवमी सदीनी शरुआतमां विद्यमान हता. अने तेमणेज
चरित्र रच्युं छे एम चोकस निर्णय थाय छे. आ उपरथी सदरहू चरित्र बहुज प्राचीन होवा साथे ते
रचना पण रम्य होवी जोइये. तेनी खरी खात्री माटे डेकन कॉलेजमांनी प्रत नजरे तपासवी जोइये.

C आ संस्कृत कुवलयमाला बृहत्‌टिप्पनिकामां नोंधी छे पण अमोने हजी सुधी क्यां पण उपल
थइ नथी.

D डेकन कॉलेजना रिपोर्टमां आ चरित्र नोंध्युं छे पण ते स्वमतिकृत छे के अन्यमतिकृत छे
जाणवा माटे तेनी प्रत जोवानी जरूर छे. पंन्यास श्री आणंदसागरजी जणावे छे के आ चरित्र तेम
धारवा मुजब श्राद्धदिनकरमांथी उद्धरेलुं होय एम संभव छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
	ज.				
२१	जंबूस्वामीचरित्र A	गा १६४४			बृ.
	" B (बीजुं) (प्रा.)	२६००	पं. सागरदत्त	१०७६	बृ.
	टिप्पन	११००			बृ.
	जंबूस्वामीचरित्र (त्रीजुं) प्रा.	पत्र ५१	भुवनकीर्ति C		राधनपुर.
	" D (चोथुं) (प्रा)	७५०	पद्मसुंदर		पा. ३-४ कां.
	" (पांचमुं) (सं.)	पत्र १८			पा. ३
	" (छट्ठुं) (गद्य)	८२७			पा. ५ भाव.
	" (सातमुं)	पत्र ११	सकलहर्ष		पा १—५.
	" (आठमुं)	१२००	मानसिंह		डेक्कन.
	" (नवमुं)	पत्र ५०			भ. १

A प्राकृत चरित्रने माटे बृहट्टिप्पनिकामां "जंबूस्वामीचरित्रं प्रा. ८१ वर्षे गा. १६४४" आवो नोंध छे. आ नोंधमां रच्यानो संवत् नोंधतां लेखकनो एक अंक लखवो रही गयो लागे छे अने जेम होय तो आ चरित्र वि. सं. ८१० ना अरसामां रच्युं होय तेम विशेष संभवित छे, पण ते क्यां …न शोधवामां आव्युं नथी.

B आ चरित्र तेना टिप्पन साथे बृहट्टिप्पनिकामां नोंध्युं छे. तेना माटे त्यां आ रीते नोंध छे, "जंबूस्वामि च. प्रा. संपदिवंदे १०७६ वर्षे पं. सागरदत्तेन कृतं २६०० तस्य टिप्पनं ११००"

C भुवनकीर्तिसूरि ते सकलचंद्रना शिष्य हता. जेमने पोताना नोंधमां सकलचंद्र सं. १५२० मां हता एम बताव्युं छे. ते उपरथी तेमना शिष्य भुवनकीर्तिए आ चरित्र विक्रमनी सोळमी सदीना अन्तमां रच्युं होवुं जोइए. भुवनकीर्तिसूरि दिगंबर तथा श्वेतांबर बन्ने आम्नायमां थएला छे, तो आ चरित्रना करनार भुवनकीर्तिसूरि ते कोण हता ते बाबत तेनी प्रत नजरे तपासवाथी निर्णय थइ शके.

D आ चरित्र कथानकरूपे छे भांडारकरे तेने "जंबूअध्ययन" तरीके नोंध्युं छे.

31

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
२२	जयानंदचरित्र	६७५	मुनिसुंदर		पा. ५ म. १
	" (बीजुं) (गद्य)	पत्र २१३	पद्मविजय A		म. १
	त.				
२३	त्रिभुवनसिंहचरित्र (गद्य)	६८४			पा. ३ म. १
२४	त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र B	२४०००	हेमचंद्र		सुलभ्य. छपाय
	" C (बीजुं)				जेसल-वे.
	द.				
२५	दमयंतीचरित्र	ता ड १२६			पा. २
२६	दमयंतीप्रबंध (गद्य)	पत्र ५०			म. १
	" (श्लोकबद्ध)	पत्र २१			म. १
२७	दशश्रावकचरित्र	२०००			पा. ३ जेसल.
	" (प्रा.)	८००	सुमतिवर्द्धन	१५४६	पा. ३ खं.
२८	दृढप्रहारिचरित्र D	३००	(प्रा.)		जेसल.
२९	देवदत्ताचरित्र (प्रा.)	गा. १०१			मगीनदास.

A पद्मविजयसूरि माटे यशोविजयजी उपाध्याये रचेला ज्ञानबिंदु प्रकरणना अन्ते प्रशस्ति
तेमां यशोविजयजीना गुरुभाई हता एम जणाव्युं छे.

B एमां त्रेसठ शलाका पुरुषोना चरित्रो छे. हेमचंद्राचार्यश्रीए एनी रचना गंभीर आशय
रसाल सुगम काव्योमां करी छे.

C आ बीजुं त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र जेसलमेरनी बधे टीपोमां ते संस्कृत गद्यमां रचाय
अने मनवर मल्लना आचार्ये करेलु लखाण पर लखेलुं छे एम जणाव्युं छे.

D आ चरित्र ईडरवाले नोंध्युं छे अने ते तुटक छे एम जणाव्युं छे, पण अमारा धारवा मुज
आ दृढप्रहारीनी कथा उद्देशी हशे मोटे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
	ध.				
१०	धन्यचरित्र	१३००	जिनकीर्ति A		पा. ४-५-६ डॉ. सुलभ्य.
	धन्यशालिचरित्र B	१४६०	पूर्णभद्र C	१२८५	बृ. जेसल-वे.
	धन्यचरित्र (गद्य)	९०००	ज्ञानसागर		भाव.
	धन्यचरित्र	१०००	दिगं. गुणभद्र		डॉ. कं.
११	धम्मिलचरित्र (श्लोकबद्ध)	३५००	आंच.जयशेखर	१४६२	डॉ. कं.
	धम्मिलचरित्र (सं.)	४७८			पा. ४, डॉ.
	न.				
१२	नरब्रह्मचरित्र (सं.)	पत्र १२			म. १
१३	नरधर्मचरित्र *	५००	मुनिसुंदर		जेसल.
१४	नरवर्मचरित्र *	१०००			जेसल.
१५	नागकुमारचरित्र	५००	रत्नयोगींद्र D		नगीनदास.
१६	नागदत्तचरित्र * (प्रा.)	१०००			जेसल.

A आ जिनकीर्तिसूरि ते सोमसुंदरसूरिना पांच शिष्योमांना एक हता. एमणे पोताना नमस्कारस्तव उपर सं. १४९४ मां टीका रची छे. वेबरे आ चरित्र रच्यानो संवत् १४९७ आप्यो छे. शिवाय चंपकश्रेष्ठिकथा, श्रीपालगोपालकथा तथा दानकल्पद्रुम विगेरेना कर्त्ता पण आज जिनकीर्तिसूरि छे.

B आ चरित्र माटे बृहट्टिप्पनिकामां "धन्यशालिभद्रचरित्रं पूर्णभद्रीयं १२८५ वर्षे कृतं श्लोक १४६०" आवी नोंध छे.

C [illegible] आ चरित्रना कर्त्ता [illegible] छे एम [illegible] ते रच्यानो संवत् १४२८ नोंध्यो छे. पण आ विषय उपर शक पडती लागे छे. कारण के बृहट्टिप्पनिकामां एना कर्त्ता पूर्णभद्र नोंध्या छे, अने इंडियाऑफिसनी [illegible] टीपमां पण तेज नाम आपेल छे. माटे एना कर्त्ता पूर्णभद्र ठरे छे.

* आ निशानीवाळां चरित्रो जेसलमेरनी टीपमां [illegible] तेथी तेमनां कर्त्ताओनां नाम जाणवामां नथी, माटे तेनी प्रतो वगेरे शोधवानी जरूर छे.

D आ रत्नयोगींद्र [illegible], [illegible] आ चरित्र तेमणे क्यारे रच्युं छे ते [illegible] नगीनदास [illegible] नथी मळेल [illegible] छे.

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
	प.				
३७	पद्मचरित्र A (प्रा.)	१००००	विमलसूरि	६०	बृ. पा. १-२-३-४
	" (सं.)	२२००	देवविजय		भा. १ डेक्कन.
३८	पद्मावतीचरित्र (प्रा.)	पत्र १४४			डेक्कन पेज ३७
३९	पांडवचरित्र (सं.)	९८८४	मल. देवप्रभ B		बृ. सुलभ्य.
	" बीजुं (गद्य)	९५००	देवविजय	१६६०	पा. ३
	" उद्धार	पत्र ३३	जयानंद		राधनपुर.
४०	पुंडरीकचरित्र	३१००	कमलप्रभ	१३७२	बृ. पा. ४-५
४१	पूर्णचंद्रचरित्र	५७७४	प्रद्युम्न	१३०४	पा. ४
४२	पृथ्वीचंद्रचरित्र C (प्रा.)	७१००	शांतिसूरि	११६१	बृ. पा. १-४

A एनुं अपरनाम रामचरित्र छे. एने जैन रामायण पण कहेवामां आवे छे. आ चरित्र गाथा बद्ध होवा साथे वैराग्यरसथी पूरित छे. नाइल वंशना विमलाचार्ये महावीरस्वामिना निर्वाणथी ५३० ने वर्षे एटले विक्रम सं. ६० मां आ चरित्रनी रचना करी. तेथी आ चरित्र अत्यंत प्राचीन समयमां रचेलुं छे. एम चोकस साबीत थाय छे. कारण के देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणे विक्रम सं. ५२३ मां सूत्रो पुस्तकारूढ कर्यां तो ते समयथी पण ४६३ वर्ष पहेलां आ चरित्र रचायलुं छे. पण दिलगीरी छे के आवां प्राचीन चरित्र तेनी खेर संभाळ अने ज्ञाननी ओछाशने लीधे क्वचित्ज जोवामां आवे छे.

B आ मलधारि देवप्रभसूरि कोना शिष्य हता ते बाबत चोकस निर्णय थतो नथी. कारण के पिटर्सन रिपोर्ट चोथामां तेमनी वंशावळी आ रीते आपी छे:—कोटीकगणनी मध्यमशाखा, प्रश्नवाहनकुल, हर्षपुरीयगच्छमां (१) अभयदेवसूरि थया तेमना पाटे हेमसूरि के जेओ सिद्धराजना समकालीन हता. तेमना पाटे विजयसिंहसूरि तेमना पाटे चंद्रसूरि तेमना पाटे मुनिचंद्रसूरि थया. आ मुनिचंद्रसूरिना शिष्य ते आ पांडवचरित्रना करनार देवप्रभसूरि छे एम जणाव्युं छे. पण रिपोर्ट त्रीजाना पेज २७५ मां न्यायकंदलीनी प्रशस्तिमां आ देवप्रभसूरि मुनिचंद्रसूरिना "अनिष्ट" हता एम जणाव्युं छे. वि उपरथी तेओ मुनिचंद्रसूरिना धर्मसहोदर हता अगर तेमना पाटे पहला हता ते बाबत शक रहे छे. वळी एज रिपोर्टना पेज १३२ मां पांडवचरित्रना प्रशस्तिमां आ देवप्रभसूरि देवानंदना शिष्य हता एवी नोंध करेली छे. माटे आ देवप्रभसूरि कोना शिष्य हता ते बाबत चोकस पुरावो जे मुनि महाराजना जाणवामां होय तेमने ते अमोने जणाववा कृपा करवी. एवी अमारी तेमने नम्र प्रार्थना छे.

C एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां "पृथ्वीचंद्रचरित्रं प्रा. शु. [illegible] ११६१ वर्षे शांतिसूरिभिः कृतं ७५०० आवी नोंध छे.

नं.	नाम.	श्लोक	कर्ता.	रचना संवत्	क्यां छे ?
	टिप्पनक A	११००	जयचंद्र	१२३१	बृ.
	संक्षेप (जिनमत व्याख्या) B	५९५	रत्नप्रभ		बृ.
	पृथ्वीचंद्रचरित्र (बांधु)	९८०४			पा. ४ डेक्कन.
	,, (बांधु) गद्य	पत्र २०२	कर्पूरविजय		अ. १
	,, (बांधु)	९९८	माणिक्यसुंदर		पा. ३
	,, (बांधु)	पत्र १५५	लब्धिसागर		अ. १
	,, (छंदु)	पत्र ३१			अ. १ मकसुदा
४३	प्रत्येकबुद्धचरित्र (प्रा.)	६०५०	श्रीतिलक	१३११	बृ. पा. १-४ सुरत
४४	प्रदेशीचरित्र (प्रा.)	३००			डेक्कन.
४५	प्रद्युम्नचरित्र		रत्नसिंह C	१५११	अ. १ की. नं. रि ५
	,, (बांधु)	७००२	रविसागर	१६०७	पा. ४
	,, (प्रा) (बांधु)	पत्र ६०			पा. ४
	,, (सं.) (बांधु)		सोमकीर्ति		अ. १-२ माव.

A, B आ बंने ग्रंथो बृहट्टिप्पनिकामां नोंध्या छे, पण अमोने क्यां पण उपलब्ध थया नथी.

C अमदावादना डेलाना भंडारनी टीपमां कर्तानुं नाम रत्नचंद्र आप्युं छे, माटे तेनी खात्री करवानी जरूर छे.

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं	क्यां छे?
	प्रद्युम्नचरित्र (पांचमुं)	पत्र १०७	महसेन A		म. २.
४६	प्रभावतीचरित्र B	२२००			जेसल.
	ब.				
४७	बाहुबलिचरित्र C (सं)	५००			जेसल.
	भ.				
४८	भरतचरित्र D (प्रा.)				डेक्कन.
४९	भरताष्टक	पत्र ४८			म. १
५०	भविष्यदत्ताख्यान	२०००	महेश्वरसूरि		लीं.
५१	मन्यकुटुंबचरित्र				पा. ४
५२	भुवनभानुचरित्र (गद्य)	१८५०	इंद्रहंस	१५५४	पा. ४ ली. मं.
५३	भुवनसुंदरीचरित्र E	१०३५०	विजयसिंह	९७५	बु. मगनलाल मार्फ.

A महसेन आ नाम फक्त अनुयोगद्वारचूर्णिना प्रांते जोवामां आव्युं छे ते सिवाय बीजा कोइ महसेनाचार्य थया जाणवामां आव्या नथी. पण कदाच अनुयोगद्वारना चूर्णिकार महसेनगणि एटले जिनदासगणि महत्तर जो आ चरित्रना करनार होय तो ते विशेष संभवे तेम छे. कारण के जिनदास गणिना गुरुनुं नाम पण प्रद्युम्नक्षमाश्रमणज हतुं. तो ते गुरुनुं आ चरित्र तेमना शिष्ये रच्युं होतुं जोइये. जिनदासगणि याकिनीसूनु हरिभद्रसूरिथी पण अगाउ थइ गयला छे माटे आ चरित्र तेमणेज रच्युं छे के बीजा कोइ महसेन नामना आचार्ये रच्युं छे ते बाबत चोकस खात्री करवा चंचल्वाईना भंडारमांनी रनी प्रत नजरे तपासवानी आवश्यकता छे. पं. आणंदसागरजी महाराज जणावे छे के प्राये आ ग्रंथ दिगंबरकृत होय तेम तेना कर्त्तांना नाम उपरथी जणाय छे. वळी भावनगरना दिगम्बरक बोर्डे छपाव्युं पण छे एम तेमनी स्मृतीमां छे.

B, C आ चरित्रो जेसलमेरनी टीपमां लिपाने नोंधां छे तेथी शंक पडता छे.

D आ भरतचरित्र फक्त डेक्कन कॉलेजमां छे, माटे उद्धारवा योग्य छे.

E एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां नीचे मुजब नोंध छेः—

"भुवनसुंदरी च. प्रा. नाथपद नागेन्द्रीयश्रीविजयसिंहाचार्यैः ९७५ वर्षे कृते ग्रं. ८९११"

नं	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
	म.				
५४	मुनिपतिचरित्र (प्रा.)	गा. ६४४	(द्वि.) हरिभद्र	११७२	पा. ३-४
	„ (सं.)	३२००	जंबूनाग	१००५	बृ. पा. ४ सं. डे.
५५	मनोरमाचरित्र A (प्रा.)	१५०००	वर्द्धमान	११४०	बृ.
५६	मलयसुंदरीचरित्र (प्रा.)	२४३०	आगमिक जयतिलक		पा ४-६ भाव. सुलभ्य
	„ (प्रा.)	गा. १२९६			लीं.
५७	महानरेंद्रकेवलिचरित्र	पत्र ३१			अ. २
५८	महापुरुषचरित्र B (प्रा.)	११४८०	शीलाचार्य	९२५	बृ. पा. ४ जे.-बे.
	„ C (प्रा.) बीजुं	गा ८७१०	आम्रसूरि		बृ.
	„ (सं.) त्रीजुं	२३१६	मेरुतुंग		पा. ४-५ अ. १
५९	महीपालचरित्र	२७००	वीरदेवगणि D		बृ. पा. ३-४
	„ गा. ५९९	८९५	चारित्रसुंदर		पा. ५ खं.

A अद्यापि चरित्रने माटे बृहट्टिप्पनिकामां "मनोरमाचरित्रं प्रा. मु. गाथामयं च ११४० वर्षे श्रीअभयदेवसूरिशिष्यवर्द्धमानसूरीयं १५०००" आवो नोंध छे. पण ते अमोने हजी सुधी क्यां पण उपलब्ध थयुं नथी.

B एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां "महापुरुषचरित्रं प्रा. मु. शलाकापुरुषरूपवाच्यं ९२५ वर्षे शीलाचार्यैः कृतं १००००" आवो नोंध छे.

C आ बीजुं महापुरुषचरित्र फक्त बृहट्टिप्पनिकामां नोंध्युं छे, बाकी क्यां पण उपलब्ध थयुं नथी. तेना माटे ते टिप्पनिकामां आवो नोंध छे. "महापुरुषचरित्रं प्रा. ६३ शलाकापुरुषरूपवाच्यं आम्रकृतं गा. ८७१० श्लोक १००५०" पण अमारा धारवा मुजब आ बन्ने एकज हशे.

D आ वीरदेवगणिए मलधारि अभयदेवसूरिने मंत्रविद्या शिखवाडी हती. अभयदेवसूरिने मलधारि आ बिरुद गुजरातना कर्णराजाए आप्युं हतुं. कर्णराजा सं. ११२० थी ११५० सुधी हतो, ते उपरथी आ वीरदेवगणि अभयदेवसूरिना समकालिन हता. एम चोक्कस निर्णय थाय छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
७४	वसुदेवहिंड A (प्र. खंड)	१७०००	संघदास		बृ. पा. १-४-६ग्र.१
	,, B (द्वि. खंड)	११०००	धर्मसेन		बृ. पा. १-४-६ ग्र.१
७५	विक्रमचरित्र	६०२०	रामचंद्र	१४९०	पा. ३ स.
	,,	५३००	देवमूर्ति	१४९६	डेकन.
७६	विजयचंद्रकेवलिचरित्र	१०५०	वीरदेव	११८७	बृ. पा. ३-५
	,, (बीजुं)	पत्र ६०	आमसूरि C		राधनपुर.

A, B वसुदेवहिंडि माटे बृहट्टिप्पनिकामां " वसुदेवहिंडि प्रथमखंडं संघदासवाचककृतं ११००० ग्रंथ. द्वितीयखंडं अपराचार्यकृतं ६६०० ग्रंथ. मध्यमखंडं संग्रहणीकं ९००० आ रीते नोंध छे." आ नोंधमां द्वितीयखंड पछी मध्यमखंड नोंधेल होवाथी आ नोंधमां नोंध्या शिवायना बीजा खंडो होय तेम संभव थाय छे. पण ते बृहट्टिप्पनिकाकारने पण उपलब्ध थया नथी एम मालम पडे छे. बृहट्टिप्पनिकाकारे द्वितीयखंड पछी मध्यमखंड नोंध्युं छे, त्यारे पाटण, अमदावाद आदिनी टीपोमां प्रथमखंड, मध्यमखंड अने द्वितीयखंड आवी रीते मध्यमखंडने प्रथमखंड साथे नोंध्यु छे. पिटर्सने वसुदेवहिंडिनी नोंध लेतां पोताना त्रीजा रिपोर्टना पेज १९६ मां तेना प्रथमखंड, द्वितीयखंड अने तृतीयखंड एम त्रण खंडो जणाव्या छे. द्वितीयखंडने शरुआतमां द्वितीयखंड तरीके नोंधीने प्रांतमां मध्यमखंडना नामे ओळखावी प्रथम तथा द्वितीयखंडनी श्लोकसंख्या १७८०० जणावी छे. तेमज तृतीयखंडना प्रारंभमां तृतीयखंड तरीके नोंधी प्रांतमां मध्यमखंडनुं नाम आप्युं छे. श्लोकसंख्या नोंधी नथी.

आ रीते जुदा जुदा नोंधो उपरथी वसुदेवहिंडिना चोकस खंड तथा तेनी श्लोकसंख्या माटे ग्रबर शक रहे छे. अमारा धारवा मुजब एना एकोतेर लंभको छे. तेमांथी चुमालीस लंभकोमां प्रथमखंड अने द्वितीयखंड (मध्यमखंड) समाप्त थाय छे. आ बन्ने श्लोक १७००० प्रमाणना छे. आ प्रथम अने मध्यमखंडने प्रथमखंड तरीकेज मानीए तो मानी शकाय तेम छे. पिटर्सने जेनी तृतीयखंड तरीके मान्यता करी छे ते तृतीयखंड नहि पण श्लोक ११००० वालु धर्मसेनगणि महत्तरे रचेलुं द्वितीयखंड होवुं जोइये. अने जो तेमज होय तो अमदावादना डेलाना भंडारमां बन्ने खंडो मोजुद छे तो त्यांनी प्रत नजरे तपासी जोवाथी चोकस खुलासो थइ शके तेम छे. छतां आ बाबत गुरु मुनिवर्य महाशयोने विनंति करवामां आवे छे के जे महाशय पासे आ संपूर्ण ग्रंथ मोजुद होय अगर तेमने आ संबंधी चोकस माहिती जाणवामां आवी होय तेओश्रीए ते अमोने लखी जणाववा कृपा करवी एवी अमारी तेमने नम्र प्रार्थना छे.

C आ नाम शक पडतुं लागे छे, कारण के आ नामना कोइ आचार्य थया जाणवामां आव्या नथी. बनते महापुरुषचरित्रना करनार आम्रसूरिए आ चरित्र रच्युं होय तो होय, छतां चोकस निर्णय राधनपुरना भंडारमांनी तेनी प्रत जोया वगर थई शके तेम नथी.

नंबर.	नाम.	श्लोक	कर्त्ता.	रचनानो सं.	क्यां छे ?
७७	जिनंधर चरित्र (प्रा.)				पा. २.
७८	जितारिस्थानचरित्र सं.	२८००	जिनहर्ष	१५०२	पा. २-४.
७९	शांबचरित्र A (सं.)	१०७०			बृ.
८०	शालिचरित्र	१२२४	धर्मकुमार	१३३४	बृ. पा. १-३
	मधधारि	पत्र ११			खंभात.
८१	शालिचरित्र (प्रा.)	गा. १७९			नगीनदास.
	,,	पत्र ३०	विनयसागर		प्र. १
	,,	पत्र २४	प्रभाचंद्र		प्र. २
	,,	पत्र २०	सोमप्रभ		प्र. २
८२	शालिवाहनचरित्र B	१८००	शुभशील	१५४०	पा. ५
८३	श्रावकचरित्र				जेसल-पे.
८४	श्रीचंद्रकेवलिचरित्रC(प्रा.)	गा. ८७			पा. २.
	,, (सं.)	३२९६			पा. ३-४ ५.
	,,	३७००	शीलसिंह		डेक्कन.
	,, प्रशस्ति		शीलसिंह		डेक्कन.
८५	श्रीधरचरित्र	१६८५	माणिक्यसुंदर	१४६३	पा. ४.

A बृहट्टिप्पनिकामां आ चरित्र नोंध्युं छे पण अमोने उपलब्ध थयुं नथी.

B आ चरित्र पूर्वे ऐतिहासिक प्रयोग वर्गमां नोंधायुं छे. छतां आ चरित्रनो वर्ग होवाथी अहीं पण नोंध्युं छे.

C आ चरित्र फक्त पाटणना भंडार नंबर बीजामां ते प्राकृतमां रचायलुं छे एम जणायुं छे, बाकी क्यां पण जोवामां आव्युं नथी माटे ते उद्धरी करवा योग्य छे.

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो स.	क्यां छे?
	समरादित्यचरित्र A	पत्र २८१	धर्मरत्नसूरि		ग्र. २
	„ B	पत्र २०१	गुणरत्नसूरि		ग्र. २
९५	सिद्धसेनचरित्र C	ता १०४	माणिक्यचंद्र		पा. २
९६	सीताचरित्र (प्रा.)	३१००			वृ. पा. ५
	„ D प्रा. (बीजुं)	३४००			वृ.
	„ (त्रीजुं)	गा.४६५	भुवनतुंग		डेकन.
९७	सुग्रीवचरित्र E (प्रा.)	६००			जेसल.
९८	सुदर्शनाचरित्र (प्रा.)	१८८७	मल. देवप्रभ		वृ.
	„ (बीजुं)	४८५२	देवेंद्रसूरि		पा. २-५
९९	सुनक्षत्रचरित्र				जेसल-बे.
१००	सुबाहुचरित्र	गा. २२८			जेसल. नवीनदा°
१०१	सुभद्राचरित्र F	१५००	(वृ.)		जेसल.

A, B आ बन्ने चरित्रो अमारा धारवा मुजब एकज हशे. कारण के आ चरित्रना कर्त्ता बन्ने आचार्यो एकज वखतमां हता. तो तेमने बे जणा मळीने आ चरित्र रच्युं होय तेम पण संभवित छे. छतां ते एकज छे के भिन्न छे ते बाबत चोक्कस निर्णय करवा बन्नेनी प्रतो तपासवी जरूर रहे छे.

C आ सिद्धसेनचरित्र फक्त पाटणना बीजा भंडारमां छे.

D एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां "सीताचरित्रं धर्माधर्मशास्त्रगतं प्राकृतं १४००" आवी नोंध छे. पण ते क्यां पण उपलब्ध थयुं नथी.

E आ चरित्र जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंध्युं छे, अने ते कागळ उपर लखेलुं छे एम जणाव्युं छे. पण आ नामज शक पडतुं लागे छे तेथी आ चरित्र त्यां छे के नहीं ते बाबत खात्री करवा माटे तेनी प्रत नजरे तपासी जोवानी अगत्य छे.

F सदरहु चरित्र पण हीरालाले करेली टीपमां नोंधायलुं छे तेथी तेना माटे शक राखवो पडे छे.

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
१०२	सुमित्रचरित्र (लोकगद्य)	पत्र १६			भ. १
१०३	सुरसुंदरीचरित्र (प्रा.)	पत्र ७६			भ. १
१०४	सुलसाचरित्र (सं.)	७२४	जयतिलक		पा. ३-४.
१०५	सुमतसूरिचरित्र	ग्रं. ५९			भ.
१०६	स्थूलिभद्रचरित्र A	६८४	जयानंद		वृ. पा. ३-४
	स्थूलिभद्रचरित्र(शीलप्रकाश)	११००	धर्मसागर शिष्य पद्मसागर	१६१४	ली.
	ह.				
१०७	हंसराजवत्सराजचरित्र (गद्य)	१०५०	राजकीर्तिवाचक		डेक्कन.
१०८	हरिवलचरित्र B (प्रा.)				पा. २
१०९	हरिवंशचरित्र C (स.)	९०००			वृ.
	" D (सं.)	९०००	देविकवि		वृ.
११०	हरिविक्रमचरित्र	५६५०	आगमिक जयतिलक		वृ. पा.४ ५मां मुद्रण

A एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां "स्थूलिभद्रचरित्र जयानंदसूरिकृत श्लोक ६८८" एवी नोंध छे.

B आ चरित्र [illegible] छपायुं [illegible].

C, D आ बे चरित्रो माटे बृहट्टिप्पनिकामां जुदा जुदा नोंध नीचे मुजब छे:—

"हरिवंशचरित्र स. देवेन्द्रसूरिकृत प्राकृत श्लोक ९०००। हरिवंशचरित्र [illegible] ९०००" आ बे [illegible] छे. पण ते [illegible].

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे?
	तीर्थंकरचरित्रो *				
	खास चीजो.				
१	(१) आदिनाथचरित्र A (प्रा)	११०००	वर्द्धमानसूरि B	११६०	पू. पा. १-२-४-१
	(२) ,, (प्रा.)	पत्र ३३			म. १
	(३) ,, (प्रा.)	पत्र ७६	अमरचंद्र		म. १
	(४) ,,		विनयचंद्र		म. १
२	(१) अजितनाथचरित्र ‡ (प्रा)				पू.
	(२) ,, ‡ (सं.)				पू.
३	(१) संभवनाथचरित्र ‡ (सं.)				पू.
	(२) ,, ‡ (सं.)				पू.
४	(१) अभिनंदनस्वामी च. प्रा. ‡				पू.
	(२) ,, ‡ (सं.)				पू.

* [illegible]

A [illegible]

B आ वर्द्धमानसूरि ते [illegible]

‡ [illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
५	(१) सुमतिनाथचरित्र A (प्रा.)	९८२१	विजयसिंहशिष्य सोमप्रभ		पृ. पा. ३-४ली. म. १
	(२) ,, * (सं.)				पृ.
६	पद्मप्रभस्वामीचरित्र B (प्रा.)	८४००	देवसूरि	१२२४	पृ. पा. २
७	(१) सुपार्श्वनाथचरित्र (प्रा.)	गा ८७००	लक्ष्मणगणि	११९९	पृ. पा. ३-४ खंभात.
	(२) ,, * (सं.)				पृ.
८	(१) चंद्रप्रभस्वामीचरित्र (प्रा.)				पा. ४
	वृत्ति	१३१५	साधुसोम		पा. ४
	(२) चंद्रप्रभस्वामीचरित्र (प्रा.)	६४००	यशोदेव		पृ. जेसल-बे.
	(३) ,, C (प्रा.)	८०३२	हरिभद्र		पृ. पा. २
	(४) ,, (सं. प्रा.)	५३२५	देवेंद्रसूरि	१२६४	पृ. पा ४
	(५) ,, (सं.)	६१४१	सर्वानंद	१३०२	पृ. पा. ४
	(६) ,, D	पत्र ९९	आंचलिक		जामनगर.
	,, विषमपदवृत्ति		जिनपतिशिष्य जिनेश्वर		पा. ६

A एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां " सुमतिचरित्रं प्राकृतमुख्यं सोमप्रभीयं कुमारपालराज्ये कृतं ९६२१ " आवो नोंध छे.

* आ निशानीओ माटे पाछळ पाने श्रीअजितनाथचरित्र उपरनी नोट जुओ.

B आ चरित्र बृहट्टिप्पनिकाधारने उपलब्ध थतुं नथी.

C एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां " चंद्रप्रभचरित्रं प्रा. श्रीकुमारपालराज्ये हारिभद्रं ८०३२ " आवो नोंध छे.

D आ चंद्रप्रभस्वामीचरित्र जामनगरनी हस्ती पटरणानी टीपमां नोंध्युं छे, अने ते कोई अंचलगच्छना आचार्ये रच्युं छे एम टीपमां जणाव्युं छे.

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
९	(१) सुविधिनाथचरित्र * (प्रा)				पु.
	(२) ,, * (सं.)				पु.
१०	(१) शीतलनाथचरित्र * (प्रा.)				पु.
	(२) ,, * (सं.)				पु.
११	(१) श्रेयांसनाथचरित्र (प्रा.)	११०००	भद्रेश्वरशिष्य अजितसिंह A		पु. पा. २
	(२) ,, * (प्रा)	गा६५८४	हरिभद्र B		पु.
	(३) ,, (सं.)	५१२५	मानतुंग	१३३२	पु. पा. २ सं.
१२	(१) वासुपूज्यस्वामीचरित्र C (प्रा.)	८०००	चंद्रप्रभ		पु. पा. २
	(२) ,, D (सं.)	पत्र १४	वर्द्धमान	१२९९	पु. भाव.
	(३) ,,	३३००			A. S.
१३	(१) विमलनाथचरित्र * (प्रा.)				पु.
	(२) ,, * (सं.)				पु.
	(३) ,, *	५५५०	ज्ञानसागर	१५१२	पा. ४. भाव.

* आ निशानीओ माटे [illegible] अजितनाथचरित्र उपर आपेली नोट जुओ.

A बृहट्टिप्पनिकामां एना कर्ता देवभद्रसूरि जणाव्या छे. पण पाटणनी टीपमां आ नाम आपेल होवाथी तेज नाम दाखल कर्युं छे. छतां आ चरित्र आ बे आचार्योमांथी कया आचार्ये रच्युं छे ते [illegible] पाटणना [illegible] तपासवानी जरुर रहे छे.

B बृहट्टिप्पनिकामां एना माटे " श्रेयांस. प्रा. जिनदेवशिष्य हरिभद्राचार्यकृत गा. ६५८४ " आपेली नोंध छे. पण ते क्यां पण उपलब्ध थयुं नथी.

C आ चरित्र जिनेश्वरसूरिए रच्युं छे.

D बृहट्टिप्पनिकाकारे आ चरित्र रच्यानो संवत् १२९९ आपेलो छे. पण पाटणनी टीपमां सं. १२९९ [illegible] संवत् [illegible] लख्युं छे. अमारा धारवा मुजब सं. ११६० मां [illegible] वर्धमानसूरि [illegible] आ चरित्र [illegible] होय तो बृहट्टिप्पनिकामां आपेलो संवत् [illegible] थइ शके.

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या नो सं	क्यां छे ?
१४	(१) अनंतनाथचरित्र A (प्रा.)	गा. १२०००	नेमिचंद्र	१२१६	बृ.
	(२) „ * (सं.)				बृ.
१५	(१) धर्मनाथचरित्र * (प्रा.)				बृ.
	(२) „ B (सं.)		धर्मचंद्र C		बृ.
१६	(१) शांतिनाथचरित्र (प्रा.)	१२१००	हेमसूरिगुरु देवचंद्र	११६०	बृ. पा. २-४-५.
	(२) „ (प्रा.)	५५७४	माणिक्यचंद्र		बृ. पा. २-४
	(३) „ (प्रा.)	४८५५	मुनिदेव	१३२२	बृ. पा. १-४ लीं. छु.
	(४) „ (सं.)	४९२८	पौ. अजितप्रभ	१३१०	बृ. पा. ३-४-५ लीं.
	(५) „ (सं.)	६२७२	मुनिभद्र	१४१०	बृ.पा. ४ सं. भाव.
	(६) „ (सं.)	पत्र१६३	देवानंद शिष्य कनकप्रभ		पा. २
	(७) „ (गद्य)	१५०००	भावचंद्र		भ. २ जेसल.
	(८) „ (गद्य)	२७००	आंच.उदयसागर		खंभात.

A एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां "अनन्तच. प्राकृतगाथाबद्धं १२१६ वर्षे श्रीनेमिचंद्रसूरीयं गा. १२०००." आवो नोंध छे, पण ते अमोने हजी सुधी उपलब्ध थयुं नथी..

* आ निशानीओ माटे तीर्थंकर चरित्रोनी शरुआतमां अजितनाथ चरित्र उपर आपेली नोट जुओ.

B सदरहु चरित्र पण तेना कर्त्ताना नाम साथे फक्त बृहट्टिप्पनिकामां नोंधेलुं छे.

C आ धर्मचंद्रगणिए जयंतीचरित्रनी टीकाना प्रशस्ति लेखमां मूलकार मानतुंगसूरिने पोताना गुरु तरीके जणाव्या छे, तेज ए होवा जोइये. छतां तेज धर्मचंद्रगणिए आ चरित्र रच्युं छे के कोई बीजा आचार्ये रच्युं छे ते बाबत चोकस माहिती जे मुनिमहाशयना जाणवामां होय तेमणे ते अमोने जणाववा कृपा करवी एवी अमारी तेमने नम्र सूचना छे.

नंबर	नाम.	श्लोक	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
१७	(१) कुंथुनाथचरित्र * (प्रा.)				वृ.
	(२) „ (सं.)	५५५५	विबुधप्रभ A		वृ. संवात.
१८	(१) अरनाथचरित्र * (प्रा.)				वृ.
	(२) „ * (सं.)				वृ.
१९	(१) मल्लिनाथचरित्र प्रा. B	५५५५	जिनेश्वर	११७५	वृ.
	(२) „ (प्रा.) C	९०००	हरिभद्र		वृ.
	(३) „ D (प्रा.)	५००	भुवनतुंग		जेसल.
	(४) „ (सं.)	४२५०	विनयचंद्र		वृ. पा. ५ संवात.
२०	(१) मुनिसुव्रतस्वामी चरित्र (प्रा.)	गा. १०९९४	श्रीचंद्र	११९३	वृ पा. ४-५.
	(२) „ E	४५५२	विनयचंद्र		वृ. अ. १
	(३) „	५५५५	पद्मप्रभसूरि	१२९४	पा. १-५ जेसल.

* आ निशाणीओ माटे तीर्थंकर चरित्रोनी शरुआतमां अजितनाथचरित्र उपरनी नोट जुओ.

A आ नाम बृहत्‌टिप्पनिकामां नोंध्युं छे. लींबडीनी टीपमां विबुधप्रभशिष्य पद्मप्रभसूरिए आ चरित्र रच्युं छे एम जणाव्युं छे, माटे लींबडीना भंडारमांनी प्रत फरीथी तपासी जोवाथी चोक्कस खुलासो थई शके.

B, C बृहत्‌टिप्पनिकामां आ बन्ने चरित्रो माटे जुदा जुदा नोंधो नीचे मुजब छेः—

" मल्लिच. प्रा. ११७५ वर्षे जैनेश्वरं ५५५५ " मल्लिच. " बहुप्राकृतं हरिभद्रीयं कुमारपालराज्येकृतं गाथाकाव्यमयं ९००० " पण दिलगिरीनी वात छे के एमांनुं एक पण चरित्र क्यां पण जोवामां आव्युं नथी.

D आ चरित्र जेसल्मेरनी हीरालाले करेली टीपमां नोंधायुं छे, तेथी कर्त्तानां नाममां शक रहे छे. माटे तेनी प्रत फरीथी तपासी जोवानी जरूर छे.

E एमां नरमवनो वृत्तांत होवा साथे ते घणी कथाओथी भरपूर छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रचना-संवत्.	क्यां छे ?
	(४) ,, A (सं.)	७४६२	श्री. मुनिरत्न		बृ भ. १ भक्तिविजय.
२१	(१) मल्लिनाथचरित्र * (प्रा.)				बृ.
	(२) ,, * (सं.)				बृ.
२२	(१) नेमिनाथचरित्र B (प्रा)	५१००	मल. हेमचंद्र		बृ जेसल-वे. भक्तावराग
	(२) ,, C (प्रा.)	१२१००	रत्नप्रभ	१२३३	बृ. पा. २
	(३) ,, (प्रा.)	८०३२	हरिभद्र	१२१६	बृ जेसल-वे.
	(४) ,,	१५००	तिलकाचार्य		B. ६.
	(५) ,, (सं.)	२१००	उदयप्रभ		पा. ४
	(६) ,, (प्रा)	५२७५	गुणविजय	१६६८	पा. २ १ जेसल.
	(७) ,, (सं.)	२६७	विक्रम		पा. ३

A प्रत माटे बृहट्टिप्पनिकामां "मुनिसुव्रत. सं. देवेन्द्रसूरिपट्टे रत्नसूरीय i २० एकादशपद. चरित ५१८५" आवी नोंध छे.

B, C आ बन्ने चरित्रो माटे बृहट्टिप्पनिकामां अनुक्रमे आवी नोंध छे:—

"नेमिच. प्रा. मलधारीहेमचंद्रसूरीयं भवभावनान्तर्गतं ५१०२" "नेमिचरितं प्राकृत नवरत्नपदं १२३३ वर्षे देवसूरिशिष्य रत्नप्रभीयं १२१००" एवी मलधारी हेमचंद्रसूरिकृत नेमिनाथचरित्र ते भवभावनानो भाग तो नहीं होय माटे तेनी प्रत तपासी जोवानी आवश्यकता छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे?
	शेष चरित्रो. †				
१	अममस्वामीचरित्र A	१२०००	मुनिरत्न B	१२५२	पु. मगीनदास.
२	चतुर्विंशतिजिनचरित्र *	७००	(मु.)		जेसल.

† चोवीश तीर्थंकरोना चरित्र ग्रंथो गत पेजमां समाप्त थया छे. बाकी रहेला आ बे चरित्र ग्रंथो
ज्यम तीर्थंकरोनां चरित्रो होवाथी आ वर्गमां दाखल कर्यां छे.

A आ चरित्र ते आवती चोवीशीमां थनार तीर्थंकर श्री अममस्वामीनुं चरित्र छे.

B आ मुनिरत्नसूरिने माटे गत पृष्ठ २२१ मां कल्पचरित्र उपर तेमना नाम नीचेनी नोट जुओ.

* चिरंतनकृतचतुर्विंशतिजिनचरित्र पहेलां सामान्य चरित्रोमां नोंधायुं छे तेथी अत्रे नोंध्युं नथी.

कथाना ग्रंथो.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
	वर्ग ६ ठो.*				
१	अघटकथा	८३१			पा. ४ डेक्कन.
२	अघंकारिभट्टिकाकथा				पा. ३
३	अन्तरङ्गकथा (प्रा.)				लींबडी.
४	अंजनासुंदरीकथा A(प्रा.)	५००			जेसल.
५	अनंगसिंहादिकथा	पत्र १२			पा. ३
६	अनंतकीर्तिकथा (प्रा.)	पत्र १३			अ. १–२
७	अंबुसराजकथा	पत्र ४			अ. २
८	अभयसिंहकथा	१३८			खंभात.
९	अवंतीसुकमालसंधि				पा. २
१०	अष्टप्रकारपूजाकथा	१०६०			सू. पा.३-४

* आ वर्गमां पूर्वाचार्योए संस्कृत तथा प्राकृत भाषामां रचेली तमाम कथाओने एकत्र करी अनुक्रमवार नोंधवामां आवी छे. आगळ ग्रंथ वर्गमां तिथिना नामथी ओळखाती कथाओ नोंधवामां आवशे. अने ग्रंथ वर्गमां संग्रह कथाओ नोंधवामां आवनार छे.

A आ कथा जेसलमेरनी टीपमां करेली टीपमां नोंधाएल छे, अने ते सं. १४७७ मां जिनचंद्रसूरिना शिष्यनी शक्ति महाराज जेसलमेरमां रची छे एम तेमां लखायुं छे. पण कर्त्तानुं नाम बाबत शक रहेवो पडे छे. आ बाबतनो चोकस निर्णय जेसलमेरनी टीपमां जो नथी तोपण थवो मुश्केल छे. छतां मुनि महाराजोने अमारी नम्र प्रार्थना छे के तेओ पासे आ कथा मोजुद होय तेओश्रीए आ संबंधी चोकस माहिती अमोने लखी मोकलवा कृपा करवी.

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
११	आरामनंदनकथा	५६१			पा. ६
१२	आरामशोभाकथा	२८१	मलयहंस A		पा. ४-६ लीं.
१३	आरामसुतकथा (सं.)	६०३			लींबडी.
१४	आर्द्रकुमारकथा (प्रा.)	१६५			पा. ४
	" (गद्य)	पत्र ८			म. १
१५	आर्यापाठकथानक (श्लोकबद्ध)	पत्र १९			अ. १
१६	आवश्यककथा	१०००			पा. ४
१७	इलाचीपुत्रकथा B				पा. २
१८	उत्तमकुमारकथा	२५०			लींबडी.
१९	उदयसुंदरीकथा		सोड्डलकवि C		पा. १
२०	उदायनराजकथा	पत्र १४			संघात.
२१	उपसर्गहरप्रभावकथा		जिनसूरि		पा. ३
२२	ऋषिदत्ताकथा	२८२७			पा. ४
	" बीजी (सं.)	४५७			पा. ४ लीं. सं.
२३	कनकरथकथा	पत्र ५			संघात.
२४	कंचनश्रेष्ठ्यादिकथा	पत्र ११			पा. २

A मलयहंसगणि विक्रमनी सोळमी सदीना आरंभमां हता एम सांभळ्युं छे.

B आ इलाचीपुत्रकथा प्राकृतमां रचाएली पाटणना भंडार नंबर बीजामां ताडपत्र उपर लखेली मोजूद छे.

C आ सोड्डलकवि अन्यधर्मि छे एम पाटणनी टीपमां जणाव्युं छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
२५	कर्मसारकथा	पत्र १३			अ. २
	" (बीजी)	१४५०			पा.४
२६	कलावतीकथा (श्लोकबद्ध)	पत्र ११			अ. १
२७	कालिकाचार्यकथा	का. ६८			लींबडी.
	" (प्रा)				पा. १ नगीनदास.
	" वृत्ति	१७०			नगीनदास.
	कालिकाचार्यकथा (प्रा.)	११५	विनयचंद्र		पा. १ लीं.
	" (प्रा.)	३६०			पा. २
	" (प्रा.)	गा.१००	भावदेव		पा. ३-४, लीं. सु.
	" (प्रा.)	गा.११९	धर्मानंदसूरि		लींबडी.
	" A (प्रा.)				नगीनदास.
	" (प्रा.)	गा. ५५	धर्मप्रभ		लींबडी.
	" (प्रा.)	गा.१०३	देवकल्लोल B	१५६६	खंभात.
	" (प्रा.)	गा.१२०			खंभात.
	" (प्रा.)	३६९			खंभात.
	" (सं.)		कीर्तिचंद्र		पा. १ डे.

A आ कथा पिटर्सने संस्कृत शेठ नगीनदासना भंडारनी नोंध देतां पोताना बीजा रिपोर्टना पेज १० मां नोंधी छे. एना मंगलाचरणमां "इन्द्रादिसुर वन्दितपदार्विदं सकल [illegible] विमलकेवलं विदितलोकस्वरूपविभवौ ।" आवी गाथा छे.

B आ देवकल्लोलनी उपकेश गच्छना हता.

नंबर.	नाम.	श्लोक	कर्ता.	रच्या- नो सं.	क्यां छे ?
	„ (प्रा.)	गा. ५२	महेश्वर A		भगीनदास.
	„ (सं.)		समयसुंदर		पा. ३
२८	कुलध्वजकथा (श्लोकबद्ध)	पत्र ८			भा. १
२९	कुरुचंद्रकथा (सं.)	पत्र ३			पा. ३
३०	कूर्मापुत्रचरित्र	पत्र ४३	जिनरत्न		भावनगर
	कूर्मापुत्रकथा (प्रा.)	गा. १९२	जिनमाणिक्य		पा. २-३-४
	„ (प्रा.)	गा १९९	अनंतहंस		पा. ३ सं.
३१	कृतपुण्यकथा				पा. ३.
३२	कुवलयमालाकथा B	१३०००	उद्योतनसूरि	८३५	बृ. टि. कांतिविजयजी
	„ C (सं.)	३८९४	रत्नप्रभ (परमानंद शिष्य)	१४८३	बृ. टि.
	कुवलयमाला D	पत्र ७१			भा. १

A आ महेश्वरसूरि ते [illegible]

B, C आ बंने [illegible]

D [illegible]

अनु.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	क्यारे थया? सं.	क्यां छे?
	कुवलयमाला A		इंद्रसूरि		पिटर्सन रि. ५
३३	कुसुमसारकथा B	१७००	नेमिचंद्र	१०९९	बू.
३४	कृतकर्मकथा	४९७			पा. ६
३५	खापरियाकथा	पत्र ४			पा. ३
३६	गगनधूलिकाकथा	पत्र ५			म. १
३७	गंडूगयकथा	पत्र १८			डेक्कन.
३८	गांभारकथा	पत्र २२			म. २
३९	गुर्जरब्राह्मणकथा	पत्र ५			म. १
४०	चतुर्विधधर्मविषयेकथा	पत्र ३०			पा. ४
४१	चंद्रोदयकथा	पत्र ५			पा. २
४२	चंद्रलेखाकथा				पा. २-३
	"	गा.२८६			लींबडी.
४३	चंपकश्रेष्ठिकथा	३५५			पा. ३-४
	" (वीजी)		जयसोम		म. २
	" (त्रीजी)		जिनदागणि		म. २

A आ कथाने पिटर्सन रिपोर्ट पांचमाना पेज ७१ मां [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हरिभद्रसूरि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे.

B आ कथा [illegible] [illegible] [illegible] छे, [illegible] [illegible] [illegible] "कुसुमसारकथा [illegible] १०९९ [illegible] [illegible] १७०० " [illegible] [illegible] छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे?
५४	चंपकमालाकथा	९००	मायाविजय		रिपोर्ट ६.
५५	चंपकमालादिकथासंग्रह	पत्र १८			पा. ३
५६	चामरहारीकथा	पत्र ५			भ. १
५७	चामगोतचरमोतकथा				पा. ४
५८	जंबूस्वामीकथा A (प्रा.)				जेसल.
५९	जयविजयकथा	५००			डेक्कन.
६०	जयसुंदरीकथा B (प्रा.)				बृ.
६१	जिनदत्तकथा C	१२००			बृ. जेसल.
	जिनदत्ताख्यान D (प्रा.)				पिटर्सन रि. ५
	जिनदत्तकथासमुच्चय	पत्र१०३	भद्राचार्य E		डे. पेज ११५

A प्रथम अनुयोगीना पात्र तरीके वृत्तान्त छे.

B आ कथा दृष्टान्तरूपमां गोठवी छे, पण तेने उपलब्ध थई नथी.

C जेसलमेरनी [illegible] ब्रह्मवती टीकामां [illegible] जुदीजुदी आवेला छे.

D पिटर्सने आ प्रतनी नोंध तेना पोताना रिपोर्ट पांचमाना पेज ६३ मां आप्या तेमनो [illegible] सूरि रचित [illegible] पांचमा [illegible] सं. ११८६ मां रचायेलो छे एम तेमां जणाव्यु छे.

E [illegible] आचार्य पोताना [illegible] छे:—

(१) [illegible] देवसूरि [illegible]

(२) [illegible] सूरि [illegible] हेमचन्द्रसूरि [illegible]

नं.	नाम	श्लोक	कर्ता	रचना संवत्	क्यां छे ?
१५२	दानकल्पद्रुमकथा (कवित्वबद्ध)	पद्य ११			भा. १.
१५३	द्रव्यादिकथा	११५०	शुभशील		A B
	द्रव्यसप्ततिकथा		जिनचंद्र		देव.भ.
१५४	दशदृष्टांतकथा				पा ३
१५५	देवकुमारकथा	पद्य १			भा १
	„ (टीका)	५६७			पा. ४-५
१५६	द्वादशव्रतकथा	७५०			पा ४
१५७	द्वादशांगकथा	६१००			पा ३-१-४-५
	„ (टीका)	गा १६००	कीर्तिचंद्रसूरि A		पा ३ ४
	धनदत्तकथा	गा १५४	अमरचंद्र		भा. १
१५८	धनपालकथा	पद्य ५			पा ३-४-५
१५९	धन्यकथा	४३०	दयावर्धन	१४११	पा ४ सं.
१६०	धर्मचरित्रकथा	पद्य ४			भा १
१६१	धर्मदत्तकथा (कवित्वबद्ध)	पद्य ५४			भा. १
१६२	„ (गद्य)	पद्य १०			भा. १
	„ (सं.)	पद्य १७	शालिभद्रसूरि.		देव.भ.
	„	३३०			पा ३-४ लि. ३
१६३	धर्मविलासकथा	९००	(हिन्दी) रामचंद्र		A B.

A आ कीर्तिचंद्रसूरि क्यारे थया छे ते जाणवामां आव्युं नथी.

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
	प्रत्येकबुद्धकथा	६००			सं.
	"	३५०			A. S.
८९	प्रभावतीकथा	१२९			पा. ४
९०	प्रियंकरकथा	१४००		.	पा. ४-६.
९१	बलभद्रकथा	पत्र २६			अ. १
९२	बलिनरेंद्रकथा				पा. ३
९३	ब्रह्मदत्ताकथा (प्रा.)	पत्र १३			अ. १
९४	ब्रह्मदत्तादिकथा	१७१६			पा. ४
९५	भद्रबाहुकथा	११२			पा. ४
९६	भरटकद्वात्रिंशिकाकथा	४२५			पा. ३
९७	भरतनटादिकथाओ				पा. ३
९८	भरतेश्वरबाहुबलिवृत्ति	१०२८२	शुभशील	१५९	पा. ४
९९	भविष्यदत्ताख्यान A	२०००	महेंद्रसूरि		जेसल.लीं.नगीनद
१००	मत्स्योदरकथा	पत्र ५			पा. ३
१०१	मदनावलिकथा	पत्र ११			अ. २
१०२	मदनरेखाकथा (गद्य)	पत्र २६			पा. ३, अ. १
१०३	मंगलकलशकथा				पा. ३.

A आ कथा पंचमीमाहात्म्य उपर रचेली छे ते पूर्वे चरित्र वर्गमां नोंधाई छे, छतां कथा तरीके विशेष ओळखाती होवाथी अत्रे पण नोंधी छे. जेसलमेरनी हाथमाने करेली पोतानी टीपमां व ...डर्नी टीपमां एना कर्त्ता महेश्वरसूरि लख्या छे. संघवना शेठ नगीनदासना भंडारमां महेंद्रसूरिनुं न आपीने मराहू ... संवत् १२१४ नोंधेलो छे. हालमां पं. श्री आनंदसागरजी आणे छे का ... एक ... छे पण ते अमोने उपलब्ध थई नथी.

अंक	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
१०४	मगधाधिपकथा	पत्र १०			म. २
१०५	मंत्रिदासीकथा (श्लोकबद्ध)	पत्र ७			पा. ३, म. १
१०६	मनोवेगकथा (गद्य)	पत्र १०			म. १
१०७	मरुदेवीकृष्णकथा A	पत्र १२	(श्लोकबद्ध)		म. १
१०८	मलयसुंदरीकथा	८१२	माणिक्यसुंदर		पा. ४, A. S.
	„ (बीजी) (गद्य)	१२००			गंधार.
	„ (त्रीजी)		धर्मचंद्र B		म. २
१०९	महासालकथा	पत्र ८			म. २
११०	महीपालकथा	२२००	धीरदेवगणि		A. S. 5
१११	मित्रचतुष्ककथा	१४६०	मुनिसुंदर	१४८४	पा. ४-५
११२	मुंजकथा				पा. ३
११३	मूलदेवकथा (श्लोकबद्ध)	पत्र ७			म. १
११४	मूलदेवादिकथा (प्रा.सं.)	२८००			A. S.
११५	मृगांककुमारकथा	पत्र ५			म. २
११६	मृगांकादिकथासप्तक				पा. ३

A [illegible]

B [illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्याने सं.	क्यां छे ?
१४४	विक्रमनृपकथा	गा. २१४			पा. २
	"	२२५	(श्लोकबद्ध)		संघात.
१४५	विक्रमपंचदंडप्रबंध	४००	पूर्णचंद्र		पा. ४
१४६	विजयचंद्रकेवलिकथा (प्रा.)	गाथा. ३९१०	चंद्रप्रभमहत्तर A	११२७	पा. ३-४ ली.
१४७	विद्यासागरश्रेष्ठिकथा	२५०	गुणाकर B		डेक्कन.
१४८	विश्वसेनकुमारकथा (प्रा.)	३५१३			पा. २
१४९	वीरभद्रकथा (श्लोकबद्ध)	पत्र ५			अ. १
१५०	वीरसेनकथा	२४३			पा. ४-९
१५१	वीरांगदकथा	पत्र ८	हरिभद्र C		अ. २
१५२	वैश्रवणकथा	पत्र २			पा. ४
१५३	शत्रुंजयकल्पकथा	११८७५	शुभशील	१५१८	पा. ७
१५४	शंखकलावतीकथा (प्रा.)	३०२			पा. ४
१५५	शांतिमतीकथा	पत्र ४			अ. १
१५६	श्यामदेवश्यामदेवकथा	पत्र ७			अ. १

A आ चंद्रप्रभसूरि ते धर्मघोषसूरिना गुरु हता. धर्मघोषसूरिना शिष्य चक्रेश्वरसूरि तच्छि शिवप्रभसूरि अने तेमना शिष्य श्रीतिलकसूरि थया, के जेमणे दशवैकालिक टीका विगेरे ग्रंथो र छे. आ चंद्रप्रभसूरिने तेमनी विद्वत्ताना बळथी बे त्रण युगप्रधान, महत्तर वादीभसिंह, एवी म्हा अटकोथी ओळखवामां आवता हता.

B गुणाकरसूरि बे थया छे. एक गुणाकरसूरि आम्रदेवसूरिना संघाते जयसिंह राजाना वखतमां थय छे. एमणे सप्तक्षेत्री नामक प्रकरण स. ११७८ मां रच्युं छे. (जुओ आ पुस्तकनो पेज २२५ बीजा गुणाकरसूरिए नागार्जुनसूरिकृत योगरत्नमालानी वृत्ति सं. १२९६ मां रची छे. आ रीते आ आचार्योमांथी आ कथाना करनार कोण छे ते बाबतनो निर्णय ग्रंथ जोये थई शके.

C आ हरिभद्रसूरि याकिनीसूनु छे के अन्य छे ते जाणवा माटे तेनी प्रत नजरे जोवी जोइये.

क्रम.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
१५७	शीलकथा	पत्र २५			संघात.
१५८	शीलवतीकथा (प्रा.)	८३५			पा. ४
	„ (सं.)	९८८	गुणरत्न		पा. ४
१५९	शुकराजकथा		माणिक्यसुंदर		पा. ३
	„ (गद्य)	५००			पा. ४ म. २
१६०	शुकसंवादकथा (श्लोकबद्ध)	पत्र ६			म. १
१६१	श्रीपालकथा	५७५	लब्धिसागर	१५५७	नगीनदास.
	„ उद्धार (प्रा.)	पत्र १५			पा. ३
१६२	श्रीमतीकथा	पत्र ५			म. १.
१६३	श्रेणिककथा	१३५०			संघात.
१६४	श्रेयांसकुमारादिकथा	पत्र ४			पा. ३
१६५	सदयवत्सकथा	९००	हर्षवर्धन		पा. ४
१६६	संकाशकथा (श्लोकबद्ध)	१७१			संघात.
१६७	संगमसिंहकथा				म. २
१६८	सर्वांगसुंदरीकथा (प्रा.) A	२६७५			सू.
१६९	सप्तकथा	पत्र ११३	जिनहर्षचंद्रसूरि		पा. २
१७०	सहस्रमल्लचोरकथा (प्रा.)	पत्र १४			म. १

A हस्तलिखितमां एना कर्तानी कंई विशेष हकीकत जोवी नथी. अने ते अमेने बहु रस उपराण थई नथी.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रचनानो सं.	क्यां छे?
	क्लास २ जो.*				
	तिथि कथाओ.				
१	अक्षयतृतीयाकथा				अ. १
२	अष्टाह्निकाव्याख्या				अ. १
३	चातुर्मासिकपर्वकथा				अ. १
४	ज्ञानपंचमीकथा	ता. २१३	सौंदर्यगणि A		पा. २
	„ (सं.) बीजी	१५०	कनककुशल	१६५५	पा. २ लीं.
	„ (त्रीजी)				अ. १
५	पर्युषणाअष्टाह्निकाव्याख्या (गद्य)	पत्र ६	भावप्रभ		अ. १
६	पौषदशमीकथा				अ. १
७	मेरुत्रयोदशीकथा				अ. १
८	मौनएकादशीकथा (प्रा.)				अ. १
	„ महात्म्य (सं.)	२००	रविसागर	१६५४	पा. ४-५ लीं.
	„ (सं.)	१२०	सौभाग्यनंदि	१५१६	पा. ४ लीं.
९	रत्नपर्वकथा				अ. १
१०	रोहिणीकथा				अ. १

* आ क्लासमां तिथिओना नामथी ओळखाती कथाओ जे जे अमोने मळी छे ते अकारादि अनुक्रमवार इहां नोंधी छे.

A आ नाम शक पडतुं लागे छे कारणके आ नामना कोई आचार्य यत्न अमारामां आव्या नथी. तो सौंदर्यगणि ते कोण हता अने ते काळे थयला छे ते बाबतनी चोकस माहिती अमारा मते, रचनाना महात्मनी प्रत नजरे दृष्टव्यानी आवश्य छे.

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे?
	हार ३ जो.*				
	संग्रहकथाओ.				
१	अठ्ठावीशकथा A	पत्र ३३			डॉ.
२	अन्तर्कथासंग्रह	पत्र १०			म. २
३	अष्टप्रवचनमातृकथा B	८००			जेसल.
४	आख्यानमणिकोश		नेमिचंद्र		बृ. नगीनदास.
	वृत्ति	१४०००	आम्रदेव	११९०	बृ. नगीनदास.
५	आठनानीकथाओ C	४५०			डॉ.
६	आनंदसुंदर D	३३००	सर्वविजय		सं.
७	उपदेशरहस्य E (सं.)	४६९			पा ६
८	कथानुक्रमणिका	पत्र २			डॉ.
९	कथोद्धार	१२०३	धर्मशेखर		दि. ६

* जुदी जुदी कथाओनो एकत्र संग्रह करीने रचना करेली होवाथी तेने खास करीने सामान्य कथानां नाम नोंधतां संग्रहकथाना नामथी आ त्रीजा हारमां जुदीज नोंधी छे.

A एमां जुदी जुदी अठ्ठावीश कथाओ छे अने ते साधारण संस्कृतमां छे.

B दरेक कथा जेसलमेरनी टीपमां इशारो नोंधी छे.

C एमां पाउडी, मम्मण, नागदत्त, सुमनसेठ, शिलसुंदरी, [illegible], जिनदत्त अने पुरंदर एवी रीते आठ नानी नानी कथाओ छे.

D एमां आनंदसुंदर दशश्रावकोनी कथा छे.

E नानी नानी कथाओ छे.

सं.	नाम.
	ग्रंथ १ लो.
	संग्रहकथ
१	[illegible]
२	[illegible]
३	[illegible]
४	[illegible]
	वृत्ति
५	[illegible]
६	आनंदसुं
७	[illegible]
८	[illegible]

इ.१
इ.१
इ.१
इ.१
इ.१ ई.
इ.१
इ.१
इ.१
इ.१
इ.१
इ.१ अ
इ.१ ई.
इ.१
इ.१

	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे
			पा. ३
			पा. ४
			पा. ५
	आनंदसुंदर		पा. ४
			म. २
	माणजयतिलक		पा. ४
			ह्रेसत
	नेमिचंद्रशिष्य यशःसेन A पुण्यदत्त B		भाप
			डेय
१८			म
७५			
१५००	पद्मसागर		
१५५७	रत्नप्रभ		

[illegible]

[illegible] उपरथी सिद्ध थाय छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं	क्यां छे
१०	कथाकोश	गा. २३९	जिनेश्वर	११०८	बृ.
	,, वृत्ति (प्रा.)	६०००			बृ. पा. ४
	कथाकोश (बीजो)		शुभशील	१५०२	पि. रिपो
	कथानककोश (त्रीजो)	४१४०			पा. २
११	कथाग्रंथ A	ता. ३०६			पा. ५
१२	कथाप्रबंध	पत्र ३०			पा. ४
१३	कथामहोदधि	१८००	सोमचंद्र	१५०४	पा. ३, डे.
१४	कथारत्नकोश B	११०००	देवभद्र	११५८	बृ. नगीन
१५	कथारत्नाकर	६३३५	हेमविजयगणि		अ. २, मुं
	कथारत्नाकरोद्धार C	५५००	उत्तमर्षि D		डेक्कन.
१६	कथारत्नसागर E	ता. १८४	मल. नरचंद्रसूरि		बृ. पा. २-
	कथारत्नसागर	२०११			लीं.
१७	कथावली F	२३८००	भद्रेश्वरसूरि		बृ. पा. २

A [illegible] नोंध करी छे. [illegible]
[illegible]

B बृहट्टिप्पनिकामां एना माटे " कथारत्नकोश: [illegible] ११५८ [illegible] ११००० " आवी नोंध छे.

C [illegible] " [illegible] " [illegible] छे.

[illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
१८	कथासंग्रह	१६५३			पा. ३
	„ (बीजो)	१४००			पा. ४
	„ (त्रीजो)	१२५५			पा. ४
	„ (चोथो)	३५००	आनंदसुंदर		पा. ४
१९	कथासंचय	पत्र १८			भ. २
२०	कल्पमंजरीकथाकोश	२९०	भाग.जयतिलक		पा. ४
२१	गंडयस्सरदा (प्रा.)	१५			जेसल.
२२	तरंगलोला		नेमिचंद्रशिष्य यशःसेन A		माय. भ. २
२३	त्रिषष्टिमहापुरुषगुणालंकार	७१००	पुष्पदन्त B		डेक्कन
२४	दृष्टांतरत्नाकर	पत्र २८			भ. २
२५	द्वादशभावनाविपयेकथा	८७५			सं.
२६	धर्माख्यानककोश (प्रा.)				सू.
	वृत्ति (प्रा.)				सू.
२७	धर्मपरीक्षाकथा	१५००	पद्मसागर		रि. ६
२८	पार्श्वचरित्रसंबद्धदृष्टांत कथा	९५७	रत्नप्रभ		पा. ६

A अमदावादना चंचळबाईना भंडारनी टीपमां एना कर्ता नेमिचंद्रसूरि छे एम लखाणुं छे. पण भावनगरनी टीप उपरथी मारे आ ग्रंथ दिगंबर यशः सेनसूरिनो रच्यो होवो जोईये.

B आ पुष्पदन्ताचार्य ते षट्खण्डसूत्रना करनार धरसेनाचार्यना वखतमां थएला छे. एटले तेओ विक्रमनी बीजी सदीना मध्यमां विद्यमान हता. डेक्कन कॉलेजना लीस्टमां एमनुं नाम पुष्पदत्त एवुं नोंधुं छे पण ते भूलथी नोंधायुं छे एम पुरावा उपरथी सिद्ध थाय छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
२९	भक्तामरमहात्म्य	१७००	शुभशील		रि. ६
३०	भद्रनंदिकुमारकथा A	१५०			जेसल.
३१	मंगलमालाकथा (प्रा.)	ताड३२६			जेसल. बे.
३२	मित्रानंदामरदत्तकथा (प्रा.)	७००			सं.
३३	रामायण	५०००	देवविजयगणि		डेक्कन.
३४	लघुत्रिषष्टिचरित्र	५०००	मेघविजय		डेक्कन.
३५	विविधकथा (सं.)	७००	(गद्य)		बो.
३६	शीलोपदेशमालाकथा	२९९१			लीं.
३७	सम्यक्त्वकौमुदी	२८५७	जिनहर्ष	१४५७	पा. ४
	„ (बीजी)	१५००	जयचंद्र		पा. १-४-५-सुरत
	„ (त्रीजी)	पत्र ५९	गुणाकरसूरि		सं.
	„ (चोथी)	१४६२	धर्मकीर्ति	१४६५	लीं.
३८	सातव्यसनकथासमुच्चय	१८००	दि.सकलकीर्ति B		डेक्कन.
	„	५३०	„		लीं.
३९	सुकृतसागर C	१६००	रत्नमंडनगणि		डेक्कन.
४०	स्मरनरेंद्रादिकथा	पत्र १२८			भ. २
४१	हास्यकथा	१७५०	(जैन)		रि. ६
४२	रहस्यकथासंग्रह	१०००	मल.श्रीतिलक शिष्य	१४१३	सं.

A आ कथा जेसलमेरनी टीपमां हीरालालना नोंधमां छे.

B अमदावादना देलाना भंडारनी टीपमां एना कर्त्ता सोमकीर्ति जणाव्या छे.

C आ ग्रंथ एसिआटिक सोसायटीना रिपोर्टमां कर्त्तानां नाम साथे नोंधेल छे.

लीस्ट नंबर ७.

जैन माहात्म्य.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां
	वर्ग १ लो.				
	माहात्म्यना ग्रंथो.*				
१	गिरनारकल्प	पत्र २			अ. १
२	दीपालिकाकल्प	३१८		१३२५	पा. ४
	„ (बीजो)	५१३	जिनसुंदर	१४२३	पा.१·३ प्रे
	„ (त्रीजो) A	ताड	सर्वानंद		पि. रि. ५
	„ प्रा. (चोथो)		कनककुशल		अ. १
	„ प्रा. (पांचमो)	४२५	जिनप्रभ	१३८७	पा. ४ मा
	„ अवचूरि				भाव.
	दीपालिकाकल्प B (छठ्ठो)	२७५	विनयचंद्र	१३८५	बृ पा. २
३	रावणशुद्धिस्वरूप	१२३			पा ४
४	वैभारगिरिकल्प	पत्र ३			राधण.

* एमां तीर्थ, पर्व आदिना महात्मना वर्णनना ग्रंथोने एकत्रित करी तेमने क्रमवार
उपरांत स्तोत्रना ग्रंथो पण महात्म्यने लगता होवाथी तेमनो पण आज वर्गमां समावेश करवामां

† प्रोफेसर मणिलाल नभुभाई पोतानु लीस्ट के जेमां सन १८८२ मां पाटणना बारभंडार
कोनी हकीकत साथे नोंध करी छे तेमां आ ग्रंथ रच्यानो सं. १४५३ जणावे छे.

A पिटर्सन रिपोर्ट पांचमाना पेज ५४ मां आ कल्पनी नोंध करी छे. त्यां एनी प्रान्त
उपरथी "तस्मादवर्ततसर्वत्रसर्वजगति मातृद्वितीयाभिधम्" आवी रीते आदीने छेवटमां
श्रीसर्वानंदविरचितो दीपोत्सवकल्पः समाप्तः एवी नोंध करी छे.

B एने लघुदीपालिका कल्पना नामथी विशेष ओळखवामां आवे छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
५	शत्रुंजयकल्प	गा.४७	धर्मघोष		पा. ३. ४.
	वृत्ति	१२५००	शुभशील	१५१८	पा. ५
	शत्रुंजयकल्प A		पादलिप्तसूरि		यू.
६	शत्रुंजयादिद्वेसठतीर्थकल्प B	३५०३	जिनप्रभसूरि	१३८५	यू.
७	शत्रुंजयमाहात्म्य C	१००२४	धनेश्वरसूरि		पा. ३. ४. डी.
	„ (गद्य)	पत्र २९८	हंसराज		भरूच.
८	शत्रुंजयनोद्धारवर्णन	पत्र१६			भाव.
९	संकेतशिखरमाहात्म्य	२०००	दि. दीक्षितदेवदत्त D		A. S.
१०	सिद्धचक्रकल्प	१२३७			पा ४
११	स्वामिवात्सल्यमाहात्म्य E	२०००			जेसल.

A [illegible] करी अने पादलिप्त सूरि [illegible] छे.

B एना अंते [illegible] छे:—

"शत्रुंजये ११ [illegible] सं. म. ११८९ [illegible] जिनप्रभसूरिणा: [illegible] १५०१ "

C एना [illegible] छे. [illegible] छे.

D आ [illegible] नथी.

E [illegible] छे.

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
	वर्ग २ जो.				
	स्तुति-स्तोत्रो.				
१	अजितशांतिस्तव	गा. ३८	नंदिषेण		बृ. पा. १-३ सुलभ
	वृत्ति	७४०	जिनप्रभ	१३६५	बृ.पा. १ सुलभ.
	वृत्ति A (बीजी)				बृ.
	अवचूरि	३२०			पा. ३ A. S.
	अजितशांतिस्तव (बीजो)		जयशेखर		A S.
	अजितशांतिस्तव B (त्रीजो)	३९	शांतिचंद्र	१६५१	नगीनदास.
२	अष्टोत्तरीस्तोत्र	गा. ११२	आंच. महेंद्रप्रभ		लींबडी,
३	अतिशय पंचाशिकास्तोत्र				भाव.
४	अनेकैः स्तुति C		(अपूर्ण)		संघात.
५	अयोगान्ययोगव्यवच्छेदद्वा त्रिंशिका D		हेमाचार्य		पा. ४ कोडाय.

A आ वृत्ति बृहट्टिप्पनिकामां नोंधी छे, पण त्यां कर्त्तानुं नाम आप्युं नथी.

B आ अजितशांतिस्तवनुं आदिपद ' सकलार्थसिद्धिसाधनहरिचंदनचारुचरणपरिचरणे ' एवं छे.

C आ स्तुति संघातनी टीपमांथी मळी छे, तेनी रचना उपरथी ते यशोविजयजी उपाध्याये रची होय तेम विशेष संभव थइ शके तेम छे.

D आ बे बत्रीशीओ जुदी जुदी छे. तेमां स्याद्वादमंजरीनुं मूळ अन्ययोगव्यवच्छेदिका बत्रीशी अने बीजी अयोगव्यवच्छेद बत्रीशी छे.

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
६	अरनाथस्तव				डेक्कन.
	वृत्ति		धर्मघोषगणि		डेक्कन.
७	अर्हत्स्तव (सं. गद्य)		सिद्धसेन		A. H.
८	अर्हत्सहस्रनामसमुच्चय	पत्र ६			म. २
	वृत्ति	पत्र ५७			म. २
९	अर्हत्सहस्रनामस्तोत्र	पत्र ८	देवविजयगणि		म. २
१०	अष्टादशारस्तोत्र	२२०	सोमसुंदर		पा. ४
	अवचूरि	पत्र ५	सोमदेव	१४९७	पा. ४ प्रो. मणिलाल
११	अष्टपंचाशत्स्तुति				पा. ३-५
	वृत्ति	२८००	सोमतिलक		पा. ३-५
१२	अष्टप्रवचनमाला A (प्रा.)	पत्र ६			प्रो. मणिलाल.
१३	आदिजिनादिस्तोत्र		जयकेसरी		पा. ३
	आदिजिनस्तुति	गा. ५१			जगीतदास.
	आदिदेवस्तवन (मंत्रजंत्रकलित)				A. S.
	वृत्ति	२००			A. S.
	आदिनाथजगन्नाथस्तुति				म. १
१४	आनंदलहरी				पा. ४
	वृत्ति	१५००	नरसिंह B		पा. ५.

A आ स्तोत्रनुं नाम 'अष्टप्रवचन माला' पण होय तो होय. प्रोफेसर मणिभाइए पोताना लीस्टमां अष्टप्रवचनमालाना नामथी तेनी नोंध करेली होवाथी तेज नामे तेने अहीं नोंध्यु छे.

B आ नाम अन्यदर्शनी जेवुं लागे छे ते उपरथी मूळना कर्ता पण अन्यमतीज विशेष संभवी शके. कर्ता नरसिंह ते कोण हता ते बराबर चोकस निर्णय आ ग्रंथनी प्रशस्ति जोया वगर थइ शके.

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
	वर्ग २ जो.				
	स्तुति-स्तोत्रो.				
१	अजितशांतिस्तव	गा. ३८	नंदिषेण		बृ. पा. १-३ सुर
	वृत्ति	७४०	जिनप्रभ	१३६५	बृ.पा. १ सुलश
	वृत्ति A (बीजी)				बृ.
	अवचूरि	३२०			पा. ३ A. S.
	अजितशांतिस्तव (बीजो)		जयशेखर		A S.
	अजितशांतिस्तवB (त्रीजो)	३९	शांतिचंद्र	१६५१	नगीनदास.
२	अष्टोत्तरीस्तोत्र	गा. ११२	आंच. महेंद्रप्रभ		लींबडी,
३	अतिशय पंचाशिकास्तोत्र				भाव.
४	अनेकैः स्तुति C		(अपूर्ण)		खंभात.
५	अयोगान्ययोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिका D		हेमाचार्य		पा. ४ कोडाय.

A आ वृत्ति बृहट्टिप्पनिकामां नोंधी छे, पण त्यां कर्त्तानुं नाम आप्युं नथी.

B आ अजितशांतिस्तवनुं आदिपद ' सकलार्थसिद्धिसाधनहरिचंदनचारुचरणपरिचरणे ' एवुं

C आ स्तुति खंभातनी टीपमांथी मळी छे, तेनी रचना उपरथी ते यशोविजयजी उप रची होय तेम विशेष संभव थइ शके तेम छे.

D आ बे बत्रीशीओ जुदी जुदी छे. तेमां स्याद्वादमंजरीनुं मूळ अन्ययोगव्यवच्छेदिका बत्री अने बीजी अयोगव्यवच्छेद बत्रीशी छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या संवत.	क्यां छे ?
६	[illegible]				देहला.
	वृत्ति		[illegible]		देहला.
७	अर्हत्स्तव (सं. गद्य)		सिद्धसेन		A. H.
८	अर्हन्नामसहस्रसमुच्चय	पत्र ६			भ. २
	वृत्ति	पत्र ५७			भ. २
९	अर्हन्नामसहस्रनामस्तोत्र	पत्र ८	देवविजयगणि		भ. २
१०	[illegible]स्तोत्र	१६०	सोमसुन्दर		पा ४
	अवचूरि	पत्र ४	सोमदेव	१४९७	पा. ४ डे. [illegible]
११	[illegible]स्तुति				पा. १-५
	वृत्ति	२८००	सोमतिलक		पा १-५
१२	[illegible]माला A (प्रा.)	पत्र १			डे. [illegible]
१३	आदिजिन[illegible]स्तोत्र		[illegible]		पा. ३
	आदिजिनस्तुति	गा. ५१			[illegible]
	आदिदेवस्तव ([illegible])				A. S.
	वृत्ति	१००			A. S.
	आदि[illegible]स्तुति				ल. १
१४	[illegible]				पा. ४
	वृत्ति	१४००	[illegible] B		पा. ५

A [illegible]

B [illegible]

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे !
	वर्ग २ जो.				
	स्तुति-स्तोत्रो.				
१	अजितशांतिस्तव	गा. ३८	नंदिषेण		बृ. पा. १-३ इ
	वृत्ति	७४०	जिनप्रभ	१३६५	बृ.पा. १ सुल
	वृत्ति A (बीजी)				बृ.
	अवचूरि	३२०			पा. ३ A. S
	अजितशांतिस्तव (बीजो)		जयशेखर		A S.
	अजितशांतिस्तवB (त्रीजो)	३९	शांतिचंद्र	१६५१	नगीनदास.
२	अष्टोत्तरीस्तोत्र	गा. ११२	आंच. महेंद्रप्रभ		लींबडी,
३	अतिशय पंचाशिकास्तोत्र				भाष.
४	अनेकैः स्तुति C		(अपूर्ण)		खंभात.
५	अयोगान्ययोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिका D		हेमाचार्य		पा. ४ कोडाय

A आ वृत्ति बृहट्टिप्पनिकामां नोंधी छे, पण त्यां कर्त्तानुं नाम आप्युं नथी.

B आ अजितशांतिस्तवनुं आदिपद ' सकलार्थसिद्धिसाधनद्विचंदनचारुचरणपरिचरणे ' एवुं

C आ स्तुति खंभातनी टीपमांथी मळी छे, तेनी रचना उपरथी ते यशोविजयजी उ रची होय तेम विशेष संभव थइ शके तेम छे.

D आ बे बत्रीशीओ जुदी जुदी छे. तेमां स्याद्वादमंजरीनुं मूळ अन्ययोगव्यवच्छेदिका बत्री अने बीजी अयोगव्यवच्छेद बत्रीशी छे.

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
२०	एकीभावस्तोत्र				A. S.
	वृत्ति	२४०	वादिराज		A. S.
२१	कर्मस्तवन (प्रा.)	४२			पा. ४
२२	कल्याणमंदिरस्तोत्र		सिद्धसेन		पा. १ मुद्रित.
	वृत्ति	५२५	हर्षकीर्ति	१६६८	पा. १
	वृत्ति		माणिक्यचंद्र		पा. ३
	वृत्ति		जिनविजय	१७१०	पा. ३
	वृत्ति		उपकेशगच्छीय देवतिलक		पा. १ जे.
	वृत्ति	५५०	गुणसागर		पा. ५
	अवचूरि	४८०	गुणसेन A		पा. १-३ म. २ डे.
	कल्याणमंदिरस्तोत्र (बीजुं)		भावप्रभ	१७९१	भाव.
	वृत्ति	२०१२	स्वोपज्ञ		पा. ३-४. भाव.
	कल्याणमंदिरपादास्तवन				A. S.
	कल्याणमंदिर B (अभिनव)				म. १
२३	कल्याणिकस्तव				पा. ३
२४	क्रियाकलापस्तुति				पा. ४
	वृत्ति	पत्र ५	प्रभाचंद्र		पा. ४

A आ नाम पाटणनी टीपोमां मळ्युं छे तेना [illegible] अने [illegible] नोंध्युं छे. अमदावादना [illegible] टीपमां तथा डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां कर्तानुं नाम [illegible] नाम आप्युं छे. आ बे [illegible] अवचूरि रची छे ते [illegible] निर्णय थवो मुश्केल छे.

B एने [illegible] कहे छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां है
२५	क्रियागुप्तस्तोत्र A	५०	आंच.जयशेखर		जेसल.
२६	गुरुकुलादेर्षास्तव				A. S.
२७	गणधरस्तवन (प्रा.)	पत्र ७			प्रो. मणिला
२८	गुरुपादुकास्तोत्र	६			लॉबडी.
२९	गुरुपारतंत्र्यस्तव		जिनदत्त		पा. १-३.
	वृत्ति		जयसागर	१३६८	पा. १-५ A
३०	गुरुयमककाव्याष्टक (सं.)	पत्र १			प्रो. मणिला
३१	गौडीपार्श्वस्तोत्र B	का. १०८	यशोविजय		सं.
३२	गौतमस्तोत्र				पा. ३
३३	चउक्कसाय	.			भ. १ मुद्रित
	वृत्ति	.			भ. १
३४	चतुर्विंशतिजिनस्तव C	.	मल. देवप्रभ		वृ.
	चतुर्विंशतिजिनस्तवन (प्रा.)	१५५	जिनवल्लभ		पा. ५ जेसल
	चतुर्विंशतिजिनपूर्वभवोत्कीर्तनसंबद्धस्तवन	का. २७	रत्नसागरगणि		खंभात.
	चतुर्विंशतिजिनस्तुति	२०२	बप्पभट्टि		वृ. पा. ३-४
	अवचूरि				पा. ३

A आ स्तोत्र जेसलमेरनां भंडारमां करेली टीपमां नोंधायलुं छे. अने पं. आणंद सागरजी छे के आ नामनुं स्तोत्र तेमना जोवामां आवेलुं छे.

B आ स्तोत्र पूर्वे यशोविजयजीकृत ग्रंथोना वर्गमां नोंधेलुं छे छतां आ स्तोत्रनो वर्गे खास करीने अहीं पण नोंध्युं छे.

C वदाह्ड गच्छ बृहट्टिप्पनिकामां नोंधेल छे . . . थयुं नथी. तेना
" २४ जिनस्तवाः भक्तादि ३१ . . . छे. एमां अनुक्रमे दरेक
स्तवनी आठ आठ . एनी ३ . . . जोईये.

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रचना संवत्	क्यां छे?
	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
	„ A		[illegible]		[illegible]
	वृत्ति B	१५४१	[illegible]		[illegible]
	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]
	„		[illegible]		[illegible]
	अवचूरि	[illegible]			[illegible]
	[illegible]	५११	[illegible]		[illegible]
	अवचूरि				[illegible]
	[illegible]		[illegible]		[illegible]
	वृत्ति	८०			[illegible]
	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
	„	[illegible]	[illegible]		[illegible]
	अवचूरि		[illegible]		[illegible]
	[illegible]		[illegible]		[illegible]
	अवचूरि		[illegible]		[illegible]
	[illegible]		[illegible]		[illegible]
	वृत्ति	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
	चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र	५७५	मुनिसुंदर		पा. ३-५
	अवचूरि				पा. ३-५
	चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र		नरचंद्र		पिटर्सन रि. ५
	,, (गुप्तक्रिय) A		सागरचंद्र		A. S
	वृत्ति	२००			A. S.
	चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र		विलमविजय		नगीनदास.
	चतुर्विंशतिकास्तोत्र	५९	भूपाल तथा पद्मनंदि		पा. ५
३५	चतुःषष्टियोगिनीस्तुति	६०			A. S.
३६	चित्रस्तोत्र		देवसुंदर शिष्य साधुराज		पा. ५
	वृत्ति	२०८			पा. ५
३७	चित्रस्तोत्र (बीजुं)				पा. ५
	वृत्ति	८८			पा. ५
३८	चित्रबद्धपार्श्वस्तोत्र	पत्र २			भाव.
३९	चिंतामणि	११			ली.
४०	चिंतामण्यष्टक	पत्र ६			प्रो. मणिलाल.
४१	अनेनयेनस्तुति				पू.
	वृत्ति				पू.

A जेसलमेरनां टीपमां टीपवाने क्रियागुप्त तथा अचोकम नामथी जेनी नोंध करी छे अने तेज नामथी आ वर्गनी शरूआतमां जेने अमे नोंध्युं छे तेज आ स्तोत्र नहि होय? ते बाबतनी खरी खात्री जेसलमेरना भंडारमांनी प्रत परथी तपासवाथी थई शके.

क्रमांक.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
४२	अजितदुःखनस्तोत्र	३०	अभयदेव		पू. पा. १
	वृत्ति	२५१			पा. १
४३	अमरपदरनायस्तोत्र	गा. १०			डो.
४४	जिनकल्याणिकस्तोत्र	१०२	सोमसुंदर		पा. ४
४५	जिनपतिस्तोत्र		किरणकवि		रि. रिपोर्ट ५०
४६	जिनभयस्तोत्र		सोमसुंदर		पा. ३
	अवचूरि				पा. ३
४७	जिनराजस्तव (प्रा.)	४३	जिनप्रभाचार्य		पा. ५
४८	जिनविंशति A	३०			जेसल.
४९	जिनशतक	१००	जंबूमुनि		पू पा. ४ सुरत्नप.
	पंजिका	१५५०	सांबसाधु	१०२५	पू पा. १ सुरत्नप.
५०	जिनस्तुति B (स.)	२५	चंद्रगुप्त		नवीनदास.
	"		सोमप्रभ		पा. ३ भाव.
	"		जयतिलक		A. S.
५१	जिनसहस्रनामस्तोत्र		आशाधर		पा. ३
	"		जिनसेन		A. S.
	वृत्ति	३०००			A. S.

A का [illegible] छे.

B [illegible]

[illegible] छे.

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे?
५२	जिनेश्वरस्तोत्र	२७			नगीनदास.
५३	जिनस्तोत्र				पा. ३,
	अवचूरि		हर्षवर्द्धन		पा. ३
५४	जीरापल्लिस्तव				A. S.
	जीरापल्लिस्तवन	का. ४५	आंच. महेंद्रप्रभु		डॅ.
	जीरापल्लिस्तोत्र				पा. ३
	अवचूरि				पा. ३
५५	जैनधर्मवरस्तोत्र		भावप्रभ	१७९१	नि. रि. ५
	वृत्ति		भावप्रभ	१७९१	नि. रि. ५
५६	तिजयपहुत्त	गा. १४			पा. १ मुद्रित.
	वृत्ति		हर्षकीर्ति		पा. १-२
५७	तीर्थमाला (यमकबद्ध)		सोमप्रभ		पा. १.
५८	तीर्थमालास्तवन (प्रा.)	गा. १११			पा. ४ नगीनदास.
५९	तीर्थमालास्तोत्र		धर्मसूरि		A. S.
६०	देवागमस्तोत्र A.	११४	दिग. समंतभद्र		नि. रिपोर्ट ४
६१	[illegible]		जयानंद		पा. ३
	अवचूरि	२००	कनकर्षि		पा. ३ A. S.
६२	[illegible]	५०	जिनप्रभ		जेसल.

A. [illegible] ११४ [illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे?
६३	द्वात्रिंशद् द्वात्रिंशिका (ताड) A	८३०	सिद्धसेन		डेक्कन पेज १६७
६४	द्विवर्णरत्नमालिका		पुण्यरत्न		पा. ३
	वृत्ति	पत्र ११	धनर्षि		पा. ३
६५	धनपाल पंचाशिका		धनपाल		वृ.
	वृत्ति	११००	देवभद्र शिष्य प्रभानंद		वृ. पा.२-३-४-५
	वृत्ति (संक्षिप्त)				वृ.
	अवचूरि		धर्मशेखरोपाध्याय		पा. ३
	अवचूरि (बीजी)	३३६	नेमिचंद्र		पा. ४
६६	धरणोरगेंद्रस्तव	ताड			पि. रि. ५
	वृत्ति				पि. रि. ५
६७	नंदिस्तुतिव्याख्या	पत्र ३	गुणसौभाग्य		पा. ५
६८	नमस्कार द्वात्रिंशिका B		(जैन)		डेक्कन.
६९	नमस्कारस्तव (प्रा.)		जिनकीर्ति		A. S.
	वृत्ति	२५०	"		A. S.
७०	नवग्रहस्तोत्र	११	भद्रबाहु		[illegible] मुद्रित.
७१	नमिऊण	२५			पा. ३ पि. रि. ५ मुद्रित.
	"	गा. २४			[illegible]

A [illegible] डेक्कन [illegible] छे. [illegible] छे. [illegible]

B [illegible] डेक्कन [illegible] छे. [illegible] छे [illegible] छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या. नो सं.	क्यां छे ?
७२	नमिरसुरस्ताव				पा. ४
७३	नाभेयजिनस्तुति		विश्वसेन A		A. S.
७४	नाभेयस्तोत्र	गा. २५			लींबडी.
७५	निरंजनपरमात्मद्विंशतिका				A. S
७६	नेमिस्तोत्र	गा. १४			लींबडी.
	,,	१५	जिनवल्लभ		जेसल.
७७	नेमिचरित्रस्तोत्र (प्रा.)	११४			पा. १
७८	नेमिस्तवन	२४	विजयसिंह		पा. ४
७९	नेमिगद्यावली				पा. २
८०	नेमिशतक	११७			पा. ५ म. २
८१	नमोस्तु वर्धमानायस्तुति				म. १ मुद्रित.
८२	पठितसिद्धसारस्वतस्तोत्र	११			मगनदास.
८३	पंचजिनस्तव (षड्भाषा)	८०	जिनकीर्ति		पा. ३
८४	पंचपरमेष्ठिस्तव		जिनकीर्ति	१४९४	पा. ३
	वृत्ति		,,	१४९४	पा. ३
८५	पंचपरमेष्ठिस्तव		जिनप्रभ		A. S.
	,, B	१००	अभयदेव		जेसल.

A आ कोई दिगंबर आचार्य होवा जोईये एम तेमना नाम उपरथी जणाय छे.

B आ पंचपरमेष्ठिस्तव [illegible] कोई ठेकाणे नोंधेलो होवाथी तेना कर्त्ता माटे संदेह रहे छे. कदाच ते जिनप्रभसूरिकृत तेम पण होय तो ना नहि.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
८६	पंचपरमेष्ठिस्तोत्र				A. S.
८७	पंचविंशद्दिरायस्तव	६०			अेसइ.
८८	पंचमीस्तोत्र				A. S.
८९	परमेष्ठिस्तव (प्रा.)	४२			पा. ४
९०	परमानंदस्तोत्र	का. ८	हर्षमुनि		हीं.
९१	पद्मावत्यष्टक				A. S.
९२	पद्मावतीस्तोत्र				पा. १ माव.
	"		पूर्णीभूषण		A. S.
९३	पद्मावतीसहस्रनाम				पा. १
९४	प्राकृतवीरस्तुति (प्रा.)				भाव.
९५	पार्श्वनाथाष्टक		इंद्रनंदि		डेक्कन.
	वृत्ति		श्रुतकीर्ति		डेक्कन.
९६	पार्श्वस्तोत्र	पत्र १			पा. १
	"	गा. १४	जिनवल्लभ		हीं.
	"	१२५	पार्श्वदेव		अेसइ.
	पार्श्वनाथस्तोत्र		महेंद्रसूरि		A. S.
९७	पार्श्वनाथादिस्तोत्र				पा. ३
९८	पार्श्वस्तव	का. ९	पद्मप्रभ		नगीनदास.
	वृत्ति	१००	मुनिशेखर		नगीनदास

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
९९	पार्श्वस्तवन (सटीक)	पत्र १	माणिक्यसुंदर		पा. ४
	पार्श्वस्तवन		जिनभद्र		मा. ४
१००	पार्श्वनामावली	११३	आंच. कल्याण सागर		पा. ४
१०१	पार्श्वभक्तामरप्रग्रथित	१५०			रि. ६
१०२	पुद्गलपरावर्तविचारस्तव	पत्र १			पा. १
१०३	पुंडरीकस्तव (प्रा.) A	गा. ११८			मनोनराम.
१०४	प्रणम्यस्तोत्र B (प्रा.)				प्रो. मणिलाल.
१०५	प्रभावकस्तोत्र C				जेसल.
	वृत्ति D	७००			जेसल.
१०६	फलवर्द्धिपार्श्वस्तवन		क्षमारत्नोपाध्याय		A. S.
	,, विवृति		दयासागर		A. S.
१०७	बटुकभैरवस्तोत्र				पा. १
१०८	बप्पभट्टिस्तुति E	९६			बु. सुरत.
	वृत्ति	७२१	सहदेव		बु. रि रि. ५

A नुं [illegible] “ [illegible] ” [illegible] छे.

B आ स्तोत्र [illegible] जणाय छे. [illegible] नथी.

C [illegible] छे.

D [illegible] “ [illegible] ” [illegible] छे.

E [illegible] ९६ [illegible] ७२१ [illegible]

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रचना-संवत.	क्यां छे?
१०९	[illegible]				A. S.
११०	भक्तामरस्तोत्र	४४	मानतुंग		पा १ छपेल
	वृत्ति	१५७२	गुणाकर	१४२६	वृ. ट. १ सुरत.
	„	४००	[illegible]		[illegible]
	„		[illegible]		[illegible]
	„		[illegible]	१५६२	[illegible]
	„		[illegible]		[illegible]
	„	४००	[illegible]		[illegible]
	„		[illegible]		[illegible]
	„		[illegible]		[illegible]
	„				[illegible]
	(कल्याण) भक्तामर A				[illegible]
१११	[illegible]				[illegible]
११२	[illegible]		[illegible]		[illegible]
	वृत्ति		„		[illegible]
११३	[illegible] B	[illegible]	[illegible]		[illegible]
	वृत्ति		[illegible]	[illegible]	[illegible] A. S.
	वृत्ति	११०			[illegible]

A [illegible]

B [illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं	क्यां छे ?
११४	भयहरस्तोत्र		जिनसिंह		डे. पे. ३५.
	वृत्ति				डे. पे. ३५.
११५	भरतक्षेत्रीयजिनस्तुति	११०			पा. ५
११६	भवानीसहस्रनाम	२०५			पा. ४
११७	भारती १०८ नाम स्तवन				पा. ३
११८	भूपालचतुर्विंशतिका		दिगंबर		A. S.
११९	मंगलार्दाभ्यरस्तोत्र A	का. १४	धर्मसूरि		लीं.
१२०	मंत्रस्तव				A. S.
	वृत्ति				A. S.
१२१	मंत्रबीजकोश				A. S.
१२२	महायमकमयपार्श्वस्तोत्र B	४०	पद्मप्रभ		जेसल.
१२३	महादेवद्वात्रिंशिका				पा. ३
१२४	महादेवस्तोत्र				भाव.
१२५	महावीरस्तोत्र		पार्श्वचंद्र C		पा. ५
	वृत्ति	९३	भावप्रभ		पा. ५

A आ नाम कांइक शक पडतुं लागे छे कारणके तपास करतां एम मालम पडे छे के पिटर्सन रिपोर्ट पांचमामां जणावेलुं अने आ पुस्तकमां कुलकोना वर्गमां नोंधेलुं नामे मंगलकुलक तेज ए होवुं जोईये. (जुओ आ पुस्तकना पेज २०२ मां)

B सदरहु स्तोत्र जेसलमेरनी हीरालालनी करेली टीपमां नोंधेलुं होवाथी शक पडतुं छे.

C आ पार्श्वचंद्र ते कोण हता ते जाणवा माटे तेनी प्रत तपासी नक्की करवुं जोईये.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
१२६	महावीरस्तोत्र (अपभ्रंश)	गा. ३०			नगीनदास.
१२७	महावीरस्तुति		जिनपति		A. S.
	"		जिनेश्वर		A. S.
१२८	महावीरचरित्र	गा. ४४	जिनवल्लभ		ली.
१२९	महीशस्तोत्र				भाव.
	"		जयचंद्रशिष्य सत्यशेखर		पा. ५
	अवचूरि				पा. ५
१३०	महेश्वरीसहस्रनाम				पा. १
१३१	यमकस्तुति A		धर्मघोष		A. H.
	वृत्ति		सोमतिलक		A. H.
१३२	यमकस्तुति				पा. २
	वृत्ति	साढ ५०	सोमप्रभ		पा. २-५
१३३	यशोभद्रसूरिगुणस्तुति B				ली.
१३४	युगादिस्तव				पा. १
१३५	युगादिदेवस्तोत्र				A. S.
	वृत्ति (मंत्रयंत्रगर्भित)	२००			A. S.
१३६	युगादिदेवस्तुति		सोमसुंदर		A. S.

A नुं आदिपद 'जगत्प्रभ' पण छे.

B नुं अपर नाम 'कुसुमवती' छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे?
१३७	युष्मदस्मदस्तव		सोमसुंदर		A. S.
१३८	रत्नकोश A	११५०	मुनिसुंदर		पा. ६
१३९	रत्नाकरपंचविंशतिका				पा. ३
	वृत्ति	१३०८	वाघजी		अ. १ नगीनदास.
	वृत्ति (बीजी)				कोडाय.
१४०	राणपुरस्तवन (सं.)	पत्र ४			प्रो. मणिलाल.
१४१	लघुस्तव		राजमुकुट B		डेक्कन.
	भाष्य				डेक्कन.
१४२	लघुस्तोत्र				जेसल.
	वृत्ति	४७४	सोमतिलक		जेसल.
१४३	लघुअजितशांति C	का. १७	जिनवल्लभ		बृ. पा. १ जेसल.
	वृत्ति	३२०	धर्मतिलक D		पा. १ अ. २.
	वृत्ति (बीजी)		जयसोमशिष्य गुणविजय		पा. ५
१४४	लघुअजितशांतिस्तव E		धीरगणी		नगीनदास.

A एमां अनेक स्तोत्रोनो संग्रह करवामां आव्यो छे.

B आ राजमुकुट ते कोई अन्यमति आचार्य होवा जोईये एम तेमना नाम उपरथी जणाय छे.

C एनुं अपर नाम "उल्लासिक्कमनक्खनिग्गयपहा दंडच्छलेणंगिणं" एवुं छे.

D धर्मतिलक सूरिनी पट्टावली आ रीते छः—

पहेला विजयसेनसूरि तच्छिष्य धर्मदेव तच्छिष्य धर्मचंद्र तच्छिष्य धर्मरत्न अने तेना शिष्य ते आ धर्मतिलकसूरि छे. अमदावादना चंचळबाईनी टीपमां कर्त्ताना नाममां धर्मतिलकसूरिना गुरु धर्मरत्ननुं नाम आप्युं छे. तेथी चंचळबाईना भंडारमांनी प्रत तपासी जोवानी जरूर रहे छे.

E एनुं प्रथम चरण "सम्मभवपारि मणलकरु" एवुं छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे?
१४५	लघुशांति		मानदेव		पा. ३ मुद्रित.
	अवचूरि				पा. ३ A. S.
१४६	वर्द्धमानद्वात्रिंशिका		सिद्धसेन		पा. १-३
	वृत्ति	पत्र ९			पा. ५ भाव.
	अवचूरि	२०३	आंच.उदयसागर		पा. ५
१४७	वर्द्धमानपद्त्रिंशिका				पा. ३
१४८	वाक्यपार्श्वविंशति		नयवर्द्धन		A. S.
१४९	विचारसारस्तवन	२२	माणिक्यसुंदर		पा. ४
१५०	विज्ञप्तित्रिवेणी	१०१२	मोक्षश्रावक		पा. १
१५१	विहरमानजिनस्तोत्र (प्रा.)	३२५	लब्धिसागर		पा. ३
१५२	विहारशतक A		रामचंद्रगणि		पा. ३-४ कोडाय
१५३	विल्हणपंचाशिका		विल्हण		A. S.
१५४	विविधस्तव				A. S.
१५५	विशाललोचन				अ. १ मुद्रित.
	वृत्ति				अ. १ मुद्रित.
१५६	विषापहारस्तोत्र	का. ४०	दिगं. धनंजय		लीं. A. S.
	टिप्पन				लीं.

A आ शतक पूर्वे पेज २१० मां रत्नकोश वर्गनी नोंधमां आव्युं छे, पण त्यां भूलथी कर्त्ता नाम नोंधतां रही गयुं छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
१५७	वीतरागस्तोत्र	४७४	हेमाचार्य		पा. १ सुलभ्य.
	वृत्ति	२१२५	प्रभानंद A		पू. पा. २-४-५.
	पंजिका	पत्र१८	नंदिसागर		अ. २
	अवचूरि B	१४००	प्रभानंद		पा. १-३
	अवचूरि (बीजी)		विशालराज		पा. ३
	अवचूरि (त्रीजी)	६२५	सोमोदयगणि		खं.
	अवचूरि (चोथी)	७००	महेंद्रशिष्य मेघराज	१५१०	लीं.
१५८	वीतरागस्तुति				A. S.
१५९	वीतरागनमस्कारस्तव				A. S.
१६०	वीतरागशतक				अ. २
	वृत्ति	पत्र ३८			अ. २
१६१	वीरचरित्रस्तव (प्रा.)		जिनवल्लभ		A. S.
	वृत्ति	८००	समयसुंदर		A. S.
१६२	वीरस्तव C		धनपाल		बृ.

A आ प्रभानंदसूरि ते रुद्रपल्लीय देवभद्रसूरिना शिष्य अने चंद्रसूरि तथा विमलसूरिना गुरु हता.

B आ अवचूरि ते वखते प्रभानंदसूरिकृत वृत्तिज तो नहि होय ते माटे पाटणना भंडारमांथी प्रत करीथी तपासी जोवानी जरूर रहे छे.

C आ वीरस्तव तेनी वृत्तिसाथे बृहट्टिप्पनिकामां नोंधेलो छे, तेना माटे ते टिप्पनिकामां आवी रीते नोंध छे " निमल्नदेवि इति वीरस्तवस्य पं. धनपालकृतस्य वृत्तिः सूराचार्यकृता २२५ "

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
	वृत्ति	२२५	गुणाचार्य A		बृ.
	वीरस्तव				पा. ३
	अवचूरि				पा. ३
	वीरस्तवन (प्रा.)				पा. ३ भाव.
	वृत्ति	५३२			भाव.
	वीरस्तवन	४०	विमलहर्षशिष्य मुनिविमल		प्रेसाद.
१६३	वीरजिनादिस्तोत्र		कल्याणविजय		पा. ३
१६४	वीरस्तोत्र	१५	जिनवल्लभ		प्रेसाद.
१६५	वीरादिदृष्टान्तस्तवन		मेरुनंदन		A. S.
१६६	बृहच्छांति		शांतिसूरि		पा. १ मुद्रित.
	वृत्ति	५३५७	हर्षकीर्ति		डेक्न.
	अवचूरि				भा. २
१६७	वैराग्यस्तोत्र	प्रा. ३०	[illegible]		A. H

A [illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रचना नो सं.	क्यां छे ?
१६८	शत्रुंजयचैत्यपरिपाटी				A. S.
१६९	शत्रुंजयमाहात्म्यस्तवन A				A. S.
१७०	शंखेश्वरपार्श्वस्तव				A. S.
	,, B	का.११२	यशोविजय		ले.
१७१	शांतिकर	गा. १३	मुनिसुंदर		पा. २ डी. A.S
	अवचूरि				रि. १
१७२	शांतिस्तोत्र C	२५	जिनवल्लभ		जेसल.
१७३	शांतिनाथचरित्र	गा. ३३	जिनवल्लभ		डी.
१७४	शांतिसमकस्तव				पा. १
१७५	शारदास्तव				A. S.
१७६	शाश्वतजिनस्तव (प्रा.)	२४	देवेंद्रमुनि		पा. ३-४.
	अवचूरि				पा. ३-४.
१७७	शाश्वतजिनस्तुति (प्रा.)	गा.२४	सिद्धसेन		मणिलाल.
१७८	शोभनस्तुति		शोभन		पा. ३-४ मुद्रित.
	चूर्णि	२३५०	जयविजय		पा. ३
	चूर्णि (बीजी)	२२००	सिद्धचंद्रगणि		रि. १
	चूर्णि (त्रीजी)	१०००	धनपाल		मु. पा. ३. ४.

A आ स्तवन [illegible]

B आ स्तवन [illegible]

C आ स्तोत्र [illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रचना-नो सं	क्यां छे ?
	वृत्ति (चोथी)	पत्र ५८	देवचंद्र		ग. १
	वृत्ति (पांचमी)	पत्र ६८	सौभाग्यसूरि		भ. १
	वृत्ति (छट्ठी)		भानुचंद्र		भ. १
	अवचूरि	४९५	धर्मचंद्रशिष्य राजमुनि	११५१	पा. ३-४-५.
१७९	श्रीमत्तीर्थंकरपर्णास्तवन	का. ७			नगीनदास.
१८०	श्रीनेमिःपंचरूपादिस्तुति				भ. १ मुद्रित.
	वृत्ति				भ. १ मुद्रित.
१८१	श्रेयःश्रियांस्तवन A	पत्र २			प्रो. मणिलाल.
१८२	षड्भाषागर्भितवीरस्तोत्र				पा. ३
१८३	षण्णवतिजिनस्तोत्र B	५०	ज्ञानविलास		जेसल.
१८४	सकलार्हत्				पा. ३ मुद्रित.
१८५	सत्सूक्त (सं.)	पत्र ८			प्रो. मणिलाल.
१८६	सत्तावीशभवस्तवन (प्रा.)	पत्र ६			प्रो. मणिलाल.
१८७	सनत्कुमारचक्रवर्तिस्तवन (प्रा.)	पत्र १७			प्रो. मणिलाल.
१८८	सप्तशतिजिनस्तोत्र (प्रा.)				डॉ. A. S.
१८९	संसारदावानलस्तुति	का. ४			डॉ. मुद्रित.
१९०	समवसरणस्तोत्र	१००	दिगं. विष्णुसेन		A. S.

A आ स्तोत्र " भेदः भिन्नं " एवा पदथी शरु थतुं होवाथी तेज नामथी ओळखाय छे एम प्रो. मणिलाल नभुभाइए पोताना लिस्टमां जणाव्युं छे.

B.वराह स्तोत्र चेहडानेरनी टीपमां हीरडाउना भोयमां होवाथी तेना संबंधमां शक उठतो पडे छे.

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	टच्या-नो सं.	क्यां छे ?
१९१	समीनपार्श्वस्तोत्र	९	यशोविजय		थं.
१९२	सर्वजिनस्तुति				A. S.
१९३	सर्वज्ञस्तव				A. S.
१९४	सर्वज्ञस्तोत्र A	४०	सोमतिलक		जेसल.
१९५	सर्वतीर्थावलिस्तवन B	१२५	जिनप्रभ		जेसल.
१९६	सरस्वतीस्तव (महामंत्रगर्भित)				A. S.
१९७	सरस्वतीस्तोत्र	१३	बप्पभट्टिसूरि		नगीनदास.
१९८	साधारणजिनस्तव		सोमप्रभ		पा. २
	अवचूरि				पा. १
१९९	साधारणजिनस्तव		जयानंद		A. S.
	अवचूरि	२५०			A. S.
२००	सार्धशतक				पा. १
२०१	सारस्वतोद्धारस्तोत्र		मंदिररत्नशिष्य		नगीनदास.
२०२	सिद्धचक्रस्तवन (प्रा.)	पत्र १			पा. ४
२०३	सिद्धांतस्तव		जिनप्रभ		डेक्कन.
	अवचूरि		सोमोदय C		डेक्कन
	"		विद्यालरत्नशिष्य		ली.

A. B आ बन्ने स्तोत्रो पण जेसलमेरनी टीपमांथी नोंधेलां छे.

C कीलहॉर्न साहबनी टीपमां सिद्धांतस्तवनी अवचूरि आदिगुप्तनी लखेली छे एम जणाय छे. पण ते टीप बनावनारे कांईक भूल करी छे. एम प्रतिनी शेष उपरथी मालम पडे छे.

अंक.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
२०४	सिद्धिप्रियस्तोत्र		(दिगंबर)		A. S.
२०५	सीमंधरस्तुति	पत्र १	मुनिसुंदर		डे. पेज ६६ जेसल.
	अवचूरी				डेक्कन.
२०६	सुपार्श्वनाथस्तोत्र (सं.)	पत्र ५			प्रो. मणिलाल.
२०७	सूरिमंत्रगर्भित लब्धिस्तोत्र	पत्र ५			पा. ४ सं.
२०८	सेनसूरिकृतस्तोत्र	४७			सं.
२०९	स्तवनकोश	पत्र ४	विजयसेन		पा. १.
२१०	स्तोत्रकोश	पत्र २४	विजयपालसूरि शि ध्वजगमालगणि	१६५१	पा. ३.
२११	स्तोत्रमाला	पत्र १४			A. S.
२१२	स्तोत्रविधिपंचविंशति	३४००	तेजसिंह		A. S.

लीस्ट नंबर ८.

जैन भाषासाहित्य.

जैन भाषासाहित्य.

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या. नो सं.	क्यां छे ?
	व्याकरणना ग्रंथो.				
	वर्ग १ लो.*				
१	जैनेन्द्रव्याकरण	७०० A			जेसल. A. S.
	जैनव्याकरण B	पत्र ७८			भ. १
२	प्रेमलाभव्याकरण	२२१३	वाच. प्रेमलाभ	१२८३	जेसल.
३	बालबोधव्याकरण				
	मूळ (अष्टाध्यायी)	२७५	मेरुतुंग	१३०५	पा. ४ जे. भ. २
	वृत्ति C	४८०	”		पा. ३-४
	वृत्ति	५७९	”		पा. ३
	चतुष्कटिप्पन	२११८	”		पा. ३-५

* आ वर्गमां जैनाचार्योए करेला जे अमारा जाणवामां आव्या छे ते तमाम व्याकरणना ग्रंथो अनुक्रमवार नोंध्या छे. एना बीजा क्लासमां परमतना व्याकरण ग्रंथो उपर जैनाचार्योए रचेला व्याख्या-ग्रंथो नोंधवामां आवशे, अने त्रीजा क्लासमां व्याकरणना परचूरण ग्रंथो नोंधवामां आवशे.

A जेसलमेरनी टीपमां लखेला आ व्याकरण ४५०० नुं छे एम जणाव्युं छे. ते वखते दिगंबरो जेने जैनेंद्र कहे छे ते हशे.

B आ नाम सामान्य छे तेनुं खरुं नाम शुं छे तथा ते कोणे रचेलुं छे ते नथी कहेवाय, माटे अमदावादना डेलाना भंडारनी प्रत नजरे तपासी जोवानी जरूर छे. पं. आणंदसागरजी जणावे छे के मारे ते न्यासनो भाग हशे.

C आ वृत्ति ४ पाद सुधीनी छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
	छंदवृत्तिटिप्पन	७६७	मेरुतुंग		पा. ४
	आख्यातवृत्तिढुंढिका A	१७३४	,,		पा. ४–५
	प्राकृतवृत्ति	२२९	,,		पा. ३
४	बालशिक्षाव्याकरण B	१८५०	संग्रामसिंह		जेसल-बे.
	बालशिक्षाव्याकरण(बीजुं)C		भक्तिलाभ		जेसल.
५	बुद्धिसागरव्याकरण	७०००	बुद्धिसागर D		पा. १ जेसल.
६	भोजव्याकरण	२०००	वांच विनय-सागर		लीं.
७	मुष्टिव्याकरण		मलयगिरि		घू.
	वृत्ति E	४३००	,,		पा. १–५ डे.
	,, विषमपदविवरण	पत्र २८			भ. १
८	शब्दभूषणव्याकरण	३००	दानविजयोपाध्याय		डे. पेज २७७
९	शब्दार्णव F		सहजकीर्ति		A. S. डेक्कन.
१०	सिद्धसारस्वत G		देवानंद		

A आठ पादपुरां संपूर्ण छे.

B आ व्याकरण जेसलमेरनी बने टीपोमां नोंधायेलुं छे, पण हीरालाले पोताना नोंधमां एना कर्ता विजयसिंहसूरि छे एम जणावीने ग्रंथ रच्यानी साल १३३६ नी नोंधी छे. तेथी शक रहेवो पडे छे.

C आ बीजुं बालशिक्षा व्याकरण हीरालालना नोंधमांथीज मळी आव्युं छे.

D आ बुद्धिसागरसूरि ते वर्धमानसूरिना शिष्य जिनेश्वरसूरिना गुरुबंधु हता. एटले तेओ विक्रमनी अगीआरमी सदीनी आखरमां विद्यमान हता. बुद्धिसागरसूरिए सदरहू व्याकरण अन्यमतिओना आग्रेहथीज रच्युं छे. अने तेनी रचना तेमणे जाबालीपुरमां करी छे.

E डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां आ वृत्तिने 'शब्दानुशासनवृत्ति' एवा सादा नामथीज नोंधी छे. अने ते त्रुटक छे.

F डेक्कनकॉलेजना रिपोर्टमां एनी श्लोकसंख्या१२००नोंधीने तेनुं नाम 'सिद्धशब्दार्णव' एवुं नोंध्युं छे.

G सिद्धसारस्वत व्याकरण कनकप्रभना गुरु देवानंदसूरिए रच्युं हतुं एम आगळे सांभळिए छीए पण ते अमोने अद्यापपर्यंत क्यांहपण उपलब्ध थयुं नथी. पं० आणंदसागरजी जणावे छे के. देवानंदसूरिए व्याकरण रच्युं नहि होय अने वखते सरस्वतीनो मंत्र सिद्ध कर्यो हशे तेथी तेम कहेवायुं हशे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता	रच्यानो सं.	क्यां छे।
११	हैमव्याकरण. •				
	मूळ (सूत्रो)	११००	हेमाचार्य		पू.
	उणादि	२००	,,		पू. पा. १-४ लीं.
	लिंगानुशासन	३००	,,		पू. पा. १-४ लीं.
	हैमबृहद्वृत्ति A	१८०००	,,		पू मुद्रित.
	,, बृहन्न्यास B	८४ ००	,,		पा. १-४ वाघण.
	,, लघुन्यास C	५३०००	रामचंद्रगणि		पू.
	,, लघुन्यास	९०००	धर्मघोष		पू. पा. १-५ डे.
	,, परिभाषावृत्ति	४०००			पू.
	,, न्यासोद्धार D		कनकप्रभ		पू. मुद्रित
	,, ढुंढिका (बृहद्वृत्ति विषमपदव्याख्या)	४८१८			पू. पा. १
	,, दशपादविशेष	पत्र ३१			पा. ३
	,, दशपादविशेषार्थ	पत्र ९			पा १

• एने सिद्धहेम, सिद्धहेमशब्दानुशासन. हैमव्याकरण एवा नामोथी ओळखवामां आवे छे.

A आ वृत्तिनी प्रतिओ पाटण, [illegible], [illegible] तथा [illegible] मळी १८००० पत्र छे.

B आ न्यासना पाद १-३-४-५-६-७-८-१२ तथा २० मळे छे. [illegible]

C एनुं अपरनाम '[illegible]' एवुं छे.

D आ [illegible] छे.

अनुक्रम	नाम.	श्लोक	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे?
	हैमबृहद्वृत्ति (ढुंढिका) A				बृ.
	,, ढुंढिका (बृहद्) B	८०००	सौभाग्यसागर	१५९१	पा. ३ डे.
	,, ढुंढिका (लघु)	२३००C			भाव.म. २
	,, ,, वृत्ति	पत्र २१४	उदयसौभाग्य		भाव.
	,, बृहद्वृत्तिसारोद्धार	पत्र ४१			पा १
	,, लघुवृत्ति		स्वोपज्ञ		पा. १.
	,, लघुवृत्ति	६०००	काकलकायस्थ		बृ. पा. १-२ डे
	हैमलघुवृत्ति ढुंढिका D	३२००	मुनिशेखर		बृ. पा. १-३
	,, ,, अवचूरि E	२२१३			बृ.
	,, ,, अवचूरि	पत्र १५	धनचंद्र		पा १-२-४-५
	,, प्राकृतव्याकरण F		हेमाचार्य		बृ पा. १
	,, प्राकृतपादवृत्ति	२४८५	स्वोपज्ञ		बृ.
	,, दीपिका	१५००	(द्वि.) हरिभद्र		बृ. पा. १
	,, ,, अवचूरि	७३८	हरिप्रभसूरि		पा. १

A आ ढुंढिका चतुष्क, आख्यात अने कृद् उपर छे.

B आ लघुवृत्ति चतुष्क, आख्यात, कृद् अने तद्धित उपर छे. एमनी टीकामां पूरी श्लोकसंख्या ८००० नी आपी छे.

C [illegible]

D ढुंढिकाने टीका पण कहेल छे.

E आ अवचूरि चतुष्क वृत्ति उपर थोडी छे.

F आ प्राकृत व्याकरण ते सिद्धहेम शब्दानुशासननो आठमो अध्याय छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे?
	हैमचतुर्थपादवृत्ति		हृदयसौभाग्य	१५९१	पा. १
	,, उदाहरणवृत्ति	पत्र १			पा १
	,, दोधकार्थ	पत्र १३			पा. १
	प्राकृतरूपसिद्धि A	१५००	मल. नरचंद्र		बृ. पा. २-४ A.S.
	दीपिका				डेक्कन.
	हैमव्याकरणदीपिका	६७५०	जिनसागर		डेक्कन.
	,, उणादिवृत्ति B	३२५०	स्वोपज्ञ		बृ. पा. १-४ ली. मुद्रित.
	,, ,, लघुवृत्ति		,,		पा. १
	,, लिंगानुशासनवृत्तिC	३६८४	,,		बृ. ली. मुद्रित.
	,, वृत्ति (दोधी)	१२११	जयानंद		पा. १-४
	,, अवचूरि	१०७२	रत्नशेखर		अ. १
	,, दुर्गपदप्रबोध	१९५०	ज्ञानविमलशिष्यवल्लभ	१६६१	पा. ५
	हैमधातुपारायण	५६००	हेमचंद्र		मु. सुरत.
	,, धातुपाठ (स्वरवर्णानुक्रम १६)	७६०	पुण्यसुंदर		A.S.
	,, धातुपाठ	३२५			पा. ३
	,, धातुवृत्ति	पत्र३०६			भाव.
	,, क्रियारत्नसमुच्चय (सवोजक)	५७७८	गुणरत्न	१४६६	पा. १-२-३-४ मु.

A एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां "प्राकृतरूपसिद्धिर्हैमव्याकरणोदाहरणवृत्तिरूपा मलधारि पं० नरचंद्रकृता प्राकृतदीपिकाख्या १६००" आवी नोंध छे.

B C उणादिनुं मूळ तथा लिंगानुशासननुं मूळ प्रथम नोंधेलुं होवाथी अहीं नोंध्युं नथी.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो स.	क्यां छे ?
	क्लास २ जो.				
	परमतना व्याकरण ग्रंथो उपर जैनाचार्योए करेला व्याख्या ग्रंथो.				
१	कलापव्याकरण A		कलापकमुनि		वृ.
	,, चतुष्काव्याख्यातदुर्गवृत्ति	१०००	दुर्गसिंह		वृ.
	,, दौर्गसिंहीवृत्ति B	४०००	पृथ्वीचंद्रसूरि		जेसल.
	,, ,, C	८०००	राजशेखरशिष्यमुनिशेखर		जेसल.
	कौमारसारसमुच्चय D	३१००			वृ.
	,, उणादिवृत्ति E				वृ.
	,, आख्यातवृत्ति	५८०३	मोक्षेश्वर F		पा. १
	,, आख्यातचंद्रवृत्ति	४६०५			पा. जेसल.
	,, आख्यातवृत्तिविवरण G				वृ.

A एनुं अपरनाम ' कातंत्र ' पण छे.

B आ वृत्ति हेमचंद्रनी टीकामां [illegible] नोंधी छे अने ते शुद्ध छे एम जणाय छे.

C आ वृत्ति ते कदाच बृहट्टिप्पनिकामां जणावेलुं कातंत्रवृत्ति टिप्पण होय तो होय, [illegible] आ वृत्ति [illegible] कर्त्तानां नाम [illegible] छे. आ [illegible] [illegible] जेसलमेरमां [illegible] [illegible].

D बृहट्टिप्पनिकामां एना माटे नीचे मुजब नोंध छेः—

" [illegible] ३१०० "

E आ वृत्ति पण [illegible] छे.

F आ नाम कोइ ठेकाणे [illegible] होय तेम लागे छे.

G [illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
	कलापनाख्यातवृत्ति A	१२५			पु.
	„ आख्यातावचूरि	पत्र ३६			पु.
	„ दुर्गवृत्तिटिप्पन	८०००			पु.
	कातंत्रदीपिका	४०००	धीरसिंहपौत्र-प्यारादासपुत्रगौतम		प्रेसल-बे.
	„ विभ्रमवृत्ति B	५००	जिनप्रभ		प्रेसल.
	„ संभ्रम	ता.२२५			प्रेसल-बे.
	कातंत्रदुर्गपदप्रबोध	११६१	प्रबोधमूर्तिगणि		प्रेसल-बे.
	कातंत्रोत्तर C	७००	विद्यानंद		पु. प्रेसल.
२	सारस्वत वृत्ति D	७५००	चंद्रकीर्ति		पा. ३
	„ (बीजी)	१५३५	सहजकीर्ति		A. S.
	„ (त्रीजी) E	पत्र४१७	नयसुंदर		पा. १
	„ (चोथी)	२१५०	भानुचंद्र		पा. ५
	„ (पांचमी) F	११००	दयारत्न		अजमेर.
	„ ढुंढिका	४५००	मेघरत्न		दि. १
	„ [illegible]	[illegible]	[illegible] G		भांडारकर.
	सारस्वतमंडन	१५००	मंडन H		डे. [illegible]

A [illegible] छे.

B [illegible] छे.

C [illegible]

D [illegible] छे.

E [illegible] छे.

F [illegible] छे.

G [illegible]

H [illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे?
	क्लास १ लो.				
	व्याकरणना परचूरण ग्रंथो.				
१	अंतर्गणदीपिका	पत्र ४२			भ. १
२	अव्ययदीपिका		देवदत्त		भ. २
३	अनिट्कारिकाविवरण	१००	क्षमामाणिक्य		A. S.
	"		हर्षकीर्ति	१६६३	ही.
४	उक्तिक	२०७	जिनचंद्र A		जेसल.
	"	४१५	सोमप्रभ		पु पा. ४
	" B	५५०	कुलमंडन	१४५०	पा. ४ ही.
५	उक्तिरत्नाकर	६१५	साधुसुंदर		A. S.
६	उक्तिसमय	पत्र ३	धीरसुंदर		भ २
७	कविकल्पद्रुमवृत्ति	१०५४			भाव.
	अवचूरि		विजयविमल		पा. ३
८	काशिकान्यास	पत्र ५१	जिनेंद्रबुद्धि		डे. पेज ८९
९	क्रियाकलाप	पत्र ५१	गुणसमुद्र		भ. २
	" (बीजो)	पत्र ५१	जिनदेव		भ. २
	" (त्रीजो)	पत्र ७	विजयानंद		भ. २

A आ नाम [illegible] छे.

B आ [illegible] छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो स	क्यां छे?
१०	गणरत्नमहोदधि		वर्द्धमान	११९७	पू. A. S.
	वृत्ति	४२००	,,		A. S.
११	स्यादिसमुच्चय				पू.
१२	धातुतरंगिणी A	२०००	हर्षकीर्ति		पा.२म.१-२. डेक्कन.
१३	धातुमंजरी	१२००	सिद्धिचंद्र		डी.
१४	धातुरत्नाकर	२१००	खर.साधुसुंदर	१६८०	पा. १-४-५
१५	पदव्यवस्था (कारिका)		विमलकीर्ति		A. S.
	वृत्ति	११००	उदयकीर्ति		A. S.
१६	पाइयसंगहनामविवेक	पत्र १८	नंदिरत्नगणि		म. ५
१७	प्राकृतप्रकाश	१२००	समंतभद्र		A. S.
	चतुष्कव्यवहार	पत्र २१	धर्मप्रभ		पा २
१८	प्राकृतयुक्ति	पत्र ९	देवसुंदर		म. २
१९	लिंगलिंगनिर्णय	पत्र ११	कल्याणसूरि		म. १
२०	वाक्यप्रकाश	११०	उदयधर्म	१५०७	डी. डेक्कन.
	वृत्ति	७११	हर्षकुल		पा ४-५ डी. भाव.
	वृत्ति (बीजी)	पत्र ११	रत्नसूरि		म. २
	वृत्ति (त्रीजी)	पत्र ११			म. २

A [illegible]

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
२०	विभक्तिविचार	३५०	खर.जिनपति		जेसल.
२२	शब्दरत्नाकर	१०००	साधुसुंदर		A. S.
	"	१२००			डॉ.
२३	शब्दरूपावली	४३५			पा. ४
२४	शब्दसंख्या	पत्र१०२	विनयभूषण A		म. १
२५	सिद्धांतचंद्रिका	६५०	ज्ञानतिलक		रि ३
	"		सदानंदि B		म. १
२६	सिद्धांतरत्न	८००	जिनचंद्र		A. S.
२७	स्यादिशब्ददीपिका	१०५०	जयानंदसूरि		डॉ.
२८	स्यादिसमुच्चय		अमरचंद्र		पू. पा. ३-४-५

A आ विनयभूषण सूरि तेमना नाम उपरथी कोई दिगंबर आचार्य होय तेम लागे छे.

B अमदावादनी टीपमांथी आ सदानंदि जैन हता एटली हकीकत जाणवामां आवी छे. बाकी तेमना माटे कोई विशेष पुरावो मळी शक्यो नथी.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
	वर्ग २ जो. *				
	शब्दकोशना ग्रंथो.				
१	अनेकार्थनाममाला (सटीक)	१८२६	हेमचंद्रसूरि		बृ. पा. १सुदस्प.
	वृत्ति	६०३०	स्वोपज्ञ		पा. ४
	वृत्ति A (बीजी)	१०६६०	हेमसूरि शिष्य महेंद्रसूरि		बृ. पा. १-२
	वृत्ति (त्रीजी)	२०००	सिद्धिचंद्र		पा. ५
	अनेकार्थतिलक	९००	महीप B		जे. डेक्कन.
	अनेकार्थध्वनिमंजरी	२६०			पा. ३-४. A. S.
	अनेकार्थमंजरी	१४०			डेक्कन.
	अनेकार्थरत्नकोश	पत्र १५	अंचलगच्छीय		म. १
२	अपवर्गनाममाला	२१५			सं.
३	अभिधानचिंतामणिनाममाला ‡	१५९१	हेमाचार्य		बृ. पा. १-२ मुद्रित.
	वृत्ति	१००००	स्वोपज्ञ		बृ. पा. ३-४

* आ वर्गमां जैनाचार्योए रचेला शब्दकोशना ग्रंथोने एकत्रित करी अनुक्रमवार नोंधवामां आव्या छे.

A सोमप्रभाचार्यकृत कुमारपाल प्रतिबोधने प्रथम वेडनार सांभळनार आ महेंद्रसूरि छे, एटले तेओ विक्रम सं० १२४१ मां विद्यमान हता.

‡ देशीनाममाला, शेषनाममाला, निघंटुशेष अने लिंगानुशासन आ चारे नाममालाओ आ नाममालाने लगती होवाथी अने अकारादि अनुक्रमथी नोंधतां ते छुटी थई जवाना भयथी साथ करीने अभिधानचिंतामणि पेटा भागमां दाखल करी छे.

B आ वृत्तिनुं नाम "सुभाषितरत्नाकर" एवुं छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या नो सं	क्यां छे ?
	वृत्ति (बीजी) A	१८०००	देवसागर		A. S.
	सारोद्धार	१००००	खर. श्रीवल्लभ	१६६७	पा. ३-४
	अवचूरि	४५००			पा. ३-४
	(१) देशीनाममाला	८५०	हेमाचार्य		वृ. पा. ४
	वृत्ति (रत्नावली)	३५००	"		वृ. पा. १-२ सुलभ.
	उद्धार *	१२००	विमल		पा. ४
	(२) शेषनाममाला	२२५	हेमाचार्य		पा. ३-४
	वृत्ति	पत्र ३१			म. २
	(३) निघंटुशेष		हेमचंद्र		लि. रि. ५ मुद्रित
	(४) लिंगानुशासननाममाला	पत्र ४			पा. ४ मुद्रित
	वृत्ति	११००	श्रीवल्लभ	१६५४	पा. ४-५
४	उणादिनाममाला	८१८	गुणशील		पा. ५
	एकाक्षरीनाममाला	१३२			A. S.
	"	पत्र ३	सुधाकलशमुनि		म. १
५	औष्ठ्यीनाममाला	पत्र ४			म. १
६	गुजराती संस्कृत कोश B	पत्र ९			डेक्कन
७	द्वयक्षरनाममाला	पत्र ५			म. १

A जेसलमेरनी टीपमां [illegible] आ कोशना करनार [illegible] छे पण अपूर्ण छे.

B आ कोश [illegible] लिपिमां [illegible] छे अने तेमां आदिमां [illegible] छे पण अपूर्ण छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं	क्यां छे?
८	धनंजयनाममाला A	३२०	धनंजय		पा. ३
९	धनकोश	पत्र ९			जेसल-थे.
१०	पंचवर्गपरिहारनाममाला	१५८ B	खर. जिनभद्र		सं. जेसल.
११	पंचवर्गसंग्रहनाममाला	७००	शुभशील		रि. ६
१२	पाइयलच्छीनाममाला	३६०	धनपाल		पा. ३ A. S.
१३	पारसीनाममाला C	६००	सलक्षमंत्रि	१४२२	सं.
१४	बीजनिघंटु	२००			डेक्कन.
१५	भानुचंद्रकृतनाममाला	पत्र ११३	भानुचंद्र		भ. १
१६	मनोरमनाममाला	पत्र ४५			जेसल-थे.
१७	मातृकानिघंट	८०	महीदास		डेक्कन.
१८	मिश्रलिंगकोश	पत्र ९	कल्याणसागर D		पा. ३
१९	मुग्धमेधाकरालंकार वृत्ति	पत्र ९			भ. १
२०	रत्नमालाअनेकार्थ	पत्र ४१			भ २
२१	रत्नकोशव्याख्या	५००		११७१	डॉ.
	रससार	पत्र १९	गोविंदाचार्य		भ. २

A [illegible] छे.

B [illegible] ४०० छे [illegible] छे.

C [illegible] “ [illegible] ” [illegible] छे.

D [illegible] छे.

नं.	नाम.	श्लोक	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
२२	रुद्रटालंकार वृत्ति	३९५०	नमिकवि		पा. १ मुद्रित.
२३	टिप्पन A	ताड४६	श्वेताम्बरभिक्षु		जेसल.
२४	रूपकमंजरी B	१००	रूपचंद्र		डेकन. जेसल-के
२५	लिंगभेदनाममाला		महेश्वर		A. S.
	वृत्ति				A. S.
२६	लोकसंव्यवहार		रविगुप्त C		नगीनदास.
२७	वक्रोक्ति पंचाशिका		रत्नाकर		A. S.
२८	वस्तुकोश	पत्र८०			डेकन.
२९	वस्तुविज्ञान रत्नकोश	पत्र १२			पा. ३-५ A. S.
३०	वाग्भट्टालंकार D		वाग्भट्ट		बृ.
	वृत्ति	२९५६	ज्ञानप्रमोद	१६८१	पा. ४ क. १ प्रो. मणि
	वृत्ति	१४००	जिनवर्द्धन		A. S.
	वृत्ति	१२००	राजहंसोपाध्याय		डेकन.
	वृत्ति	पत्र १८	कुमुदचंद्र		क. १
	वृत्ति	पत्र१८	वर्धमानसूरि		क. १
	अवचूरि	१३००	सिंहदेव		पा. १-३-४

A आ टिप्पन जेसलमेरनी टीपमां नोंधायलुं होवाथी अहीं नोंध्युं छे पण ते टीपमां ग्रंथ रचनारनुं नाम श्वेताम्बर भिक्षु एवुं वरिष्ठपत्र आपेलुं छे, माटे श्वेताम्बरभिक्षु कोण हता अने ते क्यारे थएला छे ते जाणवा माटे ते ग्रंथ फरीथी तपासवो जोइये.

B आ रूपकमंजरी नाममाला गोपालना पुत्र रूपचंदे अकबरना वखतमां सं० १६४४मां रची छे.

C चंद्रप्रभविजय नामक काव्यनो ग्रंथ पण आ रविगुप्ताचार्ये रच्यो हतो.

D एना छ अध्याय छे.

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो स.	क्यां छे ?
३१	विश्वकोश	१०००	महेश्वर		A. S.
३२	विश्वलोचनकोश		दिगंबर		दि. रि. ५
३३	शब्दभेदनाममाला				
	वृत्ति	३८००	ज्ञानविमल	१६५४	पा. ३ A. S.
३४	शब्दरत्नाकर	१०००	सुंदरगणि A		A. S.
३५	शब्दसंदोहसंग्रह	ता. ४७९			पा. २
३६	शारदीयनाममाला	४५०	हर्षकीर्ति B		रि. ६
३७	शेषनाममाला	पत्र ४१	साधुकीर्ति		डेक्कन.
३८	शृंगारमंडन		मंडनमंत्रि		पा. १
३९	संगीतमंडन		,,		पा. १

A आ नाम एशियाटिक सोसायटीना रिपोर्टमां लख्युं छे पण सुंदरगणि ते कोण हता ते संबंधी कशी हकीकत मळी शकती नथी.

B आ हर्षकीर्तिसूरि [illegible] थएला छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
	वृत्ति	३२५७	अमरचंद्रकवि A		वृ. पा. १-२ सुलभ
	परिमल	११२२	,,		वृ. पा. ३-४
	विवेक B	१००००	विबुधमंदिरगणि		जेसल. बे
२०	काव्यप्रकाशसंकेत	३२४४	माणिक्यचंद्र	C १२६६	वृ. पा. १-२ जेसल
२१	काव्यमीमांसा D	१५००	राजशेखर		पा. १ जेसल.
२२	काव्यलक्षण	२५००			जेसल-बे.
२३	नाटकदर्पणसूत्र	पत्र ८	रामचंद्र-गुणचंद्र		पा. ३
२४	प्रक्रीतालंकार वृत्ति	ता. ३०५	जिनहर्षशिष्य		पा १.
२५	भावदर्शाशी		जिनहंस		भाव.
२६	भावशतक		नागराज		पा ४

A आ अमरचंद्रसूरि विक्रमनी तेरमी सदीना आरंभमां थएला छे कारण के, तेमना गुरु वायडगच्छीय जिनदत्तसूरि मंत्रि वस्तुपालना वखतमां संवत् १२७७ मां विद्यमान हता. शिवाय पद्मानंदकाव्यना कर्त्ता पण एज अमरचंद्रसूरि छे.

B आ ग्रंथनुं नाम जेसलमेरनी बंने टीपोमां नोंधेलुं छे पण कर्त्तानुं नाम फक्त [illegible] टीपमां नोंधेलुं होवाथी ते बाबत चोकस निर्णय करवानी जरूर रहे छे.

C केटलीक टीपोमां आ संकेत रच्यानो संवत् १२१६ जणाव्यो छे पण ते [illegible] सुधारी लेवो घटे छे एम मालम पडे छे. कारण के आ माणिक्यचंद्रसूरि सागरेंदुसूरिना शिष्य हता [illegible] पार्श्वनाथचरित्र सं० १२७६ मां रच्युं छे, ते जोतां आ संकेतनो रचनाकाल पण आ समय [illegible] छे. एम चोकस निर्णय [illegible] १२१६ नो संवत् [illegible] छे. [illegible] माणिक्यचंद्रसूरि [illegible] छे, [illegible] सं. १२१६ नो रचनाकाल [illegible], कारण के [illegible] सं. १२२१ सुधी विद्यमान हता.

D एनुं अपरनाम 'कविरहस्य' छे.

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
	वर्ग ४ थो. *				
	छंदःशास्त्रना ग्रंथो.				
१	अजितशांतिछंदोविवरण	पत्र ३			पा. ४
२	क्षेपक विज्ञाहत्ता	१७००			पा. ४
३	गाथारत्नकोश A	७३			सू.
४	गाथारत्नाकर		(अपूर्ण)		पा. ४
५	गाथालक्षण (प्रा.)	१५०			पा. १-४
६	छंदः कोश (प्रा.)	गा १००	रत्नशेखर		म. २ A. S.
	वृत्ति	५७५	चंद्रकीर्ति		A. S.
७	छंदोनुशासन	२२५	हेमचंद्राचार्य		पा. ४ म. २
	वृत्ति B	२९९९	स्वोपज्ञ		पा. १-२-४-५ म २
	पर्याय	१८३३			पा ४
८	छंदोरत्नावली		अमरचंद्रकवि		पा. १
९	छंदरूपक	पत्र ७			म. २

* आ वर्गमां छंदना जे जे ग्रंथो जुदा जुदा भंडारमां छे ते ते अकारादि अनुक्रमवार मूक्या छे.

A एना कर्ते [illegible] " [illegible] ७३ " [illegible] छे.

B एनुं नाम " छंदश्चूडामणि " पण छे.

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
१०	छंदःशेखर	ताड ८	जयशेखर		जेसल-वे.
११	जयदेवछंदःशास्त्रवृत्ति A		वर्द्धमान		जेसल-वे.
	टिप्पन		श्रीचंद्र		मु.
१२	नंदिताढ्य	११६	रत्नचंद्र B		पा. ४ जेसल-वे.
	वृत्ति	४२१	"		पा. ४ जेसल-वे.
१३	पिंगलसारोद्धार	५५९			पा ४.
१४	वृत्तरत्नाकरवृत्ति	११००	सोमचंद्र	१३२९	पा. ३-४ A. S.
१५	"		समयसुंदर		म. १
१६	श्रुतबोधवृत्ति	३००	हर्षकीर्ति C		माध.
१७	"		हसराज		लीं. A. S.
१८	संगीतसहपिंगल				लीं.

A आ वृत्ति जेसलमेरनी बन्ने टीपोमां नोंधायेली छे बाकी क्यां पण उपलब्ध थई नथी माटे ते उतारो करवा योग्य छे.

B आ रत्नचंद्रगणि मांडव्यपुरगच्छना देवाचार्यना शिष्य हता. तेओए १०८ प्रकरणो रच्यां हतां, तेथी तेमने प्रकरणरत्नकारी एवु बिरुद आपवामां आव्युं हतुं.

C आ हर्षकीर्ति ते स्वमति छे के अन्यमति छे ते बाबतनो चोकस निर्णय मारनगरना प्रतो प्रशस्ति लेख तपासवाथी थई शके.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे?
	वर्ग ५ मो.*				
	काव्यना ग्रंथो.				
१	ऋषभोल्लासकाव्य	पत्र ८			भ. १
२	कविगुह्यकाव्य A		रविधर्म		जेसल.
	वृत्ति		"		जेसल.
३	कुमारविहारप्रशस्तिकाव्य	८७	हेमशिष्यवर्धमान		A. S.
४	गुरुगुणरत्नाकरकाव्य B	८००	सोमचारित्रगणि		डेक्कन.
५	चंद्रदूत काव्य	श्लो. २३	जंबुकवि C		पा. १ जे. A. H.
६	चंद्रलेखाविजयप्रकरण	२२००	हेमसूरिगुरुदेवचंद्र		जेसल-पे.
७	चंपूमंडन(द्रौपदीकथामय)		मंडनकवि D		पा. १.

* आ वर्गमां श्वेतांबर ने दिगंबर जैनाचार्योए रचेला काव्यना ग्रंथो अक्षरानुक्रमवार नोंध्या छे, उपरांत आ वर्गना छेडे केटलाक अन्यमतिए करेला काव्य ग्रंथो उपर जैनाचार्योए रचेली व्याख्याओ जुदे नोंध्या छे.

A आ काव्य तेनी टीका साथे प्रेडकोनेली डीस्कां ईत्यादिमां नोंध्युं छे.

B एनुं अपरनाम " हेमचरित्र " एवुं छे.

C डेक्कनकोलेजनी लीस्टमां श्रीजिनप्रभसूरि महाराजे आ काव्यना करनार वंसूनाम कवि अथवा छे. त्यारे पीटरसने एना कर्ता चंद्रकीर्ति नोंध्या छे, ते चोक्कस भूल छे, पण ईत्यादि आसा सोमा नाम वा काव्यनी रचना एमने ते बाबतनी शंका रहे छे.

D आ मंडनकवि ताजीर छे के कोई अन्य छे ते बाबत कांई चोक्कस पुरावो मळतो नथी.

४४

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
८	जयंतकाव्य	२२२०	अभयदेवसूरि A	१२७८	पा. १-४-५ मुद्रित.
९	जैनकुमारसंभव	१२२१	जयशेखर		पा. ४-५ मुद्रित.
	वृत्ति	पत्र ५२	धर्मशेखर		डेक्कन.
१०	जैन मेघदूत	४१८	मेरुतुंग		K. K.
	वृत्ति				K. K.
११	तिलकमंजरी	८७१३	धनपालकवि		पा.१-५ मुद्रित.
	टिप्पनक	१०५०	शांत्याचार्य B (पूर्णतल्लीय)		वृ. पा. ५
	„ सारोद्धार	१२२३	(लघु) धनपाल		वृ. पा. १-२
१२	त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र	३५०००	हेमचंद्र		सुरत. मुद्रित.
	काव्य C				
१३	द्व्याश्रय (सं.)	२८२८	हेमाचार्य		पा. १-२-३-४
	वृत्ति D	१७५१४	अभयतिलक	१३१२	वृ. पा. १-२-४

A आ अभयदेवसूरिने केटलीक टीपोमां प्रभाचंद्रना शिष्य बताव्या छे त्यारे पिटर्सन पोताना रिपोर्टमां देवचंद्र सूरिना शिष्य हता एम बताव्युं छे. [illegible] बन्ने [illegible] सूरि नहीं. [illegible] आ अभयदेवसूरि सं. १२०४ मां [illegible] [illegible] [illegible] होय अने [illegible] हेय पण होय.

B [illegible] शांत्याचार्ये [illegible] एम बताव्युं छे.

C त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र एक [illegible] छे ने [illegible] भागमां भाग्युं छे. [illegible] [illegible] एक [illegible] [illegible] छे. [illegible] [illegible] छे.

D आ वृत्ति [illegible] छे.

क्र.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता	रच्या-नो सं	क्यां छे !
	द्याश्रय (प्रा.)	१५००	हेमाचार्य		भाव. मुद्रित.
	वृत्ति	पत्र ८१	„ A		A. H.राघण.
	वृत्ति (वीजी)	४२३०	खर. पूर्णकलश	१३०७	पु. मुद्रित.
१४	द्विसंधान (राघवपांडवीय)		धनंजय (दिगं.)		पा. १-३
१५	धर्माभ्युदय काव्य B	५०४०	उदयप्रभ		पु. पा. २-३
१६	धर्मशर्माभ्युदय		दिगं. हरिचंद्र		पा. २-४ मुद्रित.
१७	नरनारायणानंदकाव्य	१६००	मंत्रि. वस्तुपाल		पु. पा. ४ डेक्कन.
१८	नलायन महाकाव्य	४७२४	माणिक्यसूरी		kot.
१९	नलोदयकाव्य	२५०	रविदेव		डेक्कन.
२०	नाभेयनेमिद्विसंधान		हेमचंद्र		पा. १
२१	नेमिदूत	का. १२६	सांगणसुत विक्रम		लीं.
२२	नेमिनिर्वाण (सर्ग १५)	१४००	वाग्भट		पु पा. १ मुद्रित.
२३	नेमिचरित्र महाकाव्य C		सूराचार्य	१०९०	पु.
	टिप्पनक	१४००			पु.
२४	पद्मानंदकाव्य	१८१९	अमरचंद्रकवि		पु. पा. १ सुलभ्य.
	वृत्ति	६२८१			पा ४

A राघणपुरनी पेठना आ वृत्ति जिनप्रभसूरिने नामे कही छे एम नोंधु छे माटे राघणपुरना भंडारनी प्रत तपासी नक्की करवु जोइये.

B आ धर्माभ्युदयकाव्य वस्तुपालचरित्र काव्य छे.

C हरकोइ चरित्र केना टिप्पन साथे मूकद टिप्पनिकामां नोंधु छे पण हजी सुधी अमोने ते क्यां पण उपलब्ध थयुं नथी.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं	क्यां छे?
२५	पाणिनीयद्व्याश्रय काव्य	१८०	विजयरत्न शिष्य		A. S.
२६	बालभारत (चंपू)	६७७४	अमरचंद्र		पु. पा. ४-५ मुद्रित.
.	„ (अंक २)	५००	राजशेखर		A. S.
२७	भावनामृतमहाकाव्य A	१४००			रि ६
२८	मनोदूत B	३००			पा. ५
२९	मेघदूत		(मंत्रि) विक्रम		अजमेर.
३०	यशस्तिलक(चंपू) C		सोमदेव (दिगं)	१०१६	A. S. मुद्रित.
	पंजिका		श्रीदेव		A. S.
३१	यशोधर काव्य		दिगं. माणिक्यसूरि		पा. ३
३२	राघवपांडवीय		दिगं. नेमिचंद्र		डेक्कन. मुद्रित.
३३	रायमल्लाभ्युदय		दिगं. पद्मसुंदर	१६१५	मुद्रित.
३४	लीलावतीसारकथा	५०००	(जैन)		जेसल.
३५	वस्तुपालकाव्य D	१६००	बालचंद्र		पा. १
३६	वासवदत्ता	पत्र १२	सुबंधुकवि		भाव. मुद्रित.
	वृत्ति	३२००	सिद्धिचंद्र		A. S.

A, B आ बन्ने काव्यो जैनाचार्ये रच्यां छे के ते कोइ अन्यमतिनां करेलां छे ते बाबतनी खात्री तेनी प्रतो नजरे जोवाथी थई शके.

C एनुं अपरनाम " यशोधरकाव्य " छे. आ काव्य श्रुतसागरसूरिकृत टीका सहित बे भागमां छपायेल छे.

D एनुं बीजुं नाम " वसंतविलास " एवुं छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
३७	विक्रमांकाभ्युदय	२५००	बिल्हण		बृ. पा. १ जेसल.
३८	विजयप्रशस्तिकाव्य	३०४०	वल्लभगणि		पा. ४ डे. मो. मणि.
	वृत्ति	१००००	गुणविजय	१६८८	पा. ४
३९	बिल्हणचरित्र	१५०	बिल्हण		A. S.
४०	शशांकसंकीर्तन A	ताड१६६			पा. २
४१	शालिचरित्रकाव्य	१२२४	पं. धर्मकुमार	१३३४	बृ. मुद्रित.
४२	शीलदूतकाव्य		सुंदरगणि		डेक्कन. सुलभ्य,
४३	सुकृतसंकीर्तन काव्य	९७६	अरिसिंह		पा. ५ डेक्कन.
४४	सुवृत्ततिलक B	३००	क्षेमेंद्र		A. S.
४५	सोमसौभाग्य	१२३०	प्रतिष्ठासोम	१५२४	पा. ४-५ मुद्रित.
४६	हरिविक्रमकाव्य		नाग. जयतिलक		पा. ४-५ मुद्रित.
	वृत्ति	१२०९३	स्वोपज्ञ	१४३६	पा. ४-५
४७	हीरविलासकाव्य	पत्र १२			स. १
४८	हीरसौभाग्यकाव्य	२३३	पद्मसागरगणि		पा. ३-४, मुद्रित.
	वृत्ति	९७४५	देवविमल		पा. ५A.S मुद्रित.

A सदरहु ग्रंथ पण पाटणना भंडार नंबर चोत्रानी नोंधेलो छे बाकी क्यां पण उपलब्ध थतो नथी माटे तेना कर्त्ता कोण छे तेनी साबी करी नकल उतारी लेवानी जरुर छे.

B आ क्षेमेंद्र ते कोण हता ते बाबतनो चोक्कस निर्णय एशियाटिक सोसायटीना संग्रहमांनी प्रत नजरे तपासवाथी थइ शके.

अंक	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
	क्लास बीजो				
	अन्यमतीए करेला काव्य ग्रंथो उपर जैनाचार्योए रचेला व्याख्यावाला ग्रंथो.				
१	कादंबरी टीका		सिद्धिचंद्र		डे. मुद्रित.
२	कादंबरी दर्पण		मंडण मंत्रि		पा. १
३	किरातार्जुनवृत्ति	७५००	विनयसुंदर		भांडारकर.
४	किरातार्जुनीयदीपिका	पत्र २०२	धर्मविजय		अ. १
५	कुमारसंभववृत्ति	पत्र ८०	विजयगणि		अ. २
६	खंडप्रशस्ति वृत्ति	पत्र ४६	विजयगणि A		डेक्कन
	„ वृत्ति	पत्र ४१	गुणविजय		अ. २
	„ वृत्ति (बीजी)	पत्र २१			पा. ४
७	घटखर्परवृत्ति		शांतिसूरि		जेसल.
८	दमयंती चंपु वृत्ति	१०००	प्रबोधमाणिक्य		पा. १-२-३-४
	„ चंपु वृत्ति	८८००	गुणविजयगणि		पा. ३ A. S.
	टिप्पन	१९००	चंडपाल		बृ. पा. १- जेसल.

A आ नाम धारीक थएलुं लागे छे. ठेठ साचुं नाम शुं छे ते जाणवा माटे डेक्कनलिस्टनी प्रत नंबर तपासवानी जरुर छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
९	नलोदय टीका	१४००	आदित्यसूरि		सं.
१०	भट्टिकाव्य टीका		जयमंगलाचार्य		डे. मुद्रित.
११	माघकाव्यवृत्ति	१००००	उद्दामदेव A		बृ. पा. २-३ A. S.
	वृत्ति		चारित्रवर्द्धन		डेक्कन.
१२	मेघदूतवृत्ति	११५०	क्षेमहंस B		A. S.
	,, बालावबोध वृत्ति	१४४५	महीमेरु		पा. ४
	,, भाष्य	पत्र २९			भ. २
	,, अवचूरि	१५००	सुमतिविजय		A. S.
१३	रघुवंशवृत्ति		गुणविजय		भाव.भ. २
	,, वृत्ति (बीजी)		सुमतिविजय		A. S.
	,, वृत्ति (त्रीजी)		धर्ममेरु		सं.
	,, वृत्ति (चोथी)	पत्र १४५	समयसुंदर		भ. १
१४	राक्षसकाव्यवृत्ति		शांतिसूरि		जेसल.
१५	विषमकाव्यवृत्ति C	पत्र ७			बृ. पा. ४
१६	वृंदावनटीका		शांतिसूरि		जेसल-बे.
१७	शिवभद्रटीका		,,		जेसल-बे.
१८	शिशुपालवधटीका		चारित्रवर्धन		डेक्कन.

A, B आ निशानीवाळा बन्ने आचार्यो माटे तेमना नाम उपरथी शक रहे छे.

C एक विषमकाव्यवृत्ति श्लोक १७०४ नो बनावी छे. पण ते क्यां पण उपलब्ध थई नथी. पाटणना पत्र हालनां जणावे छे एमां पण कर्तानुं नाम विगेरे विशेष माहिती आपेली जणाती नथी. तो ते कोणे रचेली छे तथा ते संबंधे विशेष हकीकत शुं छे ते जाणवा माटे पाटणना भंडारमांनी प्रत तपासी जोवानी अगत्य छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
	वर्ग ६ ट्ठो.				
	नाटकना ग्रंथो.				
१	अनर्घराघव A	३३५५	जिनहर्ष		पा. ४
	,, टिप्पन	२४५०	नरचंद्रसूरि		घृ. पा. १ जेसल-के.
	,, टिप्पन	७५००	देवप्रभसूरि		घृ.
२	कर्पूरचरित्र (सं.)	पत्र २८	वत्सराज		अ. १ प्रो. मणि.
३	कर्पूरमंजरी टीका	१३८९	राजशेखर		पा. ४ मुद्रित.
	,, लघुटीका B		प्रेमराज		पा. १ डेकन.
४	करुणावज्रायुधनाटक	४८०	बालचंद्र		अ. २
५	कुमुदचंद्रनाटक	५३५	यशश्चंद्रगणि		पा. १ लीं. डे. मुद्रि
६	कौमुदीनाटक		रामचंद्रगणि		पा. १
७	चंद्रलेखाविजयनाटक				घृ पा. १
८	ज्ञानचंद्रोयनाटक	७४६	पद्मसुंदर		पा. ५
९	ज्ञानसूर्योदयनाटक	८००	दिगं. वादिचंद्र		A. S.
१०	धर्माभ्युदनाटक		मेघप्रभ		पि. रि. ५
११	नलविलासनाटक		रामचंद्र		घृ.

A अनर्घराघवने मुरारि नाटक एवा नामथी विशेष ओळखवामां आवे छे.

B डेकन कॉलेजना लीस्टमां एनी भाष्य तरीके नोंध करी छे.

नं.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
१२	नागानंदनाटक		हर्षदेव		पा. १
१३	निर्भयभीमनाटक	१९६	रामचंद्रगणि		पा. १-४ सं.
१४	प्रबंधशतहितोपदेश	९६१	,,		पृ. पा. १-४
१५	प्रबोधचंद्रोदयवृत्ति	ता. ५६	रत्नशेखर		पा. २
	,, वृत्ति (बीजी)	३९६२	कामदास A		डेक्कन.
१६	मानमुद्राभंजननाटक B	१८००	देवचंद्रगणि		पृ.
१७	मोहपराजयनाटक C	१७००	यशःपालमंत्रि		पृ. मगीनदास.
१८	रघुविलासनाटक D	पत्र ११८	रामचंद्र		वि. रि. ५ डे.
१९	रत्नावलीनाटिका	९००	हर्षदेव		पृ. पा. १-४ मुद्रित.
२०	रासकाटिकप्राकृत व्याख्या	३००			A. S.
११	रंभामंजरी		जयचंद्र		A. S. मुद्रित.
	टिप्पन	५००	,,		A. S.
२६	शर्मिष्ठानाटक	३६४	रत्नचंद्र		पा. ४

A [illegible]
[illegible] छे.

B [illegible] "[illegible]" [illegible]
[illegible] १८००" [illegible].

C [illegible] "[illegible]" [illegible]
[illegible] ११३० [illegible] छे.

D [illegible]
[illegible] छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
२३	रामनाटक				जेसल.
२४	राघवाभ्युदयनाटक (अं.१०)		रामचंद्र		बृ.
२५	वनमाला नाटिका		पं. अमरचंद A		बृ.
२६	विद्धशालभंजिकानाटक	१०००	राजशेखर		डेकन.
२७	श्रीपालनाटकगत रसवती वर्णन	३५०	धर्मसुंदर B	१५३१	खं.
२८	हम्मीरमर्दन	९००	जयसिंहसूरि C		पा. १ जेसल.

A आ अमरचंद यलते अन्यमति होय तो पण होय.

B आ धर्मसुंदरसूरिनुं अपरनाम सिद्धसूरि एवुं हतुं.

C जेसलमेरनी टीपमां हम्मीरमर्दन नाटकना कर्ता हीराणंद नरचंद्रसूरि छे एम जणाव्युं छे प
ते सप्रमाण मानवाने तेवो पुरावो मळवो मुश्केल छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
	वर्ग ७ मो.*				
	नीतिना ग्रंथो.				
१	अर्हन्नीति	१५००	हेमाचार्य A		पा. ५ मुद्रित.
२	चतुर्वर्गसंग्रह	पत्र १५	क्षेमेंद्र B		A. S.
३	चारुचर्याशतक	१००	,,		A. S.
४	जिनसंहिता	४००	दिगं. (अपूर्ण)		A. S.
५	नीतिकल्पतरु	११०	क्षेमेंद्र C		डेक्कन.
६	नीतिवाक्यामृत D	९५	सोमदेवसूरि		पा. १–२ छे.
७	नीतिसार	१३०	इंद्रनंदि		A. S.
८	प्रस्तावरत्नाकर	१७५	हरीदास D		भांडारकर.
९	रत्नकोश	२५०			जेसल–बे.
१०	राजनीति (भा.)	४५०	देवीदास E		डेक्कन.

* आ वर्गमां नीतिने लगता ग्रंथो अकारादि अनुक्रमवार नोंध्या छे. आपणा पूर्वाचार्योए रचेला ग्रंथो पैकी नीतिना ग्रंथो बहुज थोडा अमने शोधतांज मळी आव्या छे.

A अर्हन्नीतिमां बतावेली केटलीक वातोना स्वरूप उपरथी कर्त्ता माटे शंका रहे छे.

B, C आ बन्ने क्षेमेंद्र एक छे के अन्य छे तेना माटे शक राखवो पडे छे.

D, E हरीदास तथा देवीदास ते कोई दिगंबर हता के अन्य हता तेना माटे पण संशय राखवो पडे छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
२३	रामनाटक				जेसल.
२४	राघवाभ्युदयनाटक (सं.१०)		रामचंद्र		बृ.
२५	वनमाला नाटिका		पं. अमरचंद A		बृ.
२६	शिशुपालभंजिकानाटक	१०००	राजशेखर		डेक्कन.
२७	श्रीपालनाटकगत रसवती वर्णन	३५०	धर्मसुंदर B	१५३१	सं.
२८	हम्मीरमर्दन	९००	जयसिंहसूरि C		पा. १ जेसल.

A आ अमरचंद बीजो अन्यमति होय तो पण होय.

B आ धर्मसुंदरसूरिनुं अपरनाम सिद्धसूरि पण हतुं.

C प्रेमचंद्रजीनी टीपमां हम्मीरमर्दन नाटकना कर्ता हीराणंदे नरचंद्रसूरि छे एम जणाव्युं छे
ते प्रमाण मानवाने तेवो पुरावो मळवो मुश्केल छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
७	सुभाषित श्लोक	७००			A. S.
८	भव्यकुमुदचंद्रिका टीका	१६००	(दिगं.)		A. S.
९	मौक्तिक	पत्र ६			पा. ३.
१०	रत्नकोश A	गा. ४३१			सं.
११	वज्जालय (प्रा.)	पत्र ९			पा. ३
१२	वज्जालग्गो (प्रा.)	पत्र ११	मुनिचंद्र		राधनपुर.
१३	विद्यालयवृत्ति		रामदेव	१३९३	भांडारकर.
१४	विद्यालय (प्रा.)	३३००			पा. १-३-४-५
	वृत्ति	पत्र ८०	धर्मचंद्र		प्र. १
	उद्धार				पा. ४
१५	सद्भाषितावली	४८०	(दिगं.)		A. S.
१६	साहित्यश्लोक B (प्रा.)	गा. १७१			वि रि. ५
१७	सुभाषित (प्रा.)	गा. ४०			नगीनदास
१८	सुभाषितार्णव	१२००	दिग.		A. S.
१९	सुभाषितसार उद्धार	३३१			पा. ४
२०	सुभाषितसमुद्र		धर्मकुमार		सु.

A एमां उत्तमोत्तम गाथाओ छे. आ रत्नकोश तथा उपर जणावेल भाषारत्नकोशना श्लोक समान छे तेथी ते जुदा जुदा छे के बन्ने एकज छे ते बाबत तेनी प्रतो मेळवी नक्की करवुं जोइये.

B एनुं आदिवचन " ११ ते जयति करणी " एवुं छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
१२	व्यवहारलेख्यपद्धति(तत्वासन)	पत्र २			भ. २.
१३	व्याख्यानकथनपद्धति	१७५			डॉ.
१४	ज्ञातार्थी	१००१	उदयधर्मगणि	१६०६	पा. ३-५.
	विवरण A	१५००	मानसागर		पा. ५ लीं. सं.
१५	शुकदेवसंवाद				पा. ३.
१६	संवादसुंदर	३३३	समयसुंदर		पा. ३-४ भ. २.
१७	सभाशृंगार	पत्र ११			पा. ३.

A एनुं आदिचरण " परिग्रहारंभमग्ना " एवुं छे.

लीस्ट नंबर ९

जैन विज्ञान.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
	वर्ग १ लो.				
	ज्योतिष्ना ग्रंथो.				
१	अर्घकांड		देवेंद्रसूरि शिष्य हेमप्रभसूरि A		A. S.
	अर्घकांड (बीजुं)	६००	दुर्गदेव		नगीनदास.
२	अष्टांगहृदयसंहिता	पत्र ३३९	वाग्भट		A. S.
३	आयज्ञानतिलकवृत्ति	१८००	दिगं. दामनंदि शिष्य		A. S.
४	आयप्रश्न	७०			बृ.
५	आयसद्भाव	१९५			बृ.
	वृत्ति	१६००			बृ.
६	आरंभसिद्धि	४६०	उदयप्रभ		पा. ३
	वृत्ति	५८९३	हेमहंस	१५१४	पा. ३. ५.
७	गणिततिलकवृत्ति		सिंहतिलक		बृ.
८	चंद्रराजुचक्रविवरण	२६०			पा. ४.
९	जन्मकुंडलीविचार				पा. १.

A एसियाटिक सोसायटीना रिपोर्टमां आ हेमप्रभसूरिना गुरुनुं नाम देवेंद्रसूरि जणाव्युं छे पण अमारा धारवा मुजब वि. सं. १३२७ मां चैत्यवंदननी संघाचार नाम्नी वृत्तिना करनार धर्मघोषसूरि थया अने तेमना शिष्य हेमप्रभसूरि हता तेओएज आ ग्रंथ रच्यो होवो जोइये अने रिपोर्टकारे गुरुनुं नाम नोंधतां भूलथी दादागुरुनुं नाम नोंध्युं होय तेम जणाय छे.

नंबर	नाम	श्लोक	कर्ता	रचना संवत्	क्यां छे ?
१०	जन्मपत्रीविचार				पा. १.
११	जन्मपत्रीपद्धति A	४४००	हर्षचंद्र		डे. डेक्कन.
१२	जन्मसमुद्र	८३	नरचंद्र		डेक्कन.
	(बेडा) वृत्ति		,,		डेक्कन.
१३	ज्ञानवाभिधान	१३००	निरमल B		A. S.
१४	ज्ञानचतुर्दीपिका		हर्षविजय		सं.
	वृत्ति	३५०	,,	१७६०	सं.
१५	जातकपद्धति	पत्र ८	(केशी)		भ. १.
१६	ज्योतिष् C	ताड२९२			पा. २.
१७	ज्योतिषचक्रविचार (प्रा.)		विनयकुशल		पा. ३.
१८	ज्योतिषसारसंग्रह				पा. ३. भाव.
१९	ताजिकसारवृत्ति	५५०	सुमतिहर्ष		डॉ. A. S.
२०	तिथ्यादिसारणी				पा. ३.
२१	द्वादशभावजन्मप्रदीप	पत्र ८	भद्रबाहु		भ. १.

A डेक्कनकोलेजनी टीपमां [illegible] श्लोक २५०० मांगीने पण कर्ता हरिविजयसूरि जणाव्या छे. आ बाबतनो निर्णय डेक्कनकोलेजवाळी प्रत मळे तपासवाथी थई शके.

B आ निरमल ते कोई दिगंबर होय तेम तेमना नाम उपरथी अटकळ करी शकाय छे.

C आ ज्योतिष् ते शुं छे ते बाबत पाटणनो भंडार नवर [illegible] मळे पछीथी तपासीने नक्की करवानुं छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे?
२२	नरपतिजयचर्या	४८००			बृ. माव. A. S.
२३	नवग्रहराशिविचार	१९६			पा. ३.
२४	नारचंद्र	७१९	नरचंद्र		पा. १-४-५
	टिप्पन	१३३५	सागरचंद्र		पा. १-३-४
२५	निधानादिपरीक्षाशास्त्र A	पत्र ३			म. १.
२६	पंचांगतिथिविवरण B	१९०			बृ.
२७	प्रश्नप्रकाश C	३६०	नरचंद्रसूरि.		बृ.
२८	प्रश्नशत	२००	नरचंद्र.		डेक्कन.
२९	फत्तेशाहप्रकाश	६००			भांडारकर.
३०	भद्रबाहुसंहिता *		भद्रबाहु		पा. ४
३१	भावसागर	३३००			A. S.
३२	भुवनदीपक	२६०	पद्मप्रभ		बृ.
	ढुंढिका	५००			पा. १-२ लीं.
	अवचूरि	२३९			पा. १
	वृत्ति	१७००	सिंहतिलक		बृ. म. १ राधण.
	वृत्ति (बीजी)		हेमतिलक		म. १

A एनुं अपरनाम " अर्द्दिचक्र " एवुं छे.

B एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां " पंचाङ्गतिथिविवरणं करणशेषवृत्तिनामकं १९० " आवो नोंध छे.

C एना वीश प्रकाश छे.

* आ भद्रबाहुसंहिता नानी मोटी बे देखवामां आवे छे. तेमां नानीनुं मारांतर छपायुं छे. एना कर्त्ता भद्रबाहु ते चौदपूर्वी होवानो पणी ईते संभव थतो नथी.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	व्याख्यानो सं.	क्यां छे ?
३३	मणितयाताजिक	१२१	(कोईजैन)		डेक्कन.
३४	मंडलपद्धती	४८६	हेमप्रभ		पा. ३.
३५	यंत्रराज	६००	·		A. S.
३६	यंत्रराजागम	३७७	महेंद्रसूरि		पा. ४ A. S.
	वृत्ति	१३३३	मलयचंद्र		पा. ४
३७	यंत्रराजरचनाप्रकार A		सवाई जयसिंह		A. S.
३८	यंत्ररत्नावली		पद्मनाभ		A. S.
	वृत्ति		स्वोपज्ञ		A. S.
३९	योगायोगप्रकरण	पत्र ७			भ. १
४०	रत्नकोश				वृ.
४१	रत्नदीपक B	पत्र ६			डॉ.
४२	लग्नशुद्धि C		हरिभद्रसूरि		पा. ३
४३	वराहसंहिता		वराहमिहिर		वृ. पा. २
	वृत्ति	४०००			वृ. पा. २
४४	व्यवहारप्रकार				भाव.

A एने " [illegible] " पण कहे छे.

B एमां बारभावना फलादेश छे.

C [illegible] ग्रंथ पूर्वे हरिभद्रसूरिकृत [illegible] छे, [illegible] पण [illegible] छे.

अंक	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या संवत.	क्यां छे?
[illegible]	[illegible] टीका	पत्र १८			[illegible]
[illegible]	[illegible]	पत्र ७			"
[illegible]	[illegible]	पत्र १३			"
[illegible]	[illegible]	पत्र ३२			"
[illegible]	[illegible]	पत्र ५			"
[illegible]	[illegible]	पत्र १०			"
[illegible]	[illegible]	पत्र १			"
[illegible]	[illegible]	पत्र ७			"
[illegible]	[illegible]	पत्र १९			"

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे [illegible]
	वर्ग २ जो. *				
	निमित्तना ग्रंथो.				
१	[illegible]				सं.
२	[illegible]विचार	पत्र १			पा. २
३	[illegible]विचार				डॉ.
४	[illegible] A	१४७	दुर्गदेव		पू.
५	[illegible] B	१००	जिनपाल		बेंगाल.
६	[illegible]	पत्र १			डॉ.
७	[illegible]				पा. १ डॉ.
८	[illegible] (सं)	२१४१			पा. ४
९	[illegible]विचार C				पा. १.
१०	[illegible]	गा१३०७	[illegible] D		पू.
११	[illegible]	४१			सं.

A. [illegible]

B [illegible]

C [illegible]

D [illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
१२	चिन्हचतुर्विंशतिका	पत्र ३			अजमेर
१३	छींकविचार				सं.
१४	जयपाहुडप्रश्नव्याकरण.	२२८			नगीनदास.
१५	दुर्गादाकुन	५५५	नरपति		पा. ४
१६	धातुवादप्रकरण A	२५			सं.
१७	नाडीसंचारज्ञान				वृ.
१८	नायपुत्तिका B				वृ.
१९	नारदोक्तस्त्रीलक्षण	११			लीं.
२०	पल्लीविचार	पत्र ४			अ. १
२१	पल्लीदारउशांति	२०	वृद्धगर्गमुनि		लीं.
२२	पासाकेवलि	१८७	गर्गर्षि C		पा. १-२-३ लीं.
२३	पिपीलिकाज्ञान (प्रा.)				वृ.
२४	पुस्तकेंद्रग्रंथ	गा. १५			वृ.
२५	प्रश्नव्याकरणवृत्ति	२३००			वृ. पा. २ जे.
२६	प्रश्नोत्तरसूत्र	४६५			पा. ४
२७	मातृकाकेवलि (सं.)	५०			लीं.

A एमां धोनारूपानी सिद्धिनी वात छे.

B एना मटे वृहट्टिप्पनिकामां " नाय पुत्तिकायोगेनामाज्ञाय मंत्रतत्ता " आवो नोंध छे.

C आ गर्गर्षि ते सिद्धर्षिना गुरु दुर्गस्वामीना पण गुरु थता हता एटले तेओ लगभग विक्रमनी नवमी सदीनी शरुआतमां विद्यमान हता.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
२८	मेघमाला (मोटी)	४००			सं.
२९	मेघमाला (नानी)	१००	हेमप्रभ		सं.
३०	[illegible]				सं.
३१	[illegible]				भाव.
३२	रिष्टसमुच्चयशास्त्र	३०७	दुर्गदेव		डेक्क.
३३	करलक्षण A	२१५			पु
३४	वसन्तराजशाकुनवृत्ति B	३७५०	भानुचंद्रगणि		जेसल.
३५	शकुनशास्त्र C	पत्र ११	माणिक्यसूरि		प्र. १
३६	शकुनसारोद्धार D	५०८	,,	१३३८	पु.
३७	शकुनविचार	पत्र ३			पा. १.
३८	शकुनावली	गाथा १३०	[illegible]		पा. २
३९	शकुनरत्नावली	११००			[illegible]
४०	[illegible]	पत्र १०			पा. ३
४१	[illegible]	पत्र २			प्र. १.
४२	सामुद्रिकशास्त्र	१८७			पा. ३-४.

A का [illegible] है.

B [illegible] है.

C, D [illegible]

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे?
४३	सामुद्रिकशास्त्र	१०००	दुर्लभराज		डेक्कन.
४४	सामुद्रिक	१९८	(जैनकृत)		लीं.
४५	सामुद्रिक	६७			बू.
४६	सामुद्रिकतिलक	१००० A	दुर्लभराजपुत्र जगदेव		लीं.
४७	सारोद्धारशकुनप्रकार	आर्या ८००			A. S. डेक्कन.
४८	सिद्धाहापद्धति				बू.
४९	श्वानसप्तती	२००			खेसल-बे.
५०	श्वानरुतविचार	पत्र ४	नरपति		स. १
५१	श्वानशकुनविचार				शं.
५२	स्वप्नचिंतामणि	पत्र ७			जामनगर.
५३	स्वप्नलक्षण	पत्र १०			पा. ३.
५४	स्वप्नविचार (प्रा.)	८७५	जिनपाल		पा. ५.
५५	स्वप्नाष्टकविचार				पा. १
५६	स्वप्नसप्ततिका				पा. १

A एनी ८०० आर्या होवा छापे छे एवं म्रप छे. पण कर्ता सब छे के अन्य छे तेनो तपास करी नक्की करवानी जरूर छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे ?
	स्वप्नसप्ततिका वृत्ति				पा. १
	वृत्ति (बीजी)	८००	सर्वदेवसूरि	१२८७	पा. ३-५
५७	स्वरोदय	७९			पा. ३-५
५८	हस्तकाण्ड A	९९	चंद्रशिष्य पार्श्वचंद्र		पा. ४
५९	हरिमेखला B				बृ.

A आ ग्रंथ खास लखावा लायक छे.

B बृहट्टिप्पनिकामां एना माटे " अनाश्चर्यकरांजनसिद्धयादियोगादिवाच्या " आवी नोंध छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं	क्यां छे ?
	वर्ग ३ जो*				
	वैदकना ग्रंथो.				
१	आयुर्वेदमहोदधि	११००	सुषेण		A. S.
२	चिकित्सोत्सव	१७००	हंसराज		A. S.
३	द्रव्यावली (निघंटु)	९००	महेंद्र		A. S.
४	प्रतापकल्पद्रुम	६०००	प्रतापसिंहदेव		A. S.
५	माधवप्रबद्धति	१००००	माधवचंद्रदेव(जु.)		A. S.
६	योगरत्नाकर	९०००	मोच. नयनशेखर	१७३६	लीं.
७	योगरत्नसमुच्चय	४५०			A. S.
८	योगशतक	२५०			A. S.
९	योगसार	पत्र २४			पा. ३-४
१०	योगचिंतामणि	२१००	हर्षकीर्ति		जेसल-बे. A. S.

* आ वर्गमां वैदकना जे जे ग्रंथो अमारा जाणवामां आव्या छे ते ते अनुक्रमवार नोंध्या छे. विचार करता जेवी वात छे के आपणा विद्वान् दूरदर्शी पूर्वाचार्योए अन्य शास्त्रोने सीखवा माटे करेल प्रयासनो सरखामणिए करतां वैदक जेवा असाधारण उपयोगी विषयनी सीखवणी करवामां योजना उपर ध्याननो उपयोग कर्यो होय तेम अमोने ज्योत्स्न मध्ये उपरथी जणातुं नथी. सिवाय अमे उपर जणावेला ग्रंथोमांथी केटलाक ग्रंथो तेमना कर्ताना नामउपरथी ग्रंथो अन्य मतिना पण करेल होय तेम संदेह रहे छे. आम होवानुं कारण ए जणाय छे के वैदकनो विषय केटलाक आरंभ संरंभ, वनस्पत्यादिकनुं उपमर्दन, अग्नि विगेरेनो विराधनादि करावनार छे तेथी त्रिविधे त्रिविधे सावद्यनो त्याग करनार मुनिराज ए कार्यमां प्रवृत्ति न करी शके तेवुं छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे
११.	रत्नसागर	१८००	(अपूर्ण)		A. S.
१२.	रसचिंतामणि	९००	अनंतदेवसूरी		A. S.
१३.	रसरत्नदीपिका	६००	महाराजमहीपति		सं.
१४.	वीरसिंहावलोक	४१००	वीरसिंहदेव		A. S.
१५.	वैद्यवल्लभ	२६०	(तपा)हस्तिरुचि गणि		लीं. A. S.
१६.	वैद्यकसारोद्धार	८००	हर्षकीर्ति		A. S.
१७.	वैद्यकसारसंग्रह	११००	हर्षकीर्ति		सं.
१८.	सिद्धयोगमाला	५००	सिद्धर्षि		डेक्कन.
१९.	सिद्धसार A	पत्र ७९			अ. १.

A सिद्धसारना करनार कोई जैन होवा जोइये एम अमदावादना डेलाना भंडारनी टीपमां छे, पण कदाच आ ग्रंथ वैदकना वरणमां अनुमय पण होय तो होय.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे?
	वर्ग ९ मो.				
	[illegible]विज्ञानना ग्रंथो.				
१	[illegible]	११००	[illegible]		भांडारकर.
२	[illegible]	१०			A. S.
३	[illegible]	१८००	हीरचंद्र A	११११	A. S.
४	[illegible]	पत्र ५			ल. १.
५	[illegible]	पत्र १			ल. १.
६	[illegible]		(अपूर्ण)		[illegible]
७	[illegible]	१०००			A. S.
८	[illegible]	१५००			A. S.
९	[illegible] B	१४५			[illegible]
१०	[illegible]	११००			डेक्कन.
११	[illegible] C		[illegible]		A. S.

A [illegible]

B [illegible]

C [illegible]

[illegible]

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्यानो सं.	क्यां छे?
१२	धनुर्विद्या				बृ.
	वृत्ति				बृ.
१३	धनुर्वेद	पत्र १११			A. S.
१४	नागार्जुनविद्या	१०००			A. S.
१५	पादलब्धि (सं.)	पत्र ८			प्रो. मणि.
१६	भरतशास्त्र				बृ.
१७	योगरत्नमालाA	१५०	नागार्जुन		A. H.
	वृत्ति		गुणाकर	१२९६	A. H.
१८	योगरत्नावली (लघु)				डेक्कन.
१९	लेखनप्रकार	पत्र ९			डेक्कन.
२०	वास्तुशास्त्र	पत्र १२७	भोजदेव		पा. ४.
२१	विज्ञानार्णव	पत्र ८६			अ. १.
२२	शारंगीकृति B				जेसल.
२३	शालिहोत्र C	पत्र ५			ली.

A एने रत्नावली तथा आश्चर्ययोगमाला पण कहेवाय छे.

B एमां दारु तथा कागळपर लखवानी शाई बनाववानी रीत दर्शावी छे.

C एमां घोडा पारखवानी विद्या कही छे.

नंबर.	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे ?
२४	द्रुमल्लीमत	गा. ३०९	दामोदरगुप्त		नगीनदास.
२५	समंतसामंतचक्रविधि	पत्र१४			म. २
२६	समस्तरत्नपरीक्षा	६००			A. S.
२७	समरांगणसूत्रधार	१५६०	भोजदेव		डेक्कन.
२८	संगीतदर्पण	पत्र १०			म. २.
२९	संगीतरत्नावली	पत्र २५			म. २
३०	सिद्धज्ञान A	पत्र २१	मेघविजय		म. १
३१	हीरकपरीक्षा	९०	(दिगं.)		A. S.

A आ सिद्धज्ञान हस्तसंजीवन नामक ग्रंथमांथी उद्धृत करेलुं छे अने ते गुर्जर भाषामां छे.

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्ता.	रच्या नो सं.	क्यां छे ?
	वर्ग ५ मो.				
	कल्पना ग्रंथो.				
१	[illegible]कल्प (प्रा.)	पत्र १			ली.
२	[illegible]कल्प	३८०			A. S.
३	इन्द्रकल्प	७१	गोविंद A		A. S.
	इन्द्रकल्प (सं.)	पत्र ?			ली.
४	कल्पसामाचारी B				प्रेमच.
	वृत्ति	४००			प्रेमच.
५	[illegible]				दि. १
६	[illegible]कल्प				गा. १ A. S.
७	[illegible]कल्प	१८००			A. S.
८	[illegible]कल्प C	पत्र ५८			भा. १
९	[illegible]				दि. १
१०	पद्मावतीकल्प	पत्र १२	[illegible] मल्लिषेण		पू. भा. १-५

A [illegible]

B [illegible]

C [illegible]

नंबर	नाम.	श्लोक.	कर्त्ता.	रच्या-नो सं.	क्यां छे?
११	पद्मावतीचतुष्पदी	४६	जिनप्रभ		पा. ५.
१२	मणिपरीक्षाकल्प	पत्र १			ली. रि. ६.
१३	यंध्याकल्प				रि. ६
१४	वर्द्धमानविद्याकल्प	४५०	सिंहतिलकसूरि		पा. ३ डेकन.
१५	विजयपताकाकल्प				पा. १
१६	विजययंत्रविधि A	१२५			डेकन.
१७	वृक्षविनोद	३००			रि. ६
१८	श्लोककल्प				वृ. रि. ६
१९	संविद्रत्न B	६५			A. S.
२०	सुवर्णसिद्धि		पादलिप्त		डेकन.
	वृत्ति	पत्र २	"		डेकन.
२१	सूरिमंत्रकल्प C	३२०			रि. ६
२२	स्थापनाकल्प (सं.)	पत्र ४			प्रो. मणि.

A एने विजयपताका यंत्र पण कहेवाय छे.

B आ संवित्रत्न विद्याकल्पमांथी उद्धृत करेल छे.

C एना पांच पीठ छे अने ते आचार्यपदधारक मुनिवर्यने खास उपयोगी छे.

अनुक्रमणिका.

१ अनु.

१ अनु.

[illegible]

अनुक्रमणिका.

ग्रंथकर्ताओनी अक्षरानुक्रमवार अनुक्रमणिका.

११ अ

अनुक्रमणिका.

ग्रंथकर्त्ताओनी अक्षरानुक्रमवार अनुक्रमणिका.

अनुक्रमणिका.

ट.

अनुक्रमणिका.

अनुक्रमणिका.

रच्याना साटनी ग्रंथना नाम साथेनी अनुक्रमणिका.

रच्यानो संवत्.	ग्रंथनुं नाम.
११३९	पार्श्वनाथ चरित्र (सं.)
११३९	महावीरस्वामी चरित्र (प्रा.)
११३९	जिनमदीयवृहत्संग्रहणी वृत्ति
११४०	मनोरमा चरित्र (प्रा.)
११५१	शोभनस्तुति अवचूरि
११५८	कथारत्नकोश
११६०	आदिनाथ चरित्र
११६०	शांतिनाथ चरित्र (प्रा.)
११६१	पृथ्वीचंद्र चरित्र (प्रा)
११६२	जीवानुशासन वृत्ति
११६४	जीवसमास वृत्ति
११६५	नवपदप्रकरण वृत्ति (चोथी)
११६५	पार्श्वनाथ चरित्र (प्रा.)
११६८	न्यायप्रवेशकसूत्र टिप्पन
११६९	न्यायप्रवेशकसूत्र पंजिका
११७०	भवभावना
११७०	भवभावना वृत्ति
११७१	सार्द्धशतक वृत्ति
११७२	धर्मरत्नकरंडक
११७२	मुनिपति चरित्र (प्रा.)
११७२	प्र. पंचाशकचूर्णि
११७२	षडशीति वृत्ति
११७२	सार्धशतक वृत्ति
११७२	बंधस्वामित्व वृत्ति
११७३	निशीथविंशोद्देशक वृत्ति
११७४	उपदेशपद वृत्ति
११७४	नवतत्त्वगाथा वृत्ति
११७४	चैत्यवंदनाचूर्णि
११७४	चैत्यवंदन विवरण
११७५	मल्लिनाथ चरित्र (प्रा.)
११७५	पुष्पमाला वृत्ति
११७६	पिंडविशुद्धि लघुवृत्ति
११७६	रत्नकोशव्याख्या
११७८	सप्तक्षेत्री
११८०	पिंडविशुद्धि वृत्ति
११८०	पाक्षिकसूत्र वृत्ति
११८२	नवपदप्रकरण वृत्ति (पांचमी)
११८३	श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र चूर्णि
११८३	प्रत्याख्यानस्वरूप
११८३	,, वृत्ति

रच्यानो संवत्.	ग्रंथनुं नाम.		रच्यानो संवत्.	ग्रंथनुं नाम.	
११८४	दर्शनशुद्धिप्रकरण वृत्ति	...	१२२२	श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति	...
११८५	प्रतिप्रतिष्ठास्थापनस्थल	...	१२२४	पद्मप्रभस्वामी चरित्र (प्रा.)	...
११८६	परिग्रहप्रमाण	...	१२२६	पृथ्वीचंद्रचरित्र टिप्पनक	...
११८७	विजयचंद्रकेवलि चरित्र	...	१२२७	जीतकल्प टिप्पनक	...
११९०	आख्यानमणिकोश वृत्ति	...		(विषमपदव्याख्या)	...
११९२	नमिऊणथोत्रसमास वृत्ति	...	१२२८	पंचोपाग वृत्ति	...
११९३	मुनिसुव्रतस्वामी चरित्र (प्रा.)	...	१२२९	शीलभावना वृत्ति	...
११९४	सुरसुंदरी कथा	...	१२३२	नेमिनाथ चरित्र (प्रा.)	...
११९५	गणरत्नमहोदधि	...	१२३३	नमिसुरक्षेत्रसमास वृत्ति	...
११९९	सुपार्श्वनाथ चरित्र (प्रा.	...	१२३८	उपदेशमाला वृत्ति (दोघट्टी)	...
१२०४	उपदेशमाला कथा	...	१२४१	कुमारपालप्रतिबोध	...
१२०७	प्रद्युम्नचरित्र (बीजुं)	...	१२४२	प्रवचनसारोद्धार वृत्ति	...
१२०७	उत्पादसिद्धि प्रकरण	...	१२४८	आत्महित कुलक	...
१२०७	,, वृत्ति	...	१२४८	विवेकमंजरी	...
१२१६	सनत्कुमार चरित्र (प्रा.)	...	१ .५२	अममस्वामी चरित्र	...
१२१४	स्याद्वादकलिका	...	१२६०	[illegible]विधि	...
१२१५	नमिऊणपयरणक्षेत्रसमास ति	...	१२६०	[illegible] वृत्ति	...
१२१६	अनंतनाथ चरित्र (प्रा.)	...	१२६१	प्रत्येकबुद्ध चरित्र (प्रा.)	...
१२१६	नेमिनाथ चरित्र (प्रा.)	...	१२६४	[illegible] चरित्र (प्रा.)	...
१२२०	ब्रह्मतत्त्व चूर्णि	...	१२६४	चंद्रप्रभस्वामी चरित्र (सं.प्रा.)	...

रच्यानो संवत्.	ग्रंथनुं नाम.	
११२९	पार्श्वनाथ चरित्र (सं.)	...
११३९	महावीरस्वामी चरित्र (प्रा.)	...
११३९	जिनभद्रीयबृहत्संग्रहणी वृत्ति	...
११४०	मनोरमा चरित्र (प्रा.)	...
११५१	शोभनस्तुति अवचूरि	...
११५८	कथारत्नकोश	...
११६०	आदिनाथ चरित्र	...
११६०	शांतिनाथ चरित्र (प्रा.)	...
११६१	पृथ्वीचंद्र चरित्र (प्रा)	...
११६२	जीवानुशासन वृत्ति	...
११६४	जीवसमास वृत्ति	...
११६५	नवपदप्रकरण वृत्ति (बोधी)	...
११६५	पार्श्वनाथ चरित्र (प्रा.)	...
११६८	न्यायप्रवेशकसूत्र टिप्पन	...
११६९	न्यायप्रवेशकसूत्र पंजिका	...
११७०	भवभावना	...
११७०	भवभावना वृत्ति	...
११७१	बन्धशतक वृत्ति	...
११७२	धर्मरत्नकरंडक	...
११७२	मुनिपति चरित्र (प्रा.)	...
११७२	प्र. पंचाशकचूर्णि	...
११७२	षडशीति वृत्ति	...
११७२	सार्धशतक वृत्ति	...
११७२	बंधस्वामित्व वृत्ति	...
११७३	निशीथविंशोद्देशक वृत्ति	...
११७४	उपदेशपद वृत्ति	...
११७४	नवतत्त्वगाथा वृत्ति	...
११७४	चैत्यवंदनचूर्णि	...
११७४	चैत्यवंदन विवरण	...
११७५	मल्लिनाथ चरित्र (प्रा.)	...
११७५	पुष्पमाला वृत्ति	...
११७६	पिंडविशुद्धि लघुवृत्ति	...
११७६	रत्नकोशव्याख्या	...
११७८	समक्षेत्री	...
११८०	पिंडविशुद्धि वृत्ति	...
११८०	पाक्षिकसूत्र वृत्ति	...
११८२	नवपदप्रकरण वृत्ति (बोधी)	...
११८३	आवश्यकप्रतिक्रमणसूत्र चूर्णि	...
११८३	प्रत्याख्यानस्वरूप	...
११८३	,, चूर्णि	...

रच्यानो संवत्.	ग्रंथनुं नाम.		रच्यानो संवत्.	ग्रंथनुं नाम.	
१२६६	काव्यप्रकाशसंकेत	...	१२९५	गणधरसार्द्धशतक वृत्ति	...
१२००	जीतकल्प वृत्ति	...	१२९५	पिंडविशुद्धि वृत्ति दीपिका	...
१२०७	पार्श्वनाथ चरित्र (प्रा)	...	१२९६	आवश्यक लघुवृत्ति	...
११००	सम्यक्त्वप्रकरण वृत्ति	...	१२९९	वासुपूज्यस्वामी चरित्र	...
१२०४	विवेकमंजरी वृत्ति	...	१२९९	उपदेशमाला वृत्ति (कर्णिका)	...
११०८	अयंतकाव्य	...	१३०२	चंद्रप्रभस्वामी चरित्र (सं.)	...
११६०	हैमशब्दानुशासन प्रकरण वृत्ति	...	१३०४	पूर्वर्षि चरित्र	...
१२८१	प्रेमलाभ व्याकरण	...	१३०४	हितोपदेशमाला वृत्ति	...
१२८५	कृतपुण्य चरित्र	...	१३०४	बालबोधव्याकरण मूळ	...
१२८५	धन्यशालि चरित्र	...	१३०५	धर्मरत्न करंडक	...
१२८६	धर्मविधि वृत्ति	...	१३०७	श्रावक (प्रा.) वृत्ति(बीजी)	...
१२८०	स्वप्नसप्ततिका वृत्ति (बीजी)	...	१३११	कुमारपाल चरित्र (बीजुं)	...
१२८०	वृद्धन्यधर्मप्रतिपत्ती कुलक(बीजु)	...	१३१०	शांतिनाथ चरित्र (सं.)	...
१२८८	ऋषिदत्ता चरित्र	...	१३१०	श्रावकधर्मप्रकरण वृत्ति	...
१२८९	कर्मनिर्जरार्थकामादेशद्वार	...	१३२०	सिद्धहेमावली वृत्ति	...
१२९१	कुलककुलक वृत्ति	...	१३२१	शांतिनाथ चरित्र (प्रा.)	...
१२९२	मुनिसुव्रतस्वामी चरित्र (प्रा)	...	१३२४	अममस्वामि चरित्र	...
१२९४	कर्मस्तव वृत्ति	...	१३२५	दानादिकथानक	...
१२९४	धर्मोपदेशमाला वृत्ति (बीजी)	...	१३२६	कल्पान्तर्वाच्य वृत्ति	...
१२९४	धन्यर्षि	...	१३३२	श्रेयांसनाथ चरित्र (सं.)	...

डब्बानो नंबर.	ग्रंथनुं नाम.	
११३१	भाष्य (सं.) वृत्ति	...
११३२	दशकल्प वृत्ति	...
११३३	संघाचार लघुवृत्ति	...
११३४	शांति चरित्र	...
११३५	प्रभावक चरित्र	..
११३५	पाण्डवचरित्र काव्य	...
११३७	पिंडविशुद्धि कुलक वृत्ति	...
११३८	मधुमालोद्धार	...
११३८	प्रत्याख्यानविधान वृत्ति	...
११४६	स्याद्वादमंजरी	...
११६३	दिनचर्या	...
११६४	साधुप्रतिक्रमण वृत्ति	...
११६५	भक्तामरस्तोत्र वृत्ति	...
११६५	अजितशांतिस्तव वृत्ति	...
११६८	दुरियरयसमीरस्तव वृत्ति	...
११७२	पुंडरीकचरित्र	...
११७७	धर्मरत्नप्रकरण वृत्ति	...
११८३	चैत्यवंदनकुलक	...
११८३	श्राद्धसामाचारिक प्रतिक्रमणसूत्र-कथासंग्रहप्रकरण	...
११८५	दीपालिकाकल्प (छठो)	...
११८६	शत्रुंजयादितीर्थोत्पत्तिकल्प	...
११८७	दीपालिकाकल्प	...
११९०	हरिभद्रीयजंबूद्वीपसंग्रहणी वृत्ति	...
११९२	अंतरंगसंधि (प्रा.)	...
११९३	विचारामृत वृत्ति	...
११९४	षडावश्यकसंधि	...
१४००	स्तंभनपार्श्वप्रबंध	...
१४०५	चतुर्विंशति प्रबंध	...
१४१०	शांतिनाथ चरित्र (सं.)	...
१४११	कुमारपाल प्रबंध	...
१४११	श्राद्धदिनकृत्य वृत्ति	...
१४११	चैत्यवंदना वृत्ति बालावबोध (गूर्जर)	...
१४१२	पार्श्वनाथ चरित्र (प्रा.)	...
१४१२	नरवर्मकथा	...
१४१३	नवरत्नकथासंग्रह	...
१४२१	पारसीनाममाला	...
१४२२	सम्यक्त्वसप्ततिका वृत्ति	...
१४२२	दीपालिकाकल्प (बीजो)	...

रच्यानो संवत्.	ग्रंथनुं नाम.
१४२६	भक्तामरस्तोत्र वृत्ति ...
१४२८	श्रीपाल चरित्र ...
१४२९	प्रश्नोत्तररत्नमाला वृत्ति ...
१४३६	हरिविक्रमकाव्य वृत्ति ...
१४३६	उपदेशचिंतामणि वृत्ति ...
१४३६	उपदेशचिंतामणि अवचूरि ...
१४४०	आवश्यक अवचूरि ...
१४४१	उत्तराध्ययन अवचूरि ...
१४४२	कुलमंडनसूरिकृतविचारामृतसंग्रह
१४४७	गुणस्थानक्रमारोह ...
१४५५	त्रैवेद्यगोष्ठी ...
१४५५	नमिऊणसजलक्षेत्रसमास वृत्ति ...
१४५६	यतिजीतकल्प वृत्ति ...
१४५७	सम्यक्त्वकौमुदी ...
१४५९	कर्मस्तव विवरण ...
१४६२	सम्यक्त्वकौमुदी (चोथी) ...
१४६२	धम्मिलचरित्र (श्लोकबद्ध) ...
१४६२	पुष्पमाला अवचूरि ...
१४६२	प्रबोधचिंतामणि ...
१४६३	रत्नशेखर कथा (गद्यात्र) ...
१४६३	धन्नाकथा ...
१४६३	श्रीधर चरित्र ...
१४६५	सिरिनिलयक्षेत्रसमास अवचूरि ...
१४६६	गुर्वावली ...
१४६६	हैमधातुपारायण क्रियारत्न-समुच्चय (सवीजक) ...
१४६७	वारिविचार ...
१४७८	पर्वरत्नावली ...
१४८०	अंचलमतदलन ...
१४८४	मिश्रचतुष्ककथा ...
१४८६	पर्युषणास्थिति ...
१४८९	श्राद्धगुण विवरण ...
१४९०	पंचदंडछत्रप्रबंध ...
१४९०	विक्रमचरित्र ...
१४९४	पंचपरमेष्टिस्तव ...
१४९४	,, वृत्ति ...
१४९५	चित्रोडमहावीरविहारप्रशस्ति
१४९५	संदेहदोलावली लघुवृत्ति ...
१४९६	विक्रम चरित्र (बीजुं) ...
१४९६	षडावश्यक वृत्ति (अर्थदीपिका)...

शुद्धिपत्र.

	पंक्ति,	अशुद्ध	शुद्ध.
	१४	चर्णि	चूर्णि.
	३	समवायाग	समवायांग
	१२	लघुपति	लघुवृत्ति
	१६	वति	वृत्ति.
	१३	द्वादशांगीवृत्ति	प्रश्नव्याविधान वृत्ति.
८	६	१६०००	१४०००
०	११	७००	१७४६
२	३	१००	११००
,,	४	प्रदम्न	प्रद्युम्न.
४	११	रच्यानो संवत् ८९०	श्लोक ८९०
१	४	अवचूर्णि	विशेषचूर्णि.
,,	५	पर्याय	सर्वसिद्धांतविषमपदपर्याय.
३८	१०	चैत्यवंदनावचूर्णि	चैत्यवंदनावचूर्णि
,,	५	बृहच्चैत्यवंदनसटीक.	सकलार्हत् टीका.
३२	६	प्रतिक्रमणसंग्रहणी	आवश्यकनिर्युक्ति
४८	२	पूर	पूर्व
५०	६	रत्नसागर	रत्नसागर तथा सहजकीर्ति
५२	८	कल्पसमर्थन	कल्पांतराश्रितवृत्ति.
५४	७	श्लोक १८००	श्लोक १७००
६६	७	1 Dec.	अनेक पयन्ना छे.
,,	११	सेनप्रश्न ३	डेक्कनमां अपूर्ण.
७१	३	S. H.	S. K.
७६	३	पंचविमर्श	आरंभसिद्धि
,,	४	प्रमाणग्रंथ	डेक्कनमां नथी
७८	४	युक्तिप्रबोध	डेक्कनमां नथी
,,	५	,, ,, वृत्ति	डेक्कनमां नथी
,,	५	वादरत्नाकर	स्याद्वादरत्नाकर
७९	२	श्लो. ७०००	श्लो. ३०००
,,	६	सिद्धांतरत्न	डेक्कनमां नथी
८०	६	सिद्धांतरत्नावली	डेक्कनमां नथी
,,	५	सुमतिसाधु	साधुविजय
८१	१२	अर्हद्देव देवनिराकरण	अर्हद्देव वेदनिराकरण
८४.	९	विचारसित्तरद	डेक्कनमां नथी
८८	४		

पृष्ठांक.	पंक्ति.	अशुद्ध	शुद्ध.
९०	१६	दृष्टिवाद	षड्दर्शन लघुवृत्ति
९१	१२	न्यायसदर्थसंग्रह	अन्यमतीय
९५	६	अभावप्रमेयव्याख्या	अन्यमती
१००	१४	हरिभद्र	हरिप्रभ
१०५	१०	मुक्ताशुक्ति	प्रथमनावेस्तवकविनानी
११७	१४	शतक	डेक्कनमां नथी.
,,	१५	भाष्य	डेक्कनमां नथी
१२१	६	जीवविचार (बीजो)	डेक्कनमां नथी.
,,	९	चार्य	शीलाचार्य
१२५	७	वृद्धभवतत्व	मूलनो गुजराति भाषार्थ छे.
१२८	५	शास्त्रवार्तासंग्रह	शास्त्रार्थसंग्रह.
१२९	५	अनेक शास्त्रसारसमुच्चय	बारभावनादिक अनेक प्रकरणो मुटक छे.
,,	१०	ग्रंथसारसमुच्चय	डेक्कनमां नथी.
१३०	५	पंचास्तिप्रबोधसंबंध	डेक्कनमां नथी.
१३२	१८	जिनेश्वरनाम प्रकरण	जिनेश्वरसहस्रनामस्तोत्र.
१३९	६	सिद्धमुनविंशिका	हरिभद्रसूरिनी वीशमी वीशी.
१४८	१४	आलोचना रत्नाकर	रत्नाकरपचीशी.
१५३	१४	उपासकपाठ	उपासकदशांगसूत्र.
१५५	८	ओघसामाचारी	ओघनिर्युक्ति.
१५९	६	केवली प्रकरण	डेक्कनमां नथी.
१६३	५	मिथ्यात्वमथनचर्चरी प्रकरण	काळस्वरूप कुलक.
,,	६	वादिविचार	वादिविचार (मेरुतुंगकृत).
,,	८	विचारश्रेणि	महावीरस्वामीनी काळगणनासंबंधी चर्चा.
१६४	११	वृत्ति	डेक्कनमां नथी.
१७३	८	उपदेशशतक	१०० सो दृष्टांत.
१७६	१२	कृष्णयुधिष्ठिरधर्मगोष्ठी	जैननोज छे.
,,	१३	कामघट	कामघटकथा.
१७८	४	अर्धनीप्रश्नोत्तरसंग्रह	डेक्कनमां नथी.
,,	५	वृत्ति	डेक्कनमां नथी.
,,	१३	ज्ञानचतुर्विंशतिका	नारचंद्रज्योतिष.
१८२	६	धर्मोपदेश	उपदेशशतक.
१८६	७	भावना प्रकरण	भावना कुलक.
१८७	११	दानकल्पा	कर्ता अन्यमती.
१९०	३	श्रावकप्रबोध	धर्ममानदेशना.
,,	११	सम्यक्त्वदीपिका	सम्यक्त्वदीपिका बालावबोध.

पृष्ठांक.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१९०	१५	विमलसूरि	विबुधविमलसूरि.
१९१	७	वृत्ति	हेकनमां नथी.
१९२	८	संवेगचूडामणि.	हेकनमां नथी.
,,	१०	संवेगद्रुममंजरी	संवेगद्रुममंजरीनी चोपाई.
,,	,,	संयमऋषि	कुशलसंयमऋषि
,,	११	संवेगमंजरी	हेकनमां नथी.
१९३	५	सिद्धांतरत्नावली	हेकनमां नथी.
२०५	४	दवसूरि	देवसूरि.
२०९	१५	हेमविजय	(दीगं.) हेमविजय
२१४	५	क्षमर्षिप्रबंध	अनेक प्रबंधो छे.
२१५	५	नंदोपाख्यान	नवनंदकथा.
२१६	१०	भोजप्रबंध	हेकनमां नथी.
२१८	८	विक्रमादित्य चरित्र	विक्रमादित्य पंचदंड छत्रप्रबंध.
,,	,,	रामचंद्र :	अभयचंद्रना शिष्य रामचंद्र. (रच्यानो संवत् १४९०)
२१९	४	सोमकप्रबंध	कुमारपालप्रबंधमांनो छे.
,,	८	हरिवंश	कर्ता अन्दमति व्यास.
,,	१५	कनकावती चरित्र.	रूपसेन कनकावती चरित्र
२२२	९	कृष्णचरित्र	हेकनमां नथी.
२२६	६	पद्मावती चरित्र	पद्मचरित्र (विमलसूरिकृत)
२२८	८	भरत चरित्र	हेकनमां नथी.
२३१	४	दवविक्रमगणि	देवविजय गणि.
२३२	१७	श्रीचंद्रकेवली चरित्र	हेकनमां नथी
,,	१८	,, ,, प्रशस्ति	हेकनमां नथी
२३४	११	जयकार्ति	जयकीर्ति
२४५	४	(सं.)	(प्रा.)
,,	५	(सं.)	(प्रा.)